जहाँ सेलेक्शन एक जिद है.

INDIAN ECONOMIC EXPLORER

भारतीय अर्थव्यवस्था

For All One Day Exams

The Institute

गुणवत्ता, ईमानदारी और सफलता

By : **Subhash Paul**

THE INSTITUTE
जहाँ सेलेक्शन एक जिद है.

समीर प्लाजा, मनमोहन पार्क, कटरा, बांसमण्डी के सामने, इला0
0532-3266722, 9956971111, 9235581475

THE INSTITUTE

टीम को

यह Notes प्रस्तुत करते हुए बड़ी खुशी की अनुभूति हो रही है। यह Notes सभी One Day Exam के पैटर्न को ध्यान में रखकर बनाया गया है। आज बदलते हुए One Day पैटर्न को देखते हुए यह Notes, One Day Exam के अभ्यर्थियों के लिए मददगार साबित होगा। इसमें अनावश्यक भ्रमपूर्ण सामाग्रियों से परहेज किया गया है और हर एक शब्द को आपके लिए उपयोगी बनाने की कोशिश की गयी है।

इसमें मैप, चार्ट और ग्राफ के जरिए विषय को अति सरल बनाया गया है। यह Notes क्लास लेक्चर को Supplement करने के लिए बनाया गया है। यह संपादन कार्य क्लास लेक्चर के साथ मिलकर संपूर्ण होता है और यह क्लास लेक्चर को सुदृण करने के लिए बनाया गया है। बिना क्लास लेक्चर के यह Notes अधूरा है।

इसमें बाजारू सामाग्रियों के सभी त्रुटियों को दूर किया गया है और अन्य प्रकार की त्रुटियों को सुधारने की पूरी कोशिश की गयी है यदि इसके बाद भी कोई मानवीय या मशीनी गलती हुई हो तो संस्था क्षमाप्रार्थी है।

इसके अतिरिक्त यह Notes आप सभी के सहयोग से बना है और इसमें किसी भी प्रकार का सुझाव सदैव स्वीकार्य है। संस्था अपने छात्रों से यह उम्मीद करता है कि छात्र इस Notes का पूरा उपयोग करेगा और संस्था के उम्मीदों पर खरा उतरेगा क्योंकि आप वहाँ पढ़ते हैं 'जहाँ सेलेक्शन एक जिद है'।

धन्यवाद

C. Shekhar

(THE INSTITUTE)

By Subhash Paul

माँग एवं पूर्ति की अवधारणा

- चन्द्रगुप्त मौर्य के मंत्री कौटिल्य ने ''अर्थशास्त्र'' नामक अपनी पुस्तक में राजनैतिक एवं आर्थिक दोनों विचार दर्शाये।
- अरस्तू ने अपनी Economica में अर्थशास्त्र को House Management नाम दिया।
- एड्म स्मिथ को वास्तव में अर्थशास्त्र का जनक कहा जाता है क्योंकि इन्होंने अर्थशास्त्र के सन्दर्भ में फैले हुये सभी विचारों को संकलित कर के वैज्ञानिक रूप अपनी पुस्तक 'An Enquiry into the nature and causes of wealth of nation's' (1776) में प्रकाशित किया।
- एड्म स्मिथ ने अर्थशास्त्र को धन का विज्ञान कहा' इसके समर्थ अर्थशास्त्रियों को क्लासिकल अर्थशास्त्री कहा जाता है जैसे– रिकाडो, माल्थस, जे.बी. से, जे.एस.मिल तथा इरविंग फिशर।

एडम स्मिथ का श्रम विभाजन व विशिष्टीकरण
रिकार्डो का - लगान सिद्धान्त
मालथस - जनसंख्या सिद्धान्त
मार्क्स - श्रम का शोषण

- जे. बी. से– ''अर्थशास्त्र वह विज्ञान है जो धन की विवेचना करता है।''
- प्रो. वाकर– ''अर्थशास्त्र ज्ञान की वह शाखा है, जो धन से संबंधित है।''
- जे.एस. मिल– ''अर्थशास्त्र मनुष्य से संबंधित धन का विज्ञान है।
- मार्शल– ''अर्थशास्त्र धन के विज्ञान के साथ–साथ मानव कल्याण का शास्त्र है।
  ''आदर्श विज्ञान भी मानते हैं (Normative Science)"
- राबिन्स– ''अर्थशास्त्र वह विज्ञान है जो साध्यों (Ends) तथा वैकल्पिक उपयोग वाले सीमित साधनों के सम्बन्ध के रूप में मानव व्यवहार का अध्ययन करता है।''
- 1932 ई. राबिन्स को पुस्तक "An Essay on the Nature and Significance of Economics Science" प्रकाशित हुई। इन्होंने अर्थशास्त्र को चुनाव का विज्ञान कहा।

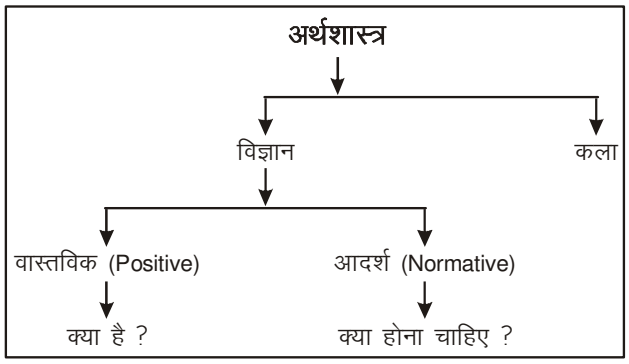

माँग के नियम

माँग के नियम के तीन रूप होते हैं–
- मूल्य माँग
- आय माँग तथा
- आदी माँग

मूल्य माँग :
Dx = f (Px, Y, Po, T, W)
T = फैशन रुचि
W = Wealth

माँग = किसी दिये गये समय, दिये हुये मूल्य पर उपभोक्ता द्वारा खरीदी गयी मात्रा को माँग कहते हैं।

एक माँग वक्र ऋणात्मक मूल्य माँग सम्बन्ध प्रदर्शित करता है। परन्तु निम्न वस्तुओं के सन्दर्भ में मूल्य–माँग सम्बन्ध धनात्मक होगा।

- प्रतिष्ठा सूचक वस्तुएं
- गिफेन वस्तुयें
- मूल्य में वृद्धि का दर तथा कमी की आशा
- अज्ञान तथा श्रम
- जीवन निर्वाह की वस्तुयें

आय माँग : उपभोक्ता की आय तथा वस्तु की माँग के बीच कलात्मक सम्बन्ध।

Dx = f (Y)

यह आय तथा माँगी गयी वस्तु की विभिन्न मात्राओं के बीच सम्बन्ध दिखाता है। वस्तुयें दो प्रकार की होती है–

(क) सामान्य वस्तुयें (क) निम्नकोटि की वस्तु

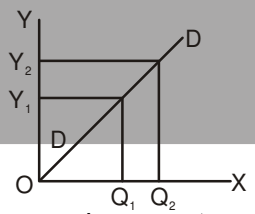

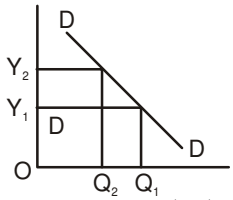

आड़ी माँग : वस्तुओं की माँग तथा अन्य वस्तुओं के मूल्य के बीच फलनात्मक सम्बन्ध Dx = f (Po)

स्थानापन्न : एक वसतु के मूल्य में कमी (वृद्धि) दूसरी वस्तु के माँग में कमी (वृद्धि) ला दे।

उदाहरणार्थ : चाय का मूल्य बढ़ जाय तो अन्य बातों के सामान्य रहने पर काफी की माँग बढ़ जायेगी।

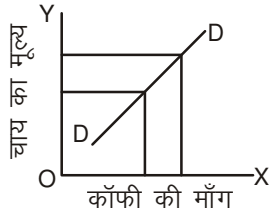

पूरक वस्तुयें : एक वस्तु के मूल्य में कमी दूसरी वस्तु के माँग में वृद्धि ला दे।

उदाहरणार्थ : पेट्रोल के मूल्य में कमी होने पर कार की माँग में वृद्धि।

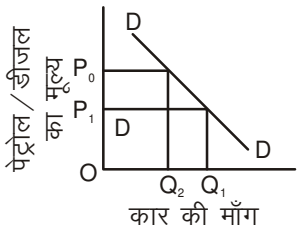

माँग में परिवर्तन :

(क) माँग में विस्तार तथा संकुचन मूल्य में कमी → माँग में वृद्धि → माँग में विस्तार

यह परिवर्तन एक ही माँग रेखा पर पाई जाती है।

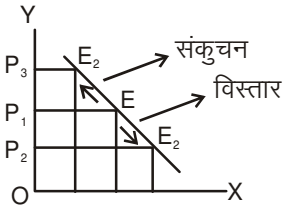

(ख) माँग वक्र का विवर्तन माँग में वृद्धि तथा प्रकर्षण
माँग में कमी तथा विकर्षण

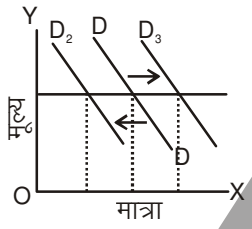

माँग में वृद्धि या कमी के कारण :

- उपभोक्ता की आय तथा संचित धन की मात्रा
- रुचि, फैशन तथा रीति–रिवाज
- आय तथा धन का असमान वितरण
- बाजार में उपभोक्ताओं की संख्या
- भविष्य में वस्तु के मूल्य में परिवर्तन की आशा
- जनसंख्या
- मुद्रा की मात्रा में परिवर्तन

- मार्शल के सम सीमान्त उपयोगिता के आधार पर माँग वक्र का निर्माण

उपभोक्ता किसी भी वस्तु का मूल्य उसकी सी. उ. के बराबर ही देता है इसलिए $\frac{MUx}{Px} = MUm$

उपभोक्ता अपने सन्तुष्टि को अधिकतम करना चाहता है इसलिए वह जैसे–जैसे मूल्य में गिरावट होगी वस्तु की अधिक मात्रा उपभोग करेगा जिससे उसकी सीमान्त उपयोगिता भी गिरेगी और उपभोक्ता सन्तुलन की स्थिति में बना रहेगा–

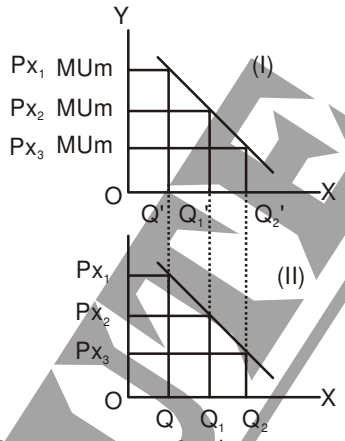

- नियोक्लासिकल MU दृष्टिकोण या उपयोगिता का संख्यात्मक माप (Cardinal Approach) मार्शल का सम सी. उ. दृष्टिकोण
- उपयोगिता का क्रमवाचक माप
  (i) हिक्स–एलेन का अनधिमान दृष्टिकोण
  (ii) सेमुएलसन का व्यक्त अधिमान दृष्टिकोण
- TU, MU तथा AU का संक्षिप्त विश्लेषण

Unit	U	TU	AU	MU
1	8	8	8	8
2	5	13	6.5	5
3	1	14	4.67	1
4	0	14	3.5	0
5	–1	13	2.6	–1

नति परिवर्तन बिन्दु तक तो TU बढ़ती दर से बढ़ता इसके बाद घटती दर से क्योंकि MU गिरना प्रारम्भ कर देती है।

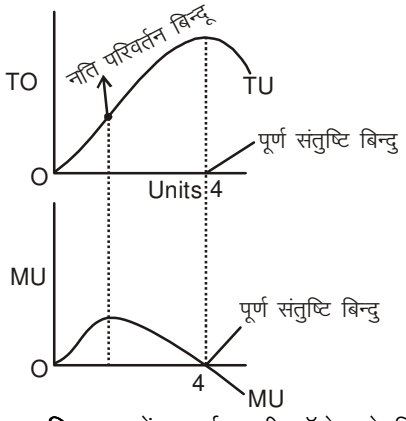

- **MU ह्रास नियम :** फ्रेंच अर्थशास्त्री गॉसेन ने दिया स्टेनले जेवेन्स ने मूल्य निर्धारण में इसका प्रयोग किया और मार्शल ने इसका और विकास किया।
- **मान्यतायें :**
  (1) उपभोग निरन्तर होना चाहिये।
  (2) वस्तु की प्रत्येक इकाई गुण, परिमाणु, स्वाद, बनावट में समान होनी चाहिये।
  (3) रुचि आदत भी स्थिर हो
  (4) मानसिक स्थिति सामान्य हो
  (5) वस्तु का मूल्य स्थिर हो

NEW INSIGHT

- **सम सीमान्त उपयोगिता नियम :** गॉसेन का द्वितीय नियम $\frac{MUx}{Px}=\frac{MUy}{Py}=MUm$ स्थिर है। यदि $\frac{MUx}{Px}>\frac{MUy}{Py}$ तो उपभोक्ता x का उपभोग बढ़ायेगा और y का स्थिर या कम करेगा जिससे x का MU गिरेगा y का MU बढ़ेगा जो दोनों को बराबर करेगा।

Units	x की P = 3		y की P = 2	
	MUx	$\frac{MUx}{Px}$	MUy	$\frac{MUy}{Py}$
1	48	16 (3)	40	20 (1)
2	42	14 (5)	36	18 (2)
3	36	12 (7)	32	16 (4)
4	30	10 (9)	28	14 (6)
5	18	6	24	12 (8)
6	6	2	20	10 (10)
7	3	1	10	5

मांग की लोच (Elasticity of Demand) :

$$ep=\frac{+\text{मांग में \% परिवर्तन}}{-\text{मूल्य में \% परिवर्तन}}$$

	p	q	
p	5	8 Km	q
Δ p	10	6 Km	Δ q

$$ep=\frac{\frac{\text{नयी मात्रा}}{\text{पुरानी मात्रा}}}{\frac{\text{नया मूल्य}}{\text{पुराना मूल्य}}}=\frac{\frac{\Delta q}{q}}{\frac{\Delta p}{p}}=\frac{(6-8)}{(10-8)}\times\frac{10}{5}$$

$$=\left(\frac{2}{5}\times\frac{10}{5}\right)=+.25\%$$

$$\boxed{-\frac{\Delta q}{\Delta p}\times\frac{p}{q}}$$

मांग का नियम सिर्फ दिशा बताता है जबकि मांग की लोच वास्तविक प्रभाव को बताता है इसके मुख्यतः 5 भाग हैं–

(1) पूर्णतया लोचदार माँग
(2) पूर्णतया बेलोचदार माँग
(3) इकाई माँग की लोच
(4) इकाई से अधिक माँग की लोच (<1)
(5) इकाई से कम माँग की लोच (>1)

(1) पूर्णतया बेलोचदार माँग : जब मूल्य का प्रभाव माँग पर बिल्कुल न पड़े तब माँग की लोच पूर्णतया बेलोचदार होगी।

$$\boxed{ep=0}$$

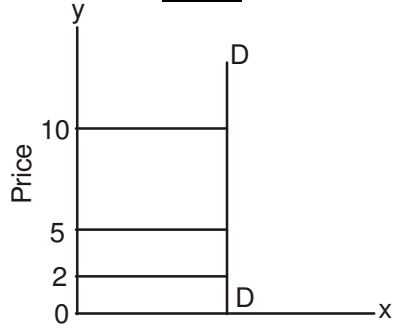

(2) पूर्णतया लोचदार माँग वक्र :

$$\boxed{ep=\infty}$$

यदि मूल्य में थोड़ा सा भी वृद्धि कर दी गई मात्रा को शून्य कर दे तो माँग की लोच पूर्णतया लोचदार पाई जाएगी या अनन्त माँग की लोच।

(3) इकाई माँग की लोच :

$$\boxed{ep=1}$$

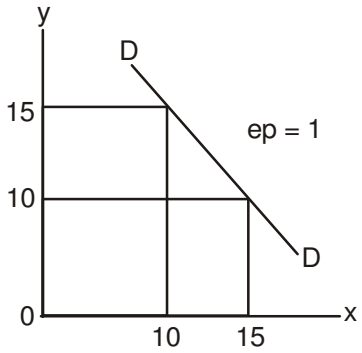

यदि मूल्य में परिवर्तन के बराबर ही मात्रा में परिवर्तन हो तो माँग की लोच इकाई के बराबर होगी यह आवश्यक वस्तुओं के सन्दर्भ में पाया जाता है।

(4) इकाई से अधिक लोचदार माँग :

ep > 1

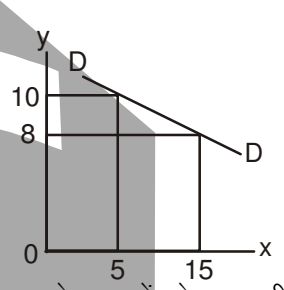

यदि किसी वस्तु के मूल्य में थोड़ा सा भी परिवर्तन उसकी माँगी गई मात्रा में अत्यधिक परिवर्तन ला दे तब इस स्थिति में मांग की लोच इकाई से अधिक पाई जाएगी जैसा कि विलासिता की वस्तुओं के सन्दर्भ में देखा जाता है।

(5) इकाई से कम लोचदार माँग : मूल्य के परिवत्रन के तुलना में खरीदी गई मात्रा में कम परिवर्तन होता है। ऐसा अतिआवश्यक वस्तुओं के सन्दर्भ में पाया जाता है।

ep < 1

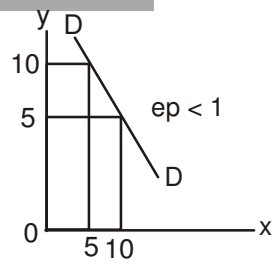

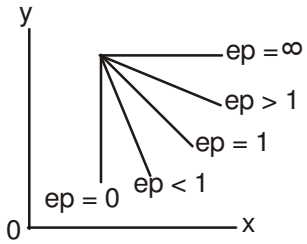

बाजार

पूर्ण प्रतियोगी बाजार : पूर्ण प्रतियोगी बाजार को समझने से पूर्व हम बाजार को हम पहले समझ लेते हैं। बाजार को लेकर अर्थशास्त्रियों में विभिन्न मत पाए जाते हैं बाजार को दो वर्गों में बांटा गया है–

(1) क्षेत्र के आधार पर : इसके चार रूप होते हैं–

(i) स्थानीय बाजार
(ii) प्रावेशिक या क्षेत्रीय बाजार
(iii) राष्ट्रीय बाजार
(iv) अन्तराष्ट्रीय बाजार

(2) समय के आधार पर : इस प्रकार का वर्गीकरण मार्शल द्वारा किया गया।

(i) अति अल्प कालीन बाजार
(ii) अल्प कालीन बाजार (1 महीने से 1 साल तक)
(iii) दीर्घ कालीन बाजार (6 वर्ष – 15 वर्ष तक)
(iv) अति दीर्घ कालीन बाजर

पूर्ण प्रतियोगी बाजार की विशेषताएँ –

(1) क्रेताओं व विक्रेताओं की अधिक संख्या पाई जाती है।
(2) वस्तुओं की एकरूपता अर्थात् वह सभी वस्तुएँ समरूप हैं इसलिए परस्पर पूर्ण स्थानापन्न।
(3) क्रेता और विक्रेता को बाजार सम्बन्धी पूर्ण ज्ञान है। उद्योग में फर्मों का प्रवेश तथा निकासी स्वतन्त्र रूप से पाया जाता है इसलिए दीर्घ काल में फर्में सामान्य लाभ (Normal Profit) अर्जित करेंगी।
(4) उत्पादन के साधनों में पूर्ण गतिशीलता पाई जाती है अर्थात् एक रोजगार में दूसरे रोजगार में जाने की स्वतन्त्रता।
(5) वस्तुओं की परिवहन व विक्रय लागत का आभाव पाया जाता है।
(6) सरकार द्वारा इस पर कोई करारोपण या प्रतिबन्ध नहीं लगाया जाता।
(7) फर्में मूल्य स्वीकारक होती हैं और मूल्य का निर्धारण उद्योग द्वारा किया जाता है। फर्मों का समूह ही उद्योग कहलाता है।

औसत आय सीमान्त आय–

(AR)		(MR)		
Q	P	TR = Q×P	$AR = \frac{TR}{Q}$	MR= TRn – TRn –1
1	10	10	10	10
2	10	20	10	10
3	10	30	10	10
4	10	40	10	10

औसत लागत, सीमान्त लागत

Q	C	Q×C = TC	AC	TCn – Ten – 1 MC
1	20	20	20	20
2	15	30	15	10
3	12	36	12	36
4	10	40	10	4
5	12	60	12	20
6	15	90	15	30
7	20	140	20	50

अल्प काल (Short Period) (0–1 वर्ष) : इस अवधि में समय इतना कम रहता है कि उत्पादन में वृद्धि परिवर्तन शील साधनों (श्रम, कच्चा) में वृद्धि के माध्यम से होती है जबकि स्थित साधन (भवन, मशीन) में परिवर्तन नहीं होता।

दीर्घ काल (5 से अधिक 15 से कम) : इस काल में समय इतना अधिक होताहै कि परिवर्तनशील साधनों के साथ–साथ स्थिर साधनों में भी परिवर्तन के माध्यम से उत्पादन को समायोजित किया जा सकता है दोनों साधन परिवर्तनशील होते हैं।

दीर्घ काल में संतुलन : फर्मों का समूह ही उद्योग होता है उद्योग द्वारा निर्धारित मूल्य पर फर्में दीर्घ काल में दीर्घ कालीन औसत लागत वक्र के न्यूनतम बिन्दू पर उत्पादन करेंगी जहाँ पर उनहें सामान्य लाभ अर्जित होगा।

अल्पकाल में फर्म सामान्य लाभ (AR = AC) :

हानि = AC > AR

असामान्य लाभ AR > AC

तीनों स्थितियों में हो सकती है लेकिन दीर्घ काल में फर्म सिर्फ सामान्य लाभ ही अर्जित करेगी।

एकाधिकार : एकाधिकार का शाब्दिक अर्थ अकेला विक्रेता है अर्थात् पूर्ति पर किसी एक विक्रेता का अधिकार या नियन्त्रक यह पूर्ण प्रतियोगिता की पूर्णतः विपरीत स्थिति है। इसके उत्पादक या विक्रेता ऐसी वस्तु उत्पादित करता है। जिसका कोई नजदीकी स्थानापन्न न हो। एकाधिकारी वस्तु की पूर्ति को नियन्त्रित करके मूल्य को घटा–बढ़ा सकता है। ऐसे में वह विभिन्न बाजारों में मूल्य विभेद भी कर सकता है। ऐसे में वह विभिन्न बाजारों में मूलय विभेद भी कर सकता है। मूल्य विभेद के लिए आवश्यक है कि विभिन्न बाजारों में मांग की लोच अलग–अलग हो या बाजारों के बीच इतनी पर्याप्त दूरी हो सके क्रेता सस्ते बाजार से सामान खरीद कर महंगे बाजार में बेचने में असफल हो। एकाधिकार में औसत आय तथा सीमान्त आय वक्र दोनों ऊपर से नीचे दाहिनी तरफ गिरते हुए होते हैं। एकाधिकार में संतुलन के लिए दो विधियाँ प्रचलित है।

कुल आय : कुल लागत– RTC एकाधिकारों का लाभ उस बिन्दु पर अधिकतम् होगा जहाँ पर कुल आय और कुल लागत का अन्तर ज्यादा हो।

अल्प अधिकार काल में एकाधिकार की संस्थिति : अल्प काल में एकाधिकारी में में मांग के अनुसार पूर्ति में समायोजन केवल परिवर्तनशील साधनों (श्रम व कच्चा माल) में परिवर्तन के द्वारा ही कर सकती है। ऐसे में उसे सामान्य लाभ असामान्य लाभ तथा हानि की स्थिति हो सकती है।

सामान्य लाभ : जब फर्म की औसत आय, औसत लागत के बराबर हो तब उसे सामान्य लाभ की प्राप्ति होगी अर्थात् उसकी प्रति इकाई आय प्रति इकाई लागत के बराबर हो।

असामान्य लाभ (AR > AC) : जब फर्म को प्रापत होने वाली प्रति इकाई औसत आय, प्रति इकाई लागत (AC) से अधिक हो तब उसे असामान्य लाभ की प्राप्ति होगी।

हानि की स्थिति (AR < AC) : जब फर्म को प्राप्त होने वाली लागत (AC) से कम हो तब उसे हानि की स्थिति प्राप्त होगी हानि की स्थिति में यदि एकाधिकारी को औसत परिवर्तनशील लागत (AVC) से कम मूल्य प्राप्त होगा तो एकाधिकारी उद्योग छोड़कर बाजार चली जाएगी।

एकाधिकार में मूल्य निर्धारण तथा मांग की लोच : एकाधिकारी को दीर्घ काल में सदैव असामान्य लाभ प्राप्त होता है वह अपनी वस्तु का मूल्य मांग वक्र के उस भाग में निर्धारित करता है जहाँ पर माँग की लोच इकाई से अधिक होगी।

समीर प्लाजा, मनमोहन पार्क, कटरा, बांसमण्डी के सामने, इलाहाबाद
फोन नं. : 0532.3266722, 9956971111, 9235581475
{जहाँ सेलेक्शन एक जिद है.}

प्रतियोगिता तथा फर्मों की संख्या के आधार पर बाजार का वर्गीकरण : 1926 से पूर्व पूर्ण प्रतियोगिता तथा एकाधिकार के अलावा बाजार की अन्य दशाओं की ओर किसी का ध्यान नहीं गया। 1926 में पियरों Sraffa ने अपने आर्थिक लेख में उपरोक्त दोनों बाजारों की आलोचना करते हुए कहा कि व्यवहारिक जतीवन में पूर्ण प्रतियोगिता व एकाधिकार के स्थान परअपूर्ण प्रतियोगिता की स्थिति पायी जाती है इस समस्या का उचित समाधान 1933 में प्रोफेसर चेम्बर लीन की पुस्तक Theory of Monogolistic Compitation तथा श्रीमती जॉन रॉबिन्सन की पुस्तक Economics of Impersect compition के माध्यम से हुआ।

लगान

Classical अर्थशास्त्रियों ने लगान की परिभाषा अलग–अलग शब्दों में दी रिकार्डो से पहले विलियम पेटी ने लगान को अधिशेष या बचा हुआ के रूप में बताया। परन्तु रिकार्डो ने इसे व्यवस्थित रूप में परिभाषित किया। रिकार्डो के अनुसार 'लगान भूमि की उपज का वह भाग है जो भूमि के मालिक को भूमि के मौलिक व अविनाशी शक्तियों के उपयोग के लिए दिया जाता है।''

लगान निम्नवत कारणों से उत्पन्न होता है–

(1) भूमि की पूर्ति पूर्णतया स्थिर या पूर्णतया बेलोचदार है।

(2) भूमि के विभिन्न टुकड़े भिन्न–भिन्न उर्वरा शक्ति के होते हैं।

(3) भूमि का केवल एक ही प्रयोग है।

(4) भूमि के बाजार में पूर्ण प्रतियोगिता है।

(5) उत्पादन में क्रमागत उत्पादन ह्रास नियम लागू है।

इन्होंने कहा लगान दो कारणों से उत्पन्न होता है।

(1) दुर्लभता का लगान (Scarcity) : उपजाऊ भूमि की पूर्ति दुलर्भ होती है और इसके प्रत्येक टुकडत्रे पर उत्पादकता समान होती है। जनसंख्या वृद्धि के कारण भूमि की मांग इतनी बढत्र जाए कि अप्रयुक्त भूमि न रह जाए। फलस्वरूप अनाज की मांग में वृद्धि मूल्य में वृद्धि लाएगी। मूल्य में वृद्धि औसत उत्पादन लागत से अधिक होगी। मूल्य और औसत लागत का अन्तर ही लगान कहलाएगा।

(2) भेदात्मक लगान :

भूमि की श्रेणी	लागत	उत्पादन	लगान
A	100	400	400 – 100 = 300 अधि सीमान्त भूमि
B	100	300	300 – 100 = 200
C	100	200	200 – 100 = 100
D	100	100	100 – 100 = 0 सीमान्त भूमि

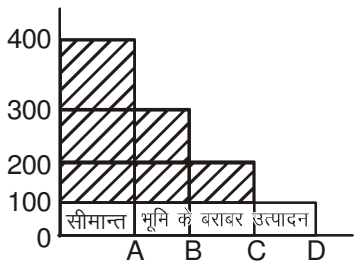

रिकार्डो का मानना है कि भूमि के प्रत्येक टुकड़े अलग–अलग उर्वरकता वाले हैं। प्रारम्भ में जनसंख्या अपने आस–पास की भूमि के उस टुकड़े पर उत्पादन करेगी जिसकी उर्वरकता अधिक है। वह उत्पादन औसत लागत के न्यूनतम बिन्दु पर होगा। दीर्घकाल में जैसे–जैसे जनसंख्या की वृद्धि के कारण मांग में वृद्धि होगी अधिक उत्पादन करेगा। यह प्रक्रिया तब तक बढ़ेगी जब तक सम्पूर्ण भूमि समाप्त नहीं हो जाती और अन्त में ऐसी स्थिति आएगी जब सबसे खराब भूमि पर लागत के बराबर उत्पादन होगा जो D प्रकार की भूमि से स्पष्ट है। D प्रकार की भूमि सीमान्त भूमि अर्थात् लगान रहित भूमि है और A प्रकार की भूमि अधि सीमान्त (Super Marginal) प्रकार की है।

दीर्घ काल में जनसंख्या में वृद्धि खाद्यान्न की मांग में वृद्धि लाती रहेगी। ऐसे में गहन खेती प्रारम्भ की जाएगी। जिससे उत्पादक AC (Average Cost) के न्यूनतम बिन्दु से आगे बढ़ते हुए भाग में उत्पादन करेगा क्योंकि खाद्यान्नों की माँग मूल्य स्तर को बढ़ा देगी।

उत्पादन फलन और उसके नियम

उत्पादन की क्रिया को सम्पन्न करने के लिए एक उत्पादक भूमि, श्रम, पूंजी, साहस तथा संगठन जैसे 5 साधनों का प्रयोग करता है। उदाहरण के लिए एक पंखे का उत्पादन करने के लिए कच्चा लोहा, कोयला जैसे कच्चे माल की आवश्यकता होती है इसे आगत या Inputs कहते हैं। इसके सहयोग से जिस पंखे का उत्पादन होगा उसे निर्गत या Output कहते हैं एक उत्पादक का उद्देश्य Inputs की न्यूनतम मात्रा से अधिक Output प्राप्त करना है। अगतों तथा निर्गतों के बीच इस तकनीकी सम्बन्ध को उत्पादन फलन कहते हैं।

उत्पादन के नियम : उत्पादन के तीन नियम पाए जाते हैं।

(1) वृद्धिमान प्रतिफल का नियम (Law of Inoreasing Return) : यदि जिस अनुपात में Inputs (आगतों) में वृद्धि की जाए उससे अधिक वृद्धि उत्पादन में हो निर्गत हो में हो उसे वृद्धि मान या वर्धमान का नियम कहते हैं। उदाहरण के लिए यदि साधनों की मात्रा दोगुनी कर दी जाए और उत्पादन में वृद्धि दोगुना से अधिक हो जाए।

(2) स्थिर प्रतिफल का नियम (Law of Constant Returns) : यदि उत्पादन के साधनों की मात्रा जिस अनुपात में बढ़े उस अनुपात में उत्पादन में वृद्धि हो तो इसे स्थिर प्रतिफल का नियम कहते हैं। उदाहरण के लिए साधन की मात्रा दोगुना कर दी जाए तो उत्पादन में भी वृद्धि दोगुनी हो जाए।

10 = f (2)

20 = f (4)

30 = f (6)

(3) ह्रासमान प्रतिफल का नियम (Law of Derreasing Returns) : जिस अनुपात में साधनों की मात्रा में वृद्धि की जाए उससे कम अनुपात में उत्पादन में वृद्धि हो। उदाहरण के लिए यदि साधनों की मात्रा दोगुनी कर दी जाए तो उत्पादन में वृद्धि दोगुने से कम हो।

10 = f (2)

18 = f (4)

25 = f (6)

राष्ट्रीय आय की अवधारणा

- ''राष्ट्रीय आय से अर्थ किसी देश में एक वर्ष के मध्य उत्पादित सभी वस्तुओं एवं सेवाओं` बाजार–मूल्य के कुल जोड़ से है जिसे ह्रास घटाकर व विदेशी लाभ जोडत्रकर निकाला जाता है।''
- एक देश की राष्ट्रीय आय निम्न पाँच प्रकार से प्रकट की जाती है–

1. सकल राष्ट्रीय उत्पादन अथवा सकल घरेलू उत्पाद

(Gross National Product or GNP or Gross Domastic Product)

- सकल राष्ट्रीय उत्पादन से अर्थ एक वर्ष में उत्पादित होने वाली सभी वस्तुओं और सेवाओं के बाजार–मूल्य के जोड़ से है। इसमें स्थायी सम्पत्तियों पर होने वाले ह्रास को नहीं घटाया जाता है।
- वास्तव में, सकल राष्ट्रीय उत्पादन दो अनुमानों को जोड़ है–
  - देश में उत्पादित सभी वसतुओं के मूल्य एवं
  - विदेशों से प्राप्त शुद्ध आय।
- सकल राष्ट्रीय उत्पादन एवं राष्ट्रीय आय में अन्तर है। सकल राष्ट्रीय उत्पादन देश के सम्पूर्ण उत्पादन (ह्रास बिना घटाये ही) का बाजार–मूल्य होता है जबकि राष्ट्रीय आय शुद्ध उत्पादन (ह्रास घटाने के बाद) होता है।
- सकल राष्ट्रीय उत्पादन में चालू वर्ष में उत्पन्न वस्तुओं और सेवाओं के मूल्य को ही शामिल किया जाता है।

2. शुद्ध राष्ट्रीय उत्पादन अथवा शुद्ध घरेलू उत्पाद

(Net National Product or NNP or Net Domestic Product)

- सकल राष्ट्रीय उत्पादन में ह्रास (depreciation) घटाने के बाद जो शेष रहता है, वह शुद्ध राष्ट्रीय उत्पादन या शुद्ध घरेलू उत्पाद कहलाता है। गणितीय रूप में यह NNP or NDP = (GNP or GDP – Depreciation) है।

3. राष्ट्रीय आय (National Income)

- इसे 'साधन लागत पर शुद्ध राष्ट्रीय आय' (Net National Product Factor Cost) भी कहते हैं। इसकी गणना हेतु शुद्ध राष्ट्रीय उत्पादन (NNP) में से अप्रत्यक्ष करों (Indirect taxes) को घटा दिया जाता है, किन्तु सरकार द्वारा दी गयी सहायता (Subsidies) जोड़ दी जाती है।

4. व्यक्तिगत आय या घरेलू उत्पादन

(Personal Income or Net Domestic Product)

- यह आय वह आय है जो कि वास्तव में देश की जनता द्वारा एक वित्तीय वर्ष में प्राप्त की जाती है। इसकी गणना निम्न प्रकार की जाती है–
व्यक्तिगत आय = राष्ट्रीय आय – [निगम व कम्पनियों पर कर + कम्पनी के अवितरित लाभ + प्रॉविडेण्ट फण्ड में अंशदान–(सरकार द्वारा सामाजिक सुधार पर व्यय)]।

5. व्यय योग्य आय (Disposable Income)

- इसका तात्पर्य है जनता के पास वह शुद्ध आय है, जिसे जनता व्यय करने को तत्पर है। ऐसी आय की गणना के लिए व्यक्तिगत आय में से व्यक्तिगत प्रत्यक्ष करों को घटा दिया जाता है।

नोट :

- ♦ भारत की राष्ट्रीय आय का प्रथम आंकलन 1867–68 में दादाभाई नौरोजी द्वारा किया गया था।
- ♦ वर्तमान में भारत सरकार का केन्द्रीय सांख्यिकी संगठन (CSO) भारत की राष्ट्रीय आय की गणना करता है।

भारत की राष्ट्रीय आय में क्षेत्रवार योगदान :

1. प्राथमिक क्षेत्र

कृषि, वानिकी, मत्स्य, खनन

2. द्वितीयक क्षेत्र

निर्माण एवं विनिर्माण

3. तृतीयक क्षेत्र

- व्यापार, परिवहन, संचार, बैंक, बीमा, वास्तविक जायदाद, सामाजिक सामुदायिक एवं वैयक्तिक सेवाएँ।
- योजनाकाल के 53 वर्षों के बाद राष्ट्रीय आय में प्राथमिक क्षेत्र का योगदान कम हुआ है तथा द्वितीयक एवं तृतीयक क्षेत्रों का योगदान बढ़ा है। वर्तमान में तृतीयक क्षेत्र सर्वाधिक, उसके बाद द्वितीय क्षेत्र और फिर प्राथमिक क्षेत्र का योगदान है।

राष्ट्रीय जनगणना–2011 के सम्बन्ध में

राष्ट्रीय जनगणना–2011 भारत की 15वीं (1872 ई. से प्रारम्भ) एवं स्वतंत्र भारत की 7वीं जनगणना है। 31 मार्च, 2011 को **'हमारी जनगणना हमारा भविष्य'** (Our Census Out Future) शीर्षक वाक्य के साथ जनगणना 2011 के अनंतिम आंकड़ों को गृहसचिव **जी.के. पिल्लै** की उपस्थिति में महापंजीयक व जनगणना आयुक्त (Registrar General and Census Commissioner) **सी. चन्द्रमौलि** ने जारी किया। जनगणना का कार्य दो चरणों में सम्पन्न किया गया। **प्रथम चरण** में **गृह सूचीकरण एवं आवासीय जनगणना** (House listing & Housing Census) कका कार्य 1 अप्रैल से 30 सितम्बर, 2010 के मध्य किया गया। जबकि **दूसरे चरण** में **जनसंख्या प्रगणन** (Population Enumeration) का कार्य 9 फरवरी, 2011 से 28 फरवरी, 2011 के मध्य की गयी। **संदर्भ तिथि** (Reference Date) 1 मार्च, 2011 की मध्य रात्रि (0.00 Hours) है। **बर्फ–अवरुद्ध** (Snow-bound) **क्षेत्रों** (जम्मू कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और उत्तराखण्ड के कुछ क्षेत्र) की जनगणना के प्रगणन का कार्य 11 सितम्बर से 30 सितम्बर, 2010 के बीच किया गया जिसकी **संदर्भ तिथि 1 अक्टूबर, 2010 की मध्य रात्रि** (0.00 Hours) रही।

समीर प्लाजा, मनमोहन पार्क, कटरा, बांसमण्डी के सामने, इलाहाबाद
फोन नं. : 0532.3266722, 9956971111, 9235581475
{जहाँ सेलेक्शन एक जिद है.}

भारतीय अर्थव्यवस्था : महत्वपूर्ण तथ्य

By : *Subhash Paul*

राष्ट्रीय आय

- वर्ष 2011–12 के लिए सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में 2004–05 की कीमतों पर वृद्धि दर का अग्रिम अनुमान 6.9% का लगाया गया है।
- 11वीं पंचवर्षीय योजना (2007–12) के दौरान 9% वार्षिक विकास का लक्ष्य निर्धारित कियागया था, किन्तु उपादान लागत पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद 2004–05 की कीमतों पर वृद्धि का वास्तविक अनुमान 7.9% का है।
- चालू मूल्य स्तर पर 2010–11 में प्रति व्यक्ति आय 53331 रुपए आकलित की गई है, जबकि 2011–12 के लिए अग्रिम अनुमान 60972 रुपए का लगाया गया है।
- विश्व विकास रिपोर्ट 2011 के अनुसार वर्ष 2009 में भारत की प्रति व्यक्ति आय 1180 डॉलर थी।
- केन्द्रीय सांख्यिकीय संगठन के त्वरित अनुमानों के अनुसार 2004–05 मूल्य स्तर पर 2010–11 में भारत में 'साधन लागत पर शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद' अर्थात् राष्ट्रीय आय (Net National Product at Factor Cost or National Income) 4268715 करोड़ रुपए अनुमानित किया गया है।
- 2009–10 की स्थिति के अनुसार चालू कीमतों पर सर्वाधिक प्रति व्यक्ति आय (132719 रुपए) वाला राज्य गोवा है।
- 2009–10 की स्थिति के अनुसार चालू कीमतों पर प्रति व्यक्ति आय (120912 रुपए) वाला केन्द्रशासित प्रदेश चण्डीगढ़ है।
- वित्तीय वर्ष 2009–10 में देश में आर्थिक वृद्धि दर 4% से 5% के बीच रहने का पूर्वानुमान विश्व बैंक, ADB व OECD (Organisation for Economic Cooperation and Development) आदि ने व्यक्त किया था। IMF ने 2010 के दौरान भारत की अर्थव्यवस्था की आर्थिक वृद्धि दर 9.7% आकलित की थी। वर्ष 2011 के लिए 7.75% की अनुमानित की गई है, जबकि वर्ष 2012 में सम्भावित वृद्धि दर का पूर्वानुमान 7.5% का लगाया गया है।
- वर्ष 2010–11 के दौरान GDP में कृषि, उद्योग तथा सेवा क्षेत्र का योगदान क्रमशः 14.5%, 27.8% तथा 57.7% अनुमानित है। आर्थिक समीक्षा 2011–12 के अनुसार 2011–12 के अग्रिम अनुमानों में कृषि और सम्बद्ध क्षेत्र का हिस्सा 2004–05 की कीमतों पर GDP का 13.9% अनुमानित किया गया है, जबकि उद्योग तथा सेवा क्षेत्र का हिस्सा क्रमशः 27 प्रतिशत तथा 59 प्रतिशत रहा है।

कृषि

- भारत की मुख्य खाद्य फसल चावल है।
- वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार देश में लगभग 52% लोगों को कृषि क्षेत्र में रोजगार मिला हुआ। वर्ष 2011–12 के दौरान GDP में कृषि क्षेत्र का अंश 13.9% अनुमानित किया गया था। प्राथमिक क्षेत्र में केवल कृषि का हिस्सा 12.3% वानिकी और मत्स्यिकी का हिस्सा क्रमशः 1.5% तथा 0.7% है।
- वर्ष 2010–11 के अनुमानों में खाद्यान्न उत्पादन का 244.78 मि. टन का अनुमान लगाया गया था, जबकि 2011–12 के तृतीय अग्रिम अनुमान 252.56 मिलियन टन है।
- देश में हरित क्रान्ति 1960 के दशक के मध्य (2006–07) से प्रारम्भ हुई मानी जाती है।
- हरित क्रान्ति के परिणामस्वरूप कुल खाद्यान्न उत्पादन में गेहूँ का भाग काफी बढ़ गया है, चावल का भाग लगभग स्थिर रहा है, जबकि मोटे अनाज व दालों के भाग घटे हैं।
- कृषि क्षेत्र की औसत विकास दर 2007–08 में 5.8%, 2008–09 में (–) 0.1%, 2009–10 में 0.4% तथा वर्ष 2010–11 में 7% अनुमानित की गई है। 11वीं योजना की लक्षित वार्षिक औसत 4% की दर प्राप्त करने के लिए 2011–12 में 8.5% की वृद्धि दर प्राप्त करने की आवश्यकता थी, किन्तु यह दर 2.5% ही अनुमानित की गई है।
- वर्ष 2010 में खाद्यान्नों की प्रति व्यक्ति उपलब्धता 438.6 ग्राम प्रति दिन थी जिसमें 31.6 ग्राम दालें व 407 ग्राम अनाज था।
- भारत में उत्पादित तिलहनों में 9 प्रमुख तिलहन हैं– मूँगफली, सरसों और तोरिया, सोयाबीन, सूरजमुखी, तिल (Sesamum), अरण्डी (Castor), नाइजर (Niger), अलसी (Linseed) और कुसुम्ब (Safflower)।
- भारत में सोयाबीन का **सर्वाधिक उत्पादन मध्य प्रदेश** में होता है।
- उपलब्ध आँकड़ों के अनुसार **विश्व में चीनी का सर्वाधिक उत्पादन ब्राजील** में व **सर्वाधिक खपत भारत** में होती है।
- भारत में **गेहूँ का सर्वाधिक उत्पादन उत्तर प्रदेश** में होता है। दूसरे व तीसरे स्थान पर क्रमशः पंजाब व हरियाणा है।
- **चावल का सर्वाधिक उत्पादन करने वाला राज्य प. बंगाल है।** दूसरे व तीसरे स्थान पर क्रमशः उत्तर प्रदेश व पंजाब है।
- **मोटे अनाज का सर्वाधिक उत्पादन राजस्थान** में होता है। दूसरे व तीसरे स्थान पर क्रमशः महाराष्ट्र और कर्नाटक है।
- **दालों का सर्वाधिक उत्पादन मध्य प्रदेश** में होता है। दूसरे व तीसरे स्थान पर क्रमशः उत्तर प्रदेश व राजस्थान है।
- कुल **तिलहनों का सर्वाधिक उत्पादक राज्य गुजरात** है। मध्य प्रदेश और राजस्थान क्रमशः दूसरे और तीसरे स्थान पर हैं।
- काली चाय के उत्पादन एवं उपभोग में **भारत का विश्व में प्रथम** स्थान है।
- **भारत विश्व में चाय का सबसे बड़ा उत्पादक और उपभोक्ता देश** है और यहाँ विश्व उत्पादन का 27% उत्पादन और विश्व व्यापार का 13% व्यापार होता है। चाय का निर्यात घरेलू उत्पादन का लगभग 20% है।

- नारियल के उत्पादन, उपभोग तथा निर्यात में भारत का विश्व में पहला स्थान है, जबकि प्रति हेक्टेयर उत्पादकता के मामले में मैक्सिको का पहला स्थान है। भारत का प्रति हेक्टेयर नारियल उत्पादन में चौथा स्थान है।
- विश्व के कुल कॉफी उत्पादन के 4.0 प्रतिशत भाग का उत्पादन भारत में होता है तथा भारत का छठवाँ स्थान है।
- भारत में कॉफी के कुल उत्पादन का 56.5% केवल कर्नाटक राज्य में होता है।
- भारत 2010 में प्राकृतिक रबड़ के विश्व उत्पादन में 8.2% हिस्से के साथ चौथा सबसे बड़ा उत्पादन देश हैं तथा दूसरा सबसे बड़ा उपभोक्ता बनकर उभरा है।
- 2009–10 के आँकड़ों के अनुसार देश में रबड़ की प्रति हेक्टेयर उत्पादकता 1143 किग्रा. है, जशेकि विश्व में सर्वाधिक है। केरल रबड़ उत्पादक राज्यों में प्रमुख है। जहाँ देश का 90% रबड़ उत्पादन होता है। विश्व में रबड़ उत्पादन में थाइलैण्ड का प्रथम स्थान है। प्राकृतिक रबड़ के लिए देश की माँग का लगभग 97% घरेलू उत्पादन से पूरा किया जाता है। 2011–12 में प्राकृतिक रबड़ उत्पादन 9.77 लाख टन अनुमानित है।
- 1998 से भारत विश्व का पहला सबसे बड़ा दूध उत्पादक राष्ट्र हो गया है। 1950–51 में भारत में दूध का उत्पादन 17 मिलियन टन था, जो 2010–11 में 121.8 मिलियन टन हो गया।
- 1950–2011 की अवधि में भारत में दूध की प्रति व्यक्ति उपलब्धि 124 ग्राम प्रतिदिन से बढ़कर 281 ग्राम प्रतिदिन हो गई है, जबकि न्यूनतम आवश्यकता 211 ग्राम प्रतिदिन है। पंजाब में प्रति व्यक्ति दूध की उपलब्धता सर्वाधिक 800 ग्राम है। विश्व में दूध की प्रति व्यक्ति उपलब्धता 265 ग्राम प्रतिदिन प्रति व्यक्ति अनुमानित की गई है। इसी अवधि में अण्डों की प्रति व्यक्ति उपलब्धि 10 प्रतिवर्ष से बढ़कर 42 प्रतिवर्ष हो गई है।
- बृहद् फसल बीमा योजना (Comprehensive Crop Insurance Scheme) अप्रैल 1985 में प्रारम्भ की गई थी। रबी 1999–2000 से इस योजना की जगह राष्ट्रीय कृषि बीमा योजना प्रारम्भ की गई है।
- जनवरी 2012 में केन्द्रीय मूलय में वास्तविक स्टॉक गेहूँ का 25.68 मिलियन टन तथा चावल का 29.72 मिलियन टन था, जो उनके न्यूनतम बफर स्टॉक मानक क्रमशः 11.2 मि. टन तथा 13.8 मि. टन से अधिक था।
- भारत विश्व में सब्जियों का सबसे बड़ा उत्पादक राष्ट्र और फलों का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक राष्ट्र है।
- भारत विश्व में मछली का तीसरा सबसे बड़ा उत्पादक और मत्स्य पालन का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक देश हैं मत्स्यिकी क्षेत्र देश में 11 लाख से अधिक लोगों को रोजगार प्रदान करता है।
- फरवरी, 2004 में सरकार ने राष्ट्रीय कृषक आयोग गठित किया था।
- कृषि को संस्थागत ऋणों के प्रवाह में सबसे बड़ा हिस्सा 61% वाणिज्यिक बैंकों का, उसके बाद सहकारी बैंक (28%) तथा क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक (11%) है। वर्ष 2011–12 के दौरान 475000 करोड़ रुपए के कृषि ऋण के लक्ष्य के विरुद्ध वास्तविक ऋण वितरण नवम्बर 2011 तक 294023 करोड़ रुपए का रहा है।
- विश्व में तम्बाकू का सबसे बड़े उत्पादक व उपभोक्ता राष्ट्र चीन में 1 मई, 1997 से सार्वजनिक स्थानां पर धूम्रपान निषिद्ध किया हुआ है।
- उत्तर प्रदेश में फलोत्पादन में क्रान्ति लाने के लिए राज्य का पहला उद्यान शोध केन्द्र मथुरा में स्थापित किया जाएगा।
- अण्डों के उत्पादन में भारत का विश्व में पाँचवाँ स्थान है। यहाँ प्रति वर्ष लगभग 63 अरब अण्डों का उत्पादन होता है। अण्डा उत्पउदन में विश्व के पहले तीन राष्ट्र क्रमशः अमरीका, चीन का ब्राजील है।
- विश्व में अफीम का सर्वाधिक उत्पादन अफगानिस्तान में होता है, जहाँ शेष विश्व की तीन गुना अफीम उत्पन्न होती है।
- किसानों को अपनी उपज का बेहतर मूलय प्राप्त होने तक उपज को रोकने में सक्षम बनाने के लिए कॉर्पोरेशन बैंक द्वारा 'क्रॉप एग्रीकल्चर प्रोड्यूस लोन' नामक एक कृषि ऋण योजना 1 अप्रैल, 2005 को प्रारम्भ की गई थी।

उद्योग

- औद्योगिक उत्पादन सूचकांक का आधार वर्ष 1993–94 से बदलकर जून 2011 में 2004–05 कर दिया गया है।
- 1993–94 के आधार वर्ष वाले सूचकांक में केवल 538 उत्पादों का समावेश था, किन्तु नए 1993–94 आधार वर्ष वाले सूचकांक में 682 उत्पादों का समावेश है।
- 682 उत्पादों वाले नए औद्योगिक उत्पादन सूचकांक में विनिर्माणी क्षेत्र से 620, खनन क्षेत्र से 61 तथा विद्युत् क्षेत्र से 1 उत्पाद को सम्मिलित किया गया है।
- सूक्ष्म औद्योगिक इकाइयों (Micro Enterprises) के लिए निवेश की सीमा 25 लाख रुपए निर्धारित की गई है।
- लघु औद्योगिक इकाइयों में उन इकाइयों को सम्मिलित किया जाता है, जिनमें प्लांट व मशीनरी में विनियोग 5 करोड़ रुपए तक निर्धारित है। मध्यम उद्यम वाली इकाइयों के ालिए यह सीमा 5 करोड़ रुपए से अधिक तथा 10 करोड़ रुपए तक रखी गई है।
- सेवा क्षेत्र में अधिकतम 10 लाख रुपए तक के निवेश की इकाई ही सूक्ष्म उपक्रम (Micro Enterprises) के रूप में रखी गई है, जबकि लघु उपक्रम इकाई के लिए यह निवेश सीमा 10 लाख रुपए से 2 करोड़ रुपए तथा मध्यम उपक्रम इकाई के लिए 2 करोड़ रुपए से 5 करोड़ रुपए तक रखी गई है।
- वर्तमान समय में गुजरात राज्य में 112 सूती वस्त्र मिलें हैं, जिनमें से अकेले अहमदाबाद में 66 मिलें हैं। इसे पूर्व का वोस्टन कहा जाता है। महाराष्ट्र राज्य में 104 मिलें हैं, जिनमें से 54 मिलें अकेले मुम्बई में हैं। मुम्बई को सूती वस्त्रों की राजधानी (Cottonopolis) कहा जाता है। कानपुर शहर में सूती वस्त्र की 10 मिलें हैं, जिसे उत्तर भारत का मानचेस्टर कहा जाता है।
- सूती वस्त्र उद्योग मुख्यतः कपास (सफेद सोना) की पूर्ति पर ही निर्भर करता है। कपास उत्पादन के मामले में भारत विश्व में चौथे स्थान पर है और कपास के अन्तर्गत क्षेत्रफल क्षेत्र की दृष्टि से प्रथम स्थान पर पहुँच गया है। देश में कुल कपास उत्पादन की 40% खपत सरकारी मिलों में ही होती है। देश में कपास का उत्पादन गुजरात में सबसे अधिक होता है।

समीर प्लाजा, मनमोहन पार्क, कटरा, बांसमण्डी के सामने, इलाहाबाद
फोन नं. : 0532.3266722, 9956971111, 9235581475
{जहाँ सेलेक्शन एक जिद है.}

- लघु औद्योगिक इकाइयों की संख्या 2006–07 में 128.4 लाख थी, जिनमें से 20.32 लाख पंजीकृत तथा 108.12 लाख अपंजीकृत थी।
- औद्योगिक एवं वित्तीय पुनर्निर्माण बोर्ड (BIFR) की स्थापना बीमार औद्योगिक कम्पनी अधिनियम 1985 के अन्तर्गत की गई थी। बोर्ड ने 15 मई, 1987 से कार्य करना प्रारम्भ कर दिया था।
- सरकार ने लघु उद्योग क्षेत्र की वित्त सम्बन्धी एवं रुग्णता सम्बन्धी समस्याओं के मूलयांकन के लिए नायक समिति का गठन किया था, जिसने सितम्बर 1992 में अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की थी।
- वर्ष 2007–08 में GDP और रोजगार में पर्यटन का योगदान क्रमशः 5.92% और 9.24% था।
- वर्तमान में निम्नलिखित 3 उद्योगों को सार्वजनिक क्षेत्र के लिए आरक्षित रखा गया है। (1) परमाणु ऊर्जा, (2) रेल परिवहन, (3) परमाणु ऊर्जा की अनुसूची में निर्दिष्ट खनिज। 9 मई, 2001 के मंत्रिमण्डलीय निर्णय के अनुसार सरकार ने सुरक्षा उत्पादन के क्षेत्र में निजी क्षेत्र के प्रवेश की अनुमति प्रदान कर दी है, जिसके लिए कम्पनी को रक्षा मंत्रालय से लाइसेन्स लेना होता है।
- वर्तमान में निम्नलिखित 5 उद्योगों को अनिवार्य लाइसेन्स की परिधि में रखा गया हैं (1) एल्कोहॉलयुक्त पेयों का आसवन व मद्यीकरण (Distillation and brewing of alcoholic drinks), (2) तम्बाकू के सिगार व सिगरेट तथा तैयार तम्बाकू के अन्य विकल्प, (3) इलेक्ट्रॉनिक, एयरोस्पेस व रक्षा उपकरण सभी प्रकार के, (4) दियासलाइयों सहित औद्योगिक विस्फोटक, (5) खतरनाक रसायन (Hazardous Chemicals)।
- लघु उद्योग क्षेत्र में निर्माण के लिए पूर्णतया आरक्षित मदों की कुल संख्या 13 मार्च, 2007 को 114 रह गई थी। 79 मदों को 5 फरवरी, 2008 की एक अधिसूचना के तहत् अनारक्षित किया गया था, जिनके फलस्वरूप यह संख्या घटकर 35 रह गई थी। अक्टूबर 2008 में 14 मदों को अनारक्षित कर दिया गया था। अतः अक्टूबर, 2008 में इनकी संख्या घटकर मात्र 21 रह गई थी।
- सिडबी (SIDBI) द्वारा अप्रैल 2004 से 10000 करोड़ रुपए की लघु एवं मध्यम उद्यम (SME) निधि का प्रचालन आरम्भ कर दिया गया हैं
- क्रेडिट लिंक्ड कैपीटल सब्सिडी स्कीम के तहत् 29 सितम्बर, 2005 से लघु उद्योग क्षेत्र के लिए ऋण सीमा 40 लाख रुपए से बढ़ाकर 1 करोड़ रुपए कर दी है तथा इसमें सब्सिडी की दर 12% से बढ़ाकर 15% कर दी है।
- देश के कुल विनिर्मित औद्योगिक उत्पादन में लगभग 45 प्रतिशत उत्पादन लघु उद्योग क्षेत्र का है। देश के कुल निर्यातों में लगभग 35 प्रतिशत भाग लघु उद्योग क्षेत्र का हैं
- जहाँ तक लाइसेन्स का प्रश्न है लघु उद्योग क्षेत्र को अब पूर्णरूप से विनियन्त्रित (Deregulated) कर दिया गया हैं
- जापान के सहयोग से गुड़गाँव जिले के मनेसर गाँव में एक आदर्श औद्योगिक टाउनशिप (Industrial Model Township) स्थापित किया जा रहा है। इस पर 1998 करोड़ रुपए की लागत का अनुमान लगाया गया है।
- भारत में डीजल इंजन बनाने का पहला कारखाना 1932 में सतारा (महाराष्ट्र) में खोला गया।
- भारत में साइकिलें बनाने का पहला कारखाना 1938 में कोलकाता (कलकत्ता) में खोला गया। साइकिलों के उत्पादन में भारत का अब विश्व में तीसरा स्थान है। प्रतिवर्ष लगभग 90 लाख साइकिलों का उत्पादन भारत में होता है।

पर्यटन

- भारत पर्यटन विकास निगम की स्थापना एक सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम के रूप में 1 अक्टूबर, 1966 को की गई थी।
- पर्यटन विश्व का सबसे बड़ा निर्यात उद्योग है। कुल विश्व निर्यात में पर्यटन का हिस्सा 12.2% तथा वैश्विक रोजगार में 8.1% है।
- पर्यटन विभाग प्रचालनरत् होटलों का स्टार प्रणाली के अन्तर्गत 6 श्रेणियों, 1 स्टार से 5 स्टार डीलक्स तक तथा हाल ही में चालू की गई हैरिटेज होटल रेणी में वर्गीकरण करता है।
- 1950 से पहले निर्मित हवेलियों, दुर्गों, किलों और निवास स्थानों में प्रचालनरत् होटलों के लिए हैरिटेज होटल की एक नई वर्गीकरण श्रेणी प्रारम्भ की गई है।
- दिल्ली, आगरा व जयपुर की तर्ज पर चेन्नई, बंगलौर व त्रिवेन्द्रम को पर्यटन की दृष्टि से 'गोल्डन ट्राइएंगल' के रूप में विकसित करने का विचार केन्द्र सरकार के विचाराधीन है।
- देश में पर्यटन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से विदेशी पर्यटकों हेतु 'आगमन वीसा' (Visa on Arrival) योजना प्रारम्भ की गई है।
- भारत आने वाली विदेशी पर्यटकों में अधिकांश पश्चिमी यूरोप (31%), उत्तरी अमरीका (18%) व दक्षिणी एशिया (27.4%) से आते हैं।
- वर्ष 2006 में विश्व पर्यटन में भारत का हिस्सा लगभग 0.53% रहा था।

आयात निर्यात

- वैश्विक वस्तुओं तथा सेवाओं के व्यापार में भारत के विदेशी व्यापार का अंश 2004 में 1.0% था, जो 2010 में 1.5% हो गया। जनवरी–जून 2011 में यह बढ़कर 1.9% हो गया।
- निर्यातों हेतु सुदृढ़ आधारित संरचना उपलब्ध कराने के उद्देश्य से प्रथम 'ट्रेड पॉइन्ट' की स्थापना नई दिल्ली में 16 अगस्त, 1994 को की गई थी।
- छत्तीसगढ़ में पहले सॉफ्टवेयर टेक्नोलॉजी पार्क की स्थापना रायपुर जिले में भिलाई में की गई है। इसका उद्घाटन 28 फरवरी, 2002 को कियागया था। यह देश का 25वाँ सॉफ्टवेयर टेक्नोलॉजी पार्क था।
- अप्रैल–दिसम्बर, 2011 में भारत के पेट्रोलियम आयात 73.734 अरब डॉलर के रहे हैं। वर्ष 2011–12 के दौरान पेट्रोलियम, तेल और स्नेहक के आयात 155.6 बिलियन डॉलर के रहे हैं।
- दालों के उत्पादन में भारत का विश्व में पहला स्थान होने के बावजूद प्रतिवर्ष लगभग 20 लाख टन दालों का आयात किया जाता है।
- शुद्ध विदेशी मुद्रा उपार्जन में सर्वाधिक योगदान कपड़ा उद्योग का है, क्योंकि इसके निर्यातों के लिए आयातों पर निर्भरता बहुत कम है।

- व्यक्तिगत राष्ट्रों की दृष्टि से भारत का सर्वाधिक विदेशी व्यापार संयुक्त राज्य अमरीका के साथ है।
- अमरीका के साथ भारत का व्यापार शेष अधिकांशतः भारत के पक्ष में ही रहता है।
- वर्ष 1994–95 में रुपए को चालू खाते में पूर्ण परिवर्तनीय घोषित कर दिया गया।
- भारत के हस्तशिल्प (रत्न एवं आभूषण के अतिरिक्त) का सर्वाधिक निर्यात अमरीका को किया जाता है।
- देश के निर्यातों में वृद्धि लाने के लिए 'टारगेट प्लस' नामक एक नई योजना 2005–06 के दौरान आरम्भ की गई थी, जिसे 2006–07 के बजट में समाप्त कर दिया गया था।
- वर्ष 2010–11 की निर्यात संरचना में जिस समूहों की हिस्सेदारी थी– प्राथमिक उत्पादन (कृषि, अयस्क और खनिज) 13.9%, विनिर्मित वस्तुएँ 68%, पेट्रोलियम कच्चा तेल उत्पाद (कोयला सहित) 16.8% तथा अन्य 1.2%।
- वर्ष 2010–11 में भारत का मुख्य व्यापारिक साझेदार संयुक्त राज्य अमरीका था जिसकी निर्यात में हिस्सेदारी 11.9% थी तथा कुल आयात में हिस्सेदारी 5.1% थी।
- अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष के प्रकाशन, विश्व आर्थिक परिदृश्य अप्रैल 2009 के अनुसार वर्ष 2008 के दौरान भारत के चालू खाते का शेष GDP के– 2.8% अनुमानित कियागया था, जबकि चीन (10%), रूस (6.1%), फिलीपीन्स (2.1%), सिंगापुर (25.7%) आदि देशों में यह आधिक्य के रूप में था।
- 11 सितम्बर, 2001 की घटना के बाद अमरीका नु सुपर–301 व स्पेशल–301 सूचियों के पुनर्निरीक्षण में भारत को दोनों ही निगरानी सूचियों में बाहर कर दिया था, किन्तु हाल में ही भारत का नाम संयुक्त राज्य अमरीकी व्यापार प्रतिनिधि (USTR) की 15 देशों की उस सूची में शामिल किया गया है जिन्हें प्राथमिकता के साथ निगरानी वाली सूची (Priority Watch List) में शामिल किया गया है। इसका कारण स्पेशल–301 के प्रावधान के अनुसार व्यवस्था का अभाव बताया गया है।

परिवहन एवं दूरसंचार

- भारत में प्रथम रेलगाड़ी मुम्बई से थाणे तक (34 किमी. की दूरी तक) 1853 में चलाई गई थी।
- भारत में रेलवे स्टेशनों की संख्या 31 मार्च, 2009 को 7030 थी।
- भारत में रेलवे 17 क्षेत्रों (Zones) में विभाजित है, जिसमें से उत्तरी क्षेत्र (मुख्यता– नई दिल्ली) का रूट किलोमीटर सबसे अधिक अधिक है।
- भारतीय रेलवे तीन प्रकार की लाइनों का प्रयोग करती है। ये हैं– ब्रॉड गेज (1,676 मिमी.), मीटर गेज (1,000 मिमी.) तथा नैरों गेज (762 मिमी. व 610 मिमी.)। भारत के कुल रेल नेटवर्क (64015 रूट किमी.) में ब्रॉड गेज (52808 रूट किमी.), मीटर गेज (8473 रूट किमी.) और नैरो गेज (2734 रूट किमी.) का रेलमार्ग है।
- वर्ष 2006–07 को रेलवे बजट में मुस्कान के साथ सेवा वर्ष के रूप में प्रस्तुत किया गया, बकि वर्ष 2007–08 को स्वच्छता वर्ष के रूप में मनाया गया था।
- राष्ट्रीय राजमार्गों की लम्बाई कुल सड़क मार्ग का 2 प्रतिशत से भी कम है, किन्तु इन पर कुल सड़क यातायात का 40 प्रतिशत आवागमन होता है।
- वर्तमान में यात्री यातायात में सड़क यातायात का हिस्सा लगभग 85 प्रतिशत तथा माल ढुलाई यातायात में लगभग 70 प्रतिशत है।
- राज्यों में सड़क मार्ग की लम्बाई में प्रथम स्थान महाराष्ट्र का है।
- विश्व का सबसे बड़ा यात्री विमान एयर बस A–380 है, जो प्रदर्शन के लिए 6–9 मई, 2007 के दौरान भारत में रहा। यह प्रदर्शन उड़ान किंगफिशर एयरलाइन्स द्वारा प्रायोजित थी।
- अन्तर्राष्ट्रीय विमान सेवाएं एयर इण्डिया द्वारा प्रदान की जाती हैं, जबकि इण्डिया एयरलाइन्स घरेलू विमान सेवा प्रदान करने वाली मुख्य एजेन्सी है। इण्डियन एयरलाइन्स 19 पड़ोसी राष्ट्रों के लिए भी विमान सेवा संचालित करती हैं।
- एशियाई विकास बैंक की सहायता से चेन्नई के निकट एक 'नया एन्नोर बन्दरगाह' (New Ennore Port) स्थापित किया गया है।
- भारत में मोटर वाहनों का सर्वाधिक निर्यात 'जवाहरलाल नेहरू बन्दरगाह' (J.N. Port) से किया जाता है।

आर्थिक नियोजन

- भारत में नियोजन की आवश्यकता के संदर्भ में एक पुस्तक 'Planned Economy for India' (भारत के लिए नियोजित अर्थव्यवस्था) सन् 1934 में प्रकाशित हुई थी। इस पुस्तक के लेखक सर एम. विश्वेश्वरैया थे।
- भारत में नियोजन की आवश्यकता व सम्भावना पर विचार करने के लिए भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने 1938 में एक 'राष्ट्रीय नियोजन समिति' का गठन किया था। पं. जवाहरलाल नेहरू इस समिति के अध्यक्ष थे।
- मुम्बई के आठ प्रमुख उद्योगपतियों द्वारा 1944 में एक योजना प्रस्तुत की गई, जो 'बॉम्बे प्लान' कहलाती है। तदुपरान्त 1944 में ही श्री मन्नारायण द्वारा 'गांधीवादी योजना', 1945 में श्रमिक नेता एम. एन. राय द्वारा 'जन योजना' (People's Plan) तथा 1950 में जयप्रकाश नारायण द्वारा 'सर्वोदय योजना' प्रस्तुत की गई।
- भारत में योजना आयोग का गठन 15 मार्च, 1950 को एक गैर–सांविधिक तथा परामर्शदात्री निकाय के रूप में किया गया।
- भारत के प्रधानमंत्री योजना आयोग के पदेन अध्यक्ष हैं।
- भारतीय संविधान में 'योजना आयोग' के गठन के लिए कोई उल्लेख नहीं है।
- राष्ट्रीय विकास परिषद् का गठन 6 अगस्त, 1952 को किया गया था।
- भारत की पहली पंचवर्षीय योजना 1 अप्रैल, 1951 से प्रारम्भ हुई।
- 1 अप्रैल, 2007 से ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना प्रारम्भ की गई थी।
- तीसरी पंचवर्षीय योजना (1961–66) तथा यौथी पंचवर्षीय योजना (1969–74) के बीच तीन वर्ष की अवधि को योजना अवकाश (Plan Holiday) की अवधि कहा जाता है। इस अवधि में तीन एकवर्षीय योजनाएं क्रियान्वित की गई।
- पाँचवीं पंचवर्षीय योजना (1974–79) को जनता पार्टी की सरकार द्वारा अपने निर्धारित समय से एक वर्ष पूर्व ही समाप्त घोषित करके छठी योजना (1978–83) लागू की गई थी, जिसे पुनः बदल दिया गया था।

समीर प्लाजा, मनमोहन पार्क, कटरा, बांसमण्डी के सामने, इलाहाबाद
फोन नं. : 0532.3266722, 9956971111, 9235581475
{जहाँ सेलेक्शन एक जिद है.}

- 1978–83 के लिए बनाई गई छठी योजना को अनवरत् योजना (Rolling Plan) का नाम दिया गया था।
- 1980 में कांग्रेस के केन्द्र में पुनः सत्तारूढ़ होने पर कांग्रेस सरकार ने 1978–83 की योजना के स्थान पर नई छठी पंचवर्षीय योजना (1980–85) लागू की थी।
- आठवीं पंचवर्षीय योजना भी दो वर्ष विलम्ब से प्रारम्भ हुई। सातवीं पंचवर्षीय योजना (1985–90) 31 मार्च, 1990 को अपनी पूर्ण समयावधि के बाद समाप्त हो गई थी।
- संशोधित नवीं पंचवर्षीय योजना (1997–2002) के दौरान (GDP) में औसत वार्षिक वृद्धि दर का संशोधित लक्ष्य 6.5% रखा गया था।
- दसवीं पंचवर्षीय योजना (2002–07) में 7.9 प्रतिशत वार्षिक विकास दर प्राप्त करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया था, किन्तु 7.7% प्राप्ति का अनुमान लगाया गया था।
- नौवीं योजना के प्रमुख उद्देश्य थे : पर्याप्त उत्पादक रोजगार पैदा करना, मूल्यों में स्थायित्व रखते हुए आर्थिक विकास की गति को तेज करना, समाज के कमजोर वर्गों के लिए भोजन एवं पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करना, स्वच्छ पेयजल, प्राथमिक स्वास्थ्य, सार्वभौमिक प्राथमिक शिक्षा एवं आवास जैसी मूलभूत–न्यूनतम सेवाएं प्रदान करना, जनसंख्या वृद्धि की दर को नियन्त्रित करना तथा आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के प्रयासों को सुदृढ़ करना।
- दसवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान वृद्धिमान पूँजी उत्पाद अनुपात (ICOR) 4.3 रहा जिसे ग्यारहवीं योजना के लिए 4.1 लक्षित किया गया था।
- आठवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान चालू खाते का घाटा जी.डी.पी. (बाजार मूल्य पर) के 1.6 प्रतिशत तक रखने का लक्ष्य था, किन्तु वास्तव में यह 1.1 प्रतिशत रहा।
- भारत की 12वीं पंचवर्षीय योजना (2012–17) के दृष्टिकोण पत्र (Approach Paper) को योजना आयोग की 20 अगस्त, 2011 की पूर्ण बैठक में स्वीकार किया गया था।
- 12वीं योजना में 9% वार्षिक वृद्धि दर का लक्ष्य दृष्टिकोण पत्र में प्रस्तावित किया गया है। वैश्विक स्थिति में सुधार होने पर इसे 9.5% तक बढ़ाया जा सकता है।

राजस्व

- 2012–13 के बजट के अनुसार केन्द्र सरकार को प्राप्त होने वाले कर–राजस्व में सर्वाधिक योगदान निगम कर (21%) का है।
- 2005–06 के बजट में धारा 88 समाप्त करके इस वर्ग की छूटों को धारा 80C में सम्मिलित करके अधिकतम 1 लाख तक की बचतों को सीधे कर–योग्य आय में से घटाए जाने की घोषणा की गई थी जिसे आगामी 2006–07, 2007–08, 2008–09 तथा 2009–10 में भी लागू किया गया था। वर्ष 2010–11 के बजट में इस राशि के अतिरिक्त 20,000 रुपए के करमुक्त इन्फ्रास्ट्रक्चर बॉण्ड में निवेश की छूट भी दे दी गई थी। अतः यह राशि बढ़कर 1.20 लाख रुपए हो गई थी। इसे वर्ष 211–12 के लिए भी बजट में मान लिया गया था। वर्ष 2012–13 के बजट में 20,000 रुपए की राशि को समाप्त करके 80C के तहत् 100000 रुपए की राशि को ही रखा गया है।
- 2005–06 के बजट में वेतनभोगियों को मिलने वाली मानक कटौती समाप्त कर दी गई थी।

मुख्य बजट 2012–13 : विभिन्न घाटे GDP के % रूप में		
घाटा	**2011-12 (RE)**	**2012-13 (BE)**
राजस्व घाटा	4.4%	3.4%
राजकोषीय घाटा	5.9%	5.1%
प्राथमिक घाटा	2.8%	1.9%

- वर्ष 2012–13 के बजट में सेवा कर की दर 12% कर दी गई है।
- 2012–13 के बजट में सुरक्षा हेतु 193407 करोड़ रुपए का प्रावधान किया गया है।
- केन्द्र को सर्वाधिक निवल (Net) राजस्व की प्राप्ति सीमा शुल्कों से होती है। सीमा शुल्क से प्राप्त राजस्व का बँटवारा राज्यों को नहीं करना होता है।
- वित्त आयोग का गठन राष्ट्रपति द्वारा संविधान के अनुच्छेद 280 के तहत् किया जाता हैं
- स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् अब तक कुल 13 वित्त आयोग गठित किए जा चुके हैं।
- 13वें वित्त आयोग की सिफारिशें 2010–15 तक की अवधि के लिए की गई है।
- 13वें वित्त आयोग का गठन नवम्बर, 2007 में किया गया था। विजय केलकर को 13वें वित्त आयोग का अध्यक्ष बनाया गया। आयोग ने अपनी सिफरशिं सरकार को 30 दिसम्बर, 2010 को प्रस्तुत की थी। इसे सरकार ने 25 फरवरी, 2010 को लोक सभा में पेश किया था।
- कर ढाँचे में सुधार के लिए सुधार देने हेतु 'चेलैया समिति' कागठन अगस्त 1991 में किया गया था।
- चेलैया समिति ने गैर–कृषकों की 25 हजार रुपए से अधिक की वार्षिक कृषि आय पर आयकर लगाने की संस्तुति की थी।
- भारत का बाह्य ऋण जो मार्च 1992 के अन्त में GDP का 41% था, मार्च 2011 के अन्त में GDP का 17.8% होने का अनुमान है।

गरीबी, बेरोजगारी एवं रोजगारपरक कार्यक्रम

- भारत में गरीबी का आकलन पर्याप्त मात्रा में ऊर्जा उपभोग न कर पाने की क्षमता के आधार पर किया जाता है। उस व्यक्ति को निर्धनता की रेखा से नीचे माना जाता है, जो ग्रामीण क्षेत्रों में प्रतिदिन 2400 कैलोरी व शहरी क्षेत्रों में 2100 कैलोरी भोजन प्राप्त करने में असमर्थ है।
- सुरेश तेंदुलकर समिति ने निर्धनता रेखा के निर्धारण हेतु उपयोग व्यय को अधिकार माना है जिसके अनुसार 2004–05 में देश में 27% के स्थान पर 37% जनसंख्या को निर्धनता रेखा से नीचे माना है। ग्रामीण क्षेत्रों में यह अनुपात 41.8% पाया गया है, जो पहले 28.3% आकलित किया गया था।
- योजना आयोग के सदस्य डॉ. अभिजीत सेन के अध्ययन के अनुसार 2004–05 से 2009–10 के दौरान पाँच वर्षों में देश में निर्धनता अनुपात (Poverty Ratio) में जहाँ कमी आई, वहीं निर्धनों की संख्या में वृद्धि हुई है। वर्ष 2004–05 में देश की कुल 100 करोड़ जनसंख्या में 37 करोड़ लोग निर्धन थे, जबकि 2009–10 में 121 करोड़ की जनसंख्या में निर्धनों की संख्या 38.5 करोड़ आकलित की गई है। इस प्रकार 2004–05 में निर्धनता अनुपात 37.2% था, जबकि 2009–10 में यह 32% रह गया।

- निर्धनता रेखा के आकलन के लिए दो प्रकार की प्रश्नावली का उपयोग NSSO के 61वें चक्र के अन्तर्गत किया गया है। इनमें एक यूनीफॉर्म रिकॉल पीरिएड (URP) के उपभोग व्यय पर आधारित है, जबकि दूसरी मिक्सड रिकॉल पीरिएड (MRP) उपभोग आधारित है।
- URP आधारित आँकड़ों में निर्धनता की स्थिति की तुलना 1993–94 के आँकड़ों से की जा सकती है, जबकि MRP आँकड़ों की तुलना 1999–2000 के आँकड़ों से की जा सकती है।
- URP आँकड़ों के अनुसार राज्यों में निर्धनों की सर्वाधिक संख्या (5.90 करोड़) उत्तर प्रदेश में है।
- निर्धनों की निरपेक्ष संख्या के मामले में उत्तर प्रदेश का स्थान जहाँ सबसे ऊपर है, वहीं निर्धनता अनुपात के मामले में (कुल जनसंख्या में निर्धन जनसंख्या का प्रतिशत) ओडिशा (46.4%) का स्थान सर्वोच्च है।
- विश्व बैंक की 'विश्व विकास सूचक' शीर्षक से प्रकाशित रिपोर्ट के अनुसार विश्व में निर्धन लोगों की सर्वाधिक संख्या भारत में है। विश्व की 1.3 अरब निर्धन जनसंख्या का सर्वाधिक 36% भाग भारत में है। इन निर्धनों की आय 1 डॉलर प्रतिदिन से कम है।
- 2001 की जनगणना के अन्तिम आँकड़ों के अनुसार देश में कार्य सहभागिता दर (Work Participation Rate) अर्थात् कुल जनसंख्या के प्रतिशत के रूप में कुल श्रमिक 39.1 प्रतिशत थी।
- 2001 की जनगणना के अनुसार पुरुषों में कार्य सहभागिता दर 51.7 प्रतिशत तथा महिलाओं में 25.6 प्रतिशत थी।
- 3 दिसम्बर, 2005 को जवाहरलाल नेहरू राष्ट्रीय ग्रामीण रिन्यूबल मिशन प्रारम्भ किया गया।
- वर्ष 2009–10 के बजट में 50% से अधिक अनुसूचित जाति की जनसंख्या वाले गाँवों के लिए प्रधानमंत्री आदर्श गाँव योजना घोषित की गई थी। महिला साक्षरता के लिए राष्ट्रीय महिला साक्षरता मिशन की घोषणा भी 2009–10 के बजट में की गई थी।

मुद्रा, बैंकिंग एवं पूँजी बाजार

- यूरोपीय बैंकिंग प्रणाली पर आधारित देश में पहला बैंक एजेक्जेण्डर एण्ड कम्पनी द्वारा सन् 1770 में कोलकाता (कलकत्ता) में 'बैंक ऑफ हिन्दुस्तान' नाम से प्रारंभ किया गया था। यह बैंक सफल न हो सका।
- सरकार के वित्तीय सहयोग से निजी अंशधारियों द्वारा 1806 में बैंक ऑफ बंगाल, 1840 में बैंक ऑफ बॉम्बे तथा 1843 में बैंक ऑफ मद्रास की स्थापना की गई। यह तीनों बैंक प्रेसीडेन्सी बैंक कहलाते थे। प्रेसीडेन्सी बैंकों को 1862 तक कागजी नोट निर्गमन का अधिकार भी प्राप्त था।
- 1921 में तीनों प्रेसीडेन्सी बैंकों को मिलाकर इम्पीरियल बैंक ऑफ इण्डिया की स्थापना की गई।
- 1 जुलाई, 1955 को इम्पीरियल बैंक का आंशिक राष्ट्रीयकरण करके उसका नाम स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया कर दिया गया। वर्तमान में स्टेट बैंक देश का सबसे बड़ा व्यापारिक बैंक है।
- पूर्णरूप से पहला भारतीय बैंक 'पंजाब नेशनल बैंक' था। इसकी स्थापना 1894 में की गई थी।
- रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया भारत का केन्द्रीय बैंक (Central Bank) है। इसकी स्थापना 1 अप्रैल, 1935 को की गई थी। इसका मुख्यालय मुम्बई में है। रिजर्व बैंक का राष्ट्रीयकरण 1 जनवरी, 1949 को किया गया था। डॉ. डी. सुब्बाराव RBI के वर्तमान गवर्नर हैं।
- देश के 14 बड़े व्यापारिक बैंकों का राष्ट्रीयकरण 19 जुलाई, 1969 को किया गया था। बाद में 15 अप्रैल, 1980 को 6 अन्य व्यापारिक बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया गया। सितम्बर, 1993 में न्यू बैंक ऑफ इण्डिया का विलय पंजाब नेशनल बैंक में कर दिए जाने के परिणामस्वरूप देश में राष्ट्रीयकृत वाणिज्यिक बैंकों की संख्या 20 से घटकर 19 ही रह गई।
- 19 जुलाई, 1969 को उन बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया गया था, जिनके पास कुल जमाएं (Deposits) 50 करोड़ रुपए से अधिक की थी। 15 अप्रैल, 1980 को 200 करोड़ रुपए से अधिक की जमाओं वाले बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया गया।
- अनुसूचित व्यापारिक बैंक उन बैंकों को कहा जाता है। जिनका नाम 1934 के रिजर्व बैंक अधिनियम की दूसरी अनुसूची में सम्मिलित कर लिया गया है।
- जून 2011 के अन्त तक की स्थिति के अनुसार देश में अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों की शाखाओं की कुल संख्या 90775 थी, जिसमें से ग्रामीण क्षेत्रों का प्रतिशत 37.2 है।
- क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों की स्थापना 1975 से की गई। सिक्किम और गोआ को छोड़कर देश के सभी राज्यों में क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक कार्यरत हैं। इनकी कुल संख्या 196 से घटकर 31 मार्च, 2006 को 133 रह गई थी। 31 अगस्त, 2006 तक 134 क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों (RRBs) को मिलाकर 42 नए बैंक गठित किए गए हैं। इन बैंकों को 16 राज्यों में 18 बैंकों ने प्रायोजित किया है। अब RRBs की संख्या 196 से घटकर 82 रह गई है। विलय प्रक्रिया अभी जारी है। वर्तमान में यह संख्या 31 है।
- लघु औद्योगिक इकाइयों के लिए वित्त व्यवस्था करने के उद्देश्य से 2 अप्रैल, 1990 को भारतीय लघु औद्योगिक विकास बैंक (Small Industrial Development Bank of India–SIDBI) की स्थापना की गई थी। इसका मुख्यालय लखनऊ में है।
- भारतीय औद्योगिक पुनिर्माण बैंक (Industrial Reconstrution Bank of India–IRBI) की स्थापना 20 मार्च, 1985 को की गई थी। इसका मुख्य उद्देश्य रुग्ण तथा बन्द पड़ी औद्योगिक इकाइयों के पुनर्निर्माण हेतु वित्त उपलब्ध कराना है। इस बैंक का मुख्यालय कोलकाता में है।
- भारत में सामान्य बीमा (General Insurance) व्यवसाय का राष्ट्रीयकरण 1971 में किया गया तथा भारतीय सामान्य बीमा निगम (General Insurance Corporation of India) की स्थापना नवम्बर 1972 में की गई थी।
- भारतीय सामान्य बीमा निगम के अन्तर्गत 4 सहायक कम्पनियाँ कार्यरत् हैं। इनके नाम इस प्रकार हैं– (1) नेशनल इंश्योरेन्स कम्पनी लि. (2) न्यू इण्डिया एश्योरेन्स कम्पनी लि. (3) ओरिएन्टल इंश्योरेन्स कम्पनी लि. तथा (4) यूनाइटेड इण्डियाइंश्योरेन्स कम्पनी लि.।
- भारतीय जीवन बीमा निगम (Life Insurance Corporation of India) की स्थापना 1 सितम्बर, 1956 को की गई थी।

समीर प्लाजा, मनमोहन पार्क, कटरा, बांसमण्डी के सामने, इलाहाबाद
फोन नं. : 0532.3266722, 9956971111, 9235581475
{जहाँ सेलेक्शन एक जिद है.}

- देश में कृषि एवं ग्रामीण विकास केलिए वित्त व्यवस्था करने हेतु शिखर संस्था नाबार्ड (NABARD–National Bank for Agricultural and Rural Development) है। नाबार्ड की स्थापना 12 जुलाई, 1982 को की गई थी।
- सुविधाजनक शर्तों पर आवास वित्त उपलब्ध कराने के उद्देश्य से राष्ट्रीय आवास बैंक (National Housing Bank–NHB) की स्थापना एक शिखर संस्था के रूप में जुलाई 1988 में की गई थी।
- आयात–निर्यात के लिए वित्ता व्यवस्था हेतु देश में शिखर संस्था निर्यात–आयात बैंक (EXIM Bank) है। इसकी स्थापना 1 जनवरी, 1982 को की गई थी।
- भारत में सहकारी बैंकों का संगठन त्रिस्तरीय है। राज्य स्तर पर राज्य सहकारी बैंक, जिला स्तर पर जिला सहकारी बैंक अथवा केन्द्रीय सहकारी बैंक तथा स्थानीय स्तर पर प्राथमिक सहकारी समितियाँ कार्य करती हैं।
- सहकारी बैंकों में राज्य सहकारी बैंकों को ही रिजर्व बैंक से पुनर्वित्त प्राप्त करने की सुविधा प्राप्त हैं।
- RBI ने एक हजार रुपए का नोट 22 वर्षों के अन्तराल के बाद 9 अक्टूबर, 2000 को जारी किया था।
- बैंक दर वह दर है जिस पर केन्द्रीय बैंक, बैंकों के प्रथम श्रेणी के बिलों की पुनर्कटौती (Rediscount) करता है। भारत में 17 अप्रैल, 2012 से बैंक दर 9.0 प्रतिशत है।
- खुले बाजार की क्रियाओं के अन्तर्गत देश का केन्द्रीय बैंक मान्यता प्राप्त सरकारी प्रतिभूतियों का क्रय–विक्रय खुले बाजार में करता है।
- नरसिंहम समिति ने अपनी सिफारिशों में सांविधिक तरलता अनुपात का उस समय के 38.5 प्रतिशत से धीरे–धीरे घटाकर अगले पाँच वर्षों में 25 प्रतिशत तक लाने की संस्तुति की थी।
- नरसिंहम समिति की सिफारिशों में देश में बैंकों का ढाँचा चार स्तरीय करने, निजी क्षेत्र में नए बैंक खोलने की अनुमति देने, बैंकों को शाखा विस्तार में स्वतन्त्रता देने, भविश्य में और बैंकों का राष्ट्रीयकरण न करने, रियायती ब्याज दरों की व्यवस्था समाप्त करने आदि की सिफारिशें शामिल थीं।
- बैंकों में ग्राहक सेवा सुधारने हेतु सुझाव देने के लिए गोइपोरिया समिति का गठन किया गया था। इस समिति ने अपनी रिपोर्ट 5 दिसम्बर, 1991 को सरकार को प्रस्तुत कर दी थी।
- शेयर घोटाले की जाँच हेतु रिजर्व बैंक द्वारा अप्रैल 1992 में जानकीरमन समिति का गठन किया था।
- निवेशकों के हितों की सुरक्षा व पूँजी बाजार के समुचित विनियमन के उद्देश्य से भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (Securities and Exchange Board of India–SEBI) की स्थापना अप्रैल, 1988 में की गई थी। 30 जनवरी, 1992 को राष्ट्रपति के एक अध्यादेश द्वारा इसे वैधानिक दर्जा प्रदान किया गया।
- 1970–71 से भारत में मुद्रा आपूर्ति की माप के लिए M_1, M_2, M_3 तथा M_4 का प्रयोग किया जाता है।
- M_1 के अन्तर्गत लोगों के पास नकद मुद्रा, बैंकों के पास माँग जमाएं तथारिजर्व बैंक के पास अन्य जमाएं शामिल की जाती हैं।
- M_2 की गणना के लिए M_1 में डाकघरों के पास बचत बैंक में जमाएं (Saving Deposits with the Post Offices) जोड़ी जाती है।
- M_3 ज्ञात करने के लिए M_1 में बैंकों की सावधि जमाएं (Time Deposits with Banks) जोड़ दी जाती है।
- M_4 मुद्रा आपूर्ति का सबसे विस्तृत माप है। इसमें M_3 के साथ–साथ डाकघरों की समस्त जमाएं सम्मिलित होती हैं।
- सरकारी प्रतिभूतियों का द्वितीयक बाजार विकसित करने के उद्देश्य से मई 1994 में भारतीय प्रतिभूति व्यापार निगम (Securities Trading Corporation of India–STCI) का गठन किया गया।
- शेयर मूल्यों में होने वाले परिवर्तनों को बेहतर तरीके से प्रदर्शित करने हेतु मुम्बई शेयर बाजार ने 27 मई, 1994 से दो नए शेयर मूलय सूचकांक बी.एस.ई.–200 तथा डॉलेक्स (Dollex) चालू किए थे। BSE–200 का ही डॉलर मूल्य में अन्य सूचकांक डॉलेक्स कहलाता है। इन सूचकांकों का आधार वर्ष 1989–90 है। BSE–200 में 200 चुनींदा कम्पनियों के शेयरों का समावेश किया गया है।
- ओवर दी काउण्टर एक्सचेन्ज ऑफ इण्डिया (OTCEI) ने अनेक सूचीबद्ध शेयरों एवं ऋणपत्रों के साथ मई 1993 से कार्य करना प्रारम्भ कर दिया। यह मुम्बई में स्थित हैं
- दिल्ली स्टॉक एक्सचेंज (DSE) ने ऑनलाइन ट्रेडिंग (DOTs) के बाद एक अत्याधुनिक बैंक ऑफिस ट्रेडिंग सिस्टम प्रारम्भ किया है, जिसकी सहायता से अब शेयर दलालों को स्टॉक एक्सचेंज स्थित अपने कार्यालय से ही कारोबार करना आवश्यक नहीं है। शेयर दलाल अपने घरों से या अपने कार्यालयों से ही कम्प्यूटरीकृत V–SAT नेटवर्क की सहायता से शेयरों का क्रय–विक्रय कर सकते हैं।
- राष्ट्रीय स्टॉक एक्सचेंज ने अप्रैल 1996 में NSE–100 के स्थान पर नया शेयर मूल्य सूचकांक NSE–50 लाँच किया था। इसमें 50 कम्पनियों के शयर ही सम्मिलित किए गए हैं।
- क्रेडिट रेटिंग एजेन्सी 'क्रिसिल' (CRISIL) द्वारा 500 चुनींदा कम्पनियों के शेयर मूल्यों पर आधारित एक शेयर मूल्य सूचकांक (CRISIL - 500) की शुरूआत 18 जनवरी, 1996 से की गई है। इसका आधार वर्ष 1994 है।
- 10 मार्च, 2012 से CRR को 4.75% कर दिया गया है।
- 17 अप्रैल, 2012 से रेपो दर को 8.0% कर दिया गया है। (रेपो दर वह दर है जिस पर वाणिज्यिक बैंक RBI से अल्पकालीन राशियाँ प्राप्त करते हैं, जबकि रिवर्स रेपो रेट वह दर है, जिस पर वाणिज्यिक बैंक अपनी फालतू, तरलता अल्पकाल के लिए रिजर्व बैंक के पास जमा रखते हैं)
- 17 अप्रैल, 2012 से रिवर्स रेपो दर को 7.0% कर दिया गया है।
- मार्च 2008 के अन्त में सार्वजनिक क्षेत्र के सभी बैंकों की सकल गैर–निष्पादन परिसम्पत्तियाँ (NPA) 62510 करोड़ रुपए थीं, जबकि शुद्ध गैर–निष्पादन परिसम्पत्तियाँ 34420 करोड़ रुपए थीं।
- विदेशी मुद्रा के वायदा कारोबार के लिए यूनाइटेड स्टॉक एक्सचेंज ऑफ इण्डिया लि. (USEIL) नाम से चौथा बाजार की अनुमति सेबी ने फरवरी, 2009 में प्रदान कर दी गई व इससे पहले कार्यरत् तीन स्टॉक एक्सचेंज हैं–राष्ट्रीय स्टॉक एक्सचेंज (NSE), बम्बई स्टॉक एक्सचेंज (BSE) तथा मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज के स्टॉक एक्सचेंज (MCX-SX)

जनसंख्या

- 2011 की जनगणना के आँकड़ों के अनुसार 1 मार्च, 2011 को सूर्योदय के समय भारत की कुल जनसंख्या 121.02 करोड़ थी।
- उक्त जनसंख्या में पुरुष जनसंख्या 62.37 करोड़ तथा स्त्री जनसंख्या 58.65 करोड़ थी।
- 2001 की जनसंख्या की तुलना में 2011 में जनसंख्या में कुल 18.15 करोड़ व्यक्तियों की वृद्धि हुई। इस प्रकार 2001–2011 के दशक में जनसंख्या में 17.64 प्रतिशत की वृद्धि हुई।
- राज्यों में सर्वाधिक दशक वृद्धि दर मेघालय में (27.82 प्रतिशत) रही, जबकि न्यूनतम नगालैण्ड में (–0.47 प्रतिशत) रही।
- 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में स्त्री–पुरुष अनुपात 940 महिलाएं प्रति हजार पुरुष रहा। राज्यों में प्रति हजार पुरुषों पर महिलाओं की सर्वाधिक संख्या केरल में (1084 महिलाएं प्रति हजार पुरुष) तथा सबसे कम हरियाणा में (877 महिलाएं प्रति हजार पुरुष) रही।
- 2011 की जनगणना के अनुसार देश में जनसंख्या का घनत्व 382 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर था।
- राज्यों में सर्वाधिक घनत्व बिहार में (1102 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी.) तथा सबसे कम अरुणाचल प्रदेश में (17 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी.) रहा।
- केन्द्रशासित क्षेत्रों में सर्वाधिक घनत्व दिल्ली में (11297 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी.) तथा सबसे कम अण्डमान निकोबार द्वीपसमूह में (46 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी.) था।
- सर्वाधिक साक्षरता केरल में (93.91 प्रतिशत) तथा सबसे कम बिहार में (63.82 प्रतिशत) पाई गई।
- महिलाओं में सर्वाधिक साक्षरता केरल में (91.98 प्रतिशत) तथा सबसे कम राजस्थान में (52.66 प्रतिशत) पाई गई।
- देश में अब तक पूर्ण साक्षर घोषित किया जाने वाला एकमात्र राज्य केरल है।
- 2001 की जनगणना के अनुसार देश में अनुसूचित जाति की जनसंख्या 16.66 करोड़ (कुल जनसंख्या का 16.2 प्रतिशत) तथा अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या 8.43 करोड़ (कुल जनसंख्या का 8.2 प्रतिशत) थी।
- भारत में पहली बार जनगणना का कार्य 1872 में हुआ था, किन्तु वह जनगणना नियमित नहीं थी। 10 वर्षीय अन्तराल वाली पहली नियमित व अखिल भारतीय जनगणना 1881 में सम्पन्न हुई। तब से प्रति दस वर्ष बाद जनगणना की जाती है।
- 25 सितम्बर, 2002 को हरियाणा सरकार ने 'देवीरूपक योजना' प्रारम्भ की। इस योजना का उद्देश्य राज्य में जनसंख्या नियंत्रण के साथ–साथ लिंगानुपात (Sex Ratio) में आ रही गिरावट को रोकना है।

  प्रमुख बिन्दु :

  (i) 1991–2001 में हिन्दू जनसंख्या वृद्धि 20% जबकि सर्वाधिक वृद्धि मुस्लिम वर्ग में 29.3%

  (ii) सर्वाधिक साक्षरता जैन समुदाय 94.1% न्यूनतम साक्षरता मुस्लिम समुदाय 59.1%

  (iii) सर्वाधिक महिला साक्षरता जैन समुदाय 90.6% न्यूनतम महिला साक्षरता मुस्लिम समुदाय 50.1%

  (iv) सर्वाधिक लिंगानुपात ईसाई समुदाय 1009 महिला प्रति 1000 पुरुष

  न्यूनतम लिंगानुपात सिख समुदाय 893 महिला प्रति 1000 पुरुष
- संयुक्त राष्ट्र संघ के जनसंख्या प्रभाग की एक ताजा रिपोर्ट 'रिवीजन ऑफ द वर्ल्ड पॉपुलेशन प्रोसपेक्टस' के अनुसार विश्व की कुल जनसंख्या वर्ष 2009 तक 6.83 अरब थी, 31 अक्टूबर, 2011 को यह 7 अरब के आँकड़े को पार कर गई थी। सन् 2050 तक विश्व जनसंख्या 9.18 अरब हो जाएगी। इसी अवधि में जहाँ विकसित देशों की जनसंख्या 1.28 अरब के स्तर पर ही बने रहने का आकलन है। वहीं विकासशील देशों में जनसंख्या का वर्तमान स्तर 5.6 अरब से बढ़कर 7.9 अरब तक पहुँचने का अनुमान है।

विविध

- केन्द्र सरकार की गुड़गाँव के निकट एक **सैटेलाइट फ्रेट सिटी** (Satellite Freight City) विकसित करने की योजना है। इससे फूलों, सब्जियों जैसी शीघ्र नष्ट होने वाली वस्तुओं (Perishable Goods) के त्वरित निर्यात को प्रोत्साहन मिलेगा। इसके लिए चोमा गाँ में लगभग 250 एकड़ भूमि का अधिग्रहण भी किया जा चुका है।
- सब्जियों के उत्पादन में भारत का विश्व में पहला स्थान है।
- आम और केले के उत्पादन में भारत का विश्व में पहला स्थान है।
- भारत में मनीऑर्डर प्रणाली की शुरूआत सर्वप्रथम 1880 ई. में हुई थी।
- भारत में पहला डाक टिकट 1854 ई. में कराची में जारी किया गया।
- भारत में डाकघर बचत बैंक 1882 ई. में प्रारम्भ की गई।
- भारत का प्रथम पूर्णतः कम्प्यूटरीकृत (Fully Computerised) डाकघर नई दिल्ली में स्थापित किया गया। इसका उद्घाटन 10 अक्टूबर, 1994 को किया गया था।
- सरकार ने डॉ. आर. एन. मलहोत्रा की अध्यक्षता में बीमा क्षेत्र में सुधार हेतु सिफारिश देने के लिए एक समिति का गठन किया था समिति ने अपनी रिपोर्ट 7 जनवरी, 1994 को प्रस्तुत कर दी थी।
- अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) की स्थापना 27 दिसम्बर, 1945 को की गई थी, किन्तु इसने वास्तविक रूप में कार्य 1 मार्च, 1947 से प्रारम्भ किया था।
- भारत IMF का एक संस्थापक सदस्य है। भारत का वित्त मन्त्री IMF के गवर्नर मण्डल का पदेन (Ex-Officio) गवर्नर होता है।

समीर प्लाजा, मनमोहन पार्क, कटरा, बांसमण्डी के सामने, इलाहाबाद
फोन नं. : 0532.3266722, 9956971111, 9235581475
{जहाँ सेलेक्शन एक जिद है.}
THE INSTITUTE

History of Census

सर्वप्रथम जनगणना–1749 में स्वीडन द्वारा कराया गया था। ब्रिटिश भारत में पहली जनगणना 1872 में लार्ड मेयो के कार्यकाल में हुई थी। 1881 ई. में लार्ड रिपन के समय से प्रत्येक दस वर्ष के अन्तराल पर जनसंख्या का क्रमवार आकलन प्रारम्भ हुआ, जो आज भी जारी है।

भारत का क्षेत्रफल विश्व के क्षेत्रफल का मात्र 2.4 प्रतिशत है, जबकि भारत की जनसंख्या विश्व की कुल जनसंख्या का 17.5 प्रतिशत है।

वर्ष	जनसंख्या (करोड़ में)	दशाब्दी अन्तर (करोड़ में)	प्रतिदशक वृद्धिदर (%)	औसत वार्षिक घातांक वृद्धिदर (%)
1901	23.83	–	–	–
1911	25.20	1.36	+5.75	0.56
1921	25.13	0.07	–0.31	–0.03
1931	27.89	2.76	+11.00	1.04
1941	31.86	3.96	+14.22	1.33
1951	36.10	4.24	+13.31	1.25
1961	43.92	7.81	+21.64	1.96
1971	54.81	10.89	+24.80	2.20
1981	68.33	13.51	+24.66	2.22
1991	84.64	16.30	+23.87	2.16
2001	102.87	18.23	+21.54	1.97
2011 (अनन्तिम)	121.01	18.14	+17.64	1.64

भारत मूलतः गावों का देश है। इस देश में कुल 6.41 लाख ग्राम हैं, जहाँ देश की 68.84 प्रतिशत (2011) जनसंख्या निवास करती है।

भारत की जनसंख्या में सर्वाधिक वृद्धि 1961–71 के दशक में 24.80% हुई थी। सर्वाधिक तथा न्यूनतम दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर क्रमशः दादर एवं नागर हवेली (55.5%) और नागालैण्ड (–) 0.47% का रहा। ध्यातव्य है कि 2001 के जनगणना में नागालैण्ड में दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर सर्वाधिक (64.53%) थी।

जनसंख्या वृद्धि दर वाले शीर्ष	
राज्य	वृद्धि दर (प्रतिशत में)
दादर और नगर हवेली	55.50
दमन दीव	53.54
पुदुचेरी	27.72

न्यूनतम दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर वाले राज्य	
राज्य	वृद्धि दर (प्रतिशत में)
नागालैण्ड	(–) 0.47
केरल	4.86
लक्षद्वीप	6.23

दशकीय जनसंख्या वृद्धि (2001–2011) के अनुसार राज्यों का क्रम	
राज्य	वृद्धि दर (प्रतिशत में)
मेघालय (राज्यों में प्रथम)	27.82
अरुणाचल प्रदेश	25.92
बिहार	25.07

जनगणना के महत्वपूर्ण आंकड़े		
	2001	2011
व्यक्ति (i) पुरुष (ii) महिलाएं	1,02,87,37,436 53,22,23,090 (51.73%) 49,65,14,346 (48.27%)	1,21,01,93,422 62,37,24,248 (51.53%) 49,65,14,346 (48.46%)
0–6 आयु जनसंख्या	–	13.16%
नगरीय प्रतिशत	27.81	31.16%
दशक में % वृद्धिदर	21.54	17.64
वार्षिक वृद्धि दर % में	1.97	1.64
लिंगानुपात	933 : 1000	940 : 1000
साक्षरता % (i) पुरुष साक्षरता % (ii) महिला साक्षरता %	64.8 75.26 53.67	74.04 82.14 65.46
जनघनत्व (व्यक्ति/वर्ग किमी.)	324	382

जनसंख्या की दृष्टि से सबसे छोटा राज्य **–सिक्किम**

जनसंख्या की दृष्टि से शीर्ष पाँच राज्य	
राज्य	जनसंख्या (करोड़ में)
उत्तर प्रदेश	19.958 (16.16%)
महाराष्ट्र	11.237 (9.42%)
बिहार	10.380 (8.07%)
पं. बंगाल	9.134 (7.79%)
आन्ध्र प्रदेश	8.466 (7.41%)

जनसंख्या की दृष्टि से शीर्ष तीन के. प्र. क्षेत्र	
राज्य	जनसंख्या (करोड़ में)
दिल्ली	16753235
पुदुचेरी	1244429
चण्डीगढ़	1054686

लिंगानुपात

(Sex Ratio – 2011)

जनसंख्या की लिंग संरचना को किसी अनुपात में व्यक्त करना, **लिंगानुपात** कहलाता है। भारत में यह अनुपात प्रति 1000 पुरुषों पर स्त्रियों की संख्या के रूप में दर्शाते हैं।

भारत में लिंग संरचना			
वर्ष	**लिंगानुपात**	**वर्ष**	**लिंगानुपात**
1901	972	1961	941
1911	964	1971	930
1921	955	1981	934
1931	950	1991	927
1941	945	2001	933
1951	946	2011	940

शीर्ष तीन लिंगानुपात वाले राज्य	
राज्य	**लिंगानुपात**
केरल	1084
तमिलनाडु	995
आन्ध्रप्रदेश	992

न्यूनतम पाँच लिंगानुपात वाले राज्य	
राज्य	**लिंगानुपात**
हरियाणा	877
जम्मू कश्मीर	883
सिक्किम	889

शीर्ष तीन लिंगानुपात वाले केन्द्रशासित प्रदेश	
राज्य	**लिंगानुपात**
पुदुचेरी	1038
लक्षद्वीप	946
अंडमान	878

न्यूनतम तीन लिंगानुपात वाले केन्द्रशासित राज्य	
प्रदेश	**लिंगानुपात**
दमन एवं दीव	618
दादर एवं नगर हवेली	775
चण्डीगढ़	818
सर्वाधिक लिंगानुपात वाले 2 जिले	
माहे (पुदुचेरी)	1176
अल्मोड़ा (उत्तराखंड)	1142
न्यूनतम लिंगानुपात वाले 2 जिले	
दमन (दमन दीव)	533
लेह (लद्दाख) (जम्मू कश्मीर)	583

0–6 आयु वर्ग के शीर्ष लिंगानुपात वाले राज्य	
राज्य	**लिंगानुपात**
मिजोरम	971
0–6 आयु वर्ग में न्यूनतम लिंगानुपात वाले राज्य	
हरियाणा	830
0–6 आयु वर्ग में शीर्ष और न्यूनतम लिंगानुपात वाले केन्द्रशासित प्रदेश	
अण्डमान एवं निकोबार	966

लिंगानुपात : 1961 से 2011 तक कुल जनसंख्या और 0–6 आयु की जनसंख्या का तुलनात्मक आंकड़ा–

वर्ष	लिंगानुपात 0–6 आयु वर्ग में	कुल औसत लिंगानुपात
1961	976	941
1971	964	930
1981	962	934
1991	945	927
2001	927	933
2011	914	940

वर्ष 2011 में भारत में प्रति 1000 पुरुषों पर स्त्रियों की संख्या जहाँ 940 थी वहीं चीन में यह अनुपात 926, संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में 1025, इण्डोनेशिया में 988, ब्राजील में 1042, पाकिस्तान में 943, बांग्लादेश में 1167, रूस में 1055, जापान में 987 तथा नाइजीरिया में 978 है।

साक्षरता दर
(Literacy Rate)

साक्षरता को विकास एवं मानव जीवन की गुणवत्ता का सूचक माना जाता है।

साक्षरता की गणना के लिए 7 वर्ष से ऊपर के आयु वर्ग को सम्मिलित किया जाता है। कोई भी व्यक्ति यदि वह पढ़लिख सकता है, तो वह साक्षर है।

भारत में साक्षरता – 2011		
साक्षरता	**जनसंख्या**	**प्रतिशत**
व्यक्ति	77,84,54,120	74.04
पुरुष	44,42,03,762	82.14
स्त्री	32,42,50,358	65.46

साक्षरता दर में प्रगति			
वर्ष	**व्यक्ति**	**पुरुष**	**स्त्री**
1951^{+}	18.33	27.16	8.86
1961^{+}	28.30	40.40	15.35
1971^{+}	34.45	45.96	21.97
1981^{0}	43.57	56.38	29.76
1991^{0}	52.21	64.13	39.29
2001^{0}	64.84	75.26	53.67
2011^{0}	74.04	82.14	65.46

संकेत : + साक्षरता का आधार 5 वर्ष से ऊपर के लोग
0 साक्षरता का आधार 7 वर्ष से ऊपर के लोग

शीर्ष तीन साक्षरता दर वाले राज्य	
राज्य	**प्रतिशत**
केरल	93.91
मिजोरम	91.58
त्रिपुरा	87.75
न्यूनतम तीन साक्षरता दर वाले राज्य	
बिहार	63.82
अरुणाचल प्रदेश	66.95
राजस्थान	67.06

AKASH INSTITUTE

शीर्ष तीन केन्द्रशासित साक्षरता वाले प्रदेश	
प्रदेश	**प्रतिशत**
लक्षद्वीप	92.91
दमन दीव	87.07
पुदुचेरी	86.55
न्यूनतम तीन साक्षरता दर वाले केन्द्रशासित प्रदेश	
दादरा एवं नगर हवेली	77.65
दमन एवं निकोबार द्वीप	86.27
दिल्ली	86.34

स्त्री साक्षरता वाले तीन शीर्ष राज्य	
राज्य	**प्रतिशत**
केरल	91.98
मिजोरम	289.40
त्रिपुरा	83.15
न्यूनतम स्त्री साक्षरता वाले तीन राज्य	
राजस्थान	52.66
बिहार	53.33
झारखण्ड	56.21

अवश्य याद करें

- किस दशक में निरक्षरों की संख्या में सर्वाधिक कमी हुई ?

  –1991–2001

- वर्तमान में (2011) भारत में कुल कितने लोग साक्षर हैं ?

  –77.84 करोड़

- साक्षर स्त्रियों की संख्या वर्तमान में (2011) कितनी है ?

  –32.42 करोड़

- 1951 तथा 2001 में स्त्री साक्षरता कितने प्रतिशत थी?

  –क्रमशः 8.86 एवं 53.67%

- सभी राज्यों एवं केन्द्रशासित प्रदेशों में तुलनात्मक दृष्टि से सबसे कम साक्षरता पायी जाती है ?

  –बिहार में (63.82.0%)

- 2011 स्त्री साक्षरता प्रतिशत कितना है ?

  –65.46

- किस राज्य एवं केन्द्रशासित प्रदेश में स्त्री साक्षरता सबसे कम पायी जाती है ?

  –राजस्थान (52.66%)

जनघनत्व
(Density)

प्रति वर्ग किमी. पर निवास करने वाली जनसंख्या को जनघनत्व कहते हैं।

जनसंख्या घनत्व का तात्पर्य जनसंख्या एवं धरातल के एक अनुपात से है।

जनगणना वर्ष	घनत्व (व्यक्ति/वर्ग किमी.)
1901	77
1911	82
1921	81
1931	90
1941	103
1951	117
1961	142
1971	177
1981	216
1991	267
2001	325
2011	382

शीर्ष तीन जनघनत्व वाले राज्य	
राज्य	**जनघनत्व/वर्ग किमी.**
बिहार	1102
पश्चिम बंगाल	1029
केरल	859
न्यूनतम तीन जनघनत्व वाले राज्य	
अरुणाचल प्रदेश	17
मिजोरम	52
सिक्किम	86

तीन शीर्ष जनघनत्व वाले केन्द्रशासित प्रदेश	
प्रदेश	**जनघनत्व/वर्ग किमी.**
दिल्ली	11297
चण्डीगढ़	9252
पुदुचेरी	2598
न्यूनतम तीन जनघनत्व वाले केन्द्रशासित क्षेत्र	
अंडमान एवं निकोबार	46
दादरा एवं नगर हवेली	698
दमन एवं दीव	2013

सर्वाधिक जनघनत्व वाले दो जिले		
जिले	**राज्य**	**जनघनत्व**
उ. पू. दिल्ली	दिल्ली	37,346
चेन्नई	तमिलनाडु	26,903

भारत में न्यूनतम एक व्यक्ति/वर्ग किमी. वाला जिला **दिबांग घाटी** (अरुणाचल प्रदेश), तथा 2 व्यक्ति/वर्ग किमी. वाला जिला **सम्बा** (जम्मू कश्मीर) है।

विकलांग जनसंख्या
(Disable Population)

2001 की जनगणना के अनुसार भारत की कुल जनसंख्या 1,02,87,37,436 का 2.1 प्रतिशत अर्थात् 2,19,06,769 व्यक्ति विकलांग हैं।

धर्माधारित जनगणना–2001
(Religion Based Census – 2001)

भारत वर्ष में 80.5% हिन्दू, मुस्लिम 13.4%, इसाई 2.33%, सिक्ख 1.84%, बौद्ध 0.8% तथा जैन 0.4% पाये जाते हैं।

धर्माधारित जनगणना – 2001

धर्म	कुल जनसंख्या (करोड़ में)	कुल जनसंख्या (प्रतिशत में)	साक्षरता % में	महिला साक्षरता % में	दशकीय वृद्धि % में		लिंगानुपात
					1981–91	1991–2001	
हिन्दू	82.75	80.5	65.1	53.2	25.1	20.0	931 : 1000
मुस्लिम	13.81	13.4	59.1	50.1	34.5	29.3	936 : 1000
ईसाई	2.40	2.33	80.3	76.2	21.5	22.1	1009 : 1000
सिख	1.92	1.84	69.4	63.1	24.3	16.9	893 : 1000
बौद्ध	0.79	0.8	72.7	61.7	35.3	32.2	953 : 1000
जैन	0.42	0.4	94.1	90.6	4.6	26.0	940 : 1000
अन्य	0.69	0.7	47.0	33.2	–	–	–

केन्द्रीय सांख्यिकी एवं कार्यक्रम क्रियान्वयन मंत्रालय के सचिव प्रणव सेन ने पांचवी आर्थिक जनगणना (आर्थिक जनगणना 2005) के अंतिम आंकड़े 28 मई, 2008 को जारी किये।

आर्थिक जनगणना	वर्ष
पहली (सर्वप्रथम)	1977
दूसरी	1980
तीसरी	1990
चौथी	1998
पांचवीं	2005
छठवीं (जारी)	2011

जनगणना 2011 : ग्रामीण–शहरी जनसंख्या वितरण

देश की कुल 121 करोड़ जनसंख्या में 37.7 करोड़ शहरी क्षेत्रों में व शेष 83.3 करोड़ ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है।

जनसंख्या में शहरी जनसंख्यसा अब 31.16 प्रतिशत है, जबकि 68.84 प्रतिशत जनसंख्या ही अब गाँवों में निवास करती है।

2001–11 के दशक में देश में शहरी जनसंख्या में जहाँ 9.10 करोड़ की वृद्धि हुई है। वहीं ग्रामीण जनसंख्या में वृद्धि 9.05 करोड़ रही है। देश में ग्रामीण जनसंख्या में जहाँ 12.18 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है, वहीं शहरी जनसंख्या में वृद्धि 31.8 प्रतिशत रही है।

जनसंख्या (करोड़ में)	2001	2011	अन्तर
भारत	102.9	121.0	18.1
ग्रामीण	74.3 (72.19%)	83.3 (68.84%)	9.0
शहरी	28.6 (27.81%)	37.7 (31.16%)	9.1

सर्वाधिक ग्रामीण जनसंख्या वाले 3 राज्य

राज्य	जनसंख्या (मिलियन में)
उत्तर प्रदेश	155.11 (18.62)
बिहार	92.08 (11.06)
पं. बंगाल	62.21 (97.5)

नोट : कोष्ठक में दिया आँकड़ा भारत के ग्रामीण जनसंख्या की तुलना में राज्य की प्रतिशत ग्रामीण जनसंख्या है।

सर्वाधिक ग्रामीण जनसंख्या प्रतिशतता वाले 3 राज्य

राज्य	ग्रामीण जनसंख्या % में
हिमाचल प्रदेश	89.96
बिहार	88.70
असोम	85.92
ओड़िशा	83.32

सर्वाधिक शहरी जनसंख्या प्रतिशतता वाले 3 राज्य

राज्य	शहरी जनसंख्या % में
गोवा	62.17
मिजोरम	51.51
तमिलनाडु	48.45

सर्वाधिक शहरी जनसंख्या वाले 3 राज्य

राज्य	जनसंख्या (मिलियन में)
महाराष्ट्र	50.83 (13.48)
उत्तर प्रदेश	44.47 (11.79)
तमिलनाडु	34.95 (9.27)

शहरी जनसंख्या वाले न्यूनतम तीन राज्य

राज्य	जनसंख्या (मिलियन में)
सिक्किम	0.15
अरुणाचल प्रदेश	0.13 (0.1)
मिजोरम	0.56 (0.1)

नोट : कोष्ठक में देश की शहरी जनसंख्या का प्रतिशत है।

समीर प्लाजा, मनमोहन पार्क, कटरा, बांसमण्डी के सामने, इलाहाबाद
फोन नं. : 0532.3266722, 9956971111, 9235581475
{जहाँ सेलेक्शन एक जिद है.}

ग्रामीण जनसंख्या में सर्वाधिक वृद्धि दर वाला राज्य	
राज्य	वृद्धि दर % में
मेघालय	27.04
शहरी जनसंख्या में सर्वाधिक वृद्धि दर वाला राज्य	
सिक्किम	153.4

2011 में ग्रामीण एवं शहरी लिंगानुपात क्रमशः 947 एवं 926 है, जो 2001 के तुलना में क्रमशः एक एवं 26 अधिक है। यथा–

लिंगानुपात			
क्षेत्रक	**2001**	**2011**	**अन्तर**
भारत	933	940	(+) 7
ग्रामीण	946	947	(+) 1
शहरी	900	926	+ 26

0–6 आयु वर्ष का लिंगानुपात			
Overall	**2001**	**2011**	**अन्तर**
भारत	927	914	(–) 13
ग्रामीण	934	919	(–) 15
शहरी	906	902	(–) 4

नगरीय जनसंख्या के प्रतिशत में वृद्धि : 2011		
क्र.	**राज्य/केन्द्र क्रमशः**	**वृद्धि (प्रतिशत में)**
1.	दमन एवं दीव	38.91
2.	लक्षद्वीप	33.62
3.	दादरा और नगर हवेली	23.73
4.	केरल	21.76
5.	सिक्किम	13.9
6.	गोवा	12.41
7.	नगालैण्ड	11.74
8.	त्रिपुरा	9.12
9.	चंडीगढ़	7.48
10.	आन्ध्र प्रदेश	6.19
11.	हरियाणा	5.87
12.	गुजरात	5.22
13.	मणिपुर	5.1
14.	उत्तराखण्ड	4.88
15.	कर्नाटक	4.58
16.	तमिलनाडु	4.41
17.	रा.रा.क्षे. दिल्ली	4.32
18.	पं. बंगाल	3.92
19.	पंजाब	3.57
	भारत	**3.35**
20.	छत्तीसगढ़	3.15
21.	अण्डमान/निकोबार	3.04
22.	महाराष्ट्र	2.8
23.	जम्मू–कश्मीर	2.4
24.	अरुणाचल प्रदेश	1.92
25.	मिजोरम	1.88
26.	झारखण्ड	1.81
27.	पुडुचेरी	1.74
28.	ओडिशा	1.69
29.	राजस्थान	1.5
30.	उत्तर प्रदेश	1.5
31.	असम	1.18
32.	मध्य प्रदेश	1.17
33.	बिहार	0.84
34.	मेघालय	0.5
35.	हिमाचल प्रदेश	0.24

उत्तर प्रदेश जनगणना–2011
(Uttar Pradesh Census-2011)

प्रदेश की कुल जनसंख्या

2011 के जनगणना के अनुसार राज्य की कुल जनसंख्या 19,95,81477 है। विश्व के देशों के सन्दर्भ में चीन, भारत, अमेरिका और इण्डोनेशिया के बाद 5 वें स्थान पर है। भारत की कुल आबादी में से 16.49% उ.प्र. में रहती है, लेकिन प्रदेश का क्षेत्रफल देश कुल क्षेत्रफल का 7.33 प्रतिशत है। देश की कुल जनसंख्या में उ.प्र. की जनसंख्या का हिस्सा 6वाँ है।

आबादी के हिसाब से दो सबसे बड़े नगर	
लखनऊ	2815033
कानपुर	2769413
सर्वाधिक आबादी वाले 3 जिले	
इलाहाबाद	5959798
मुरादाबाद	4773138
गाजियाबाद	4661452
सबसे कम आबादी वाले 3 जिले	
महोबा	0876055
चित्रकूट	0990626
हमीरपुर	1104021

वृद्धि दर : 2001–2011 के दौरान प्रदेश के जनसंख्या की दशकीय वृद्धि दर 20.09% रही।

शीर्ष 3 दशकीय वृद्धि वाले जिले	
गौतम बुद्ध नगर	51.52%
गाजियाबाद	40.66%
बहराइच	30.12%
न्यूनतम पाँच दशकीय वृद्धि वाले जिले	
कानपुर नगर	9.79%
हमीरपुर	11.09%
बागपत	11.87%

जनसंख्या घनत्व 2011 : 2011 की जनगणना के अनुसार राज्य का औसत जनघनत्व 828 व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी. है।

सन्	उ.प्र. जनघनत्व	भारत का जनघनत्व
1901	165	72
1911	164	77
1921	159	77
1931	169	85
1941	192	98
1951	215	134
1961	251	134
1971	300	173
1981	377	216
1991	548	267
2001	690	325
2011	**828**	**382**

शीर्ष 3 जनसंख्या घनत्व वाले जिले	
गाजियाबाद	3954
वाराणसी	2399
लखनऊ	1815
न्यूनतम 3 जनसंख्या घनत्व वाले जिले	
ललितपुर	242
सोनभद्र	270
हमीरपुर	275

साक्षरता दर 2011

2011 में उ.प्र. की कुल साक्षरता 69.72%, पुरुष साक्षरता 79.24% और स्त्री साक्षरता 59.26% रही है।

सन्	प्रदेश की कीु साक्षरता दर	प्रदेश की पुरुष साक्षरता दर	प्रदेश की स्त्री साक्षरता दर
1951	12.2	19.17	4.07
1961	20.87	32.08	8.36
1971	23.99	35.01	11.23
1981	32.65	46.65	16.74
1991	41.60	54.82	26.31
2001	56.36	68.8	42.2
2011	69.72	79.24	59.26

सर्वाधिक साक्षरता वाले 3 जिले	
गाजियाबाद	85.0%
गौतमबुद्ध नगर	82.20%
कानपुर नगर	81.31%

अवश्य याद करें

- जनसंख्या और क्षेत्रफल की दृष्टि से उ.प्र. का देश में स्थान क्रमशः है– **–प्रथम और पंचम**
- भारत के कुल जनसंख्या का कितना प्रतिशत जनसंख्या उ.प्र. में रहती है ? **–16.49%**
- प्रदेश की कुल जनसंख्या में कितने प्रतिशत पुरुष और स्त्रियाँ हैं– **–52.4% और 47.6%**
- 2001–2011 के दौरान प्रदेश की जनसंख्या में कितने प्रतिशत की दशकीय एवं वार्षिक वृद्धि दर रही ? **–20.09% एवं 1.85%**
- 0–6 वर्ष के आयुवर्ग में उ.प्र. में कुल संख्या कितनी है ? **–2,97,28,235**
- 2001–2011 के दौरान लिंगानुपात में कितने की वृद्धि हुई– **–10 की**
- प्रदेश में शिशु लिंगानुपात कितना है ? **–899**
- 2011 में सर्वाधिक महिला साक्षरता वृद्धि किस जिले में पाई गई ? **–गाजियाबाद (81.42%)**

लिंगानुपात 2011

2011 की जनगणना के अनुसार प्रदेश में 1000 पुरुषों पर स्त्रियों की संख्या (लिंगानुपात) 908 रहा।

सन्	लिंगानुपात
1901	994
1911	915
1921	909
1931	804
1941	907
1951	910
1961	909
1971	879
1981	885
1991	879
2001	898
2011	908
शीर्ष 3 सिलंगानुपात वाले जिले	
जौनपुर	1018
आजमगढ़	1017
देवरिया	1013

अनुसूचित जातियाँ (SC) 2001

2001 की जनगणना के अनुसार राज्य में अनुसूचित जातियों की जनसंख्या 3,51,48,377 है, जो कि प्रदेश के कुल जनसंख्या का 21.1% है, जबकि सम्पूर्ण देश के कुल जनसंख्या में जनुसूचित जातियों के जनसंख्या का प्रश्तिात 16.2% है।

- देश में जनसंख्या की दृष्टि से सर्वाधिक अनुसूचित जाति वाला राज्य **–उत्तर प्रदेश**
- देश में अनुसूचित जाति की सर्वाधिक प्रतिशत वाला राज्य है– **–पंजाब**
- प्रदेश में सर्वाधिक SC जनसंख्या वाला जिला **–सीतापुर**
- प्रदेश में सबसे कम SC जनसंख्या वाला जिला **–बागपत**

अनुसूचित जनजातियाँ (ST)

2001 की जनगणना के अनुसार राज्य में अनुसूचित जनजातियों की जनसंख्या 1,07,963 है, जिनमें 55,834 पुरुष एवं 52,129 स्त्रियाँ हैं।

- राज्य के कुल जनसंख्या में ST जनसंख्या का प्रतिशत **–0.06%** है–
- भारत के कुल जनसंख्या में ST जनसंख्या का प्रतिशत **8.08%** है।
- सर्वाधिक अ.ज.जा. जनसंख्या वाला जिला **लखीमपुर खीरी** (37979) है।

उत्तर प्रदेश की विभिन्न जातियाँ

2001 की जनगणना के अनुसार प्रदेश की कुल जनसंख्या में **20.5% सवर्ण** (ब्राह्मण, राजपूत, वैश्य, कायस्थ, भूमिहार), **16.7% ऊपर के BC** (यादव, कुर्मी, लोध, जात, गुर्जर), **26% नीचे के BC** (कोयरी, कहार, गड़रिया, तेली, बरी, केवट, नाई आदि), **21.1% दलित जातियाँ** (चमार, पासी, धोबी, वाल्मीकि आदि) तथा **15% मुसलमान** और **शेष** में अन्य हैं।

THE INSTITUTE

समीर प्लाजा, मनमोहन पार्क, कटरा, बांसमण्डी के सामने, इलाहाबाद
फोन नं. : 0532.3266722, 9956971111, 9235581475
{जहाँ सेलेक्शन एक जिद है.}

- प्रदेश की कुल जनसंख्या में कुछ जातियों का प्रतिशत इस प्रकार है–

चमार	–	12.7%	वैश्य	–	2.6%
ब्राह्मण	–	9.2%	कहार	–	2.3%
यादव	–	8.7%	लोधी	–	2.2%
राजपूत	–	7.2%	गड़रिया	–	2%
कोइरी	–	4.1%	जाट	–	1.6%
कुर्मी	–	3.5%	केवट	–	1.1%
			कायस्थ	–	1.0%
			भूमिहार	–	0.5%

धर्म	कुल जनसंख्या	राज्य की कुल जनसंख्या में %	लिंगानुपात	लिंगानुपात (0–6 वर्ष)	शिशु जनसंख्यसा का अनुपात (0–6 वर्ष)	साक्षरता दर	महिला साक्षरता दर	कार्य भागीदारी दर
हिन्दू	13,39,79,263	80.6	894	911	18.6	58.0	43.1	33.2
मुस्लिम	3,07,40,158	18.5	918	935	20.9	47.8	37.4	29.1
ईसाई	2,12,578	0.1	961	936	14.6	72.8	67.4	33.9
सिख	6,78,059	0.4	877	831	14.1	71.9	63.8	32.7
बौद्ध	3,02,031	0.2	895	928	19.9	56.2	40.3	33.4
जैन	2,07,111	0.1	911	846	11.9	93.2	90.3	28.8

World Population Scenario

मानव विज्ञान शास्त्रियों का विश्वास है कि पृथ्वी पर मानव का उद्‌भव टर्शियरीकल्प के पलायोसीन युग में हुआ। मानव सभ्यता के इतिहास के अधिकांश काल में मानव शिकारी एवं संग्रहणकर्त्ता की भूमिका में ही रहा।

वर्ष I.A.D. में विश्व की जनसंख्या लगभग 30 करोड़ थी जो सामान्य गति से वृद्धि करती हुई 1750 में 76 करोड़ हो गई।

विश्व जनसंख्या में बिलियन वृद्धि के वर्ष

वर्ष	वैश्विक जनसंख्या (बिलियन में)	वर्षान्तर
1804	1.0	–
1927	2.0	1.22
1959	3.0	32
1974	4.0	15
1987	5.0	13
1998 (UNFPA)	6.0	11
2011 (31 Oct.)	7.0	13
2025–30	8.0	–
2045–50	9.0	–

विश्व की कुल जनसंख्या का 75.5% भाग लैटिन अमेरिका, अफ्रीका, एशिया, पोलिनेशिया, मेलानेशिया तथा माइक्रोनेशिया के अल्पविकसित क्षेत्रों में निवास करता है। ये सभी क्षेत्र जनांकिकी संक्रमण की प्रथम या द्वितीय अवस्था से गुजर रहे हैं।

महाद्वीपीय जनसंख्या वितरण

महाद्वीप	जनघनत्व	जनसंख्या (2011)	सर्वाधिक जनसंख्या वाला देश	सर्वाधिक जनसंख्या वाला शहर
एशिया	86.7	41.40 B*	चीन (1.341 B*)	टोक्यो (37.73 M*)
अफ्रीका	32.7	1.00 B*	नाइजीरिया (0.5 B*)	काहिरा (19.4 M*)
यूरोप	70	0.74 B*	रूस (0.142 B*)	मास्को (14.83 M*)
उत्तरी अमेरिका	22.9	0.53 B*	USA (0.31 B*)	मैक्सिको सिटी (21.2 M*)
दक्षिण अमेरिका	21.4	0.39 B*	बेजील (0.19 B*)	साओ पाउलो (19.67 M*)
ओशेनिया	4.25	0.04 B*	ऑस्ट्रेलिया (0.02 B*)	सिडनी (4.5 M*)
अंटार्कटिका	0.0	4,490	N/A	मैक्सर्डो स्टेशन (955)

नोट : B* = बिलियन ; M* = मिलियन

क्र.	जनसंख्या की दृष्टि से विश्व के 10 सबसे बड़े देश (2009)			
	देश का नाम	जनसंख्या	तिथि	वैश्विक जनसंख्या का %
1.	चीन	1,34,74,60,000	नवम्बर–2011	19.3
2.	भारत	1,21,01,93,422	मार्च–2011	17.5
3.	सं. रा. अमेरिका	31,26,15,000	नवम्बर–2011	4.48
4.	इण्डोनेशिया	23,84,00,000	मई–2010	3.36
5.	ब्राजील	19,55,37,000	नवम्बर–2011	2.8
6.	पाकिस्तान	17,78,25,000	नवम्बर–2011	2.55
7.	बांग्लादेश	15,85,70,535	जुलाई–2011	2.27
8.	नाइजीरिया	15,52,15,000	जुलाई–2011	2.23
9.	रूस	14,19,74,297	जनवरी–2010	2.035
10.	जापान	12,73,80,000	जून–2010	1.83

विश्व : शीर्ष 3 जनघनत्व वाले देश–2010	
देश	जनघनत्व
मकाऊ	18658
मोनेको	16358
बांग्लादेश	1229
विश्व : न्यून 3 जनघनत्व वाले देश – 2010	
मंगोलिया	2.0
नामीबिया / बोत्सवाना सूरीनाम / ऑस्ट्रेलिया / आइसलैण्ड	3.0
सूरीनाम	4.3

न्यूनतम 7 जनसंख्या वृद्धि दरवाले देश (2010–15 प्रक्षेपित)	
देश	वृद्धि–दर % में
माल्दोबिया गणराज्य / बुल्गारिया	(–) 0.7
जार्जिया	(–) 0.6
लाटविया / लुथवानिया	(–) 0.4
उक्रेन	(–) 0.5
बेलारुस	(–) 0.3
क्रोशिया / जर्मनी / हंगरी / रोमनिया	(–) 0.2
रूसी संघ / सर्बिया / जापान / एस्टोनया	(–) 0.1

एक से अधिक जिलों में विस्तारित नगरीय संकुलन (UA)		
नगरीय संकुलन का नाम	राज्य	जिले
दिल्ली UA	दिल्ली	उत्तर–पश्चिम, उत्तरी, उत्तर–पूर्वी, नई दिल्ली, मध्य, पश्चिमी, दक्षिण–पश्चिमी एवं दक्षिणी दिल्ली
वृहत मुम्बई UA	महाराष्ट्र	थाणे, मुम्बई (उपनगर), मुम्बई नगर

Mega City

संयुक्त राष्ट्र संघ (UNO) के अनुसार–ऐसे नगरीय संकुलन जिनकी जनसंख्या 10 मिलियन (अर्थात एक करोड़ से अधिक) से अधिक है। 'मेगा सिटी' की संज्ञा से अभिहित किया जाता है। भारतीय जनगणना–2011 में इस अवधारणा को स्वीकार किया गया है। देश के 53 मिलियन प्लस नगरीय संकुलनों में से तीन नगरीय संकुलन 'मेगा सिटी' की परिभाषा के अन्तर्गत आते हैं। यथा–

1. वृहद मुम्बई (18.41 मिलियन)
2. दिल्ली (16.31 मिलियन)

शिशु जनसंख्या एवं लिंगानुपात

सर्वाधिक शिशु लिंगानुपात तिरुअनंतपुरम UA (केरल) में 971 और न्यूनतम शिशु लिंगानुपात आगरा UA में का 780 है।

अवश्य याद करें

- दक्षिणी अमेरिका का सर्वाधिक नगरीकृत देश क्रमशः वेनेजुएला (93.1%) एवं उरुग्वे (92.4%) है (2010)।
- संसार मेंसर्वाधिक नगरीकृत महाद्वीप क्रमशः उत्तरी अमेरिका, लैटिन अमेरिका एवं कैरेबियन देश एवं यूरोप है।
- जनसंख्या वृद्धि का सर्वाधिक प्रतिशत अफ्रीका महाद्वीप कहा है। तदोपरान्त क्रमशः एशिया, लैटिन अमेरिका एवं कैरेबियन देशों का है।
- विश्व के सर्वाधिक ग्रामीण जनसंख्या वाले पाँच देश क्रमशः भारत, चीन, इण्डोनेशिया, बांग्लादेश एवं पाकिस्तान है।
- श्रीलंका, नेपाल, पाकिस्तान एवं भारत में से भारत का जनघनत्व सबसे अधिक है।
- अफ्रीका के शीर्ष तीन नगरीकृत देश हैं– गैबोन, पश्चिमी सहारा तथा जिबूती। एशि के तीन शेर्ष नगरीकृत देश हैं– सिंगापुर, कुबैत, कतर।

विश्व के न्यूनतम नगरीकृत देश	
देश	नगरीकरण (%) में
बुरुंडी	11
पापुआ–न्यूगिनी	13
मालवी / त्रिनिदाद एवं टोबैगो	14

THE INSTITUTE

नगरों के विकास की अवस्थाएँ

लुइस मम्फोर्ड ने 1938 ई. में नगरों के विकास की 6 अवस्थाओं का उल्लेख किया है–

(i) इयोपोलिस : यह नगरीय विकास की प्रथम अवस्था है। इस अवस्था में कृषि एवं पशुपालन संबंधी कार्यों के विकास के कारण गांवों का विकास हुआ। बड़े–बड़े एवं केन्द्रीय गांवों में शिक्षा, संस्कृति एवं कला आदि का विकास हुआ।

(ii) पोलिस : इस शब्द का अर्थ नगर स है। इस अवस्था में बड़े गांव कस्बे का रूप धारण करते हैं जिनमें व्यापारिक गतिविधियों का विकास हो जाता है। नगरीय आकारिकी का विकास प्रारम्भ हो जाता है।

(iii) मेट्रोपोलिस : इस अवस्था में नगर का आकार वृहत् हो जाता हैं वृहत् स्तरपर कारखानों, शिक्षा संस्थानों, व्यापारिक संस्थानों आदि की स्थापना हो जाती हैं इस अवस्था में नगर अपने आस–पास के नगरों से बड़ा हो जाता है एवं नगर का संबंध दूरवर्ती क्षेत्रों से भी हो जाता हैं

(iv) मेगालोपोलिस : यह नगर की चरम अवस्था को बतातीा है। नगर में गन्दी बस्तियों का प्रादुर्भाव हो जाता है एवं जीवन नारकीय रूप में परिवर्तित होता हुआ दिखाई देता है। पूंजीवादी व्यवस्था का प्रसार, नैतिकता का पतन, नौकरशाही का विकास, मानव का शोषणयुक्त जीवन इस प्रकार के नगरों की विशेषता है। अमेरिका के पूर्वी तटीय मैदान में बोस्टन से स्पेरो प्वाइंट तक के नगरीय क्षेत्र इसका उदाहरण हैं बर्मिंघम, टोकियों, याकोहामा क्षेत्र, अर्मेस्टर्डम।

महानगर (Metropollition or Metropolis) : इसकी जनसंख्या 10 लाख से अधिक होती है। 2011 के जनगणना में इसे **'मिलियन प्लस'** नगरीय संकुलन/नगर की संज्ञा दी गई है।

मानव विकास रिपोर्ट–2011

आर्थिक विकास एक व्यष्टिनिष्ठ अवधारणा है, जिसका परिमाणात्मक माप समभव नहीं है। पुनश्च इसे मापने के अनेक प्रयास किये गये हैं। मानव विकास के विविध आयामों का आकलन, इस दिशा में एक सार्थक प्रयास है। संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (U.N.D.P.) द्वारा यह प्रयास 1990 से सतत् रूप से जारी है; जिसे **'मानव विकास रिपोर्ट'** की संज्ञा दी गई है।

वर्ष 2011 की मानव विकास रिपोर्ट (Human Development Report-2011) 2 नवम्बर, 2011 को जारी की गई। 'Sustainability and Equity : A future for All' अर्थात् 'सततता एवं साम्यता : सभी के लिए एक बेहतर भविष्य' पर केन्द्रित इस रिपोर्ट में विश्व के कुल 187 देशों के लिए मानव विकास सूचकांक (Human Development Index–HDI) दर्शाए गए हैं, जिसमें भारत का 134वाँ स्थान है। इससे पूर्व वर्ष 2010 की मानव विकास रिपोर्ट में मानव विकास सूचकांक के मामले में 169 देशों में 119वाँ स्थान भारत को दिया गया था।

मध्यम विकास वाले देश		
97	श्रीलंका	0.691
101	चीन	0.687
134	भारत	0.547
कम विकास वाले देश		
145	पाकिस्तान	0.504
172	अफगानिस्तान	0.398
187	कांगो गणराज्य	0.286

पंचवर्षीय योजनाओं में वार्षिक वृद्धि दरें :
(स्रोत : आर्थिक समीक्षा 2010–11)

	लक्ष्य	प्राप्ति
पहली योजना (1951–56)	2.1%	3.7%
दूसरी योजना (1956–61)	4.5%	4.2%
तीसरी योजना (1961–66)	5.6%	2.8%
तीन वार्षिक योजनाएं (1966–69)	–	3.9%
चौथी योजना (1969–74)	5.7%	3.4%
पाँचवीं योजना (1974–79)	4.4%	5.0%
वार्षिक योजना (1979–80)	–	–5.0%
छठी योजना (1980–85)	5.2%	5.4%
सातवीं योजना (1985–90)	5.0%	5.5%
वार्षिक योजना (1990–92)	–	3.2%
आठवीं योजना (1992–97)	5.6%	6.6%
नौवीं योजना (1997–2002)	6.5%	5.5%
दसवीं योजना (GDP) (2002–07)	7.9%	7.9%
ग्यारहवीं योजना (2007–12) (लक्ष्य)	9.0%	–
संशोधित लक्ष्य	–	8.1%
2007–08	–	9.8%
2008–09	–	6.6%
2009–10 (त्वरित)	–	8.6%
2010–11 (BE)	–	9.0%

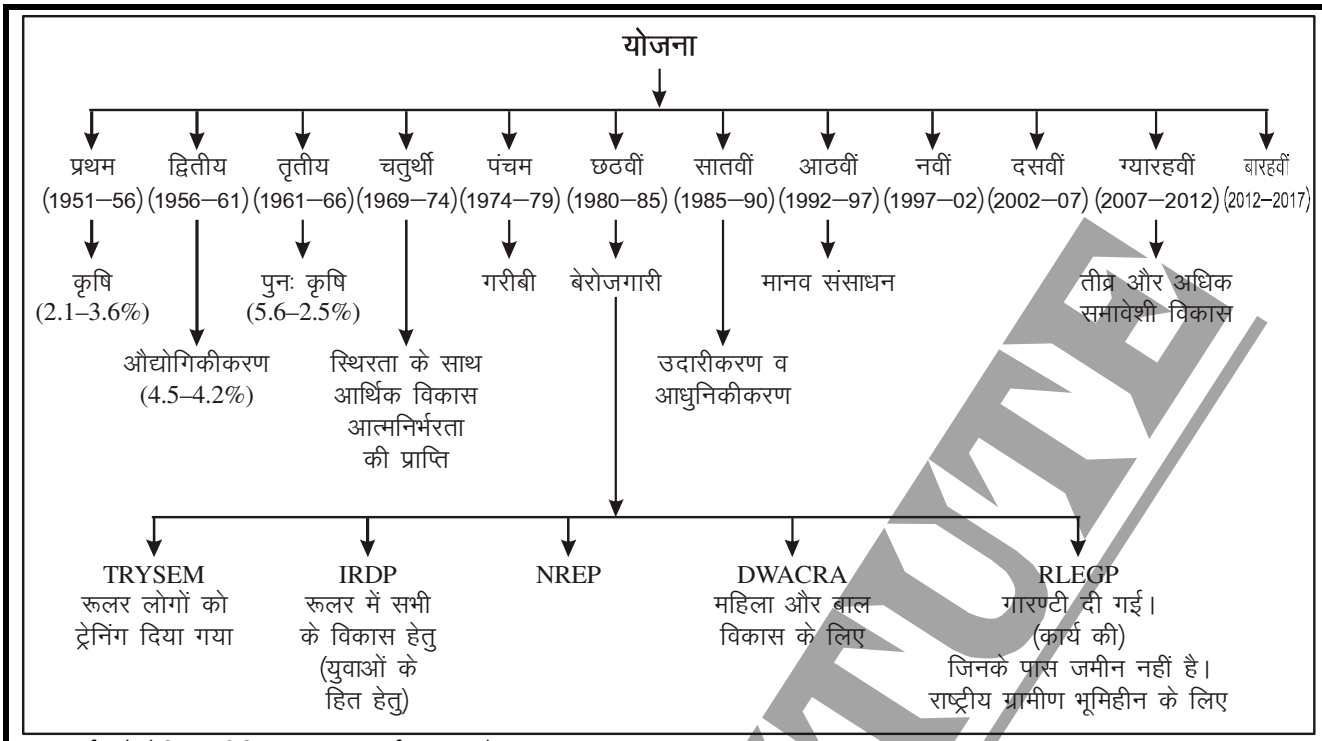

नई औद्योगिक नीति – 24 जुलाई, 1991 में।
3 बार योजना अवकाश रहा अर्थात 6 वर्ष।
गारण्टी कानून 2005 में कांग्रेस ने लागू किया।
16 फरवरी, 2006 में (A.P.) के वन्दना पल्ली मनरेगा की शुरुआत किया।
पहले नरेगा और अब मनरेगा।
15 मार्च, 1950 में योजना आयोग का जन्म हुआ।
6 अगस्त, 1952 – राष्ट्रीय विकास परिषद

पंचवर्षीय योजना

प्रथम पंचवर्षीय योजना (1951–1956)

- इस योजना के लक्ष्य थे : शरणार्थियों का पुनर्वास, खाद्यान्नों के मामले में कम से सम्भव अवधि में आत्मनिर्भरता प्राप्त करना और मुद्रास्फीति पर नियन्त्रण करना। इसके साथ–साथ इस योजना में सर्वांगीण विकास की प्रक्रिया आरम्भ की गयी, जिससे राष्ट्रीय आय के लगातार बढ़ने का आश्वासन दिया जा सके। इस योजना में कृषि को प्राथमिकता दी गयी।

द्वितीय पंचवर्षीय योजना (1956–1961)

- प्रो. पी. सी. महालनोबिस के मॉडल पर आधारित इस योजना का लक्ष्य तीव्र औद्योगिकीकरण था। इसके लिए भारी तथा मूल उद्योगों पर विशेष बल दिया गया। इन मूल महत्व के उद्योगों अर्थात् लौह एवं इस्पात, अलौह धातुओं, भारी रसायन, भारी इंजीनियरिंग और मशीन–निर्माण उद्योगों को बढ़ावा देने का दृढ़ निश्चय किया गया।

तीसरी पंचवर्षीय योजना (1961–1966)

- तीसरी योजना ने अपना लक्ष्य आत्मनिर्भर एवं स्वयं–स्फूर्ति अर्थव्यवस्था की स्थापना करना रखा। इस योजना ने कृषि को सर्वोच्च प्राथमिकता प्रदान की, परन्तु इसके साथ–साथ इसने बुनियादी उद्योगों के विकास पर भी पर्याप्त बल दिया जो कि तीव्र आर्थिक विकास के लिए अत्यंत आवश्यक था।

तीन वार्षिक योजनाएँ (1966–67 से 1967–69)

- वर्ष 1965 में भारत–पाकिस्तान युद्ध से पैदा हुई स्थिति, दो साल तक लगातार भीषण सूखा पड़ने, मुद्रा का अवमूल्यन होने, कीमतों में हुई वृद्धि तथा योजना उद्देश्यों के लिए संसाधनों में कमी होने के कारण चौथी योजना को अन्तिम रूप देने में देरी हुई। इसलिए इसके स्थान पर चौथी योजना के प्रारूप को ध्यान में रखते हुए 1966 से 1969 तक तीन वार्षिक योजनाएँ बनायी गयीं। इस अवधि को **'योजना अवकाश'** (Plan Holiday) कहा गया है।

चौथी पंचवर्षीय योजना (1969–1974)

- चौथी योजना के मूल उद्देश्य थे– स्थिरता के साथ आर्थिक विकास तथा आत्मनिर्भरता की अधिकाधिक प्राप्ति। चौथी योजना में राष्ट्रीय आय की 5.5% वार्षिक औसत वृद्धि दर प्राप्त करने का लक्ष्य रखा गया, बाद में इसमें सामाजिक न्याय के साथ विकास और 'गरीबी हटाओ' जोड़ा गया।

THE INSTITUTE

समीर प्लाजा, मनमोहन पार्क, कटरा, बांसमण्डी के सामने, इलाहाबाद
फोन नं. : 0532.3266722, 9956971111, 9235581475

पाँचवीं पंचवर्षीय योजना (1974–1978)

- इसमें दो मुख्य उद्देश्यों अर्थात् गरीबी की समाप्ति ओर आत्मनिर्भरता की प्राप्ति के लिए वृद्धि की उच्च दर को बढ़ावा देने के अलावा आय का बेहतर वितरण और देशीय बचत दर में महत्वपूर्ण वृद्धि करने की नीति अपनायी गयी। मार्च, 1978 में जनता पार्टी की सरकार ने चार वर्षों के पश्चात् ही पाँचवीं योजना को समाप्त कर दिया।

छठी पंचवर्षीय योजना (1980–1985)

- **छठी योजना दो बार तैयार की गयी।** जनता पार्टी द्वारा (1978–83 की अवधि हेतु) **'अनवरत योजना'** बनायी गयी। छठी योजना का मुख्य उद्देश्य कृषि तथा सम्बद्ध क्षेत्र में रोजगार का विस्तार करना, जन–उपभोग की वस्तुएँ तैयार करने वाले कुटीर एवं लघु उद्योगों को बढ़ावा देना और न्यूनतम आवश्यकता कार्यक्रम द्वारा निम्नतम आय वर्गों की आय बढ़ाना था। परन्तु जब कांग्रेस सरकार ने नयी छठी योजना (1980–85) तैयार की, तब विकास के नेहरू मॉडल को अपनाया गया, जिसका लक्ष्य एक विकासोन्मुख अर्थव्यवस्था में गरीबी की समस्या पर सीधा प्रहार करना था।

सातवीं पंचवर्षीय योजना (1985–1990)

- सातवीं योजना में खाद्यान्नों की वृद्धि, रोजगार के क्षेत्रों का विस्तार एवं उत्पादकता को बढ़ाने वाली नीतियों एवं कार्यक्रमों पर बल देने का निश्चय किया गया।

आठवीं पंचवर्षीय योजना (1992–1997)

- केन्द्र में राजनीतिक अस्थिरता के कारण **आठवीं योजना दो वर्ष देर से प्रारम्भ हुई।** आठवीं योजना का विवरण उस समय स्वीकार किया गया, जब देश एक भारी आर्थिक संकट से गुजर रहा था। इसके मुख्य कारण थे–भुगतान संतुलन का संकट, बढ़ता हुआ ऋण भार, लगातार बढ़ता बजट–घाटा, बढ़ती हुई मुद्रास्फीति और उद्योग में प्रतिसार। नरसिंह राव सरकार ने आर्थिक सुधारों के साथ राजकोषीय सुधारों की भी प्रक्रिया जारी की, ताकि अर्थव्यवस्था को एक नयी गति प्रदान की जा सके। आठवीं योजना का मूलभूत उद्देश्य विभिन्न पहलुओं में मानव विकास करना था।

नौवीं पंचवर्षीय योजना (1997–2002)

- इसमें विकास का 15 वर्षीय परिप्रेक्ष्य शामिल किया गया। नौवीं योजना का प्रमुख लक्ष्य वृद्धि के साथ 'सामाजिक न्याय और समानता' था।

दसवीं पंचवर्षीय योजना (2002–2007)

- इस योजना में पहली बार राज्यों के साथ विचार–विमर्श कर राज्यवार विकास दर निर्धारित की गयी। इसके साथ ही पहली बार आर्थिक लक्ष्यों के साथ–साथ सामाजिक लक्ष्यों पर भी निगरानी की व्यवस्था की गयी।
- दसवीं योजना के लक्ष्य :
  - योजना काल के दौरान जी. डी. पी. में वृद्धि दर 8 प्रतिशत पहुँचाना।
  - निर्धनता अनुपात को वर्ष 2007 तक कम करके 21 प्रतिशत और वर्ष 2012 तक कम करके 15 प्रतिशत तक लाना।
  - वर्ष 2007 तक प्राथमिक शिक्षा की पहुँच को सर्वव्यापी बनाना।
  - वर्ष 2001 और 2011 के बीच जनसंख्या की दसवर्षीय वृद्धि दर को 16.2 प्रतिशत तक कम करना।
  - साक्षरता में वृद्धि कर इसे वर्ष 2007 तक 75 प्रतिशत और वर्ष 2012 तक 80 प्रतिशत करना।
  - वर्ष 2007 तक वनों से घिरे क्षेत्र को 25 प्रतिशत ओर वर्ष 2012 तक 33 प्रतिशत तक बढ़ाना।
  - वर्ष 2012 तक पीने योग्य पानी की पहुँच सभी ग्रामों में कायम करना।
  - सभी मुख्य नदियों को वर्ष 2007 तक और अन्य अनुसूचित जल क्षेत्रों को वर्ष 2012 तक साफ करना।

ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना (2007–2012)

- औसत जीडीपी वृद्धि दर को 8.1% से 9% करना।
- कृषि जीडीपी वृद्धि दर को 4 प्रतिशत करना।
- स्कूल छोड़ने वाले बच्चों की दर को 2011–12 तक घटाकर 20 प्रतिशत के स्तर पर लाना।
- साक्षरता दर को 75 प्रतिशत करना
- प्रजनन दर को 2.1 के स्तर पर लाना।
- 2011–12 तक 0–6 आयुवर्ग के लिंगानुपात को बढ़ाकर 935 करना।
- वन क्षेत्र को 5 प्रतिशत अंकों तक बढ़ाना।

गरीबी

सापेक्ष गरीबी :

- लारेंज वक्र
- गिनी गुणांक

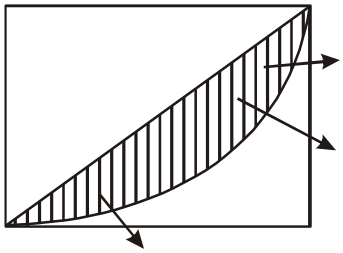

छायांकित क्षेत्र

समता रेखा के नीचे का भाग

नोट :

- विश्व बैंक के अनुसार 13258 से कम प्रति व्यक्ति आय है।
- अपने आय से जो व्यक्ति अपने आवश्यकता की वस्तुएँ न खरीद पाता हो निरपेक्ष गरीबी कहलाता है।
- **प्रो. लकड़वाला** : ने 1998 में कहा कि गरीबी मापन की सुचि अलग–अलग क्षेत्र में अलग–अलग होता है। इसलिए प्रत्येक क्षेत्र की अलग–अलग सुची बनाई जानी चाहिए।

CPIAL = 2400

CPIIW = 2100

सर्वाधिक गरीबी की संख्या = उत्तर प्रदेश (5.90 करोड़)

परन्तु % = 32%

उड़ीसा में गरीबी % = 46%

जीवन की आधारभूत आवश्यकताओं के वंचन से गरीबी का आशय लगाया जता है। गरीबी के मापन के दो तरीके हैं।

(1) सापेक्ष गरीबी (2) निरपेक्ष गरीबी

सापेक्ष गरीबी : सम्पूर्ण विश्व में पायी जाती हैं इसका मापन सम्पत्ति धारण की क्षमता से लिया जाता है। इसमें तुलनात्मक रूप से राह देखा जाता है कि किस व्यक्ति के पास अन्य की तुलना में कितनी सम्पत्ति हैं इसे मापने के लिए लारेंज वक्र तथा मिनी गुणांक का प्रयोग किया जाता है।

निरपेक्ष गरीबी : गरीबी का वास्तविक आशय निरपेक्ष गरीबी से लगाया जाता है। एक व्यक्ति निरपेक्ष गरीब तब कहलायेगा जब वह अपनी वर्तमान आय के माध्यम से मूल भूत आवश्यकताओं को पूरी न कर पाता हो। इसे मापने के लिए भारत के नोबल पुरस्कार विजेता अर्थशास्त्री प्रो. अमर्त्य सेन (1998) ने Head Count Ratio जैसी विधि का प्रयोग करते हैं। इनका मानना है कि जो व्यक्ति गरीबी रेखा से जितना ही नीचे होगा उतना ही ज्यादा गरीब होगा। अर्थात् गरीबी रेखा के नीचे गरीबी का घनत्व बढ़ता जाता है।

भारत में गरीबी का आकलन योजना आयोग द्वारा किया जाता है और इससे सम्बन्धित आंकड़ों का प्रकाशन NSSO राष्ट्रीय प्रतिदर्श संगठन सर्वे संगठन द्वारा किया जाता हैं योजना आयोग ने 1969–65 में प्रति व्यक्ति 20 रुपया मासिक को गरीबी हेतु आधार बनाया जिसकी काफी आलोचना की गई और इसे संसोधित करके ग्रामीण और संशोधित क्षेत्र के लिए 20 व 25 रु. निर्धारित किया गया। 1977 में न्यूनतम आवश्यकता तथा प्रभावपूर्ण मांग की कार्यदल (task force) कैलोरी को गरीबी का मापक बनाया गया। 2100 कैलोरी शहरी क्षेत्रों के लिए तथा 2400 कैलोरी ग्रामीण क्षेत्रों के लिए निश्चित किया गया।

इसमें पुनः संसोधन करके 1989 में प्रो. लकड़ावाला के द्वारा बनाया गया सुचकांक गरीबी के मापन के लिए प्रयोग किया जाता है। कैलोरी की क्षतिपूर्ति अब अलग–अलग राज्यों में कृषि श्रमिकों के लिए CPIAL (Consumer Price Index Agriculture Labour) तथा औद्योगिक रमिकों के लिए CPIIW का प्रयोग किया जाता है। इस पद्धति को आठवीं पंचवर्षीय योजना में लागू किया गया। वर्तमान में भी यही चल रही है। इसके लिए ग्रामीण क्षेत्रों हेतु 356 रु. मासिक तथा शहरी क्षेत्रों 538 रु. मासिक कैलोरी निश्चित किया गया है।

विश्व बैंक तथा अन्य संगठन गरीबी मापन हेतु अलग–अलग धनराशि को पैमाना बनाए है। विश्व बैंक के अनुसार जो व्यक्ति 1.25$ या इससे कम प्रतिदिन कमा रहा हो वह गरीब कहलाएगा।

एशियन Development Bank 1.35$ तथा भारत सरकार 1.02$ को गरीबी रेखा का मापक मानते हैं।

भारत में गरीबी के मापन के लिए दो पद्धतियाँ पाई जाती हैं–

(1) URP : (Unifor Recall Period) : यह 30 दिवसीय अवधि पर आधारित होता है।

NSSO के 61वें चक्र के अनुसार URP के आधार पर सम्पूर्ण भारत में 2004–05 की अवधि में 27.25% की गरीबी पाई गयी है। ग्रामीण क्षेत्रों में 28.30% तथा शहरी क्षेत्रों में 25.7% की गरीबी पाई जाती है।

MRP (Minimum Recall Period) : यह 365 दिनों (1 साल) पर आधारित होती है। इसमें 5 गैर खाद्य वस्तुओं को शामिल किया जाता है। गैर खाद्य वस्तुओं में 1) वस्त्र, 2) जूता चप्पल, 3) मकान, 4) शिक्षा, 5) संस्थागत चिकित्सा। MRP के आधार पर 2004–05 की अवधि में सम्पूर्ण भारत में 21.8% की गरीबी पाई गयी।

सर्वाधिक गरीबी के प्रतिशत वाले राज्य–

(1) उड़ीसा – 46.4% सर्वाधिक

(2) बिहार – 41.41%

(3) छत्तीसगढ़ – 40.9%

(4) झारखण्ड – 40.3%

उत्तर प्रदेश में गरीबी का %, 32.8% है।

नोट : सर्वाधिक गरीबों की संख्या (5.40 करोड़) उत्तर प्रदेश में है।

महत्वपूर्ण : मार्च 2009 में प्रकाशित प्रो. सुरेश तेन्दुलकर की रिपोर्ट ने गरीबी के सम्बन्ध में जो आंकड़े दिए हैं वो NSSO के आंकड़ों से काफी अलग है। इन्होंने गरीबी के मापन के MRP पद्धति को अपनाया है जिसके अनुसार सम्पूर्ण भारत में 37.2% की गरीबी पाई जाती है।

भारत में सम्पूर्ण स्तर पर गरीबी के सम्बन्ध में कुछ अनुमान

योजना आयोग का अनुमान (2005)

2004–05 मूल्य पर	–	27.5%
ग्रामीण क्षेत्र 28.3%		
शहरी 25.7%		

अर्जुन सेन गुप्ता पैनल

2004–05 मूल्य पर	–	77%
प्रतिदिन 20 रुपया		

एन.सी. सक्सेना कमेटी (2009)

ग्रामीण विकास मंत्रालय द्वारा नियुक्त	–	50%

विश्व बैंक (2008 रिपोर्ट)

1.25 डालर प्रतिदिन 2005 में 41.6%

सुरेश डी तेन्दुलकर (2009)

2004–05 मूल्य पर	–	37.2%
ग्रामीण	–	41.8
शहरी	–	25.7

समीर प्लाजा, मनमोहन पार्क, कटरा, बांसमण्डी के सामने, इलाहाबाद {जहाँ सेलेक्शन एक जिद है.}
फोन नं. : 0532.3266722, 9956971111, 9235581475

उल्लेखनीय है कि तेन्दुलकर कमेटी ने 2004–05 मूल्य पर ग्रामीण व्यय को 446.68 रु. तथा शहरी व्यय को 78.80 प्रतिमाह मानते हुए ग्रमीण क्षेत्र के लिए 41.8% तथा शहरी क्षेत्र के लिए 25.7% का अनुमान दिया। विशेषज्ञ यह मानते हैं कि तेन्दुलकर का व्ययसम्बन्धी अनुमान लकड़ावाला अनुमान से अधिक पर सेनगुप्ता के अनुमान से कम है।

एच. डी. आर. (2010) (HDR)

बहुआयामीय गरीबी सूचकांक (MPI) पर आधारित – 55.4%

हाशिम कमेटी : शहरी क्षेत्रों में गरीबी के अनुमान के लिए योजना आयोग द्वारा नियुक्त कमेटी।

21 अप्रैल, 2011, योजना आयोग ने तेन्दुलकर कमेटी–फार्मूले के ही आधार पर यह स्थापित किया है कि 2009–10 में गरीबी 37.2% से घटकर 32% हो गयी है।

बहु आयामी गरीबी सूचकांक
(Multidimensional Poverty Index)

वर्ष 2010 से साक्षरता और आय पर इनके संकेतकों को नया रूप दिया गया है जिसके तहत 'सकल नामांकन दर' एवं 'वयस्क साक्षरता दर' को क्रमशः स्कूलावधि के अनुमानित वर्ष (Expected years of schooling) एवं 'स्कूलावधि के औसत वर्ष' (Mean years of schooling) से प्रतिस्थापित किया गया है और 'सकल घरेलू उत्पाद' (GDP) का स्थान 'सकल राष्ट्रीय आय' (GNI) ने लिया है जिसमें अन्तर्राष्ट्रीय आय प्रवाहों को भी शामिल किया जाता है।

यूएनडीपी ने वर्ष 2010 से मानव विकास सूचकांक तैयार करने के लिए जिस बहुआयामी निर्धनता सूचकांक का इस्तेमाल किया है, उनके अंतर्गत एक ही परिवार के सदस्यों में पाए जाने वाले शिक्षा, स्वास्थ्य और जीवन स्तर से सम्बन्धित अभावों पर ध्यान दिया गया है। अर्थात भारत में गरीबी रेखा से ऊपर के लोगों में शिक्षा, स्वास्थ्य और जीवन–दशाओं से सम्बन्धित अभाव पाये जाते हैं।

बेरोजगारी

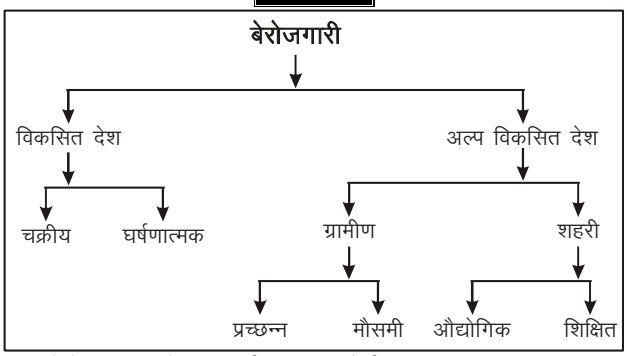

बेरोजगारी से तात्पर्य ''जब कोई व्यक्ति प्रचलित मजदूरी की दर पर कार्य करना तो चाहता है, पर उसे कार्य न मिल पाता हो। इसमें 15 एवं 65 वर्ष के व्यक्तियों को शामिल किया जाता है सम्पूर्ण विश्व में बेरोजगारी की प्रकृति भिन्न–भिन्न है।

विकसित देशों में तथा विकासशील देशों में बेरोजगारी दो प्रकार की पायी जाती है।

(1) ऐच्छिक बेरोजगारी : ऐसे लोग जो अपने मन मुताबिक कार्य के अभाव में किसी अन्य कार्य को नहीं करना चाहते उन्हें **ऐच्छिक बेरोजगार** कहा जाता है।

(2) अनैच्छिक बेरोजगारी : ऐसे लोग जो कार्य करना तो चाहते है पर उन्हें कार्य न मिल पाता हो ऐसे लोग ही वास्तविक रूप से बेरोजगार माने जाते हैं।

विकसित देशों में बेरोजगारी का प्रमुख कारण जहाँ माँग की कमी है वहीं अल्पविकसित देशों में बेरोजगारी का प्रमुख कारण संरचनात्मक (रेल, रोड, शिक्षा, संस्थागत चिकित्सा, शुद्ध पेयजल) विकास की कमी है।

विकसित देश : इसमें दो प्रकार की बेरोजगारी पाई जाती है। विकसित देशों में तकनीकी तथा घर्षणात्मक बेरोजगारी पाई जाती है।

(1) तकनीकी बेरोजगारी : एक तकनीक के स्थान पर जब दूसरी तकनीक आ जाती है तब पुरानी तकनीकी पर काम करने वाला व्यक्ति जब तक प्रशिक्षण प्रापत नहीं कर लेता तब तक वह बेरोजगार होगा।

(2) घर्षणात्मक बेरोजगारी : जब व्यापार जगत में उतार चढ़ाव के कारण मांग कम हो जाती है तो यह अपना प्रभाव सीधे रूप से उत्पादन एवं रोजगार पर डालती है। जैसे– मंदी के दिनों में मांग की कमी के कारण रोजगार में कमी उत्पनन हो जाती है। इस प्रकार की बेराजगारी भी मांग के साथ समाप्त हो जाती है।

अल्प विकसित देशों में प्रमुख बेरोजगारी छिपी हुई या प्रछन्न प्रकार की है। यह भारत की प्रमुख बेरोजगारी है। प्रच्छन्न बेरोजगारों की सीमांत उत्पादकता शून्य होती है।

विकास कार्यक्रम/रोजगार कार्यक्रम

कार्यक्रम	वर्ष	उद्देश्य
प्रथम योजना	1952	देश/राष्ट्र का समग्र विकास
लघु उद्योग विकास संगठन (SIDO)	1954	नये उद्योगों के विकास हेतु
सधन कृषि जिला कार्यक्रम (IADP)	1960–61	कृषकों के बीज, उर्वरक, औजार और ऋण उपलब्ध कराना।
सघन कृषि क्षेत्रीय कार्यक्रम (IAAP)	1964–65	विशिष्टि फसलों का विकास
साख अधिकरण योजना (CAS)	1965	RBI की चयनात्मक साख नीति की एक योजना
अधिक उपज देने वाली किस्मों का कार्यक्रम (High, Yielding Variety Programme)	1966–67	कृषि उत्पादकता बढ़ाने हेतु नये किस्म के बीजों का प्रयोग
भारत पर्यटन विकास निगम	1966	होटलों एवं आराम गृहों का निर्माण
हरित क्रांति	1966–67	कृषि उत्पादन में वृद्धि करना
बहु फसली कार्यक्रम (MCP)	1966–67	कृषि उत्पादन में वृद्धि करना
ग्रामीण विद्युतीकरण निगम	1969	कृषि एवं उद्योगों हेतु ग्रामीण क्षेत्र में विद्युत व्यवस्था
विभेदीकरण ब्याजदर योजना	1972	समाज के कमजोर वर्गों को रियायती दर 4% पर ऋण उपलबध कराना

त्वरित ग्रामीण जल आपूर्ति कार्यक्रम	1972–73	ग्रामीण क्षेत्रों में पर्यावरण सन्तुलन और प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण
ग्रामीण रोजगार के लिए नकद योजना	1972–74	ग्रामीण विकास हेतु
सीमान्त कृषक एवं कृषि श्रमिक ऐजेन्सी	1973–74	तकनीकी एवं आर्थिक सहायता
लघु कृषिक विकास ऐजेन्सी	1974–75	तकनीकी एवं आर्थिक सहायता
कमान क्षेत्र विकास कार्यक्रम	1974–75	बड़ी एवं छोटी योजनाओं हेतु सिंचाई की व्यवस्था
बीस सूत्रीय कार्यक्रम	1975	गरीबी उन्मूलन एवं रहन सहन उच्चीकरण
राष्ट्रीय ग्रामीण विकास संस्थान	1977	ग्रामीण विकास हेतु प्रशिक्षण, शोध तथा सलाहकारी संस्था
मरुभूमि विकास कार्यक्रम	1977–78	मरुभूमि विस्तार प्रक्रिया नियंत्रण एवं पर्यावरण सन्तुलन
काम के बदले अनाज कार्यक्रम	1977–78	विकास प्रक्रियाओं के काम हेतु खाद्यान्न देना
• अन्तोदय कार्यक्रम	1977–78	राजस्थान में गांव के सबसे गरीब परिवारों को स्वावलम्बी बनाना
• ग्रामीण युवाओं का स्वरोजगार हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम (TRYSEM)	15 Aug. 1979	ग्रामीण युवा वर्ग की बेरोजगारी को दूर करने हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम
• समन्वित ग्रामीण विकास कार्यक्रम (IRDP)	2 Oct., 1980	ग्रामीण निर्धन परिवारों को स्वरोजगार हेतु ऋण उपलब्ध कराना
• राष्ट्रीय ग्राम्य रोजगार कार्यक्रम (NREP)	1980	ग्रामीण निर्धनों को लाभप्रद रोजगार उपलब्ध कराना
• ग्रामीण क्षेत्रों में महिला एवं बाल विकास कार्यक्रम (DWCRA)	1982	BPL ग्रामीण परिवारों की महिलाओं को स्वरोजगार के अवसर उपलब्ध कराना
• ग्रामीण भूमिहीन रोजगार गारण्टी कार्यक्रम (RLEGP)	15 Aug., 1983	भूमिहीन कृषकों व श्रमिकों को रोजगार उपलब्ध कराने हेतु
शिक्षित बेरोजगार युवकों को स्वरोजगार प्रदान करने की योजना	1983–84	स्वरोजगार हेतु वित्तीय सहायता एवं तकनीकी सहयोग
राष्ट्रीय ग्रामीण विकास कोष	1984	दानकर्ता के कर में 100% की छूट तथा ग्रामीण विकास की परियोजना हेतु दान प्राप्त करना
व्यापक फसल बीमा योजना	1 April, 1985	विभिन्न कृषि फसलों की बीमा हेतु
इन्दिरा आवास योजना	1985–86	ग्रामीण क्षेत्रों में गृह ऋण 5 लाख रु.
लोक कार्यक्रम एवं ग्रामीण प्रौद्योगिकी विकास परिषद (Council for Advancement of People's Action and Rural Action Technology (CAPART))	1 Sept., 1986	ग्रामीण समृद्धि हेतु सहायता 28 दिसम्बर, 2004 से इसका नाम बदलकर 'गंगोत्री' कर दिया गया है– गवर्नमेंट इन ऐक्शन विथ एनजीओ ट्रान्सफार्मेशन ऑफ रुरल इण्डिया
ग्रामीण जलापूर्ति कार्यक्रम	1986	ग्रामीण क्षेत्रों में पेयजल व्यवस्था
शहरी निर्धनों हेतु स्वरोजगार कार्यक्रम (SEPUP)	1986	स्वरोजगार हेतु वित्तीय एवं तकनीकी मदद
सेवा क्षेत्र दृष्टिकोण	1988	ग्रामीण क्षेत्रों के लिए नई साख नीति
प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम	1988	ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में शिखा विस्तार
भरतीय पर्यटन वित्त निगम	1989	पर्यटन से सम्बद्ध योजनाओं हेतु वित्त व्यवस्था
गृह ऋणखाता योजना	1989	गृह सुविधा उपलब्ध कराने हेतु सहायता
• नेहरू रोजगार योजना (NRY)	Oct. 1989	नगरीय बेरोजगारों को रोजगार देने हेतु
• जवाहर रोजगार योजना (JRY)	April, 1989	ग्रामीण क्षेत्रों के बेरोजगारों को रोजगार देने हेतु
• कुटीर ज्योति योजना	1988–99	ग्रामीण क्षेत्रों में BPL परिवारों को विद्युत कनेक्शन
कृषि एवं ग्रामीण ऋण राहत योजना (ARDRS)	1990	ग्रामीण कुशल श्रमिकों, कारीगरों, बुनकरों को 10000 रु. तक ब्याज मुक्त ऋण देना
शहरी सूक्ष्म उद्यम योजना	1990	शहरी लघु उद्यमियों को वित्तीय सहायता
शहरी सवेतन रोजगार योजना	1990	एक लाख से कम जनसंख्या वाली शहरी बस्तियों में गरीबों के लिए मूल सुविधा की व्यवस्था करके मजदूरी रोजगार प्रदान करना
शहरी आवास एवं आश्रय सुधार योजना	1990	1 लाख से 20 लाख की जनसंख्या वाली शहरी बस्तियों में आश्रय उन्नयन के माध्यम से रोजगार प्रदान करना
रोजगार आश्वासन योजना	2 Oct., 1993	रोजगार उपलब्ध कराने हेतु
प्राइम मिनिस्टर रोजगार योजना (PMRY)	2 Oct., 1993	शिक्षित युवकों को रोजगार प्रदान करना
राष्ट्रीय मातृत्व लाभ योजना	1995	19 वर्ष से अधिक को BPL गर्भवती महिलाओं को 300 रु. की वित्तीय सहायता

SELECTION

प्रधानमंत्री की शिक्षित बेरोजगार युवकों हेतु रोजगार योजना	18 Nov., 1995	50000 से 1 लाख जनसंख्या वाले क्षेत्रों में शिक्षित युवकों को वित्तीय सहायता
राष्ट्रीय सामाजिक सहायता कार्यक्रम	1995	विभिन्न योजनाओं द्वारा BPL लोगों को सहायता
ग्रामीण क्षेत्रों में सामूहिक जीवन बीमा	1995–96	ग्रामीण क्षेत्रों में व्यक्तियों को कम लागत पर जीवन बीमा सुविधा
वृद्धावस्था पेंशन योजना	1995	65 वर्ष या अधिक आयु के असहाय वृद्धों को 200 रुपया मासिक पेंशन
उत्तर–पूर्व विकास बैंक	1995	उत्तर–पूर्व क्षेत्रों में उद्योगों को सहायता
संगम योजना	1996	विकलांगों के कल्याण हेतु
• कस्तूरबा गाँधी शिक्षा योजना	15 Aug., 1997	नीची महिला साक्षरता वाले जिलों में बालिका विद्यालय की स्थापना
• गंगा कल्याण योजना (GKY)	1997–98	भूतल जल एवं भूमिगत जल की निकासी एवं रख रखाव हेतु कृषिकों को वित्तीय सहायता प्रदान करना
• स्वर्ण जयंती शहरी रोजगार योजना SJSRY	1 Dec., 1997 (75 : 25)	शहरी क्षेत्रों में लाभप्रद रोजगार उपलब्ध कराना योजना में तीन योजनाएं विलय कर दी गयी– (1) नेहरू रोजगार योजना (2) PM को समन्वित शहरी गरीबी निवारण कार्यक्रम (3) शहरी बेसिक सेवा गरीबों हेतु
भाग श्री बाल कल्याण नीति	19 Oct., 1998	बालिकाओं की दशा सुधारने हेतु
राजराजेश्वरी महिला कल्याण योजना	10 Oct. 1998	महिलाओं को बीमा सुरक्षा प्रदान करना
जवाहर ग्राम समृद्धि योजना	1 April, 1999	सुधारना और लाभप्रद रोजगार उपलब्ध कराना
• अन्नपूर्णा योजना	19 March, 1999	वृद्ध नागरिकों को निःशुल्क अनाज
समग्र आवास योजना	1999	वृहद् गृह योजना
• स्वर्ण जयंती ग्राम स्वरोजगार योजना (SJGSY)	1 April, 1999 (75 : 25)	सामूहिक प्रयास पर बल सहायता प्राप्त गरीब व्यक्ति को 3 वर्ष में BPL के ऊपर लाना। इसमें छः कार्यक्रमों का विलय कर दिया गया (i) IRDP, (ii) RRYSEM, (iii) DWCR, (iv) SITRA, (v) MWS, (vi) GKYक
जनश्री बीमा	10 Aug. 2000	BPL लोगों को बीमा सुरक्षा कवच देना
प्रधानमंत्री ग्रामोदय योजना	2000	गाँवों का समग्र विकास
अन्तोदय योजना	2000	बी.पी.एल. परिवार के सर्वाधिक गरीबों को अनाज 2 Rs./ किलो गेहूँ, 3 Rs./ किलो चावल उपलब्ध कराना
आश्रय बीमा योजना	June, 2001	रोजगार छूटे कर्मचारियों को सुरक्षाकवच प्रदान करना
कृषि श्रमिक सामाजिक सुरक्षा योजना	1 July, 2001	कृषि श्रमिकों को LIC के सहयोग से सामाजिक सुरक्षा उपलब्ध कराना
सम्पूर्ण ग्रामीण रोजगार योजना (SGRY)	25 Sept. 2001 (75 : 25)	ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार का सृजन
• वाल्मीकि अम्बेडकर आवास योजना	Dec. 2001 50 : 50	शहरी स्लम आबादी को स्वच्छ आवास उपलब्ध कराने हेतु
शिक्षा सहयोग योजना	2001–02	BPL परिवारों के बच्चों को 8वीं बाद की शिक्षा जारी करने हेतु आर्थिक सहायता
• सर्वशिक्षा अभियान नवीं 85 : 15 दसवीं बाद में	2000–01 75 : 25 50 : 50	6–14 वर्ष के सभी बच्चों को 2010 तक आठवीं तक की निःशुल्क एवं गुणवत्ता युक्त प्राथमिक शिक्षा उपलब्ध कराना
• खाद्यान्न बैंक योजना	2001	घोषितग्राम पंचायत स्तर पर खाद्यान्न बैंक की स्थापना
महिला स्वयं सिद्धि योजना	12 July, 2001	महिलाओं का सामाजिक आर्थिक सशक्तीकरण2योजना में इन्दिरा महिला योजना और महिला समृद्धि योजना का विलय
संकट हरण बीमा योजना	30 Sept., 2001	कृषकों के लिए सामाजिक सुरक्षा योजना
पापुलेशन फर्स्ट योजना	2002	निजी क्षेत्र के उद्यमियों द्वारा 2005 तक स्थिर जनसंख्या प्राप्त करने हेतु सहायता
स्वजल धारा योजना	25 Dec., 2002	ग्राम पंचायतों के माध्यम से कुएं, बाबडत्री व हैण्डपम्प लगाने की सुविधा उपलब्ध कराना

• निर्मल भारत योजना	15 Aug., 2002	मलिन बस्तियों में सामुदायिक शैचालयों की सुविधा का विस्तार
अंशदायी बीमा योजना	15 Aug. 2002	10 लाख बुनकरों व शिल्पकारों को बीमा सुरक्षा
प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना	25 Dec., 2000	100% केन्द्रीय स्कीम, 500 से अधिक जनसंख्या वाले गाँवों को जोड़ना
जनरक्षा बीमा योजना	2002–03	1 रु. प्रतिदिन भुगतान से चयनित व्यक्ति निर्धारित अस्पताल में 30 हजार रु. तक का उपचार
• जयप्रकाश नारायण रोजगार गारन्टी योजना	2002–03	देश के पिछड़े ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबों व जरूरत मन्दों को रोजगार उपलब्ध कराने हेतु
• हरियाली योजना	27 Jan., 2003	ग्रामीण क्षेत्रों में वृक्षारोपण को प्रोत्साहन
• ग्रामीण क्षेत्रों में शहरी सुविधाओं की उपलब्धता कार्यक्रम (PURA)	15 Aug., 2003	ग्रामीण क्षेत्रों में उन्नत सुविधा उपलब्ध कराना
प्रधानमंत्री स्वास्थ्य सुरक्षा योजना	2003	देश के पिछड़े राज्यों में 6 नये AIIMS अस्पतालों को स्थापित करने हेतु
काम के बदले अनाज	2004	
असंगठित श्रमिकों को सामाजिक सुरक्षा पायलट योजना	23 Jan., 2004	असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों को पारिवारिक पेंशन बीमा व चिकित्सा आदि सुविधा देना
नेशनल फूड फार वर्क्स प्रोग्रैम	13/10/2004	
जवाहर लाल नेहरू नेशनल अरबन रिनुअल मिशन	3 Dec., 2005	शहरी अवस्थापना विकास
राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य अभियान	12 April, 2005	प्राथमिक स्वास्थ्य सुरक्षाको सुदृढत्र करना
भारत निर्माण योजना	16 Dec., 2005	ग्रामीण अवस्थापना सर्वांगीण तथा व्यापक विकास योजना
आम आदमी बीमा योजना	2 Oct., 2007	भूमि रहित ग्रामीण परिवार के मुखया या आय अर्जक व्यक्ति की बीमा योजना
• राष्ट्रीय स्वास्थ्य बीमा योजना	1 Oct., 2007	बीपीएल परिवार के असंगठित क्षेत्र में कार्य कर रहे प्रत्येक व्यक्ति को स्वास्थ्य बीमा देना
• जनशाला सबला	19 Nov., 2010	किशोरी सशक्तीकरण की केन्द्रीय योजना, देश के 200 जिलों में लागू किशोरियों के स्वास्थ्य तथा पोषण से सम्बन्धित योजना
• स्वावलम्बन	27 Sept. 2010	असंगठित क्षेत्र के लिए नयी पेंशन योजना
• राजीव गाँधी स्कीम फार ऐडोलेसेन्ट गर्ल्स	1 April 2010 से लागू	ICDS द्वारा क्रियान्वित
• महिला कृषि सशक्तीकरण योजना	1 April 2010 से लागू	नेशनल लिवलीहुड मिशन का एक उपभाग
• नेशनल रूरल लिवलीहुड मिशन	2009–10	SGSY का नया नाम
• राजीव आवास योजना (RAY)	2009–10	स्लममुक्ति से सम्बन्धित
• प्रधानमंत्री आदर्श ग्राम योजना	2009–10	अनुसूचित जाति बहुल ग्राम विकास योजना
• महिला किसान सशक्तीकरण योजना	2010–11	ग्रामीण किसान महिलाओं की विशिष्ट आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु
• महात्मा गांधी नेशनल रूरल एम्प्ल्वायमेंट गारन्टी प्रोग्राम (मनरेगा)	2006 से शुरू नरेगा को 2 अक्टू. 2009 को नये नाम मनरेगा से शुरू	ग्रामीण क्षेत्र में रोजगार का अधिकार देना

समीर प्लाजा, मनमोहन पार्क, कटरा, बांसमण्डी के सामने, इलाहाबाद {जहाँ सेलेक्शन एक जिद है.}
फोन नं. : 0532.3266722, 9956971111, 9235581475

भारतीय कृषि

- वर्तमान में कृषि क्षेत्र देश के सकल घरेलू उत्पाद में 26% का योगदान करता है। 1950–51 में यह जी. डी. पी. का 55.4% था।
- भारत में श्रम शक्ति का लगभग 65% भाग कृषि क्षेत्र से जीविका पाता है। 2009–10 : 52%
- यह बहुत निराशाजनक है कि 1951–2001 के दौरान, कृषि श्रमिकों का अनुपात 20% से बढ़कर 27% हो गया; जबकि कृषकों की मात्रा 50% से घटकर 32% हो गई।
- कृषि से प्रमुख उद्योगों को कच्चा माल मिलता है। सूती और पटसन वस्त्र उद्योग, चीनी, चाय, वनस्पति तथा बागान उद्योग, ये सब कृषि पर निर्भर हैं। हस्तकरघा बुनाई, तेल निकालना, चावल कूटना आदि बहुत से लघु और कुटीर उद्योगों को भी कृषि से कच्चा माल मिलता है।
- विनिर्माण–क्षेत्र में उत्पनन आय का 50% इस क्षेत्र से आता है।
- भारत से निर्यात की जाने वाली वस्तुओं में मुख्यतः कृषि वस्तुएँ हसी हैं।
- मोटे तौर पर कुल निर्यात में कृषि वस्तुओं का अनुपात लगभग 15-20% है तथा कृषि से बनी वस्तुओं का अनुपात 20% है।
- कृषि भारत की परिवहन–व्यवस्था का मुख्य अवलम्ब है क्योंकि रेलवे और सड़क मार्ग का अधिकांश व्यापार कृषि वस्तुओं को लाना व ले जाना है।
- अन्तर्देशीय व्यापार की वस्तुएँ भी मुख्यतः कृषि वस्तुएँ ही हैं।
- अच्छी फसल होने पर किसानों की क्रय शक्ति बढ़ जाती है जिससे उद्योग–निर्मित वस्तुओं की माँग और कीमतें बढ़ जाती हैं। परिणामतः उद्योगों की प्रगति होने लगती है।
- अमेरिका, रूस और चीन के बाद भारत सकल उर्वरक उपभाग में विश्व में चौथा स्थान रखता है।
- दुग्ध उत्पादन में भारत विश्व में प्रथम स्थान पर है।
- भारत में कृषि उत्पादन में पशुपालन उत्पाद का हिस्सा 26% है।

उत्पादन सम्बन्धित क्रान्तियाँ

- **हरित क्रान्ति** : हरित क्रान्ति का सम्बन्ध कृषि क्षेत्र में उत्पादन तकनीक के सुधार एवं कृषि उत्पादकता में वृद्धि करने से है। इस क्रान्ति का श्रेय मैक्सिको के डॉ. नॉर्मन बोरलॉग और भारत के डॉ. एम. एस. स्वामीनाथन को जाता है।
- **पीली क्रान्ति** : खाद्य तेलों और तिलहन फसलों के उत्पादन के क्षेत्र में अनुसन्धान और विकास।
- **श्वेत क्रान्ति** : दूध के क्षेत्र में क्रान्ति उत्पन्न करके उत्पादकता बढ़ाने के कार्यक्रमों को ही श्वेत क्रान्ति का नाम दिया गया। श्वेत क्रान्ति की गति को और तेज करने के उद्देश्य से **"आपरेशन फ्लड"** नामक योजना आरम्भ की गयी। इस क्रान्ति का श्रेय भारत के डॉ. वर्गीस कुरियन को जाता है।
- **नीली क्रान्ति** : मछली उत्पादन के क्षेत्र में हुई प्रगति को नीली क्रान्ति के रूप में जाना जाता है।
- **गुलाबी क्रान्ति** : मांस व्यापार के क्षेत्र में हुई प्रगति को गुलाबी क्रान्ति के रूप में जाना जाता है।
- **सलेटी क्रान्ति** : अण्डे उत्पादन के क्षेत्र में हुई प्रगति को सलेटी क्रान्ति के रूप में जाना जाता है।
- **भूरी क्रान्ति** : गैर–परम्परागत ईंधन के उत्पादन के क्षेत्र में हुई क्रान्ति भूरी क्रान्ति के रूप में जानी जाती है।

भारतीय वित्तीय प्रणाली

भारतीय वित्तीय प्रणाली को मुख्यतः दो भागों में बाँटा गया है। (1) मुद्रा बाजार, (2) पूँजी बाजार

मुद्रा बाजार के अन्तर्गत अल्पकालीन प्रतिभूतियों में व्यवहार किया जाता है अर्थात् इसकी अवधि 1 वर्ष से कम होती है, जबकि पूँजी बाजार के अन्तर्गत दीर्घकालीन प्रतिभूतियों का व्यापार किया जाता है अर्थात् 3 वर्ष से अधिक 15 वर्ष से कम।

भारतीय मुद्रा बाजार को संगठित तथा असंगठित दो क्षेत्रों में बाँटा गया है। असंगठित के अनतर्गत सेठ, महाजन, साहूकार शामिल है जबकि संगठित क्षेत्र के अन्तर्गत RBI शीर्ष पर कार्य करती है तथा इसके साथ–साथ व्यापारिक बैंक व गैर बैंकिंग वित्तीय संस्थाएँ (LIC, GIC) भी कार्य करते हैं।

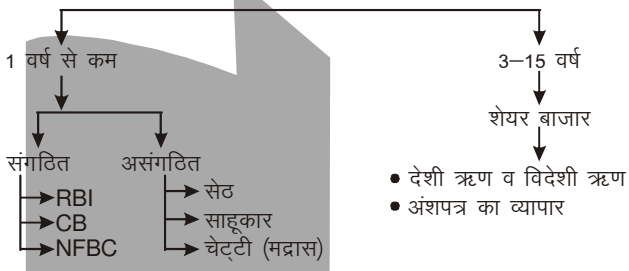

भारत में प्रतिभूति–मुद्रण एवं सिक्कों का उत्पादन (Printing of Securities and Minting in India)

भारत में प्रतिभूति मुद्रण एवं सिक्कों का उत्पादन निम्नलिखित स्थानों पर किया जाता है–

छापेखाने (Printing Press) :

1. **इण्डिया सिक्योरिटी प्रेस, नासिक (महाराष्ट्र)** : नासिक रोड स्थित भारत प्रतिभूति मुद्रणालय (India Security Press) में डाक सम्बन्धी लेखन सामग्री, डाक एवं डाक भिनन टिकटों, अदालती एवं गैर–अदालती स्टाम्पों, बैंकों (RBI तथा SBI) के चेकों, बॉण्डों, राष्ट्रीय बचत पत्रों, पोस्टल ऑर्डर, पासपोर्ट, इन्दिरा विकास पत्रों, किसान विकास पत्रों आदि के अलावा राज्य सरकारों, सरकारी क्षेत्र के उपक्रकों, वित्तीय निगमों आदि के प्रतिभूति पत्रों की छपाई की जाती है।
2. **सिक्योरिटी प्रिन्टिंग प्रेस, हैदराबाद** : सिक्योरिटी प्रिन्टिंग प्रेस, हैदराबाद की स्थापना दक्षिण राज्यों की डाक लेखन सामग्री की माँगों को पूरा करने व पूरे देश की केन्द्रीय उत्पाद शुल्क स्टाम्प की माँग को पूरा करने के लिए 1982 में की गई थी, ताकि भारत प्रतिभूति मुद्रणालय, नासिक रोड के उत्पादन की अनुपूर्ति की जा सके।

3. **करेन्सी प्रेस नोट, नासिक (महाराष्ट्र)** : नासिक रोड स्थित करेंसी नोट प्रेस 10, 50, 100, 500 तथा 1000 रुपए के बैंक नोट छापती है और उनकी पूर्ति करती है।

4. **बैंक नोट प्रेस, देवास (मध्य प्रदेश)** : देवास स्थित बैंक नोट प्रेस 20 रुपए, 50 रुपए, 100 रुपए और 500 पए के उच्च मूल्य वर्ग के नोट छापती है। बैंक नोट प्रेस का स्याही का कारखाना प्रतिभूति पत्रों की स्याही का निर्माण भी करता है।

5. **शाहबनी (प. बंगाल) तथा मैसूर (कर्नाटक) के भारतीय रिजर्व बैंक नोट मुद्रण लिमिटेड** : दो नए एवं अतयाधुनिक करेन्सी नोट प्रेस मैसूर (कर्नाटक) तथा साल्बोनी (प. बंगाल) में स्थापित किए गए हैं। यहाँ RBI के नियंत्रण में करेन्सी नोट छापे जाते हैं। इन नए मुद्रणालयों में 1998–99 तक 10,000 मिलियन करेन्सी नोटों का अतिरिक्त वार्षिक मुद्रण का अनुमान था। देवास तथा नासिक रोड स्थित करेन्सी नोट प्रेसों में प्रतिवर्ष 6000 मिलियन करेन्सी नोटों का मुद्रण होता है।

6. **सिक्योरिटी पेपर मिल, होशंगाबाद (मध्य प्रदेश)** : बैंक और करेन्सी नोट कागज तथा नॉन जयूडिशियल स्टाम्प पेपर की छपाई में प्रयोग होने वाले कागज का उत्पादन करने के लिए सिक्यूरिटी पेपर मिल, होशंगाबाद में 1967–68 में चालू की गई थी।

टकसाल
(Mints)

सिक्कों का उत्पादन करने तथा सोने और चाँदी की परख करने एवं तमगों का उत्पादन करने के लिए भारत सरकार की चार टकसालें मुम्बई, कोलकाता, हैदराबाद तथा नोएडा में स्थित है। मुम्बई, हैदराबाद और कोलकाता की टकसालें काफी समय पहले क्रमशः 1830, 1903 और 1950 में स्थापित की गई थीं, जबकि नोएडा की टकसाल 1989 में स्थापित की गई थी। मुम्बई तथा कोलकाता की टकसालों में सिक्कों के अलावा विभिन्न प्रकार के पदकों (मेडल) का भी उत्पादन किया जाता है। नाएडा की टकसाल में नवीनतम मशीनरी तथा उपकरण हैं, परन्तु अन्य तीनों टकसालों की मशीनें काफी पुरानी हैं, जिसके परिणामस्वरूप उनके रखरखाव पर काफी लागत आती है।

भारतीय रिजर्व बैंक के गवर्नर

भारतीय रिजर्व बैंक की स्थापना 1935 में हुई थी। चालू वर्ष 2010 में अपनी स्थापना के 75 वर्ष भारत के इस केन्द्रीय बैंक ने पूरे किए हैं। इन 75 वर्षों में कुल 22 व्यक्तियों ने इस बैंक के सर्वोच्चच गवर्नर पद को सुशोभित किया है। इन सभी 22 व्यक्तियों के नाम व आरबीआई गवर्नर के रूप में उनका कार्यकाल निम्नलिखित है–

क्र.	गवर्नर	कार्यकाल
1.	सर ओसबोर्न स्मिथ (Sir Osborne Smith)	1–4–35 से 30–6–37
2.	सर जेम्स टेलर (Sir James Taylor)	1–7–37 से 17–2–43
3.	सर सी. डी. देशमुख	11–8–43 से 30–6–49
4.	सर बेनेगल रामाराउ	1–7–49 से 14–1–57
5.	के. जी. अंबेगावकर	14–1–57 से 28–2–57
6.	एच.वी.आर. आयंगर	1–3–57 से 28–2–62
7.	पी.सी. भट्टाचार्य	1–3–62 से 30–6–67
8.	एल.के. झा	1–7–67 से 3–5–70
9.	बी.एन. अदारकर	4–5–70 से 15–6–70
10.	एस. जगन्नाथन	16–6–70 से 19–5–75
11.	एन.सी. सेनगुप्ता	19–5–75 से 19–8–75
12.	के.आर. पुरी	20–8–75 से 2–5–77
13.	एम. नरसिंहम	2–5–77 से 30–11–77
14.	आई. जी. पटेल	1–12–77 से 15–9–82
15.	डॉ. मनमोहन सिंह	16–9–82 से 14–1–85
16.	ए. घोष	15–1–85 से 4–2–85
17.	आर. एन. मल्होत्रा	4–2–85 से 22–12–90
18.	एस. वेंकटारमणन	22–12–90 से 21–12–90
19.	डॉ. सी. रंगराजन	22–12–92 से 21–11–97
20.	डॉ. बिमल जालान	22–12–97 से 6–9–03
21.	डॉ. वाई. वी. रेड्डी	6–9–03 से 5–9–08
22.	डी. सुब्बाराव	5–9–08 से अब तक

भारत को FDI में शीर्षस्थ देशों का हिस्सा (अगस्त 1991 से मार्च 2007 तक)

देश	FDI अन्तर्प्रवाह राशि	प्रतिशत
1. मॉरिशस	18146.81	41.24
2. सं. रा. अमरीका	5893.99	12.78
3. यू. के.	3857.25	6.68
4. नीदरलैण्ड	2637.86	5.97
5. जापान	2208.51	4.85
6. जर्मनी	1701.63	3.68
7. सिंगापुर	1628.18	3.67
8. फ्रांस	895.44	1.96
9. दक्षिणी कोरिया	822.68	1.66
10. स्विट्जरलैण्ड	692.17	1.50
कुल (अन्य को सम्मिलित करते हुए)	**54628.85**	

समीर प्लाजा, मनमोहन पार्क, कटरा, बांसमण्डी के सामने, इलाहाबाद
फोन नं. : 0532.3266722, 9956971111, 9235581475
{जहाँ सेलेक्शन एक जिद है.}

भारतीय बैंकिंग व्यवस्था : एक परिचय

भारत में एक और संगठित तथा आधुनिक बैंकिंग संगठन तथा दूसरी ओर असंगठित बैंकिंग क्षेत्र का सह–अस्तित्व पाया जाता है। भारत में बैंकिंग संगठन की संरचना को निम्नलिखित तालिका के द्वारा समझा जा सकता है–

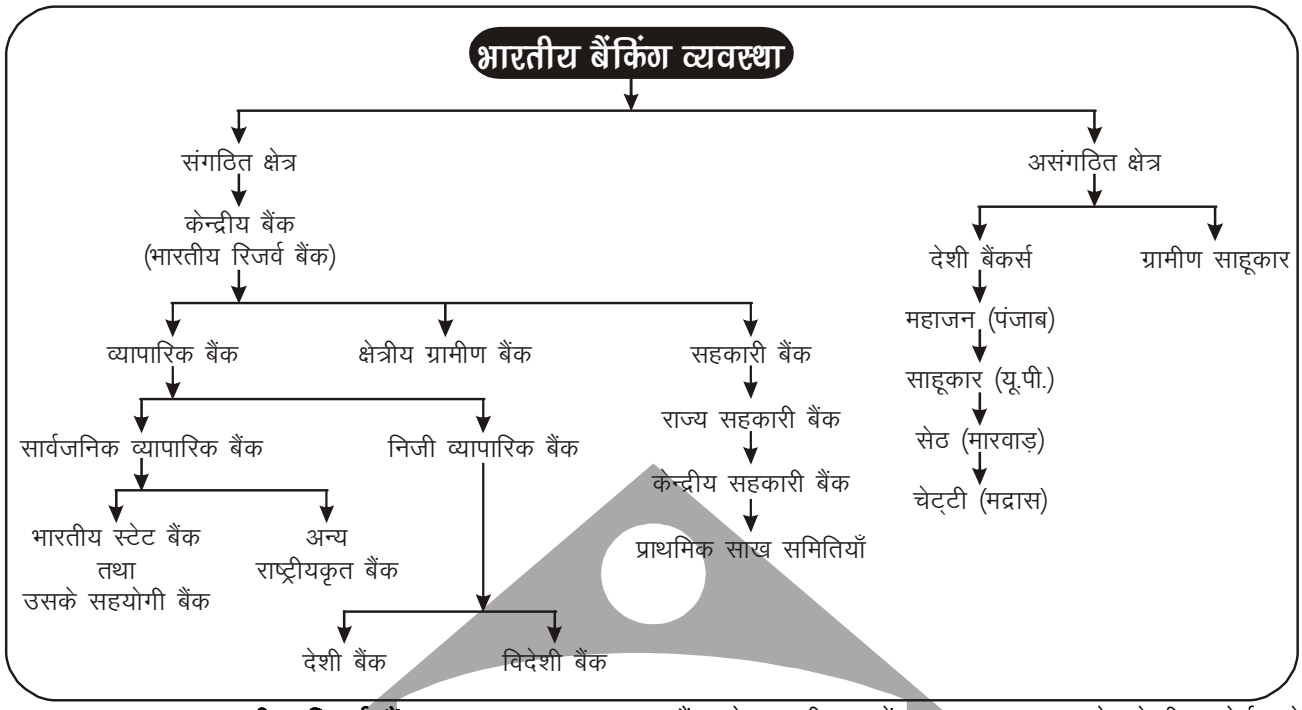

भारतीय रिजर्व बैंक
(Reserve Bank Of India)

हिल्टन यंग आयोग ने भारत में 1926 ई. में प्रचलित मौद्रिक एवं साख प्रणाली में सुधार की आवश्यकता को स्पष्ट करते हुए एक केन्द्रीय बैंक की स्थापना करने का सुझाव दिया। आयोग की सिफारिशों के आधार पर सरकार ने केन्द्रीय बैंक की स्थापना हेतु एक बिल 1927 ई. में विधान सभा में प्रस्तुत किया, जो दुर्भाग्यवश पारित नहीं हो सका। पुनः 1930 ई. में केन्द्रीय बैंकिंग जाँच समिति ने केन्द्रीय बैंक की स्थापना की सिफारिश की, जिसके आधार पर 8 सितम्बर, 1933 को विधान सभा में सरकार ने रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया विधेयक प्रस्तुत किया, जिसे विधान सभा ने पारित कर दिया। इस विधेयक पर 6 मार्च, 1934 को गवर्नर जनरल द्वारा हस्ताक्षर किये गये। तत्पश्चात् 1 अप्रैल, 1935 को 5 करोड़ रुपए की अंश पूँजी के साथ (100 रुपये के पूर्णतया प्राप्त अंशों के साथ) इसकी स्थापना की गई।

प्रारम्भ में यह बैंक अंशधारियों के बैंक के रूप में कार्य करता था, जिसकी लगभग सारी पूंजी निजी अंशधारियों की थी। 2,22,000 रुपये के अंश ही सरकार के पास थे। इस रूप में बैंक ने स्वतंत्रता प्राप्ति के समय तक काम किया, परन्तु 1 जनवरी, 1949 को इसका राष्ट्रीयकरण कर दिया गया। तब से यह केन्द्र सरकार के स्वामित्व में है।

रिजर्व बैंक का प्रबन्धन

रिजर्व बैंक का प्रबन्ध और संचालन एक बीस सदस्यीय केन्द्रीय निदेशक बोर्ड करता है, जिसमें एक गवर्नर, चार उप–गवर्नर, भारत सरकार केवित्त मंत्रालय का एक अधिकारी व सरकार द्वारा मनोनीत दस निदेशक जो देश के आर्थिक जीवन के महत्वपूर्ण पहलुओं का प्रतिनिधित्व करते हैं तथा चार स्थानीय बोर्डों का प्रतिनिधत्व करने वाले चार निदेशक (केन्द्र सरकार द्वारा ही मनोनित) होते हैं।

मुम्बई स्थित प्रधान कार्यालय के अलावा रिजर्व बैंक के चार स्थानीय बोर्ड मुम्बई, कोलकाता, नई दिल्ली और चेन्नई में हैं, जो स्थानीय मुद्दों का अध्ययन करके केन्द्रीय बोर्ड को परामर्श देते हैं। प्रत्येक स्थानीय बोर्ड में केन्द्र सरकार द्वारा मनोनीत पाँच सदस्य होते हैं।

बैंक के प्रचलन तथा बैंकिंग विभाग मुम्बई, कोलकाता, जयपुर, चेन्नई, नई दिल्ली, बायखला (मुम्बई), बंगलौर, नागपुर तथा कानपुर में स्थित हैं। इसका एक कार्यालय लन्दन में भी है।

रिजर्व बैंक के प्रमुख कार्य

भारत का केन्द्रीय बैंक होने के कारण रिजर्व बैंक के कार्य अत्यन्त विस्तृत हैं, जिन्हें दो वर्गों में बाँटा जा सकता है–

(A) सामान्य केन्द्रीय बैंकिंग कार्य : इसवर्ग के अन्तर्गत निम्न कार्यों का सम्पादन रिजर्व बैंक के द्वारा किया जाता है–

1. करेन्सी नोटों का निर्गमन
2. सरकारी बैंकर का काम करना
3. बैंकों के बैंक का कार्य करना
4. विदेशी विनिमय का नियंत्रण
5. साख नियंत्रण (Credit Control)
6. कृषि वित्त की व्यवस्था करना

(B) विकास सम्बन्धी एवं प्रवतन कार्य : रिजर्व बैंक भारत के विकास और प्रवर्तन सम्बन्धी अनेक कार्यों को सम्पादित करने में लगा हुआ है, उदाहरणार्थ ग्रामीण तथा पिछड़े क्षेत्रों में वाणिज्यिक बैंकों की नवीन शाखाएँ खुलवाना, लोगों में बचत की आदत डलवाना, उन्हें ग्रामीण साहूकारों व सूदखोरों के चंगुल से आजाद कराना, कृषि हेतु संस्थागत ऋण उपलब्ध कराना आदि। बैंकों के जमाकर्ताओं को सुरक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से 1962 ई. में 'जीवन बीमा निगम' की तथा बचतों को प्रोत्साहित करने हेतु 1964 ई. में 'यूनिट ट्रस्ट ऑफ इंडिया' की स्थापना की गई। कृषि के विकास हेतु सहकारी समितियों के विकास को प्रोत्साहित करने में रिजर्व बैंक की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इसी प्रकार औद्योगिक विकास हेतु भारतीय औद्योगिक वित्त निगम और राज्य वित्त निगमों, भारतीय औद्योगिक विकास बैंक आदि की स्थापना की गई। इन सभी विकास कार्यों में रिजर्व बैंक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है।

R.B.I. के प्रमुख कार्य :

(1) पत्र मुद्रा का निर्गमन : 2 रु. से लेकर 1 हजार तक के मुख्य सभी नोट जारी करने का कार्य RBI करता है। प्रारम्भ में नोट जारी करने की प्रणाली अनुपातिक कोष प्रणाली थी अर्थात् 60% मूल्य सरकारी प्रतिभूती या रुपये में तथा 40% सोने व विदेशी प्रतिभूती में। अक्तूबर 1956 से न्यूनतम् कोष प्रणाली अपनाई गई। इसके अन्तर्गत 515 करोड़ की प्रतिभूति न्यूनतम् रूप से रखना होगा जिसमें 400 करोड़ की विदेशी प्रतिभूतियाँ तथा 115 करोड़ का स्वर्ण रखना अनिवार्य है। वर्तमान में यही प्रणाली प्रचलित है।

(2) बैंकों का बैंक : यह सभी प्रकार के बैंकों पर नियन्त्रण करता है और इन्हें अन्तिम रूप से ऋण भी प्रदान करता है।

(3) सरकार का बैंक : यह केन्द्र तथा राज्य सरकारों के बैंकर के रूप में कार्य करता है तथा केन्द्र को अल्पकालीन ऋण भी उपलब्ध कराता है।

विदेशी विनिमय कोष का प्रबन्ध भी करता है। यह केन्द्रीय बैंक के सभी विदेशी लेन–देन को भी नियमित करता है अर्थात विदेशी ऋण के सम्बन्ध में सरकार के प्रतिनिधि का रूप में कार्य करता है।

(4) साख नियंत्रक (Credit Control) :

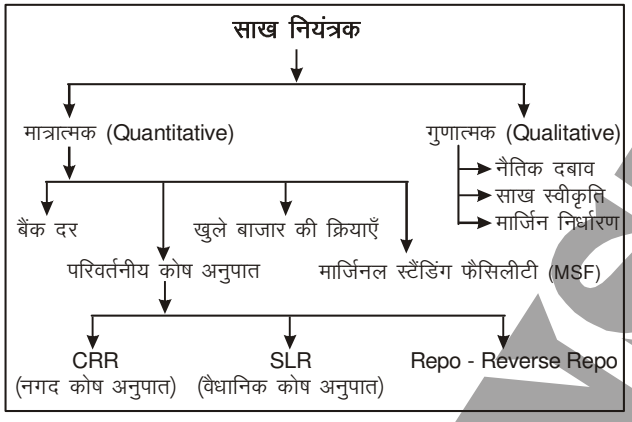

रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया अर्थव्यवस्था में व्याप्त मंदी या मुद्रा स्फीति को दूर करने के लिए साख नियंत्रण की क्रिया अपनाती है इसे ही साख नियंत्रण के मौद्रिक उपाय भी कहते हैं–

परिमाणात्मक उपाय :

(1) बैंक दर : बैंक दर वह दर है जिस दर पर केन्द्रीय बैंक व्यवसायिक बैंकों को उधार या ऋण देता है। इसी को बिलों की पूनरकटौती भी कहते हैं। इसकी वर्तमान दर 6% हैं मुद्रा स्फीति के दिनों में इसे बढत्रा दिया जाता है तो मंदी के दौर में इसे घटा दिया जाता है।

(2) खुले बाजार की क्रियाएँ : RBI इसके अन्तर्गत प्रतिभूतियों में व्यापार करती हैं अर्थात् जब मुद्रा स्फीति की स्थिति होगी तब वह प्रतिभूतियों को बेचेगी। इसके विपरीत मंदी के दिनों में प्रतिभूतियों को खरीद लेती है।

(3) परिवर्तनीय कोष अनुपात : साख नियंत्रण के सर्वाधिक उपर्युक्त उपाय इसी में शामिल है।

(i) CRR : RBI के नियमानुसार प्रत्येक वाणिज्यिक बैंक अपनी प्रारम्भिक जमा का 3 से 15% तक RBI के पास रखता है। RBI अर्थव्यवस्था की स्थिति के अनुसार इसे घटा–बढ़ा सकती है। वर्तमान में इसकी दर 6% है।

(ii) SLR : (Statury Liquidity Ratio) : RBI के नियमानुसार प्रत्येक वाणिज्यिक बैंक अपनी प्रारम्भिक जमा का 25–35% तक अपने पास रख सकता है। जिसे RBI आवश्यकतानुसार बदलती रहती है। वर्तमान में इसकी दर 25% है।

नोट : 2008 में इसकी न्यूनतम सीमा भी समापत कर दी गई और इसे घटा कर 24% कर दिया गया है।

अल्प कालिक ऋण के उपाय :

(1) Repo (Re Purchase Option) : जब भारत सरकार अर्थव्यवस्था में व्याप्त मंदी को दूर करने के लिए अल्पकालीन ऋण लोगों को देती है तो इसे **Repo** कहा जाता है। इससे तरलता में वृद्धि होती है।

(2) Reverse Repo : जब अर्थव्यवस्था से मुद्रा स्फीति को कम करनी होती है तब वह इसका उपयोग करती है। दोनों की दरें क्रमशः 6 और 5% है।

भारतीय रुपया : भारतीय रुपया दशमलव प्रणाली पर आधारित है। 1957 से पूर्ण रुपया एकन्नी, दूअन्नी, चवन्नी के अनुपात में बँटा होता था। 1957–64 के बीच नए पैसे में बदल गया। 1964 के पश्चात नया पैसा–पैसे में बदल गया। 1 रुपए की नोट पित्त मंत्रालय द्वारा जारी की जाती है। इस पर वित्त सचीव के हस्ताक्षर होता है। वर्तमान में इसे बन्द कर दिया गया है।

भारतीय वाणिज्यिक बैंक
(Indian Commercial Banks)

ईस्ट इंडिया कम्पनी ने भारत में बैंकिंग प्रणाली की नींव डाली। भारत में प्रथम मिश्रित पूंजी बैंक 'बैंक ऑफ हिन्दुस्तान' था, जिसका प्रबन्धन ब्रिटिश हाथों में था। प्रथम पूर्णतया भारतीय मिश्रित बैंक 'अवध वाणिज्यिक बैंक' था, जिसकी स्थापना 1881 ई. में हुई थी। 1894 ई. में 'पंजाब नेशनल बैंक' और 1901 ई. में 'पीपुल्स बैंक' की स्थापना हुई। 1913 ई. तक 5 लाख रुपये या इससे अधिक पूँजी वाले बैंकों की संख्या सिर्फ 18 थी। 1921 ई. में वर्तमान तीनों प्रेसीडेंसी बैंकों का विलय करके 'इम्पीरियल बैंक' की स्थापना की गई। स्वतंत्रता पूर्व बैंकिंग व्यवस्था में काफी अस्थायित्व था और अनेक बैंक असफल हो गये थे, जैसे– बैंक ऑफ अपर इंडिया, एलायंस बैंक ऑफ शिमला, ट्रवनकोर नेशनल और क्वीनल बैंक आदि।

भारत में वाणिज्यिक बैंकों को दो वर्गों में वर्गीकृत किया जा सकता है– 1. अनुसूचित बैंक और 2. गैर–अनुसूचित बैंक। अनुसूचित बैंक वे हैं, जिनका नाम रिजर्व बैंक की द्वितीय अनुसूची में उन्हीं बैंकों के नाम पंजीकृत होते हैं,जिनकी चुकता पूंजी और कुल जमा मिलाकर पाँच लाख रुपये से अधिक है। इन बैंकों को अपनी कुल माँग देयताओं तथा सावधि देयताओं का 3% भाग रिजर्व बैंक के पास नकद कोष के रूप में जमा करना पड़ता है। रिजर्व बैंक को इस नकद कोष को 15% तक करने का अधिकार प्राप्त है। साथ ही, ये बैंक अपना लेखा–जोखा हर सप्ताह रिजर्व बैंक के समक्ष प्रस्तुत करते हैं।

पाँच लाख से कम चुकता पूंजी और जमा रखने वाले बैंक गैर–अनुसूचित बैंक कहलाते हैं, जिन पर रिजर्व बैंक का कोई महत्वपूर्ण नियंत्रण नहीं होता। इन बैंकों को अपना लेखा–जोखा प्रत्येक महा रिजर्व बैंक के सामने प्रस्तुत करना होता है। इन्हें भी अपने कुल जमा का एक निश्चित भाग रिजर्व बैंक के पास रखना होता है।

समीर प्लाजा, मनमोहन पार्क, कटरा, बांसमण्डी के सामने, इलाहाबाद {जहाँ सेलेक्शन एक जिद है.}
फोन नं. : 0532.3266722, 9956971111, 9235581475

भारतीय स्टेट बैंक

पूर्व नाम : बैंक ऑफ कलकत्ता (1806 ई.), बैंक ऑफ बंगाल (1809 ई.) और इंपीरियल बैंक ऑफ इंडिया (1921 ई.)।

स्थापना वर्ष : 1806 ई.।

संस्थापक : बंगाल सरकार।

राष्ट्रीयकरण : 1955 ई.।

प्रधान कार्यालय : मुंबई (महाराष्ट्र)।

हिस्सेदारी : 59.73% (आर. बी. आई.)।

परिसंपत्ति : 4812 करोड़ रुपये।

1 जनवरी, 1949 को रिजर्व बैंक के राष्ट्रीयकरण के साथ ही 'बैंकिंग नियमन अधिनियम' पारित किया गया, जिसके द्वाराभारतीय रिजर्व बैंक को वाणिज्यिक बैंकों पर नियंत्रण रखने का विस्तृत अधिकार प्राप्त हो गया। यद्यपि ग्रामीण बैंकिंग जाँच समिति (1950 ई.) इम्पीरियल बैंक के राष्ट्रीयकरण के पक्ष में नहीं थी, पर अखिल भारतीय साख सर्वेक्षण समिति (1952 ई.) ने इम्पीरियल बैंक के साथ कुछ राज्य–सम्बद्ध बैंकों को मिलाकर 'स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया' की स्थापना की संस्तुति की। फलस्वरूप 1 जुलाई, 1955 से इम्पीरियल बैंक की सभी सम्पत्तियों तथा देनदारियों को अधिग्रहण करके भारतीय स्टेट बैंक ने कार्य करना शुरू किया।

सार्वजनिक क्षेत्र में दो प्रकार की बैंक कार्यरत् हैं– 1. भारतीय स्टेट बैंक समूह तथा 2. अन्य राष्ट्रीयकृत बैंकें। व्यापारिक बैंक वर्ग के अनतर्गत सार्वजनिक क्षेत्र में भारतीय स्टेट बैंक शीर्ष स्थान की बैंक है। जून, 2006 के अन्त में स्टेट बैंक समूह की 13501 शाखाएँ कार्य कर रहीं थी। वर्तमान समय में 'भारतीय स्टेट बैंक' समूह की 15000 से भी अधिक शाखा हो चुके हैं। अभी एस.बी.आई. देश का सबसे बड़ा बैंक तथा शाखाओं की संख्या की दृष्टि से विश्व का सबसे बड़ा बैंक है।

SBI के राष्ट्रीयकरण के बाद 1959 ई. में इसके साथ अन्य 8 बैंकों (वर्तमान में केवल 5) को SBI के सहायक बैंक (Associate Bank) के रूप में बदल दिया गया था और इसे 'स्टेट बैंक समूह' (State Bank Group) का नाम दिया गया। 24 जुलाई, 2008 को स्टेट बैंक ऑफ सौराष्ट्र एवं 26 अगस्त, 2010 को स्टेट बैंक ऑफ इंदौर को भारतीय स्टेट बैंक में विलय कर दिया गया। इस प्रकार वर्तमान में भारतीय स्टेट बैंक के सहायक (स्टेट बैंक एसोसिएट्स) पाँच बैंक निम्नलिखित हैं–

स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एंड जयपुर

पूर्व नाम : द गोविंद बैंक प्राइवेट लिमिटेड।
राष्ट्रीयकरण : 1959 ई.।
प्रधान कार्यालय : जयपुर (राजस्थान)।
हिस्सेदारी : 75% (एस.बी.आई.)।
नोट : 1955 ई. में बीकानेर और जयपुर के अलग–अलग स्टेट बैंक थे, जिन्हें बाद में मिलाकर एक कर दिया गया।

स्टेट बैंक ऑफ हैदराबाद

पूर्व नाम : हैदराबाद स्टेट बैंक।
स्थापना वर्ष : 1941 ई.।
राष्ट्रीयकरण : 1959 ई.।
प्रधान कार्यालय : हैदराबाद (आंध्र प्रदेश)।
हिस्सेदारी : 100% (एस.बी.आई.)।

स्टेट बैंक ऑफ मैसूर

पूर्व नाम : बैंक ऑफ मैसूर लिमिटेड।
स्थापना वर्ष : 1913 ई.।
संस्थापक : एम. विश्वेश्वरैया।
राष्ट्रीयकरण : 1959 ई.।
प्रधान कार्यालय : बंगलौर (कर्नाटक)।
हिस्सेदारी : 92.33% (एस.बी.आई.)।

स्टेट बैंक ऑफ पटियाला

पूर्व नाम : पटियाला स्टेट बैंक।
स्थापना वर्ष : 1917 ई.।
संस्थापक : महाराजा भूपिंदर सिंह।
राष्ट्रीयकरण : 1959 ई.।
प्रधान कार्यालय : पटियाला (पंजाब)।
हिस्सेदारी : 100% (एस.बी.आई.)।

स्टेट बैंक ऑफ ट्रेवेनकोर

पूर्व नाम : ट्रेवेनकोर बैंक लिमिटेड।
स्थापना वर्ष : 1945 ई.।
राष्ट्रीयकरण : 1959 ई.।
प्रधान कार्यालय : त्रिवेंद्रम (केरल)।
हिस्सेदारी : 75% (एस.बी.आई.)।

अन्य राष्ट्रीयकृत बैंक

इलाहाबाद बैंक

स्थापना वर्ष : 1865 ई.।
राष्ट्रीयकरण : 19 जुलाई, 1969।
प्रधान कार्यालय : कोलकाता (पश्चिम बंगाल)।
हिस्सेदारी : 55.23% (केन्द्र सरकार)।

आंध्रा बैंक

स्थापना वर्ष : 1923 ई.।
संस्थापक : डॉ. बी. पट्टाभि सीतारमैया।
राष्ट्रीयकरण : 15 अप्रैल, 1980।
प्रधान कार्यालय : हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)।
हिस्सेदारी : 62.50% (केंद्र सरकार)
परिसंपत्ति : 48 करोड़ रुपये।

बैंक ऑफ बड़ौदा

स्थापना वर्ष : 15 जुलाई, 1908 ई.।
संस्थापक : महाराजा सयाजीराव–III
राष्ट्रीयकरण : 19 जुलाई, 1969।
प्रधान कार्यालय : मुम्बई (महाराष्ट्र)।
हिस्सेदारी : 66.83% (केंद्र सरकार)।
परिसंपत्ति : 619 करोड़ रुपये।

बैंक ऑफ इंडिया

स्थापना वर्ष : 1906 ई.।
संस्थापक : मुंबई के व्यापारियों का समूह।
राष्ट्रीयकरण : 19 जुलाई, 1969।
प्रधान कार्यालय : मुंबई (महाराष्ट्र)।
हिस्सेदारी : 69.47% (केंद्र सरकार)।
परिसंपत्ति : 1554 करोड़ रुपये।

बैंक ऑफ महाराष्ट्र

स्थापना वर्ष : 1935 ई.।
राष्ट्रीयकरण : 19 जुलाई, 1969।
प्रधान कार्यालय : पुणे (महाराष्ट्र)।
हिस्सेदारी : 76.77% (केंद्र सरकार)।
परिसंपत्ति : 280 करोड़ रुपये।

केनरा बैंक

पूर्व नाम : केनरा बैंक हिंदू परमानेंट फंड।
स्थापना वर्ष : 1906 ई.।
संस्थापक : ए. सुब्बाराव पाई।
राष्ट्रीयकरण : 19 जुलाई, 1969।
प्रधान कार्यालय : बंगलौर (कर्नाटक)।
हिस्सेदारी : 73.17% (केंद्र सरकार)।
परिसंपत्ति : 1125 करोड़ रुपये।

सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया

स्थापना वर्ष : 1911 ई.।
संस्थापक : सोराब्जी पोच्खानवाला।
राष्ट्रीयकरण : 19 जुलाई, 1969।
प्रधान कार्यालय : मुंबई (महाराष्ट्र)।
परिसंपत्ति : 814 करोड़ रुपये।

कॉर्पोरेशन बैंक

स्थापना वर्ष : 1906 ई.।
राष्ट्रीयकरण : 15 अप्रैल, 1980।
प्रधान कार्यालय : मंगलौर (कर्नाटक)।
हिस्सेदारी : 57.17% (केंद्र सरकार)।
परिसंपत्ति : 206.8 करोड़ रुपये।

देना बैंक

पूर्व नाम : देवकरण नान्जी बैंकिंग कम्पनी लिमिटेड।
स्थापना वर्ष : 1938 ई.।
संस्थापक : प्राण लाल देवकरण नान्जी।
राष्ट्रीयकरण : 19 जुलाई, 1969।
प्रधान कार्यालय : मुंबई (महाराष्ट्र)।
हिस्सेदारी : 51.19% (केंद्र सरकार)।
परिसंपत्ति : 591 करोड़ रुपये।

इंडियन बैंक

स्थापना वर्ष : 1907 ई.।
राष्ट्रीयकरण : 19 जुलाई, 1969।
प्रधान कार्यालय : चेन्नई (तमिलनाडु)।
परिसंपत्ति : 418 करोड़ रुपये।

इंडियन ओवरसीज बैंक

स्थापना वर्ष : 1937 ई.।
संस्थापक : एम. चिदंबरम् चेतियार।
राष्ट्रीयकरण : 19 जुलाई, 1969।
प्रधान कार्यालय : चेन्नई (तमिलनाडु)।
हिस्सेदारी : 75% (भारत सरकार)।
परिसंपत्ति : 319 करोड़ रुपये।

ओरिएंटल बैंक ऑफ कॉमर्स

स्थापना वर्ष : 1943 ई. (लाहौर)।
संस्थापक : रामबहादुर लाला सोहन लाल।
राष्ट्रीयकरण : 15 अप्रैल, 1980।
प्रधान कार्यालय : कनॉट प्लेस, नई दिल्ली।
हिस्सेदारी : 66.5% (भारत सरकार)।
परिसंपत्ति : 327 करोड़ रुपये।

पंजाब एंड सिंध बैंक

स्थापना वर्ष : 1908 ई.।
राष्ट्रीयकरण : 15 अप्रैल, 1980।
प्रधान कार्यालय : राजेन्द्र प्लेस, नई दिल्ली।

पंजाब नेशनल बैंक

स्थापना वर्ष : 1895 ई. (लाहौर)।
राष्ट्रीयकरण : 19 जुलाई, 1969।
प्रधान कार्यालय : भीकाजी कामा प्लेस, नई दिल्ली।
हिस्सेदारी : 57.79% (भारत सरकार)।
परिसंपत्ति : 119 करोड़ रुपये।

सिंडिकेट बैंक

स्थापना वर्ष : 1925 ई.।
संस्थापक : यू.एस. पाई, वमन कुवा एवं टी.एम.ए. पाई।
राष्ट्रीयकरण : 19 जुलाई, 1969।
प्रधान कार्यालय : मणिपाल (कर्नाटक)।
हिस्सेदारी : 73.52% (भारत सरकार)।
परिसंपत्ति : 425 करोड़ रुपये।

यूको बैंक

पूर्व नाम : यूनाइटेड कॉमर्शियल बैंक लिमिटेड।
स्थापना वर्ष : 1943 ई.।
राष्ट्रीयकरण : 19 जुलाई, 1969।
प्रधान कार्यालय : कोलकाता (पश्चिम बंगाल)।
हिस्सेदारी : 74.98% (भारत सरकार)।
परिसंपत्ति : 810 करोड़ रुपये।

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया

स्थापना वर्ष : 1919 ई.।
राष्ट्रीयकरण : 19 जुलाई, 1969।
प्रधान कार्यालय : मुंबई (महाराष्ट्र)।
हिस्सेदारी : 60.85% (केंद्र सरकार)।
परिसंपत्ति : 1375 करोड़ रुपये।

यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया

पूर्व नाम : यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया लिमिटेड।
स्थापना वर्ष : 1950 ई.।
राष्ट्रीयकरण : 19 जुलाई, 1969।
प्रधान कार्यालय : कोलकाता (प. बंगाल)।
परिसंपत्ति : 277 करोड़ रुपये।

विजया बैंक

स्थापना वर्ष : 1931 ई.।
संस्थापक : ए. बी. शेट्टी।
राष्ट्रीयकरण : 15 अप्रैल, 1980 ई.।
प्रधान कार्यालय : बंगलौर (कर्नाटक)।
हिस्सेदारी : 53.87% (केन्द्र सरकार)।
परिसंपत्ति : 77.5 करोड़ रुपये।

समीर प्लाजा, मनमोहन पार्क, कटरा, बांसमण्डी के सामने, इलाहाबाद
फोन नं. : 0532.3266722, 9956971111, 9235581475
{जहाँ सेलेक्शन एक जिद है.}

वाणिज्यिक बैंकों का राष्ट्रीयकरण

पहले निजी बैंकें अपने धन की सुरक्षा और लाभ की दृष्टि से केवल बड़े उद्योगपतियों और व्यापारियों को ही ऋण दिया करती थीं। भारत की आर्थिक उन्नति की दृष्टि से एवं देश की गरीबी दूर करने के विचार से यह आवश्यक समझा गया कि कमजोर वर्गों को वित्तीय सहायता दी जाए। अतः बैंकों की ऋण नीति में परिवर्तन आवश्यक था। यह सोचा गया कि कमजोर वर्गों को बिना प्रतिभूति के ऋण देने की व्यवस्था की जाए। निजी क्षेत्र में ऐसा करना सम्भव नहीं था। अतः ऐसी स्थिति में बैंकों का राष्ट्रीयकरण आवश्यक हो गया था।

इसी से सम्बद्ध अन्य उद्देश्य भी थे, जैसे– बैंकों की शाखाएँ प्रायः शहरी क्षेत्रों में ही थीं। गाँवों और कस्बों में बैंकों की शाखाएँ स्थापित करना आवश्यक था, साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों से धनराशि एकत्र करने के लिए तथा बैंकों का क्षेत्र बढ़ाने के लिए उनको ग्रामीण जनता के निकट ले जाना आवश्यक था। यह निजी क्षेत्र में सम्भव नहीं था।

बैंकें कम–से–कम जोखिम का काम करती थीं। इस कारण कृषि एवं लघु उद्योगों की सहायता करने के लिए उनका राष्ट्रीयकरण आवश्यक हो गया था। बैंकों पर पूँजीपतियों का प्रभाव था, वे बैंकों के द्वारा अनुचित रूप से लाभान्वित हो रहे थे और सामान्य जनोपयोगी हितों की अपेक्षा हो रही थी।

अतः बैंकों को राष्ट्रीय नियोजन की मुख्य धारा में जोड़ने के उद्देश्य से सरकार ने 19 जुलाई, 1969 को 14 बड़े व्यापारिक बैंकों, जिनकी जमाएँ 50 करोड़ रुपये से अधिक थी, का राष्ट्रीयकरण कर दिया। ये बैंक निम्नलिखित थे–

	बैंक का नाम	प्रधान कार्यालय
1.	सेंट्रल बैंक ऑफ इण्डिया	मुम्बई
2.	पंजाब नेशनल बैंक	नई दिल्ली
3.	बैंक ऑफ इण्डिया	मुम्बई
4.	यूनाइटेड कॉमर्शियल बैंक	कोलकाता
5.	सिण्डीकेट बैंक	मणिपाल
6.	केनरा बैंक	बंगलौर
7.	बैंक ऑफ बड़ौदा	मुम्बई
8.	देना बैंक	मुम्बई
9.	इलाहाबाद बैंक	कोलकाता
10.	इण्डियन बैंक	चेन्नई
11.	इण्डियन ओवरसीज बैंक	चेन्नई
12.	बैंक ऑफ महाराष्ट्र	पुणे
13.	यूनाइटेड बैंक ऑफ इण्डिया	कोलकाता
14.	यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया	मुम्बई

नये बीस–सूत्रीय कार्यक्रम को गति देने के लिए तथा प्राथमिक क्षेत्र (Priority Sector) को ऋण देने के लिए अतिरिक्त धन की आवश्यकता थी। अतः पुनः 15 अप्रैल, 1980 को सरकार ने 6 बड़े व्यापारिक बैंकों, जिनकी जमाएँ 200 करोड़ रुपये से अधिक थी, का राष्ट्रीयकरण कर दिया। इन छः बैंकों का राष्ट्रीयकरण कर देने से सरकार को 945 करोड़ रुपये की धनराशि तत्काल उपलब्ध हो गई। इसके साथ ही यह बात भीसामने थी कि सरकार बैंक की ऋण–नीति पर अधिक प्रभावशाली नियन्त्रण कर सकेगी। ये नये राष्ट्रीयकृत बैंक थे–

	बैंक का नाम	प्रधान कार्यालय
1.	आन्ध्र बैंक	हैदराबाद
2.	पंजाब एण्ड सिंध बैंक	नई दिल्ली
3.	ओरिएण्टल बैंक ऑफ कॉमर्स	नई दिल्ली
4.	विजया बैंक	बंगलौर
5.	कॉर्पोरेशन बैंक	मंगलौर
6.	न्यू बैंक ऑफ इण्डिया	.....

नोट : वर्तमान में राष्ट्रीयकृत व्यापारिक बैंकों की कुल संख्या 20 से घटकर 19 रह गई है, क्योंकि 4 सितम्बर, 1993 को सरकार ने 'न्यू बैंक ऑफ इण्डिया' का पंजाब नेशनल बैंक में विलय कर दिया है।

11 अक्टूबर, 2004 में भारतीय औद्योगिक विकास बैंक (IDBI) का राष्ट्रीयकरण कर देने के उपरान्त राष्ट्रीयकृत बैंकों की संख्या पुनः वर्तमान में 20 हो गई है।

निजी बैंकों का सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में विलय

क्र.	निजी क्षेत्र के बैंक	जिसमें विलय किया गया
1.	बैंक ऑफ कोचीन	स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया
2.	लक्ष्मी कॉमर्शियल बैंक	केनरा बैंक
3.	बैंक ऑफ बिहार	स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया
4.	हिन्दुस्तान कॉमर्शियल बैंक	पंजाब नेशनल बैंक
5.	मिराज स्टेट बैंक	यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया
6.	ट्रेडर्स बैंक	बैंक ऑफ बड़ौदा
7.	बैंक ऑफ क्रेडिट कॉमर्स	स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया
8.	बैंक ऑफ तमिलनाडु	इण्डियन ओवरसीज बैंक
9.	तंजावुर बैंक	इण्डियन बैंक
10.	पारूल सेंट्रल बैंक	बैंक ऑफ इण्डिया
11.	यूनाइटेड इण्डस्ट्रियल बैंक	इलाहाबाद बैंक
12.	पूर्वांचल बैंक	सेण्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया
13.	बैंक ऑफ करड़	बैंक ऑफ इण्डिया
14.	बरेली कॉरपोरेशन बैंक	बैंक ऑफ बड़ौदा
15.	सिक्किम बैंक	यूनियन बैंक ऑफ कॉमर्स
16.	बनारस स्टेट बैंक	बैंक ऑफ बड़ौदा
17.	पंजाब कोऑपरेटिव बैंक	ओरिएण्टल बैंक ऑफ कॉमर्स
18.	दोआब बैंक	बैंक ऑफ बड़ौदा
19.	नेदुनगड़ी बैंक	पंजाब नेशनल बैंक
20.	ग्लोबल ट्रस्ट बैंक	ओरिएण्टल बैंक ऑफ कॉमर्स

क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक
(Regional Rural Banks)

बैंकों के राष्ट्रीयकरण के पश्चात् भी वाणिज्यिक बैंकों की पहुँच ग्रामीण स्तर तक नहीं हो पायी। ग्रामीण क्षेत्र बैंकिंग सुविधाओं से वंचित ही रहे। विशेषकर कृषि क्षेत्र को बैंको का बहुत कम लाभ प्राप्त हुआ। कृषि एवं ग्रामीण कारीगरों को आर्थिक सहायता पहुँचाने तथा उनकीबचतों को उपयुक्त आधार देने के उद्देश्य से आर. जी. सुरैया की अध्यक्षता में एक आयोग गठित किया गया जिसने जनवरी, 1972 में अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की, जिसमें आयोग ने ग्रामीण बैंक की संकल्पना प्रस्तुत की। फलस्वरूप भारत में ग्रामीण साख की कमी को दूर करने के उद्देश्य से सरकार ने 26 सितम्बर, 1975 को एक अध्यादेश द्वारा देशभर में 'क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक' (RRB) की घोषणा की। देश में 2 अक्टूबर, 1975 को पाँच क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक स्थापित किये गये–

1. मुरादाबाद (उत्तर प्रदेश) – सिण्डीकेट बैंक
2. गोरखपुर (उत्तर प्रदेश) – स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया
3. भिवानी (हरियाणा) – पंजाब नेशनल बैंक
4. जयपुर (राजस्थान) – यूनाइटेड कॉमर्शियल बैंक
5. माल्दा (पश्चिम बंगाल) – यूनाइटेड बैंक ऑफ इण्डिया

प्रत्येक क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक की अधिकृत पूँजी (Authorised Capital) 1 करोड़ रुपये और जारी और चुकता पूँजी (Issued and Paid up Capital) 25 लाख रुपये थी। क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक की हिस्सा पूँजी में केन्द्रीय सरकार द्वारा 50%, राज्य सरकार द्वारा 15% तथा लीड बैंक द्वारा 35% का योगदान दिया जाता है।

इन बैंकों द्वारा उपलब्ध करायी गयी साख सुविधा का 75% ग्रामीण क्षेत्रों के कमजोर वर्गों को उपलब्ध करायी जाती है। 1 जून, 1996 तक देश में इन बैंकों की 19516 शाखाएँ थी तथा देश के 389 जिलों में इनका फैलाव है। क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक सिक्किम और गोवा को छोड़कर देश के सभी राज्यों में कार्यरत् हैं। अभी देश में कुल 82 क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक हैं। इन बैंकों ने 7500 करोड़ रुपये वार्षिक साख सुविधा उपलब्ध कराये हैं।

सहकारी ऋण समितियाँ : सहकारी वित्त प्रबंध ग्राम ऋण का सबसे सस्ता और उत्तम स्रोत है। इसमें किसानों के शोषण का भय नहीं रहता। इसके द्वारा अल्पकालीन और मध्यकालीन ऋण उपलब्ध कराये जाते हैं। इन समितियों द्वारा 1981 ई. में कृषि क्षेत्र में कुल आवश्यकता का 33% ऋण जुटाया गया, जबकि 1951–52 में यह अनुपात केवल 3% था। ये समितियाँ 86 प्रतिशत गाँवों में फैली हुई हैं।

देशी बैंकर : ग्रामीण और कस्बाई क्षेत्रों में दो प्रकार के देशी बैंकर होते हैं। प्रथम प्रकार के बैंकर, बैंकिंग कार्य करने के साथ–साथ कृषि, व्यापार तथा अन्य कार्य भी करते हैं। दूसरी श्रेणी में वे बैंकर हैं, जिनका बैंकिंग व्यवसाय ही मुख्य पेशा है। इनके ऋण देने की प्रणाली अत्यंत सरल है, ये उत्पादक और अनुत्पादक दोनों प्रकार के ऋण देते हैं। इनका अपने ग्राहकों से प्रत्यक्ष व्यक्तिगत संबंध होता है। इसमें सामान्यतः ब्याज की दर अपेक्षतः अधिक होता है। 1951–52 में जहाँ इनके द्वारा कुल ग्रामीण ऋण का 70 प्रतिशत उपलब्ध कराया जाता था, वहीं वर्ष 1991 तक इनका भाग गिरकर 17.6% हो गया।

व्यवसायिक बैंक : भारत का पहला बैंक जो भारतीयों द्वारा संचालित था। 1881 में अवध कामर्शियल बैंक के नाम से खोला गया। यह भारतीयों के प्रति सीमित दायित्व काा बैंक था। जबकि पूर्णता भारतीयों द्वारा संचालित बैंक पंजाब नेशनल बैंक (1894) था।

भारत के व्यवसायिक बैंक : व्यावसायिक बैंक वे बैंक हैं जो जनता से बचत को जमा के रूप में स्वीकार करते हैं और उन्हें अल्पकालीन ऋण उपलब्ध करता है। उनका मुख्य उद्देश्य अपने लाभ को अधिकतम करना है। ये व्यवसायिक बैंक 3 रूपों में खाता खोल करके जनता की बचत को स्वीकारते हैं।

(1) चालू खाता : इसके अन्तर्गत ये जमा पर कोई ब्याज नहीं देते हैं बचत खाता धारक प्रतिदिन अपनी आवश्यकतानुसार कई बार लेन–देन कर सकता है। बैंक इस पर सुविधा चार्ज लगा सकता है।

(2) बचत खाता : खाता धारक सप्ताह में 2 से 3 बार तक ही पैसे निकाल सकता है तथा जमा कई बार कर सकता है। इस शर्त के पालनकर्ता को बैंक 3.5% तब वार्षिक ब्याज देती है।

(3) मियादी खाता (Time Deposit) : इसको Fix Deposit भी कहते हैं। इसके अन्तर्गत खात धारक अपनी धनराशि को स्वेच्छानुसार निश्चित अवधि के लिए कर देता है। जिस पर समयानुसार निश्चित ब्याज दर मिलती है।

व्यापारिक बैंक : व्यावसायिक बैंकों में सबसे बड़ा बैंक SBI हैं इसकी स्थापना अखिल भारतीय ग्रामीण साख सर्वेक्षण समिति (1952) जिसे मोखाला समिति भी कहते हैं। इसने इम्पीरियल बैंक को राष्ट्रीयकृत करने का सुझाव दिया था। इसी के आधार पर 1 जुलाई, 1955 में इम्पीरियल बैंक का राष्ट्र्यकरण करके इसका नाम भारतीय स्टेट बैंक कर दिया गया।

नाबार्ड NABARD (National Bank of Agriculture and Rural Development) : स्थापना : 12 जुलाई, 1982 में की गई यह बैंक ग्रामीण विकास के लिए ऋण देता है और RBI के नियंत्रण में कार्य करता है।

शाखा बैंकिंग : एकाकी स्वामित्व एवं संस्था के अन्तर्गत दो या दो से अधिक बैंकिंग शाखाएं इसके अन्दर कार्य करती हैं। शाखा बैंक ऑस्ट्रेलिया, कनाडा तथा इण्डिया में प्रचलित हैं।

इकाई बैंक : एक कार्यालय में स्थित बैंकिंग प्रणाली है यह U.S.A. में प्रचलित है।

सर्व व्यापी बैंकिंग : जब वाणिज्यिक बैंक सामान्य बैंकिंग क्रियाओं के साथ–साथ औद्योगिक ईकाईयों को दीर्घकालीन ऋण उपलब्ध कराए तब इस प्रकार के बैंक को सर्वव्यापी बैंक कहते हैं।

कोर बैंकिंग (CORE BANKING) : जब कुछ बैंकों की सेवाएँ आपस में नेट के माध्यम से जुडत्र कर एक हो जाती हैं इसी को इंटरनेट बैंक या E-Banking भी कहते हैं। इसके अनतर्गत किसी अन्य बैंक का ग्राहक अन्य में फण्ड को जमा कर या निकला सकता है।

Free Banking : एक ऐसी व्यवस्था जिसमें नोट निर्गमन का कार्य केन्द्रीय बैंक के पास नहीं होता है बल्कि सभी बैंकों को इसका अधिकार प्राप्त होता है।

नोट : स्टेट बैंक समूह की संख्या 7 से घटकर 6 हो गई क्योंकि State Bank of Indore का विलय भारतीय SB में कर दिया गया इसके पहले सौराष्ट्र बैंक का विलय SBI में कर दिया गया।

समीर प्लाजा, मनमोहन पार्क, कटरा, बांसमण्डी के सामने, इलाहाबाद {जहाँ सेलेक्शन एक जिद है.}
फोन नं. : 0532.3266722, 9956971111, 9235581475

Credit Card & Debit Card : Credit Card उधार देने का एक नया तरीका है। इसकी शुरुआत 1920 में U.S.A. में की गई थी। इसमें ब्याज दर सामान्य ब्याज दर से काफी ऊँचा होता है क्योंकि Credit Card बिना किसी प्रतिभूति के ऋण उपलब्ध कराती है।

Debit Card का सबसे अच्छा उदाहरण ATM (Automated Tailer Machine) है।

बैंकिंग क्षेत्र से सम्बन्धित प्रमुख समीतियाँ :

1. नरसिंम्हन समीति : 17 अगस्त, 1991 में स्थापित की गई इसका उद्देश्य बैंकिंग ढाँचा में परिवर्तन करना।
2. द्वितीय नरसिम्हन समिति : जुलाई, 1998 में गठित की गई थी जो बैंकों के कार्य दिवसों में वृद्धि हेतु सुझाव दे।
3. गोड़परिया समिति : इसके अध्यक्ष M. N. गोइपरिया थे इसकी स्थापना 1990 में की गई इसका उद्देश्य ग्राहक सेवा सुधार था।

अन्य बैंक एवं वित्तीय संस्थाएँ :

बैंक का नाम	स्थापना वर्ष	उद्देश्य/प्रमुख कार्य
भारतीय औद्योगिक ऋण व विनियोग निगम (ICICI)	जनवरी, 1955	औद्योगिक इकाईयों को प्रोत्साहन देना एवं सहायता करना।
भारतीय औद्योगिक विकास बैंक (IDBI)	जुलाई, 1964	दीर्घकालीन औद्योगिक वित्त प्रदान करना।
राष्ट्रीय कृषि व ग्रामीण विकास बैंक (NABARD)	जुलाई, 1982	ग्रामीण साख प्रदान करने वाला शीर्ष बैंक।
भारतीय निर्यात–आयात बैंक (EXIM BANK)	जनवरी, 1982	विदेश व्यापार से सम्बद्ध कम्पनियों को वित्तीय सहायता व सुविधाएँ प्रदान करना।
भारतीय औद्योगिक पुनर्निर्माण बैंक (IRBI)	मार्च, 1985	बीमार औद्योगिक इकाईयों के पुनरुद्धार के लिए वित्त मुहैया करना।
राष्ट्रीय आवास बैंक (NHB)	मार्च, 1988	आवास बनाने एवं सम्पत्ति के विकास के लिए वित्त प्रदान करना, गंदी बस्तियों का पुनर्विकास आदि।
भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक (SIDBI)	अप्रैल, 1990	लघु क्षेत्र के उद्योगों का विकास व सम्वर्द्धन।

व्यापारिक बैंकों की शाखाएं (30 जून, 2009 की स्थिति) :

बैंकों के नाम	कुल बैंक शाखाएं	कुल में ग्रामीण शाखाओं का प्रतिशत
स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया तथा सहयोगी बैंक	16294	34.49
राष्ट्रीयकृत बैंक	39703	33.81
क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक	15199	76.61
कुल सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक	71196	43.1
अन्य भारतीय अनुसूचित बैंक	8979	12.54
विदेशी बैंक	295	1.36
समस्त अनुसूचित बैंक	80470	39.54
गैर–अनुसूचित बैंक	44	25.00
समस्त व्यापारिक बैंक	80514	39.53

राष्ट्रीयकृत बैंक एवं उनके विज्ञापन स्लॉगन

बैंक	विज्ञापन स्लॉगन
➢ इलाहाबाद बैंक	– "A Tradition of Trust"
➢ आन्ध्रा बैंक	– "For all your needs"
➢ बैंक ऑफ बड़ौदा	– "India's International bank"
➢ बैंक ऑफ इण्डिया	– "Relationship beyond banking"
➢ बैंक ऑफ महाराष्ट्र	– "One family one bank"
➢ केनरा बैंक	– "Together we can"
➢ सेन्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया	– "Build a better life around us"
➢ कॉरपोरेशन बैंक ऑफ इण्डिया	– "A premier Government of India Enterprise"
➢ देना बैंक	– "Trusted family Bank"
➢ IDBI बैंक	– "Banking for all"
➢ इण्डियन बैंक	– "Taking banking Technology to the comman man"
➢ इण्डियन ओवरसीज बैंक	– "Good People to grow with"
➢ ऑरियन्टल बैंक ऑफ कॉमर्स	– "Where every Individual is committed"
➢ पंजाब नेशनल बैंक	– "The name your Bank upon"
➢ पंजाब एण्ड सिंध बैंक	– Where service is a way of" – जहाँ सेवा ही जीवन ध्येय है।
➢ स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया	– "Pure Banking Nothing else"
➢ सिंडिकेट बैंक	– "Your faithful & friendly financial partner"
➢ यूको बैंक	– "Honours your Trust"
➢ यूनाइटेड बैंक ऑफ इण्डिया	– "The Bank that begins with u"
➢ यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया	– "Good people to Bank with"
➢ विजया बैंक	– "A friend you can bank on"

प्रमुख बैंकिंग समितियाँ

समिति		क्षेत्र
➢ नरसिम्हन समिति	–	बैंकिंग सुधार
➢ चेलैया समिति	–	कर सुधार
➢ रंगराजन समिति	–	भुगतान संतुलन
➢ जानकीरमन् समिति	–	प्रतिभूति घोटाला
➢ महालनोबिस समिति	–	राष्ट्रीय आय
➢ मलहोत्रा समिति	–	बीमा सुधार
➢ भंडारी समिति	–	क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक सुधार
➢ आबिद हुसैन समिति	–	लघु उद्योग

बैंकिंग एवं पूँजी बाजार :

- भारतीय औद्योगिक साख एवं निवेश निगम लि. (Industrial Credit and Investment Corporation of India Ltd.) का नाम बदलकर सितम्बर, 1998 में ICICI Ltd. कर दिया गया था।
- भारतीय मुद्रा बाजार में रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया का शीर्ष स्थान है।
- **मुद्रा बाजार** अल्पकालिक साख उपलब्ध कराने वाले संगठन को कहा जाता है, जबकि **पूँजी बाजार** का कार्य दीर्घकालिक साख उपलबध कराना है।
- देश में **औद्योगिक वित्त की शिखर संस्था भारतीय औद्योगिक विकास बैंक** (Industrial Development Bank of India–IDBI) है। इसकी स्थापना जुलाई 1964 में की गई थी। लघु औद्योगिक विकास बैंक की स्थापना के पश्चात् यह अब केवल बड़ी व मझोली औद्योगिक इकाइयों के लिए ही वित्त एवं पुनर्वित्त (Re-finance) की व्यवस्था करता है।
- लघु औद्योगिक इकाइयों के लिए वित्त व्यवस्था करने के उद्देश्य से 2 अप्रैल, 1990 को **भारतीय लघु औद्योगिक विकास बैंक** (Small industrial Development Bank of India–SIDBI) की स्थापना की गई थी। इसका मुख्यालय लखनऊ में है।
- **भारती औद्योगिक पुर्निर्माण बैंक** (Industrial Reconstruction Bank of India–IRBI) की स्थापना 20 मार्च, 1985 को की गई थी। इसका मुख्य उद्देश्य रुग्ण तथा बन्द पड़ी औद्योगिक इकाइयों के पुनर्निर्माण हेतु वित्त उपलब्ध कराना है। इस बैंक का मुखलय कोलकाता में है।
- यूनिट ट्रस्ट ऑफ इण्डिया (UTI), जीवन बीमा निगम (LIC) तथा सामान्य बीमा निगम (GIC) भी उद्योगों को दीर्घकालिक वित्त उपलब्ध कराते हैं।
- **भारतीय यूनिट ट्रस्ट** (UTI) की स्थापना 1964 में लोगों की लघु बचतें एकत्रित करके उनके उचित एवं लाभदायक विनियोजन के उद्देश्य से की गई थी।
- भारत में सामान्य बीमा (General Insurance) व्यवसाय का राष्ट्रीयकरण 1971 में किया गया तथा **भारतीय सामान्य बीमा निगम** (General Insurance Corporation of India) की स्थापना नवम्बर 1972 में की गई थी।
- भारतीय सामान्य बीमा निगम के अन्तर्गत 4 सहायक कम्पनियाँ कार्यरत हैं। इनके नाम इस प्रकार हैं– (1) नेशनल इंश्योरेन्स कम्पनी लि., (2) न्यू इण्डिया एंश्योरेन्स कम्पनी लि., (3) ओरिएन्टल इंश्योरेन्स कम्पनी लि. तथा (4) यूनाइटेड इण्डिया इंश्योरेन्स कम्पनी लि.।
- **IRDA** Insurance Regulatory and Development Authority : बीमा नियामक और विकास प्राधिकरण का गठन 19 अप्रैल, 2000 में किया गया यह बीमा कम्पनियाँ एवं बीमा धारकों के हित से सम्बन्धित कार्यवाही करती हैं। इसकी स्थापना के बाद बीमा कार्य निजी क्षेत्र के लिए भी खोल दिया गया।
- **भारतीय जीवन बीमा निगम** (Life Insurance Corporation of India) की स्थापना 1 सितम्बर, 1956 को की गई थी।
- देश में कृषि एवं ग्रामीण विकास के लिए वित्त व्यवस्था करने हेतु शिखर संस्था **नाबार्ड** (NABARD–National Bank for Agricultural and Rural Development) है। नाबार्ड की स्थापना 12 जुलाई, 1982 को की गई थी।
- सुविधाजनक शर्तों पर आवास वित्ता उपलबध कराने के उद्देश्य से **राष्ट्रीय आवास बैंक** (National Housing Bank–NHB) की स्थापना एक शिखर संस्था के रूप में जुलाई 1988 में की गई थी।
- आयात–निर्यात के लिए वित्त व्यवस्था हेतु देश में शिखर संस्था **निर्यात–आयात बैंक** (EXIM Bank) है। इसकी स्थापना 1 जनवरी, 1982 को की गई थी।
- पर्यटन से सम्बन्धित परियाजनाओं के लिए वित्ता व्यवस्था करने हेतु **भारतीय पर्यटन वित्त निगम** (Tourism Finance Corporation of India–IFCI) की स्थापना 1989 में की गई थी।
- भारत में सहकारी बैंकों का संगठन त्रिस्तरीय है। राज्य स्तर पर राज्य सहकारी बैंक, जिला स्तर पर सहकारी बैंक अथवा केन्द्रीय सहकारी बैंक तथा स्थानीय स्तर पर प्राथमिक सहकारी समितियाँ कार्य करती हैं।
- सहकारी बैंकों में राज्य सहकारी बैंकों को ही रिजर्व बैंक से पुनर्वित्त प्राप्त करने की सुविधा प्राप्त है।
- सहकारिताओं को सरकारी नियंत्रण से मुक्त करने वाला देश का पहला राज्य **आन्ध्र प्रदेश** है।
- RBI ने एक हजार रुपए का नोट 22 वर्षों के अन्तराल के बाद 9 अक्टूबर, 2000 को जारी किया था।
- केन्द्र सरकार ने सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों को अपनी कुल उधारियों का 5% सूक्ष्म साख के रूप में उपलब्ध कराने का लक्ष्य निर्धारित किया है।
- **साख नियंत्रण के परिमाणातमक उपायों में** बैंक दर की नीति, खुले बाजार की क्रियाएं (Open Market Operations) तथा परिवर्तनशील आरक्षण अनुपात सांविधिक तरलता अनुपात (Statutory Liquidity Ratio–SLR) तथा नकद आरक्षण अनुपात (Cash Reserve Ratio) महत्वपूर्ण है, जबकि मार्जिन आवश्यकताओं में परिवर्तन, साख का राशनिंग, उपभोक्ता साख का नियमन, नैतिक दबाव व प्रत्यक्ष कार्यवाही आदि साख नियंत्रण के गुणात्मक उपाय हैं।

समीर प्लाजा, मनमोहन पार्क, कटरा, बांसमण्डी के सामने, इलाहाबाद {जहाँ सेलेक्शन एक जिद है.}
फोन नं. : 0532.3266722, 9956971111, 9235581475

- **बैंक दर** वह दर है जिस पर केन्द्रीय बैंक, बैंकों के प्रथम श्रेणी के बिलों की पुनर्कटौती (Rediscount) करता है। भारत में 30 अप्रैल, 2003 से बैंक दर 6.00 प्रतिशत हैं
- खुले बाजार की क्रियाओं के अन्तर्गत देश का केन्द्रीय बैंक मान्यता प्राप्त सरकारी प्रतिभूतियों का क्रय–विक्रय खुले बाजार में करता है।
- नरसिंहम समिति ने अपनी सिफारिशों में सांविधिक तरलता अनुपात का उस समय के 38.5 प्रश्तिात से धीरे–धीरे घटाकर अगले पाँच वर्षों में 25 प्रतिशत तक लाने की संस्तुति की थी।
- देश के वित्तीय ढाँचे में सुधार के लिए सिफारिशें देने हेतु भारत सरकार द्वारा नरसिंहम समिति का गठन 14 अगस्त, 1991 को किया था। इस समिति ने अपनी सिफारिशें 20 नवम्बर, 1991 को प्रस्तुत कर दी थी।
- नरसिंहम समिति की सिफारिशों में देश में बैंकों का ढाँचा चार स्तरीय करने, निजी क्षेत्र में नए बैंक खोलने की अनुमति देने, बैंकों को शाखा विस्तार में स्वतन्त्रता देने, भविष्य में और बैंकों का राष्ट्रीयकरण न करने, रियायती ब्याज दरों की व्यवस्था समाप्त करने आदि की सिफारिशें शामिल थीं।

बैंकिंग से सम्बन्धित महत्वपूर्ण तथ्य

पूर्णरूप से पहला भारतीय बैंक	**पंजाब नेशनल बैंक**
भारत का केन्द्रीय बैंक	**रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया**
रिजर्व बैंक के गवर्नर	**डॉ. डी. सुब्बाराव**
देश के 14 बड़े बैंकों का राष्ट्रीयकरण	**19 जुलाई, 1969**
छः अन्य बैंकों का राष्ट्रीयकरण	**अप्रैल 1980**
वर्तमान में राष्ट्रीयकृत बैंकों की संख्या	**19**
भारतीय मुद्रा बाजार में शीर्ष स्थान	**रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया**
भारतीय यूनिट ट्रस्ट (UTI) का स्थापना वर्ष	**1964**
UTI का विभाजन वर्ष (UTI-I एवं UTI-II)	**2003**
नाबार्ड की स्थापना	**12 जुलाई, 1982**
SEBI की स्थापना	**अप्रैल, 1988**
सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों द्वारा जारी किसान क्रेडिट कार्डों की संख्या (नवम्बर 2009 तक)	**8.78 करोड़**
सर्वाधिक सकल गैर–निष्पादनीय परिसम्पत्ति (Gross NPAs) वाला सार्वजनिक क्षेत्र का बैंक (मार्च 2007)	**स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया (9998 करोड़ रुपए)**
सर्वाधिक शुद्ध लाभ अर्जित करने वाला राष्ट्रीयकृत बैंक (2008–09)	**PNB (2767 करोड़ रुपए)**
सर्वाधिक शुद्ध लाभ अर्जित करने वाला सार्वजनिक क्षेत्र का बैंक (2008–09)	**SBI (8483 करोड़ रु.)**
PPF तथा GPF पर वार्षिक ब्याज	**9.5% (16 सितम्बर, 2010 से)**
EPF पर वार्षिक ब्याज	**9.5%**

पूँजी बाजार

पूंजी बाजार वित्तीय प्रणाली का महत्वपूर्ण अंग है। यह दीर्घकालीन कोष का बाजार है। इसमें अंश पत्रों (शेयर) तथा ऋण के माध्यम से पूंजी का लेन–देन किया जाता है। इसके दो भाग है।

1. **प्राथमिक बाजार** (Primary Market) : यह नए निर्गमनों का बाजार है इस बाजार में सभी प्रतिभुतियाँ पहली बार बिकने को आती हैं। उदाहरण– घरेलू कम्पनियों द्वारा निर्गमित (शेयर) अंश पत्र
2. सरकारी वित्तीय कम्पनियों द्वारा निर्गमित अंश पत्र
3. विदेशी वाणिज्यिक उधार
4. प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI)

प्रत्यक्ष विदेशी निवेश : जब कोई विदेशी कम्पनी देश के अन्दर उत्पादन हेतु भौतिक सम्पदाओं (भूमि, कारखाने, पूंजीगत वस्तुएँ) में निवेश करे तो इसे FDI कहते हैं। इससे अधिक मात्रा में विदेशी मुद्रा तथा उच्च गुणवत्ता वाली तकनीकी की प्राप्ति हो जाती है।

भारत में सर्वाधिक प्रत्यक्ष विदेशी निवेश करने वाले देश

(1) मॉरिशस – 44.24%
(2) U.S.A. – 9.37%
(3) U.K. – 7.98%
(4) नीदरलैण्ड – 5.8% (इसे निचले जमीन का देश)

सबसे अधिक विदेशी निवेश प्राप्त करने वाले राज्य

(1) महाराष्ट्र – 22.78%
(2) दिल्ली – 13.07%
(3) तमिलनाडु – 11.03%
(4) कर्नाटक – 9.61%

F.D.I. की सीमा :

(1) भवन निर्माण
(2) रिटेल ट्रेडिंग (खुदरा व्यापार, फुटकर व्यापार)
(3) दवा
(4) विज्ञान व तकनीक
(5) होटल तथा पर्यटन तथा कुरियर सेवाओं में 100% तक प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की छूट है।

विज्ञान व रक्षा के क्षेत्र में 26% FDI छूट है। स्टॉक मार्केट तथा व्यवसायिक बैंकों में 49% की छूट है। F.M. रेडियो में 20% तक की छूट है।

(5) पोर्ट फोलियो निवेश (Port Folio Investment) : जब कोई विदेशी कम्पनी देश के अन्दर प्रत्यक्ष उत्पादन व वितरण का कार्य न करके यहाँ की किसी कम्पनी में शेयर के माध्यम से व्यापार में सम्मिलित हो तो इसे पोर्ट फोलियों निवेश कहते हैं। इसे निवेश सूची भी कहा जाता है।

(6) गैर प्रवासीय भारतीय (NRI) **जमाएँ** :

ADR – American Depositary Received
GDR – Global Depositary Received
IDR – Idian Depositary Received

उपरोक्त तीनों अन्तराष्ट्रीय बाजार से पूंजी उबाही का एक माध्यम है। इसके माध्यम से विभिन्न बाजारों से भारत सरकार पूंजी जुटाती है।

Secondary Market

इस बाजार के अन्तर्गत वही प्रतिभूतियाँ बिकने हेतु आती हैं जो पहले से बिकी हुई होती है। प्रतिभुतियों के विक्रय का माध्यम कानून के अन्तर्गत काम करने वाले रजिस्टर्ड स्टॉक Exchange के माध्यम से होता है। इसके अन्तर्गत राज्य सरकार सार्वजनिक व निजी संस्थाओं और संयुक्त स्टॉक कम्पनियों के पहले से बिके हुए अंशपत्र या प्रतिभूतियाँ बिकने हेतु आती हैं।

भारतीय पूँजी बाजार से सम्बन्धित महत्वपूर्ण तथ्य

- **BSE (बाम्बे स्टॉक एक्सचेन्ज) :** यह एशिया का सबसे पुराना बाजार है इसकी स्थापना 1875 में की गई थी। इसको 1925 में बाम्बे सिक्योरिटिज कान्टेक्ट एक्ट के तहत मिली थी। इसके कुछ महत्वपूर्ण सूचकांक है।
- **BSE Sensetive Index :** इसे सेन्सेक्स भी कहा जाता है। इसमें 30 प्रमुख कम्पनियों का शेयर शामिल है। इसका आधार वर्ष 1978–79 है।
- **BSE 200 :** इसमें 200 कम्पनियों के शेयरों का मूल्य या सूचकांक प्रदर्शित किया जाता है। इसका आधार वर्ष 1988–89 है।
- **BSE Dollex :** इसमें BSE 200 की कम्पनियों का मूल्य या सूचकांक डॉलर में दिखाया जाता है। इसका आधार वर्ष भी 1988–89 है।
- **BSE Banker :** यह एक BSE का नया सूचकांक है। इसमें 12 बैंकों का मूल्य सूचकांक प्रदर्शित किया जाता है।
- **BSE का National Index :** इसमें 100 कम्पनियों के शेयरों का मूल्य सूचकांक शामिल किया जाता है। इसका आधार वर्ष 1983–84 है।
- 29 अक्तूबर 2007 में 20,000 का आंकड़ा पार करने वाला भारत विश्व का 20वां देश बना। 10 जनवरी 2008 में BSE का सूचकांक 21206 अंक को पार कर गया था।
- **National Stock Exchange (राष्ट्रीय शेयर बाजार) :** 1991 में केरवानी समिति ने इसकी स्थापना की सिफारिश की और 1992 में इसकी स्थापना की गई इसके प्रमुख रूप से दो शेयरों की दरें प्रसिद्ध है।
- **MIBOR (Mumbai Inter Bank Offer Rate) :** यह उधार की दर है।
- **MIBID (M.I.B. BIDE Rate) :** यह प्राप्ति की दर है।

NSE का मुख्यालय भी मुम्बई में है। वर्तमान में भारत में कुल 23 मान्यता प्राप्त स्टॉक एक्सचेंज कार्यरत हैं।

भारत में मुद्रा पूर्ति की अवधारणा : मुद्रा पूर्ति का उद्देश्य मुद्रा पूर्ति की वृद्धि = अर्थ व्यवस्था की विकास दर मुद्रा की विलक्षणता उसकी तरलता है, जो मुद्रा को अन्य परिसम्पत्तियों से अलग कर देती है क्योंकि इसे बिना किसी हानि के मानव अपनी वांछित इच्छा में बदल सकता है और जो भी सम्पत्ति मुद्रा के रूप में नजदीक आएगी मुद्रा पूर्ति में सम्मिलित हो जाएगी।

पारम्परिक अवधारणा (Tradinational Concept) : 1977 में RBI के Working Group ने मुद्रा की निम्नलिखित अवधारणाएं दी।

$$M_1 = Cp + DD$$

Cp = Coines and currency that held by public सिक्के और पत्र मुद्रा जो घंटा अपने पास जेब में रखती है।

DD = Demand Deposits

वर्तमान में इसे बदल करके $M_1 = CP + DD + OD$ कर दिया गया है।

$$M_2 = M_1 + P.D.$$

P.D. = Post office Deposite

$M_3 = M_1$ + Time Deposite (विस्तृत मुद्रा)

1997 में मुद्रा पूर्ति के सन्दर्भ में घटित Y.B रेड्डी समिति ने मुद्रा पूर्ति के सन्दर्भ में M_0 की एक नई अवधारणा दी तथा M_4 को समाप्त कर दिया।

M_0 = बैंकों का RBI के पास जमा + CP

Y.B. रेड्डी ने उपरोक्त सरलता सूचकों के अलावा 3 सरलता समुच्चय को भी परिभाषित किया।

$L_1 = M_3$ + Pose Office की सम्पूर्ण जमाएँ

$L_2 = L_1$ + T.D. विकास वित्तीय संस्थाओं के सावधि जमाएँ

$L_3 = L_2$ + NBFcs की सावधि जमाएँ

NB = Non Bank financial corporation

तरलता का क्रम = $M_1 > M_2 > M_3$ .....

↓ ↑

तरलता वृद्धि

Lead बैंक योजना 1990– इसका उद्देश्य जिस साख में वृद्धि करना था R.B.I. प्रत्येक बैंक को एक जिला प्रदान करता है। उस जिले में बैंक साख व्यवस्था के समन्वय में अग्रणी भूमिका निभाता है।

Gild edge Market : ये सरकारी प्रतिभूतियों का बाजार है। यहाँ पर सरकारी या अर्द्धसरकारी प्रतिभूतियों का क्रय विक्रय किया जाता है। इन प्रतिभूतियों का मूल्य स्थिर रहता है।

UTI : वर्तमान में UTI सबसे बड़ा म्यूचूअल फण्ड है। इसकी स्थापना 1 फरवरी, 1964 में की गई। भारत में सरकारी साख समितियों का ढांचा त्रिस्तरीय है।

(1) राज्य सहकारी बैंक– यह राज्य में सहकारी बैंक की शीर्ष संस्था हैं

(2) केन्द्रीय सहकारी बैंक– यह जिला स्तर पर जिला में शीर्ष सहकारी बैंक है।

(3) प्राथमिक ऋण समितियाँ– सहकारी बैंक का प्रथम स्तर है।

भारत में मुद्रा स्फीति थोक मूल्य सूचकांक (WPI) पर मापी जाती है जबकि कर्मचारियों के मंहगाई भट्टकी क्षतिपूर्ति उपभोक्ता मूल्य सूचकांक CPI के आधार पर किया जाता है।

क्रेता बाजार : श्रम संघ (जिसमें खरीदने वाला एक हो, विक्रेता अनेक)

विक्रेता बाजार : जहाँ बेचने वाले का अधिकार हो।

एकाधिकारी– विक्रेता – अनेक क्रेता

द्वयाधिकार– दो विक्रेता

एकाधिकारी प्रतियोगिता : उत्पादक 5–10 हो।

पूर्ण प्रतियोगिता– क्रेताओं और विक्रेता की

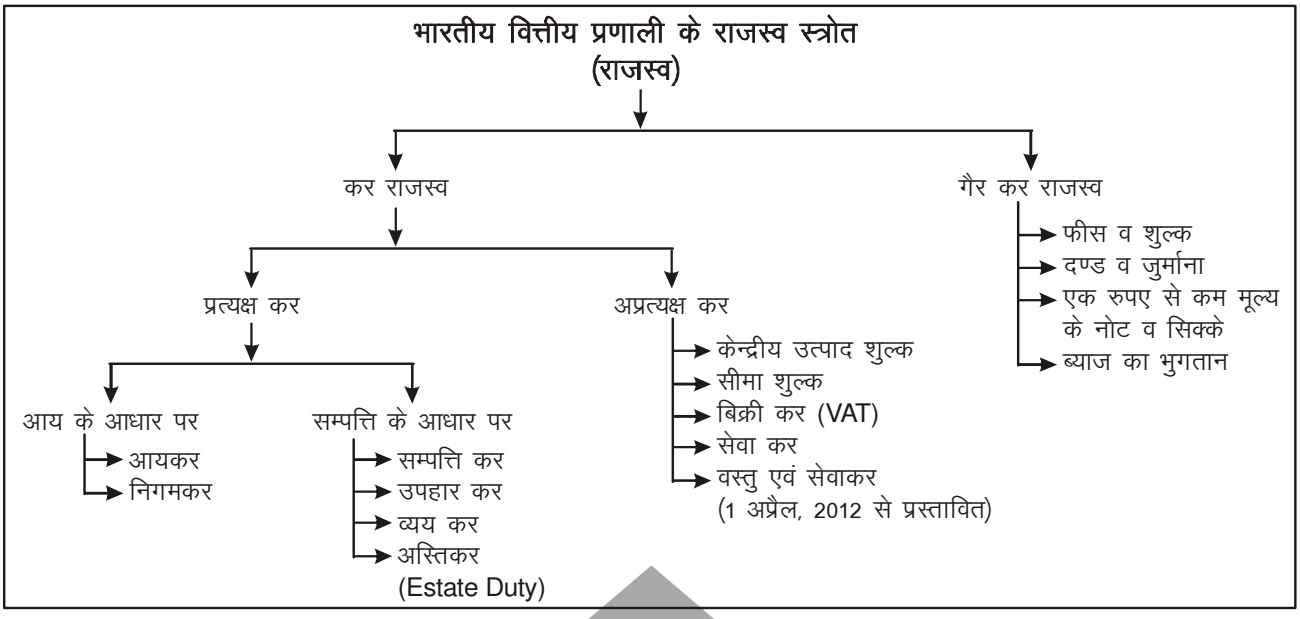

कराघात, करापात एवं कर विवर्तन : कराघात से तात्पर्य जिस व्यक्ति पर कर लगाया जाए या जिस पर कर का प्रारम्भिक भार पड़ता हो। करापात से तार्प्य जिस व्यक्ति द्वारा कर का भुगतान किया जाए या कर का अन्तिम दाता ही करापात को सहन करता हो। कराघात से करापात तक कर को टालने की प्रक्रिया को कर विवर्तन कहते हैं।

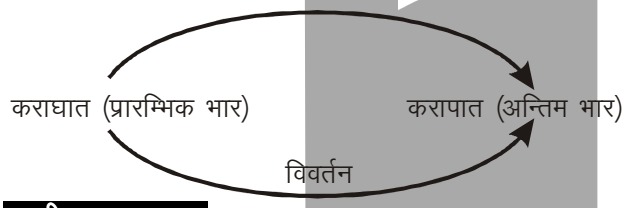

भारतीय कर व्यवस्था :

- भारतीय सरकार को करों से ही समस्त राजस्व की प्राप्ति होती है।

करों के प्रकार

(क) प्रत्यक्ष कर (Direct Taxes) :

केन्द्र सरकार

- आयकर (व्यक्तियों, अविभाजित हिन्दू परिवारों तथा संस्थाओं की आय पर), निगम कर (कम्पनियों की आय पर कर), धन–कर, एस्टेट ड्यूटी (सम्पदा शुल्क), उपहार–कर, व्यय–कर, ब्याज–कर।

राज्य सरकारें

- होटल प्राप्तियों पर कर, भू–राजस्व, कृषि आय पर कर, व्यवसाय–कर, गैर–शहरी अंचल सम्पत्तियों पर कर, रोजगारों पर कर।

(ख) परोक्ष कर (Indirect Taxes) :

केन्द्र सरकारें :

- बिक्री कर/व्यापार–कर, डीजल/पेट्रोल पर बिक्री–कर, स्टाम्प एवं पंजीयन शुल्क, राज्य उत्पाद शुल्क, वाहनों पर कर, वस्तुओं एवं यात्रियों पर परिवहन कर, विद्युत पर कर एवं शुल्क गन्ने की खरीद पर शुल्क तथा उपकर, प्रवेश कर, विज्ञापन कर, शिक्षा उपकर, कच्चे जूट पर कर, सट्टेबाजी पर कर।

नोट :

- भारत में केन्द्रीय उत्पाद शुल्क (Excise Duty) केन्द्र सरकार के राजस्व का प्रमुख स्रोत है।
- राज्य सरकार के कर राजस्व में बिक्री कर (Sales Tax) का हिस्सा सबसे अधिक होता है।
- भारत में आयकर प्रगामी है अर्थात् आय में वृद्धि के साथ–साथ कर में भी वृद्धि होती है।

प्रत्यक्ष कर : जिस व्यक्ति पर कर लगाया जाए और उसी के द्वारा इसका भुगतान किया जाए तो उसे प्रत्यक्ष कर कहते है। इसके अन्तर्गत कराघात तथा करापात एक ही व्यक्ति पर पड़ता है। प्रत्यक्ष कर में कर विवर्तन की सम्भावना शून्य पाई जाती है। प्रत्यक्ष कर का योगदान कुल कर राजस्व में 54.9% है।

आयकर : व्यक्ति की वार्षिक आय पर लगने वाले कर को आयकर कहते हैं। इसका प्रारम्भ 1960 से किया गया। इसकी 3 प्रमुख दरें हैं। जिसमें महिलाओं के लिए आयकर की छूट 1 लाख 90 हजार वरिष्ठ नागरिकों के लिए 2 लाख 40 अजार तथा पुरुषों के लिए 1 लाख 60 हजार निर्धारित किया गया। इसकी अधिकतम दर 30% है।

निगमकर : जिस प्रकार व्यक्ति की वार्षिक आय पर आयकर लगाया जाता है। उसी तरह कम्पनियों की वार्षिक आय पर लगाया जाने वाला कर निगम या Carorate Tax कहलाता है। इसकी दर घरेलू कम्पनियों के सन्दर्भ में 30% निर्धारित है।

MAT (Minimum Alternative Tax) : यह कम्पनियों के निवल या शुद्ध लाभ पर लगाया जाता है। इसकी वर्तमान दर 15% से बढ़ाकर 18% कर दी गई है।

सम्पत्ति कर : बैंक जमा को छोड़ करके जिस व्यक्ति के पास 30 लाख या उससे अधिक की सम्पत्ति है उसे अपने जीवन काल में एक बार सम्पत्ति कर देना होगा।

व्यय कर : ये व्यक्ति के वार्षिक कर पर लगाया जाता है। इस कर की सिफारिस केल्डर नामक अर्थशास्त्री ने की थी जिसे जून, 2010 में समाप्त कर दिया गया।

उपहार तथा अस्तिकर : उपरोक्त दोनों करों को क्रमशः 1 अक्तूबर, 1998 तथा 1 मार्च, 1985 में समाप्त कर दिया गया।

अप्रत्यक्ष कर या परोक्ष कर : वस्तुओं तथा सेवाओं पर लगाया जाता है तथा इस कर में कराघात तथा करापात अलग–अलग व्यक्तियों पर पड़ता है अर्थात् इसमें कर विवर्तन की पूरी सम्भावना पाई जाती है। यह कर लगाया तो किसी और पर जाता है पर इसका भुगतान किसी और के द्वारा किया जाता है। कुल राजस्व में इसका योगदान 44.8% है।

केन्द्रीय उत्पाद शुल्क : आजादी के समय इसकी तीन दरें प्रचलित थी। जिसे वर्तमान में समाप्त करके 8% की एक दर लागू है।

सीमा शुल्क : इसे आयात–निर्यात कर भी कहते हैं। 80 के दशक के पूर्व विदेशी आयात पर 300% की दर से लगाया जाता था। वर्तमान में गैर कृषि उत्पाद पर 10% की दर से लगाया जाता है।

बिक्री कर : वर्तमान में इसे समाप्त करके इसके स्थान पर मूल्यवर्द्धित कर (VAT) 1 अप्रैल, 2005 से सम्पूर्ण भारत में लागू किया गया। VAT एक कर प्रणाली है। इसके तीन दरें पायी जाती हैं। 550 वस्तुओं पर 4% की दर से 270 वस्तुओं पर 12% की दर से तथा स्वर्ण एवं आभूषण जैसी 10 वस्तुओं पर 1% की दर से लगाया जाता है।

VAT को लागू करने वाला प्रथम राज्य हरियाणा तथा अन्तिम राज्य U.P. (1st Jan. 2008) है।

अण्डमान निकोबार समूह तथा लक्ष्यद्वीप में बिक्री कर (VAT) नहीं लागू है।

पेट्रोलियम उत्पाद तथा शराब पर VAT नहीं लागू है। भारत में VAT, L.K. समिति की सिफारिस पर लागू किया गया। इसे परिक्षण के तौर पर 1986–87 में विनिर्मित (MAN) VAT के रूप में केन्द्रीय सरकार ने लागू किया था।

MAN – Manufacturing

VAT का सर्वप्रथम प्रतिपादन 1918 ई. में वान सीमेन्स ने किया था तथा इसे विकसित करने का श्रेय मॉरिश तथा कार्लसूप को जाता है। ये फ्रांस के अर्थशास्त्री थे। 1918 में ही सर्वप्रथम इसे जर्मनी में ही लागू किया गया जहाँ पर असफल हो गया। 1954 में इसे फ्रांस में सफलता पूर्वक लागू किया गया।

सेवाकर : 10 लाख या उससे अधिक की सम्पत्ति प्रदित्य वाले सेवा प्रदाता पर यह कर लगाया जाता है। भारत में इसकी शुरुआत राजा जी चैलेय्या समिति की सिफारिश पर 1994–95 में लगाया गया। प्रारम्भ में तीन सेवाओं पर (टेलीफोन, सामान्य बीमा तथा स्टॉक ब्रोकर) 5% की दर से लगाया गया था। वर्तमान में (2010–11) 122% सेवाओं पर 10% की दर से लगाया जाता है। इसकी कुल दर 10.3% है क्योंकि इस पर 3% शिक्षा उपकर लगाया गया है।

उपकर तथा अधिभार (सरचार्ज) : दोनों प्रकार के कर किसी विशेष प्रयोजन के लिए लगाये जाते हैं। प्रयोजन के पूर्व होने पर इसे समाप्त कर दिया जाता है। सरचार्ज को tax on tax भी कहते हैं।

करों के प्रकार : अर्थशास्त्रियों ने मुख्यतः 4 कर बताएं हैं।

(1) प्रगतिशील कर : जैसे–जैसे व्यक्ति की वार्षिक आय बढत्रती जाए वैस–वैसे कर की दर में भी वृ0 हो तो इसे प्रगतिशील कर कहते हैं।

आय	कर की दर	कर आय
1000	10%	100
2000	15%	300
3000	20%	600
4000	25%	1000
5000	30%	1500

(2) प्रतिगामी कर : इसके अन्तर्गत जैसे–जैसे आय बढ़ती जाती है। वैसे–वैसे कर की दर घटती जाती है परन्तु कर में से प्राप्त होने वाली कुल आय बढ़ती जाती है।

आय	कर की दर ↓	↑ कर आय
1000	20%	200
2000	15%	300
3000	12%	360
4000	11%	440
5000	10%	500

(3) आनुपातिक कर : इसमें कर की दर तो स्थिर रहती है जबकि कर से होने वाली आय बढ़ती जाती है।

आय	कर की दर	कर आय
1000	10%	100
2000	10%	200
3000	10%	300
4000	10%	400
5000	10%	500

(4) अवक्रमिक कर (Degrassive Tax) : इसके अन्तर्गत कुछ सीमा तक आय में वृद्धि के साथ–साथ कर की दर भी बढ़ती है परन्तु एक स्तर के बाद कर की दर स्थिर हो जाती है।

आय	कर की दर	कर आय
1000	10%	100
2000	25%	300
3000	20%	600
4000	20%	800
5000	20%	1000

भारत में आयकर की प्रणाली Deressive Type की होती है।

केन्द्र तथा राज्य द्वारा लगाए गए करों का विवरण :

- केन्द्र सरकार के प्रत्यक्ष कर
  (1) आयकर
  (2) निगमकर
  (3) धनकर या सम्पत्तिकर
  (4) उपहार कर तथा
  (5) व्यय कर

नोट : व्यय कर लगाने की सिफारिश कोल्डार ने की थी।

- राज्य सरकारों के प्रत्यक्ष कर :
  1) होटल प्राप्तियों पर कर
  2) भू–राजस्व कर
  3) कृषि आय कर
  4) व्यवसाय कर
  5) गैर शहरी अचत सम्पत्तियों पर रंग तथा
  6) रोजगार कर।

समीर प्लाजा, मनमोहन पार्क, कटरा, बांसमण्डी के सामने, इलाहाबाद {जहाँ सेलेक्शन एक जिद है.}
फोन नं. : 0532.3266722, 9956971111, 9235581475

- केन्द्र सरकार के अप्रत्यक्ष कर
  1) सीमा शुल्क
  2) केन्द्रीय उत्पाद शुल्क
  3) केन्द्रीय बिक्री कर तथा
  4) सेवा कर
- राज्य सरकार के अप्रत्यक्ष कर
  1) बिक्री कर
  2) डीजल व पेट्रोल पर कर
  3) स्टाम्प एवं पंजीकरण शुल्क
  4) राज्य उत्पाद शुल्क
  5) वाहन पर कर
  6) प्रवेश कर
  7) विज्ञापन पर कर
  8) शट्टेबाजी पर कर तथा
  9) मनोरंजन कर
- कर राज्व में विभिन्न करों का हिस्सा (2009–10) के अनुसार
  1) निगम कर (23 पैसा) (1 रु. में 23 पैसा)
  2) केन्द्रीय उत्पाद शुल्क (10 पैसा)
  3) आयकर व सीमा शुल्क (9 पैसा)
  4) सेवाकर (6 पैसा)

नोट : उधार एवं अन्य देयता में 29 पैसे की प्राप्ति होती है।

सबसे अधिक रुपया की प्राप्ति केन्द्र सरकार – उधार एवं अन्य देयता।

उत्तर प्रदेश की आय का सबसे बड़ा स्त्रोत – बिक्रीकर

- भारत सरकार की व्यय की मदें (रुपया जाता है)
  1) केन्द्रीय आयोजन पर – (21 पैसे)
  2) व्यय भुगतान पर – (19 पैसे)
  3) करों एवं शुल्कों (duty) में राज्यों का हिस्सा (16 पैसे)
  4) रक्षा पर – (10 पैसे)
  5) आर्थिक सहायता पर – (6 पैसे)
- गैर योजना मद की सबसे अधिक भुगतान (व्यय) – **ब्याज कर**
- किस कर का बंटवारा केन्द्र सरकार, राज्य सरकार के साथ नहीं करती है – **निगमकर**

मुद्रा स्फीति

''जब अर्थव्यवस्था में मुद्रा की पूर्ति में वृद्धि के कारण वस्तु एवं सेवाओं के दाम बढ़ जाते हों और मुद्रा का मूल्य घट जाता हो तो उसे मुद्रा स्फीति कहते हैं।

कौन ऐसा अर्थशास्त्री है जो कहता है कि मुद्रा स्फीति और रोजगार में धनात्मक सम्बन्ध है – **फीलीप्स**

मुद्रा स्फीति को लेकर के अर्थशास्त्रियों में अलग–अलग धारणाएँ प्रचलित हैं। परम्परागत अर्थशास्त्रियों के अनुसार 'मुद्रा स्फीति वह है जिसमें मुद्रा का मूल्य गिर रहा हो व वस्तुओं का मूल्य बढत्र रहा हो' इससे लक्षण तो पता चलता है परन्तु कारण नहीं। आधुनिक अर्थशास्त्री मुद्रा स्फीति को एक मौद्रि प्रतिभास मानते हैं और प्रत्येक प्रकार की वृद्धि में कुछ को ही मुद्रा स्फीति बताते हैं।

प्रसिद्ध अर्थशास्त्री प्रो. कीन्स (व्यापक अर्थशास्त्र जनक) ने मुद्रा स्फीति को पूर्ण रोजगार प्रतिभास कहा है। इनके अनुसार पूर्ण रोजगार के स्तर के पूर्व कीमत स्तर में वृद्धि विकास का प्रतिभास है। इसके प्रश्चात् यदि कीमत स्तर बढ़ेगी तो मुद्रा स्फीति पायी जायेगी।

मुद्रा स्फीति के कारण :

- मौद्रिक अर्थशास्त्री मानते हैं कि स्फीति का प्रमुख कारण मुद्रा की पूर्ति में वृद्धि है।
- **लागत वृद्धि :** मूल्य स्तर के बढ़ने के कारण मजदूर वर्ग की वास्तविक आय कम हो जाती है जिससे वह अपने पर मजदूरी बढ़ाने हेतु दबाव डालता है। मजदूरी के बढ़ जाने पर वस्तु की लागत बढ़ जाती है। जिससे उत्पादक वस्तुओं के दाम में और वृद्धि कर देता है।
- **घाटे की वित्त व्यवस्था :** करारोपण – वृद्धि

स्फीति का प्रभाव

	वर्ग		लाभ/हानि
(1)	रोजगार में	–	वृद्धि
(2)	ऋणी	–	लाभ
(3)	ऋणदाता	–	हानि
(4)	व्यापारी	–	लाभ
(5)	किसान	–	लाभ
(6)	किरायेदार	–	लाभ
(7)	मकान मालिक	–	हानि
(8)	आयात	–	लाभ
(9)	निर्यात	–	हानि (व बचत में कमी)
(10)	स्थिर आय वर्ग	–	
(11)	पेंशनभोगी वर्ग	–	

मुद्रा स्फीति रोकने के उपाय :

(1) मौद्रिक उपाय : मुद्रा स्फीति को रोकने के लिए केन्द्रीय बैंक निम्नलिखित मौद्रिक उपाय अपनाता है।
- (i) बैंक दर में वृद्धि
- (ii) खुले बाजार में प्रतिभूतियों का विक्रय
- (iii) CRR की दरों में वृद्धि
- (iv) SLR की दरों में वृद्धि
- (v) विमुद्रिकरण (Monetization) : पुरानी मुद्रा के स्थान पर नई मुद्रा जारी करना।

(2) राज्यकोषीय उपाय :
- (i) आवश्यक सार्वजनिक व्यय में कमी
- (ii) करों की दर में वृद्धि
- (iii) नए करों को लगाना
- (iv) बचत का बजट

(3) अन्य उपाय
- (i) उत्पादन में वृद्धि
- (ii) कीमत नियन्त्रण

भारत की औद्योगिक नीतियाँ

स्वतन्त्रता से लेकर आज तक औद्योगिक विकास के लिए भारत सरकार ने निम्नलिखित प्रमुख औद्योगिक नीतियाँ घोषित कीं।

1948 की औद्योगिक नीति : इसे प्रस्तुत करने का श्रेय श्यामा प्रसाद मुखर्जी को जाता है। इसी में मिश्रित अर्थवयवस्था की नीति अपनाई गई और उद्योगों को तीन श्रेणियों में बाँटा गया प्रथम श्रेणी में 3 उद्योग रखे गए। द्वितीय श्रेणी में 6 उद्योग रखे गए। तृतीय श्रेणी में 18 उद्योगों को रखा गया।

1956 की औद्योगिक नीति : इसे प्रस्तुत करने का श्रेय जवाहर लाल नेहरू को जाता है। इसको 17 उद्योगों पर केन्द्र सरकार का पूर्ण नियन्त्रण था तथा शेष उद्योगों पर निजी उद्योगपतियों का नियन्त्रण था जो विशेषकर उपभोक्ता वसतु के उत्पादक थे।

1977 की औद्योगिक नीति : इसे प्रस्तुत करने का श्रेय जॉर्ज फर्नाडीज को जाता है। इसमें विशेष रूप से लघु व कुटीर उद्योगों के विकास पर जोर दिया गया। लघु उद्योगों को 3 वर्गों में रखा गया।

(1) अति लघु (Tinny Sector) : क्षेत्र की नई अवधारणा लागू की गई इसमें निवेश 1 Lakh रु. तथा इसकी स्थापना 50 हजार से कम क्षेत्र में की गई।
(2) जिला उद्योग केन्द्र : लघु उद्योग को एक स्थान पर सभी सुविधा उपलब्ध कराना।
(3) संयुक्त क्षेत्र की अवधारणा अपनाई गई।

1980 की औद्योगिक नीति : इसका उद्देश्य भारतीय अर्थ व्यवस्था का आधुनिकीकरण विस्तार एवं पिछड़े क्षेत्रों का विकास करना था।

नई औद्योगिक नीति 24 जुलाई 1995 : इसे राव मनमोहन नीति भी कहते हैं। इस औद्योगिक नीति में उदारीकरण नीतिकरण एवं भूमण्डलीकरण को अपनाया गया इसके लिए निम्नलिखित मुख्य कार्य किए गए–

औद्योगिक लाइसेन्सिग : जब यह नीति लागू की गई उस समय 18 उद्योगों पर लाइसेंसिंग की पॉलिसी अपनाई गई अर्थात् ये 18 उद्योग सुरक्षा, सामाजिक कारण, पर्यावरण तथा प्रदुषण की दृष्टि से महत्वपूर्ण थे। वर्तमान में 5 उद्योगों के लिए लाइसेन्स लेना अनिवार्य है।

(1) एल्कोहल युक्त पेय पदार्थ का आश्वन एवं निर्माण
(2) तम्बाकू के सीगार व सिगरेट तथा इससे बनी वस्तुएँ
(3) इलेक्ट्रॉनिक एयरोस्पेस तथा रक्षा समान
(4) औद्योगिक विस्फोटक
(5) जोखिम वाले रसायन

सार्वजनिक क्षेत्र : सार्वजनिक क्षेत्र में 1998 तक 8 उद्योगों सार्वजनिक क्षे के लिए आरक्षित थे। 2001 में रक्षा क्षेत्र में विदेशी निवेश की 26% की छूट के बाद इसकी संख्या 4 से घटकर वर्तमान में 3 बची है।

(1) परमाणु ऊर्जा विभाग
(2) 15 मार्च, 1995 SO 212 के निर्गत
(3) रेल परिवहन

MRTP 1969 के स्थान पर CCI (Comptation Commission of India) 2002 : B.S. राघवन की अध्यक्षता में गठित समिति ने एकाधिकार के स्थान पर प्रतिस्पर्धा को बढ़ाने के लिए भारतीय प्रतिस्पर्धा आयोग की स्थापना की सिफारिश की इसकी स्थापना 22 मई, 2000 में की गई और प्रभावी 2002 से हुई।

फेरा के स्थान पर फेमा FERA – FEMA (Foreign Exchange & Ragulatory Act) : 1973 के तहत विदेशी विनिमय का निर्धारित स्थिर दर पर कियाजाता था। इसका उद्देश्य विनिमय संसाधनों को बचाना ताकि इनका उचित प्रयोग हो सके। उदारीकरण के बाद इसके स्थान पर फेमा को जून, 2000 में लागू किया गया।

औद्योगिक रुग्णता (बिमारी) : ऐसे उद्योग जो वित्तीय संसाधनों के अभाव में बन्द पड़े हुए थे उनके पर्ननिर्माण के लिए मई 1987 में औद्योगिक एवं वित्तीय पुर्ननिर्माण बोर्ड (B.I.F.R.) की स्थापना की गई। वर्तमान में यह निजी एवं सार्वजनिक क्षेत्र के रुग्ण कम्पनियों को वित्तीय सहायता प्रदान करती है। औद्योगिक रुग्णता पर दो समितियाँ गठित हो चुकी हैं।

(1) तिवारी समिति 1985
(2) ओमकार नाथ गोस्वामी समिति, 1993

31 अगस्त, 2000 में बालकृष्ण इराडी समिति ने B.I.A.R. को समाप्त करके राष्ट्रीय कम्पनी लॉ ट्रिब्यूनल (N.C.L.T.) की स्थापना का सुझाव दिया था।

सुमाखरन की प्रसिद्ध पुस्तक Small is beautiful है। लघु उद्योगों पर प्रसिद्ध पुस्तकें 2006 के अधिनियम के अनुसार लघु उद्योगों को छोटे (Small) लघु (Micro) एवं मझोले (Midium) उद्यम के रूप में जाना जाता है। इसक्षेत्र में कुल 6 करोड़ लोगों का वर्तमान में रोजगार मिला है।

अति लघु क्षेत्रों के लिए निवेश की सीमा आबिद हुसैन समिति की सिफारिश पर 5 लाख से बढ़ाकर 25 लाख कर दियागया है और लघु खेत्रों में निवेश की सीमा 2000–2001 में 3 करोड़ से घटाकर 1 करोड़ कर दिया गया है। हथकरघा क्षेत्र के विकास हेतु 21 जनवरी, 1997 में मीरा सेठ की अध्यक्षता में समिति गठित की गई।

CAPART (कपार्ट) Council of people action and advancement of rural technology की स्थापना 1986 में की गई। यह ग्रामीण क्षेत्र के स्वैच्छिक संगठनों को तकनीकी विकास हेतु वित्तीय सहायता प्रदान करती है।

भारत में औद्योगिक गणना : भारत में औद्योगिक आर्थिक गणना की शुरुआत 1977 में हुई इसमें गैर कृषि क्षेत्र के ऐसे उद्योग शामिल किए गए थे जिसमें कम से कम एक कर्मचारी नियमित रूप से रोजगार प्रापत करता हो। दूसरी, तीसरी क्रमशः 1980 तथा 90 में की गई। जिसमें कृषि तथा गैर कृषि दोनों क्षेत्र के उद्यम शामिल थे। चौथी आर्थिक गणना 1998 में तथा 5वीं 2005 में शुरू हुई और इसके अन्तिम परिणाम 12 जून, 2006 में प्रकाशित हुए।

इसके प्रमुख तथ्य निम्नलिखित हैं :

(1) देश में कुल उद्यमों की संख्या 4.212 करोड़ इसमें ग्रामीण क्षेत्र में 2.581 करोड़ (61.5%) शहरी क्षेत्र में 1. 631 करोड़ (38-7%)।
(2) रोजगार में औसत वार्षिक वृद्धि दर 2.49% इसमें ग्रामीण क्षेत्रों में 3.33% शहरी क्षेत्रों में 1.68%।
(3) सर्वाधिक उद्यम वाले पाँच राज्य, इन पाँच राज्यों में कुछ उद्योगों का 50% से अधिक हिस्सा आता है।
   (i) पहले स्थान पर तमिलनाडु – 10.56%
   (ii) दूसरे स्थान पर महाराष्ट्र – 10.39%
   (iii) तीसरे स्थान पर प. बंगाल – 10.77%
   (iv) चौथे स्थान पर आन्ध्र प्रदेश – 9.55%
   (v) उत्तर प्रदेश – 9.53
(4) सर्वाधिक उद्यम वाले केन्द्र शासित राज्य
   (i) दिल्ली – 1.79%
   (ii) चंडीगढ़ – 0.16%
   (iii) पांडिचेरी – 0.12%
(5) सर्वाधिक रोजगार वाले 5 राज्य
   (i) महाराष्ट्र – 11.95%
   (ii) तमिलनाडु – 9.97%
   (iii) प. बंगाल – 9.42%
   (iv) आन्ध्रप्रदेश – 8.96%
   (v) उत्तर प्रदेश – 8.63%

भारत में नवरत्न, महारत्न तथा मिनिरत्न : भारत में नवरत्न की अवधारणा जुलाई 1797 में प्रारम्भ हुई। जो उद्यम ग्लोबल कम्पनी की सम्भावना रखते हों तथा पिछले 3 वर्ष से लाभ कमा रहे हो। 97 में 9 केन्द्रीय उपक्रमों को नवरत्न का दर्जा दिया गया था। 2008 में पुनः 9 म्पनियों को और वर्तमान में अप्रैल, 2010 तक इनकी संख्या बढ़कर 20 हो गई है। 20वीं कम्पनी Oil है। 19वीं कम्पनी RINL है।

समीर प्लाजा, मनमोहन पार्क, कटरा, बांसमण्डी के सामने, इलाहाबाद
फोन नं. : 0532.3266722, 9956971111, 9235581475
{जहाँ सेलेक्शन एक जिद है.}

महारत्न की कम्पनियाँ 3 से बढ़कर वर्तमान में 4 हो गई हैं। इन कम्पनियों पर सरकार का हस्तक्षेप नगण्य होता है।

1. राष्ट्रीय तापीय विद्युत निगम (NTPC- National Thermal Power Corporation)
2. तेल एवं प्राकृतिक गैस निगम (ONGC - Oil and Natural gas Corporation)
3. SAIL (Steel Authority of India Limited)
4. Oil (Oil India Limited)

वर्तमान में मिनिरत्नों की संख्या 52 है। इनमें लार्सन एवं टूब्रो (L & T), महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा, TATA जैसी कम्पनियाँ शामिल हैं।

मिनी रत्न का दर्जा प्राप्त सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम

हाल ही में केन्द्रीय सरकारी क्षेत्र के आठ उद्यमों नामतः भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, बाडकास्ट इंजीनियरिंग कंसल्टेंट्स ऑल इण्डिया लिच, कोचीन शिपयार्ड लि. हिन्दुस्तान कॉपर लि. इंडियन रेलवे केटरिंग और पर्यटन निगम लि., मिश्र धातु निगम लि., नेशनल हाइड्रोइलेक्ट्रिक पॉवर कॉर्पोरेशन लि. और सतलुज जल विद्युत् निगम लि. को मिनी रत्न का दर्जा प्रदान किया गया है जिससे मिनी रत्न प्राप्त केन्द्रीय सरकारी क्षेत्र के उद्यमों की संख्या बढ़कर 55 हो गई है। राष्ट्रीय इस्पात निगम लि. को अभी तक निजीकरण का दर्जा प्राप्त था जिसे मार्च 2010 में नवरत्न का दर्जा प्रदान करने की स्वीकृति दी गई।

नवरत्न व मिनी रत्न कम्पनियों को म्यूचुअल फण्डों में निवेश की अनुमति

वैश्विक मंदी के प्रभावस्वरूप शिथिल हो रहे शेयर बाजार और म्यूचुअल फण्डों में जान फूँकने के लिए सरकार ने सार्वजनिक क्षेत्र की नवरत्न और मिनी रत्न कम्पनियों को अपने अतिरिक्त नकद शेष का 30% म्यूचुअल फण्ड में निवेश करने की मंजूरी प्रदान की है। सार्वजनिक क्षेत्र के म्यूचुअल फण्डों के माध्यम से ही इन कम्पनियों को निवेश की अनुमति होगी। इस आशय का फैसला आर्थिक मामलों को मंत्रिमण्डलीय समिति (CCEA) ने 26 दिसम्बर, 2008 को किया। नवरत्न व मिनी रवरत्न कम्पनियों को ऐसे निवेश की अनुमति पहले भी अगस्त, 2007 में प्रदान की गई थी, किन्तु यह केवल एक वर्ष के लिए ही थी। जिसकी समय सीमा 1 अगस्त, 2008 को समाप्त हो गई थी।

भारत में नवरत्न तथा महारत्न का दर्जा प्राप्त सार्वजनिक क्षेत्र की कम्पनियाँ

सार्वजनिक क्षेत्र की महारत्न कम्पनियों में एक और नाम अप्रैल 2011 में जुड़ गया है। कोयला क्षेत्र की दिग्गज कम्पनी कोल इंडिया लि. (CIL), जिसने देश में अब तक का सबसे बड़ा सार्वजनिक निर्गम जारी करके कीर्तिमान अक्टूबर, 2010 में स्थापित किया था, को 'महारत्न' का दर्जा सरकार ने अप्रैल 2011 में प्रदान किया है। इस कम्पनी को 'नवरत्न' कम्पनी का दर्जा इससे पूर्व प्राप्त था। 'महारत्न' का दर्जा मिलने से देश में महारत्न कम्पनियों की कुल संख्या 5 हो गई है। इनमें कोल इंडिया लि. के अतिरिक्त तेल एवं प्राकृतिक गैस निगम (ONGC), भारतीय तेल निगम (IOC), भारतीय इस्पात प्राधिकरण (SAIL) व राष्ट्रीय ताप विद्युत् निगम (NTPC) शामिल हैं। महारत्न का दर्जा प्राप्त कम्पनियों को निवेश के मामले में अपेक्षाकृत अधिक स्वायत्तता प्राप्त होती है। 'नवरत्न' का दर्जा प्राप्त कम्पनियाँ जहाँ 1000 करोड़ रुपए तक के निवेश प्रस्तावों पर केन्द्र सरकार की पूर्वानुमति के बिना ही निर्णय ले सकती हैं, वहीं 'महारत्न' कम्पनियों को 5000 करोड़ रुपए तक के निवेश प्रस्तावों के लिए यह स्वायत्तता प्राप्त है। महारत्न का दर्जा मिलने के पश्चात् कोल इंडिया लि. अब विदेशी परियोजनाओं में निवेश के सम्बन्ध में भी ज्यादा आसानी से निर्णय ले सकेंगी।

एक अन्य महत्वपूर्ण फैसले के तहत् कोयला क्षेत्र की ही एक अन्य कम्पनी निवेली लिग्नाइट, जिसे 'मिनीरत्न' का दर्जा अभी तक प्राप्त था, को 'नवरत्न' कम्पनी का दर्जा सरकार ने अप्रैल 2011 में प्रदान किया हैं। इससे देश में नवरत्न कम्पनियों की कुल संख्या 16 ही रही है।

महारत्न के दर्जे हेतु आवश्यक दशाएं एक दृष्टि में

- कम्पनी शेयर बाजार में सूचीबद्ध हो।
- पिछले तीन वर्षों में कम्पनी का औसत कारोबार 25,000 करोड़ रुपए रहा हो।
- इस दौरान कम्पनी ने 5000 करोड़ रुपए का औसत शुद्ध लाभ अर्जित किया हो।
- इन तीन वर्षों में कम्पनी का निवल मूल्य (नेटवर्थ) औसतन 15000 करोड़ रुपए रहा हो।
- कम्पनी के पास नवरत्न का दर्जा हो।

भारत की 5 महारत्न कम्पनियाँ (अप्रैल 2011 के अन्त तक की स्थिति)

1. भारतीय इस्पात प्राधिकरण (SAIL)
2. तेल एवं प्राकृतिक गैस निगम (ONGC)
3. भारतीय तेल निगम (IOC)
4. राष्ट्रीय ताप विद्युत् निगम (NTPC)
5. कोल इंडिया लि.

16 नवरत्न कम्पनियाँ

- भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लि. (BEL)
- भारत हैवी इलेक्ट्रिकल्स लि. (BHEL)
- भारत पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लि. (BPCL)
- हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लि. (HPCL)
- महानगर टेलीफोन निगम लि. (MTNL)
- भारतीय गैस प्राधिकरण लि. (GAIL)
- हिन्दुस्तान एयरोनॉटिक्स लि. (HAL)
- पॉवर ग्रिड कॉर्पोरेशन ऑफ इण्डिया लि. (PGCIL)
- राष्ट्रीय खनिज विकास निगम (NMDC)
- ग्रामीण विद्युतीकरण निगम लि. (REC)
- नेशनल एल्यूमिनियम कम्पनी (NALCO)
- राष्ट्रीय इस्पात निगम लि. (RINL)
- पॉवर फाइनेन्स कॉर्पोरेशन (PFC)
- भारतीय नौवहन निगम (SCI)
- ऑइल इण्डिया लि. (OIL)
- निवेली लिग्नाइट कॉर्पोरेशन (NLC)

चेन्नई में टाइडेल पार्क की स्थापना

हार्डवेयर एवं सॉफ्टवेयर उद्योग को आधारिक संरचना की सभी सुविधाएं एक ही स्थन पर उपलब्ध कराने के उद्देश्य से चेन्नई में तारामणि (Taramani) में अत्याधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी पार्क की स्थापना 4 जुलाई, 2000 को की गई जिसे टाइडेल पार्क (TIDEL PARK) नाम दिया गया।

राज्यवार संचयी FDI का अन्तर्प्रवाह (अप्रैल 2000 से नवम्बर 2007 तक)

क्र.	RBI का क्षेत्रीय कार्यालय	शामिल राज्य	FDI अन्तर्प्रवाह में हिस्सा (प्रतिशत)
1.	मुम्बई	महाराष्ट्र, दादर और नगर हवेली, दमन और दीव	25.14
2.	नई दिल्ली	दिल्ली उत्तर प्रदेश का कुछ भाग और हरियाणा	22.68
3.	बंगलुरु	कर्नाटक	7.03
4.	चेन्नई	तमिलनाडु और पुदुचेरी	6.69
5.	हैदराबाद	आन्ध्र प्रदेश	4.12
6.	अहमदाबाद	गुजरात	2.84

स्रोत : औद्योगिक नीति और संवर्धन विभाग

प्रमुख क्षेत्रों में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश (FDI) की अधिकतम अनुमन्य सीमा

क्र.	क्षेत्र	विदेशी प्रत्यक्ष निवेश की अधिकतम सीमा (प्रतिशत)
1.	सार्वजनिक क्षेत्र की बैंकिंग	49
2.	निजी क्षेत्र की बैंकिंग	74
3.	वित्तीय कम्पनियाँ	100
4.	बीमा कम्पनियाँ	26
5.	स्वदेशी विमान सेवा	49
6.	हवाई अड्डों का आधुनिकीकरण	100
7.	दूरसंचार (बेसिक, सेल्युलर)	74
8.	निर्माण विकास परियोजनाएं	100
9.	पेट्रोलियम (रिफायनिंग–नई इकाइयाँ)	100
10.	सार्वजनिक क्षेत्र की रिफायनरियाँ	26
11.	विपणन	74
12.	अपस्ट्रीम	51–100
13.	कोयला खनन	100
14.	थोक व्यापार एवं निर्यात व लघु उद्योग के लिए व्यापार	100
15.	प्रसारण	20–49
16.	विद्युत् (परमाणु ऊर्जा के अलावा)	100
17.	फार्माक्युटिकल्स (औषधियाँ)	100
18.	सड़क एवं बन्दरगाह	100
19.	होटल एवं पर्यटन	100
20.	खनन और खनिज	100
21.	कोरियर सेवाएं	100
22.	पर्यावरण नियन्त्रण	100
23.	विज्ञापन, फिल्म	74–100
24.	रक्षा और सामरिक उद्योग	26
25.	चाय उद्योग (चाय बागान सहित)	100
26.	प्रिण्ट मीडिया	100
27.	विज्ञान एवं तकनीकी पत्र–पत्रिकाएं	100
28.	बुनियादी ढाँचा और सेवा क्षेत्र में निवेश करने वाली कम्पनियाँ (ऐसेट रिकन्सट्रक्शन कम्पनियाँ)	49
29.	उपग्रहों की स्थापना और संचालन	74
30.	कृषि (फुलवारी, बागवानी, बीजों का विकास, पशुपालन, मत्स्यपालन, सब्जी आदि)	100
31.	विदेशी समाचार–पत्रों का प्रकाशन	100
32.	कॉफी एवं रबड़ प्रसंस्करण	100
33.	सिगार एवं सिगार उत्पादन	100
34.	अल्कोहॉल आसवन	100
35.	खतरनाक रसायन	100
36.	औद्योगिक विस्फोटक उत्पादन	100
37.	गैर–बैंकिंग वित्तीय कम्पनियाँ	100
38.	विशेष आर्थिक क्षेत्र–उनमें यूनिटों की स्थापना	100

बीमा क्षेत्र तथा विदेशी समाचार–पत्रों के प्रकाशन के लिए FDI सीमा में वृद्धि

नए बीमा (संशोधन) विधेयक 2008 में बीमा क्षेत्र में FDI की सीमा मौजूदा 26% से बढ़ाकर 49% करने का सरकार का प्रस्ताव है। वर्ष 2000 में बीमा क्षेत्र को निजी क्षेत्र के लिए खोला गया था। उस समय इस क्षेत्र में 26% FDI की अनुमति प्रदान की गई थी।

इसी प्रकार केन्द्र सरकार ने विदेशी समाचार–पत्रों के प्रतिरूप (फैसीमाइल) संस्करणों के भारत में प्रकाशन के लिए विदेशी प्रत्यक्ष निवेश (FDI) की सीमा को बढ़ाकर 100% जनवरी, 2009 में कर दिया है। अभी तक अधिकतम 26 प्रतिशत निवेश ही इस क्षेत्र में अनुमन्य था।

THE INSTITUTE

समीर प्लाजा, मनमोहन पार्क, कटरा, बांसमण्डी के सामने, इलाहाबाद
फोन नं. : 0532.3266722, 9956971111, 9235581475
{जहाँ सेलेक्शन एक जिद है.}

एफ.डी.आई. - मार्ग आगे का

रिटेल क्षेत्र में एफ.डी.आई. लाभ कैसे देगी ?

- वाल–मार्ट जैसे विश्व रिटेल संस्था के प्रवेश से नए निवेश दिखाई देने की संभावना है।
- कुछ ही समय अवधि में इसके 3–4 मिलियन नए रोजगार शामिल करने की संभावना है। अन्य 4–6 मिलियन रोजगार संभार–तंत्र, ठेका श्रमिक, हाउस–कीपिंग और सुरक्षा के क्षेत्र में सृजित किए जा सकते हैं।
- संभार–तंत्र, कोल्डचेन, भांडागारों के विकास में सहायता करने की आशा है।
- सरकारी राजस्व को विभिन्न करों के माध्यम से 24–30 बिलियन अमरीकी डॉलर की अतिरिक्त राशि प्राप्त हो सकती है।
- वनस्पति/सब्जियों तथा खराब होने वाली अन्य सामग्रियों की क्षति कम होगी और स्फीति नियंत्रण रखने में सहायता मिलेगी।
- उपभोक्ताओं के लिए 5–10% की बचत होगी।
- किसानों को 10–30% अधिक आय दिलाने में सहायता कर सकती है।
- आर्थिक विकास में वृद्धि होगी।

नए नियम क्या कहते हैं ?

एकल–ब्रांड रिटेल

- सरकार ने एकल–ब्रांड रिटेल में 100% एफ.डी.आई. की अनुमति दे दी है।
- विदेशी निवेशक ब्राण्ड के स्वामी हों।
- बेचे जाने वाले उत्पाद केवल 'एकल ब्राण्ड' होने चाहिए।
- उत्पाद भारत से भिन्न एक या अधिक देशों में एक ही ब्रांड के नाम से बेचे जाने चाहिए।
- खरीदे गए माल के मूल्य का 30% का स्रोत भारत वरीयतः लघु एवं मध्यम इकाईयों, ग्रामीण एवं कुटीर उद्योग, दस्तकारों तथा शिल्पकारों से किया जाएगा।
- स्रोत की मात्रा स्व–प्रमाणित की जाए, सांविधिक लेखा–परीक्षकों द्वारा जांच की जाए।

मल्टी–ब्राण्ड रिटेल

- मल्टी–ब्राण्ड रिटेल में सरकार 51% एफ.डी.आई की अनुमति दे।
- विदेशी निवेशकों द्वारा एफ.डी.आई. के रूप में लाई जाने वाली न्यूनतम राशि 100 मिलियन अमरीकी डॉलर होगी।
- न्यूनतम 50% कुल एफ.डी.आई. तीन वर्षों में बैक–एड आधारिक संरचना पर लगाई जाए।
- निर्मित/संसाधित उत्पादों की प्राप्ति के मूल्य की न्यमनतम 30% राशि का स्रोत ऐसे भारतीय लघु उद्योग हों, जिनका संयंत्र एवं मशीनरी में कुल निवेश 1 मिलियन अमरीकी डॉलर से अधिक न हो।
- रिटेल बिक्री केन्द्र केवल उन शहरों में स्थापित किए जाएं जिनकी जनसंख्या 2011 जनगणना के अनुसार 10 लाख से अधिक हो और ऐसे शहरों की नगर/शहरी सीमा के आस पास का 10 किमी. क्षेत्रफल कवर होता हो।
- ई–कॉमर्स के माध्यम से किसी भी रूप में रिटेल ट्रेडिंग की अनुमति नहीं दी जाएगी।
- फल, सब्जियों, फूलों, अन्न, दलहन, ताजा मुर्गे, मछली एवं मीट उत्पादों सहित ताजा फार्म उत्पाद बिना ब्राण्ड वाले हो सकते हैं।
- फार्म उत्पादों को मुहैया कराने का पहला अधिकार सरकार का होगा।

विदेशी रिटेलर भारत में क्यों प्रवेश करना चाहते हैं ?

- बड़े बाजार, बढ़ती हुए प्रयोज्य आय एवं खर्च करने की शक्ति।
- भारतीय रिटेल बाजार का अनुमानित आकार लगभग 450 मिलियन अमरीकी डॉलर का है।

विदेशी प्रत्यक्ष (FDI) निवेश नीति
(31 मार्च, 2008)

I. क्षेत्र जिसमें FDI की अनुमति नहीं है

1. फुटकर व्यापार (एकल ब्राण्ड उत्पाद खुदरा बिक्री छोड़कर)
2. परमाणु ऊर्जा
3. लॉटरी व्यापार
4. सट्टा बाजार और जुआ
5. चिट फण्ड व्यापार
6. निधि कम्पनी
7. ट्रांसफरेबल डेवेलपमेन्ट्स राइट्स व्यापार
8. वे क्षेत्र जो निजी क्षेत्र निवेश के लिए खुले नहीं हैं।

II. क्षेत्र जिसमें FDI के लिए सरकार की पूर्व स्वीकृति आवश्यक है–

1. जहाँ प्रेस नोट 1 (2005 शृंखला) के प्रावधान लगे हों।
2. जहाँ 24% से अधिक विदेशी पूँजी उन वस्तुओं के उत्पादन के लिए लगाई जानी है, जो लघु उद्योग क्षेत्र के लिए आरक्षित है।

स्रोत : भारत 2008, पेज 607 तथा 616

विश्व के प्रमुख शेयर मूल्य सूचकांक

	शेयर मूल्य सूचकांक		स्टॉक एक्सचेंज
1.	डॉलेक्स, सेंसेक्स BSE-20, बैंकेक्स	–	BSE मुंबई (भारत)
2.	निफ्टी	–	NSE मुंबई (भारत)
3.	डी. जोन्स	–	न्यूयार्क (अमरीका)
4.	निक्की	–	टोकियो (जापान)
5.	मिडडेक्स, फ्रैंकफर्ट	–	जर्मनी
6.	हांग सेंग	–	हांगकांग
7.	सिमेक्स, स्ट्रेट्स टाइम्स	–	सिंगापुर
8.	कोस्पी	–	कोरिया
9.	सेट	–	थाइलैण्ड
10.	तेन	–	ताइवान
11.	शंघाई कॉम	–	चीन
12.	नास्डैक	–	स. रा. अमरीका
13.	एस. एण्ड पी.	–	कनाडा
14.	बोवेस्पा	–	ब्राजील
15.	मिष्टेल	–	इटली
16.	आई. पी. सी.	–	मैक्सिको
17.	जकार्ता कम्पोजिट	–	मलेशिया
18.	सियोल कम्पोजिट	–	दक्षिण कोरिया

प्रमुख उत्पाद एवं उससे संबंधित देश

	उत्पाद		देश
➢	फोर्ड	–	सं. रा. अमेरिका
➢	वोक्सवेगन	–	जर्मनी
➢	निस्सान	–	जापान
➢	रेनो	–	फ्रांस
➢	होण्डा	–	जापान
➢	मारुति	–	भारत
➢	हुण्डई	–	दक्षिण कोरिया
➢	एल. जी.	–	दक्षिण कोरिया
➢	रिबोक	–	सं. रा. अमेरिका
➢	नाइक	–	सं. रा. अमेरिका
➢	एडीडास	–	जर्मनी
➢	हीरो	–	भारत
➢	नोकिया	–	फिनलैण्ड
➢	प्यूमा	–	इटली
➢	फिएट	–	इटली
➢	सैमसन्ग	–	दक्षिण कोरिया
➢	टोयटा	–	जापान
➢	हिन्दुस्तान मोटर्स	–	भारत
➢	एयरटेल	–	भारत
➢	बोडाफोन	–	ब्रिटेन
➢	अमेरिकन मोबाइल	–	मैक्सिको
➢	टेलीफोनिका	–	स्पेन
➢	चाइना मोबाइल	–	चीन

प्रमुख उद्योगों की स्थापना :

उद्योग	आधुनिक तरीके के प्रथम कारखाने का स्थापना वर्ष एवं स्थान	उद्योग	आधुनिक तरीके के प्रथम कारखाने का स्थापना वर्ष एवं स्थान
सूती वस्त्र	1818, कोलकाता	सीमेण्ट	1904, चेन्नई (मद्रास)
जूट	1855, रिशरा (प. बंगाल)	साइकिल	1918, कोलकाता
लोहा इस्पात	1870, कुल्टी (प. बंगाल)	कागज	1812, सेरामपुर (प. बंगाल)
चीनी उद्योग	1900, बिहार	उर्वरक	1906, तमिलनाडु

सार्वजनिक क्षेत्र के इस्पात कारखाने :

स्थान	तथ्य
राउरकेला (उड़ीसा)	• द्वितीय पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत जर्मनी की सहायता से स्थापित किया गया। 1959 ई. में उत्पादन शुरू हुआ।
भिलाई (मध्य प्रदेश)	• द्वितीय पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत रूस की सहायता से स्थापित किया गया। 1959 ई. में उत्पादन शुरू हुआ।
दुर्गापुर (प. बंगाल)	• द्वितीय पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत ब्रिटेन की सहायता से स्थापित किया गया। वर्ष 1962 ई. में उत्पादन शुरू हुआ।
बोकारो (झारखण्ड)	• एशिया का सबसे बड़ा संयन्त्र। इसे तृतीय पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत रूस की सहायता से स्थापित किया गया। वर्ष 1973 ई. में उत्पादन आरम्भ हुआ।
बर्नपुर (प. बंगाल)	• निजी क्षेत्र संयन्त्र के राष्ट्रयकरण द्वारा अधिगृहीत यह संयन्त्र रूस की सहायता से स्थापित हुआ।
विशाखापत्तनम (आन्ध्र प्रदेश)	• चौथी पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत 2256 करोड़ रुपये की सरकारी लागत से रूस की सहायता से स्थापित किया गया।
सलेम (तमिलनाडु)	• चौथी पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत स्थापित किया गया।
भद्रावती (कर्नाटक)	• चौथी पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत राष्ट्रीयकृत किया गया।
विजयनगर (कर्नाटक)	• चौथी पंचवर्षीय योजना के तहत स्थापित किया गया।

भारत के अब तक के वित्त मन्त्री :

वर्ष	वित्त मन्त्री
1947–49	आर. के. षणमुगम चेट्टी
1949–51	जॉन मथाई
1951–57	सी. डी. देशमुख
1957–1958	टी. टी. कृष्णामाचारी
1958–59	जवाहर लाल नेहरू
1959–64	मोरार जी देसाई
1966–67	सचीन्द्र चौधरी
1967–70	मोरार जी देसाई
1970–71	इन्दिरा गाँधी
1971–75	यशवन्तराज बी. चह्वाण
1975–77	सी. सुब्रह्मण्यम
1977–78	एच. एम. पटेल
1979–80	चरण सिंह
1980–82	आर. वेंकटरमण
1982–85	प्रणव मुखर्जी
1985–87	वी. पी. सिंह
1988–89	नारायण दत्त तिवारी
1989–90	एस. बी. चह्वाण
1990–91	मधु दण्डवते
1991–92	यशवंत सिन्हा
1992–96	मनमोहन सिंह
1996–98	पी. चिदम्बरम
1998–2003	यशवन्त सिन्हा
2003–2004	जसवन्त सिंह
2004–2009	पी. चिदम्बरम
2009–अब तक	प्रणव मुखर्जी

IAS INSTITUTE

समीर प्लाजा, मनमोहन पार्क, कटरा, बांसमण्डी के सामने, इलाहाबाद {जहाँ सेलेक्शन एक जिद है.}
फोन नं. : 0532.3266722, 9956971111, 9235581475

आर्थिक क्षेत्र से सम्बन्धित मुख्य समितियाँ :

के. एन. काबरा समिति	• फ्यूचर ट्रेडिंग
पिन्टो समिति (1997)	• नौवहन उद्योग
चंद्रान्ने समिति	• शेयर व प्रतिभूतियों की स्टॉक एक्सचेन्जों में डीलिस्टिंग
यू.के. शर्मा समिति	• नाबार्ड द्वारा क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों की देख रेख
अजीत कुमार समिति (1997)	• सेना के वेतनों की विसंगतियाँ
सी. बी. भावे समिति (1997)	• कम्पनियों द्वारा सूचनाएँ प्रस्तुत करना
धानुका समिति (2000)	• प्रतिभूति बाजार से सम्बन्धित नियम
दवे समिति	• असंगठित क्षेत्र के लिए पेंशन की सिफारिश
मल्होत्रा समिति	• बीमा क्षेत्र में सुधार
सेनगुप्ता समिति	• शिक्षित बेरोजगारी
डॉ. विजय केलकर समिति	• प्राकृतिक गैस मूलय
बी. एन. युगांधर समिति (1995)	• राष्ट्रीय सामाजिक सहायता योजना
भण्डारी समिति (1994)	• क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों की पुनर्संरचना
शंकरलाल गुरु समिति	• कृषि विपणन
भगवती समिति	• बेरोजगारी
वाचू समिति	• प्रत्यक्ष कर
एल. के. झा समिति	• अप्रत्यक्ष कर
स्वामीनाथन समिति	• जनसंख्या नीति (1994)
दांतवाला समिति	• बेरोजगारी के अनुमान
सुखमय चक्रवर्ती समिति	• मौद्रिक प्रणाली पर पुनर्विचार
सरकारिया समिति	• केन्द्र राज्य सम्बन्ध
हजारी समिति (1985)	• औद्योगिक नीति
दत्त समिति	• औद्योगिक लाइसेंसिंग
चक्रवर्ती कमेटी (1985)	• मौद्रिक पद्धति के कार्यों की समीक्षा
एस. एस. तारापोर समिति (1997)	• पूँजी खाते की परिवर्तनशीलता
पी. सी. एलेक्जेण्डर समिति (1978)	• आयात–निर्यात नीतियाँ तथा आयात लाइसेंस का उदारीकरण
महाजन समिति (मार्च, 1997)	• चीनी उद्योग
महालनोबिस समिति	• राष्ट्रीय आय
राजा चिलैया समिति	• कर सुधार
खुसरो समिति	• कृषि साख
गोइपोरिया समिति	• बैंक सेवा सुधार
नरसिम्हन समिति	• बैंकिंग सुधार
जानकीरमन समिति	• प्रतिभूति घोटाला
रेखी समिति	• अप्रत्यक्ष कर
गोस्वामी समिति (1993)	• औद्योगिक रुग्णता
तिवारी समिति (1984)	• औद्योगिक रुग्णता
डॉ. मेहता समिति	• आई. आर. डी. पी. की प्रगति पर पुनर्विचार
रंगराजन समिति (1991)	• भुगतान सन्तुलन
वाघुल समिति	• म्यूचुअल फण्ड स्कीम
नादकर्णी समिति	• सार्वजनिक क्षेत्र की प्रतिभूतियाँ
के. आर. वेणुगोपाल समिति (1994)	• सार्वजनिक वितरण प्रणाली के तहत केन्द्रीय निर्गम मूलय निर्धारण
एम. जी. जोशी समिति (1994)	• दूरसंचार में निजी क्षेत्र का प्रवेश
राकेश मोहन समिति (1995)	• आधारिक संरचना वित्तीयन
ज्ञान प्रकाश समिति (1994)	• चीनी घोटाला
मालेगाम समिति (1965)	• प्राथमिक पूँजी बाजार
सोधानी समिति (1965)	• विदेशी मुद्रा व्यापार
ए. एल. कपूर समिति	• लघु उद्योगों की साख सम्बन्धी
अग्रवाल समिति	• पेट्रोलियम डीलरशिप के आबंटन की जाँच के लिए
सुब्रह्मण्यम समिति	• शैक्षणिक संस्थानों को 'डीम्ड विश्वविद्यालय' का दर्जा प्रदान करने के लिए

कर्नाटक में जनगणना की तर्ज पर अब मौतों की भी गणना

जनगणना की तर्ज पर अब मौतों (Deaths) की गणना का कार्य भी कर्नाटक में प्रारम्भ किया गया है. मृत्यु गणना करने वाला कर्नाटक देश का पहला राज्य है तथा देश में अपने किस्म की यह पहली गणना है. मृत्यु गणना (Death Census) तीन श्रेणियों (नवजात मृत्यु, बाल मृत्यु तथा वयस्क मृत्यु) में की जा रही है।

योजना आयोग
(5 जून, 2009 की स्थिति)

1. मनमोहन सिंह (प्रधानमंत्री)	अध्यक्ष
2. मोंटेक सिंह आहलूवालिया	उपाध्यक्ष
3. मिहिर शाह	सदस्य
4. सुमित्रा चौधरी	सदस्य
5. नरेन्द्र जादव	सदस्य
6. बी. के. चतुर्वेदी	सदस्य
7. अभिजीत सेन	सदस्य
8. सईदा हमीद	सदस्य
9. सुभाषचन्द पाणि	सचिव

इण्डिया विजन–2020 के महत्वपूर्ण लक्ष्य

क्र.	विकास	2000–2001 की स्थिति	2020 की सम्भावना
1.	गरीबी रेखा से नीचे की आबादी (% में)	26%	13%
2.	बेरोजगारी की दर	7.3%	6.8%
3.	कृषि में रोजगार	56%	40%
4.	वयस्क पुरुष साक्षरता	68%	96%
5.	वयस्क महिला साक्षरता	44%	94%
6.	प्राथमिक विद्यालयों में दाखिला	77.2%	99.9%
7.	शिक्षा पर खर्च (सकल राष्ट्रीय उत्पाद का प्रतिशत)	3.2%	4.9%
8.	जीवन प्रत्याशा (जन्म के समय)	64 वर्ष	69 वर्ष
9.	5 वर्ष से कम आयु के बच्चों में कुपोषण	45%	8%
10.	स्वास्थ्य पर खर्च (सकल राष्ट्रीय उत्पाद का प्रतिशत)	0.8	3.4
11.	प्रति व्यक्ति ऊर्जा खपत (किलोग्राम तेल के समतुल्य)	486.0	2002.0
12.	बिजली खपत (किलोवाट प्रति घण्टे)	384.0	2460.0
13.	टेलीफोन (प्रति हजार आबादी पर)	34.0	203.0
14.	व्यक्तिगत कम्प्यूटर (प्रति 1000 पर)	3.3	52.3
15.	अनुसंधान व विकास में लगे वैज्ञानिक व इंजीनियरों की संख्या (प्रति एक लाख आबादी में)	149.0	590.0
16.	वार्षिक वृद्धि दर (GDP का प्रतिशत)	4.4%	9.0%
17.	सकल घरेलू उत्पाद में प्रतिशत हिस्सा– (i) कृषि (ii) उद्योग (iii) सेवा क्षेत्र	28.0% 26.0% 46.0%	6.0% 34.0% 60.0%
18.	कुल पूंजी निर्माण में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का हिस्सा	2.1%	24.5%
19.	शिशु मृत्यु दर (प्रति 1000 जीवित जन्म)	71.0	22.5
20.	कुल जनसंख्या में शहरी जनसंख्या का प्रतिशत	25.5%	40.0%

NEXT INSTITUTE

समीर प्लाजा, मनमोहन पार्क, कटरा, बांसमण्डी के सामने, इलाहाबाद
फोन नं. : 0532.3266722, 9956971111, 9235581475
{जहाँ सेलेक्शन एक जिद है.}

अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों से सम्बन्धित महत्वपूर्ण तथ्य

संगठन	स्थापना वर्ष	मुख्यालय	सदस्य
अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF)	1945	वाशिंगटन डी.सी.	186
विश्व बैंक	1945	वाशिंकटन डी.सी.	186
(पुनर्निर्माण एवं विकास हेतु अन्तर्राष्ट्रीय बैंक (IBRD), अन्तर्राष्ट्रीय वित्त निगम (IFC), अन्तर्राष्ट्रीय विकास संघ (IDA) तथा बहुपक्षीय निवेश गारंटी एजेन्सी (MIGA) विश्व बैंक से ही सम्बद्ध संस्थाएं हैं। मूलतः स्थापित संस्था IBRD है जिसकी स्थापना 1945 में हुई। IFC की स्थापना 1956 में व IDA की 1960 में हुई)			
विश्व व्यापार संगठन (WTO)	1995	जेनेवा	151
एशियाई विकास बैंक	1966	मनीला	61
दक्षिण पूर्वी एशियाई देशों का संघ (ASEAN)	1967	जकार्ता	10 (इण्डोनेशिया, फिलीपीन्स, मलेशिया, सिंगापुर, थाइलैण्ड, ब्रुनेई, वियतनाम, लाओस, म्यांमार तथा कम्बोडिया)
नाफ्टा (NAFTA)	1992		3 (अमरीका, कनाडा, मेक्सिको)
एपेक (APEC)	1989		21 (ऑस्ट्रेलिया, अमरीका, कनाडा, चीन, मेक्सिको, जापान, हांगकांग, ताईवान, द. कारिया, इण्डोनेशिया, फिलीपीन्स, ब्रुनेई, सिंगापुर, मलेशिया, थाइलैण्ड, पपुआ न्यूगिनी, न्यूजीलैण्ड, चिली, पेरू, रूस तथा वियतनाम)
(एपेक ने सन् 2020 तक एशिया प्रशान्त क्षेत्र को स्वतंत्र व्यापार क्षेत्र बनाने की घोषणा की है। यह विश्व का सबसे बड़ा स्वतंत्र व्यापार क्षेत्र होगा।)			
यूरोपियन संघ	1958 में स्थापित EEC का परिवर्तित रूप	ब्रूसेल्स	27 (फ्रांस, लक्जेमबर्ग, उेनमार्क, ब्रिटेन, जर्मनी, बेल्जियम, आयरलैण्ड, हॉलैण्ड, इटली, स्पेन, ग्रीस, पुर्तगाल, ऑस्ट्रिया, फिनलैण्ड, स्वीडन, पोलैण्ड, हंगरी, स्लोवेनिया, स्लोवाकिया, लिथुआनिया, चेक गणराज्य, एस्टोनिया, लाटविया, साइप्रस, माल्टा, बुल्गारिया तथा रूमानियाँ)
मर्कोसुर (Mercosur) (यह दक्षिणी अमरीकी क्षेत्र में स्वतंत्र व्यापार क्षेत्र है।)	1995		4 (ब्राजील, अर्जेन्टीना, पराग्वे व उरुग्वे)
ओपेक (OPEC)	1960	वियना (ऑस्ट्रिया)	13 (अल्जीरिया, इण्डोनेशिया, ईरान, इराक, कुवैत लीबिया, नाइजीरिया, कतर, सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात, वेनेजुएला, इक्वेडोर एवं गैबान)
दक्षेस (SAARC)	1985	काठमाण्डू	8 (भारत, पाकिस्तान, भूटान, बांग्लादेश, श्रीलंका, नेपाल, मालदीव, व अफगानिस्तान)
जी–15 (19 विकासशील देशों का संगठन)	1989	जेनेवा	19 (भारत, मेक्सिको, जमैका, वेनेजुएला, पेरू, ब्राजील, अर्जेन्टीना, सेनेगल, अल्जीरिया, नाईजीरिया, जिम्बाब्वे, मिस्र, मलेशिया, इण्डोनेशिया, चिली, कीनिया, श्रीलंका, कोलम्बिया व ईरान)
आर्थिक सहयोग एवं विकास संगठन (OECD)	1948 में स्थापित यूरोपीय आर्थिक सहयोग संगठन का परिवर्तित रूप	पेरिस (फ्रांस)	29 (ऑस्ट्रेलिया, ऑस्ट्रिया, बेल्जियम, कनाडा, चैक रिपब्लिक (Czech Republic), हंगरी, कोरिया (रिपब्लिक), मेक्सिको, पोलैण्ड, डेनमार्क, जर्मनी, फिनलैण्ड, फ्रांस, ग्रीस, आइसलैण्ड, आयरलैण्ड, इटली, जापान, लक्जेमबर्ग, नीदरलैण्ड, न्यूजीलैण्ड, नॉर्वे, पुर्तगाल, स्पेन, स्वीडन, स्विट्जरलैण्ड, टर्की, यू.के. तथा यू.एस.ए.)
एसेम (ASEM)	1996		25 (यूरोपीय संघ के 15 व आसियान के 7 देशों के साथ–साथ जापान, द. कोरिया व चीन को शामिल करते हुए एशिया के 10 देश)
एशियाई क्लीयरिंग यूनियन (ACU)	1975	तेहरान	8 (भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, नेपाल श्रीलंका, ईरान, भूटान, व म्यांमार)
संयुक्त राष्ट्र संघ (UNO)	1945	न्यूयॉर्क	192

महत्वपूर्ण समितियाँ

समिति	कार्यक्षेत्र
1. राज समिति	कृषि जोतकर
2. भगवती समिति	बेरोजगारी
3. वांचू समिति	प्रत्यक्ष कर
4. एल. के. झा समिति	अप्रत्यक्ष कर
5. स्वामीनाथन समिति (1994)	जनसंख्या नीति
6. भूतलिंगम समिति	मजदूरी, आय और कीमतें
7. दांतवाला समिति	बेरोजगारी के अनुमान
8. सुखमय चक्रवर्ती समिति	मौद्रिक प्रणाली पर पुनर्विचार
9. सरकारिया समिति	केन्द्र–राज्य सम्बन्ध
10. वैद्यनाथन समिति	सिंचाई के पानी
11. हजारी समिति (1967)	औद्योगिक नीति
12. दत्त समिति	औद्योगिक लाइसेंसिंग
13. महालनोबिस समिति	राष्ट्रीय आय
14. राजा चेलैया समिति	कर–सुधार
15. खुसरो समिति	कृषि साख
16. कोइपोरिया समिति	बैंक सेवा सुधार
17. नरसिम्हम समिति	वित्तीय (बैंकिंग) सुधार
18. जानकीरमन् समिति	प्रतिभूति घोटाला
19. रेखी समिति	अप्रत्यक्ष कर
20. गोस्वामी समिति (1993)	औद्योगिक रुग्णता
21. तिवारी समिति (1984)	औद्योगिक रुग्णता
22. डॉ. मेहता समिति	आई.आर.डी.पी. की प्रगति पर पुनर्विचार
23. रंगराजन समिति (1991)	भुगतान सन्तुलन
24. वाघुल समिति	म्यूचुअल फंड स्कीम
25. नादकर्णी समिति	सार्वजनिक क्षेत्र की प्रतिभूतियाँ
26. मल्होत्रा समिति	बीमा क्षेत्र में सुधार
27. सेन गुप्ता समिति	शिक्षित बेरोजगारी
28. डॉ. विजय केलकर समिति	प्राकृतिक गैस मूल्य
29. बी. एन. युगांधर समिति (1995)	राष्ट्रीय सामाजिक सहायता
30. नन्जुन्दप्पा समिति (1993)	रेलवे किराए भाड़े
31. भण्डारी समिति (1994)	क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों की पुनर्संरचना
32. सुन्दरराजन समिति (1995)	(खनिज) तेल क्षेत्र में सुधार
33. डी. के. गुप्ता समिति (1995)	दूर संचार विभाग की पुनर्संरचना
34. शंकरलाल गुरु समिति	कृषि विपणन
35. के. आर. वेणुगोपाल समिति (1994)	सार्वजनिक वितरण प्रणाली के तहत् केन्द्रीय निर्गम मूल्य निर्धारण
36. एम. जी. जोशी समिति (1994)	दूर संचार में निजी क्षेत्र के प्रवेश सम्बन्धी दिशा निर्देश
37. राकेश मोहन समिति (1995)	आधारिक संरचना वित्तीयन
38. ज्ञान प्रकाश समिति (1994)	चीनी घोटाला
39. मालेगाम समिति (1995)	प्राथमिक पूँजी बाजार
40. सोधानी समिति (1995)	विदेशी मुद्रा बाजार
41. के. एन. काबरा समिति	फ्यूचर ट्रेडिंग
42. पिण्टो समिति (1997)	नौवहन उद्योग
43. चंद्रात्रे समिति (1997)	शेयर व प्रतिभूतियों की स्टॉक एक्सचेंजों में डीलिस्टिंग
44. यू. के. शर्मा समिति (1998)	नाबार्ड द्वारा क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों की देखरेख
45. अजीत कुमार समिति (1997)	सेना के वेतनों की विसंगतियाँ
46. सी.बी. भावे समिति (1997)	कम्पनियों द्वारा सूचनाएं प्रस्तुत करना
47. धानुका समिति	प्रतिभूति बाजार से सम्बन्धित नियम
48. दवे समिति (2000)	असंगठित क्षेत्र के लिए पेंशन की सिफारिश
49. चक्रवर्ती कमेटी (1985)	मौद्रिक के कार्यों की समीक्षा
50. ओ. पी. सोधानी विशेषज्ञ दल (1995)	विदेशी विनिमय बाजार का विकास
51. एस.एस. तारापोरे समिति (1997)	पूँजी खाते की परिवर्तनशीलता
52. पी.सी. अलेक्जेण्डर समिति (1978)	आयात–निर्यात नीतियों का उदारीकरण
53. महाजन समिति (मार्च 1997)	चीनी उद्योग
54. आर. वी. गुप्ता समिति (दिसम्बर 1997)	कृषि साख
55. तारापोर समिति (जुलाई 2001)	यू.टी.आई. के शेयर सौदों की जाँच
56. माशेलकर समिति (जनवरी 2002)	ऑटो फ्यूल नीति
माशलेकर समिति (अगस्त 2003 में रिपोर्ट)	नकली दवाओं का उत्पादन
57. एस. एन. खान समिति (1998)	वित्तीय संस्थाओं तथा बैंकों की भूमिका में समन्वय
58. एन.एस. वर्मा समिति (1999)	वाणिज्यिक बैंकों की पुनर्संरचना
59. पार्थ सारथी शोम समिति	कर नीति
60. एन. के. सिंह समिति	कर नीति की समिक्षा
61. वाई. वी. रेड्डी समिति (अक्टूबर 2001)	आयकर छूटों की समीक्षा
62. भूरेलाल समिति	मोटर वाहन करों में वृद्धि
63. सप्तऋषि समिति (जुलाई 2002)	स्वदेशी चाय उद्योग के विकास हेतु
64. अभिजीत सेन समिति (जुलाई 2002)	दीर्घकालीन अनाज नीति
65. एन. आर. नारायण मूर्ति समिति (2003)	कार्पोरेट गवर्नेंस
66. एन. के सिंह समिति	विद्युत् क्षेत्र में सुधार
67. सुशील कुमार समिति	बीटी कपास की खेती की समीक्षा
68. वी. एस. व्यास समिति (दिसम्बर 2003)	कृषि एवं ग्रामीण साख विस्तार
69. विजय केलकर समिति (मार्च 2004)	फिस्कल रेस्पोंसिबिलिटी एण्ड बजट मैनेजमेन्ट एक्ट के अनुसार अर्थव्यवस्था की त्रैमासिक समीक्षा
70. लाहिड़ी समिति (2005)	खाद्य तेलों के मूल्यों पर प्रशुल्क संरचना सम्बन्धी सिफारिश हेतु
71. सच्चर समिति (2005)	मुस्लिमों की सामाजिक, आर्थिक व शैक्षणिक स्थिति का अध्ययन
72. नायर कार्यदल (2006)	पेट्रोलियम क्षेत्र में विदेशी निवेश को आकर्षित करने के लिए नीतिगत सुझाव देने हेतु
73. रंगराजन समिति (2006)	पेट्रोलियम उत्पादों पर प्रशुल्क संरचना के सम्बन्ध में सिफारिशें देने हेतु
74. मालेगाम समिति (2006)	लेखा मानकों पर सुझाव हेतु
75. शंगलू समिति (2006)	सरदार सरोवर बाँध परियोजना के विस्थापितों के पुनर्वास की स्थिति की समीक्षा हेतु
76. पाठक आयोग (2006)	UNO के तेल के बदले अनाज कार्यक्रम की जाँच हेतु
77. मिस्त्री समिति (2007)	वित्तीय गतिविधियों के सुधार हेतु सुझाव
78. दीपक पारिख समिति (2007)	आधारिक संरचना के वित्तीय मामले में सुझाव देने हेतु

समीर प्लाजा, मनमोहन पार्क, कटरा, बांसमण्डी के सामने, इलाहाबाद
फोन नं. : 0532.3266722, 9956971111, 9235581475
{जहाँ सेलेक्शन एक जिद है.}

अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थाएँ/व्यापारिक संगठन–तथ्य एक दृष्टि में
(International Financial Institutions / Trade Organizations - Facts at a Glance)

संगठन तथा समूह	स्थापना वर्ष	मुख्यालय	सदस्यों की संख्या	विशेष
1. अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF)	1945	वाशिंगटन	188वां दक्षिण सूडान	जुलाई 2002 में पूर्वी तिमोर IMF का नवीनतम सदस्य बना। इसका प्रमुख–प्रबन्ध निदेशक–यूरोपीय को ही बनाया जाता है।
2. विश्व बैंक समूह	1945	वाशिंगटन	188वां दक्षिण सूडान	भारत ICSID को छोड़कर अन्य सभी
a. आई.बी.आर.डी.	1945			का सदस्य है।
b. आई.एफ.सी.	1956			विश्व बैंक (WB) से आशय IBRD तथा
c. अन्तर्राष्ट्रीय विकास परिषद (IDA)	1960			IDA है। इसका अध्यक्ष पद पर कोई
d. एम.आई.जी.ए. (MIGA)	1988			अमरीकी ही सदा नियुक्त होता रहा है
e. आई.सी.एस.आई.टी. (ICSID)	1966			IDA को WB की रियायतीकरण देने वाली खिड़की (Soft Loan Window) भी कहते हैं।
3. यूरोपियन संघ (EU)	1958 में स्थापित EEC का परिवर्तित रूप	ब्रुसेल्स	27	क्रोएशिया इसका 28वाँ सदस्य होगा। (जनमत संग्रह हो चुका है) यूरोपियन यूनियन कामन मार्केट का उदाहरण है। 1 जनवरी, 2002 को EU के 12 सदस्य देशों ने यूरो को एक वैधानिक मुद्रा (Leagal Tender) के रूप में अपनाया। 1 जनवरी, 2007 को स्लोबेनिया (Slovenia) ने यूरो मुद्रा को स्वीकार किया। इस समय इसके 17 सदस्य है जिन्होंने युरो को स्वीकार किया है।
4. विश्व व्यापार संगठन (WTO)	1995	जिनेवा	(केपवर्ड 153वाँ) (शीघ्र ही 157 होने की आशा)	बनुआतु (अक्टूबर, 2011) रूस (16 दिसम्बर, 2011) तथा मान्टेनेग्रो एवं समोआ (17 दिसम्बर, 2011) को इसके सदस्य बनाने की घोषणा की गयी पर सदस्य बनने की लम्बी प्रक्रिया बाकी है पूरा होने के बाद सदस्यों की संख्या 157 हो जायेगी।
5. आसियान (ASEAN)	1967	जकार्ता	10	यह स्वतन्त्र व्यापार ब्लाक (Free Trading Bloc) का उदाहरण हैं इसका नवीन सदस्य कम्बोडिया (10वां) 30 अप्रैल 1999 को बना।
6. एशियाई विकास बैंक (ADB)	1966	मनीला	67 जार्जिया वाँ	यह एक बहुपक्षीय विकास ऋण संख्या के रूप में सदस्य देशों को रियायती ब्याजदर पर ऋण देता है। इसका अध्यक्ष परम्परा रूप में जापानी को ही चुना जाता है।
7. उत्तरी अमेरिका मुक्त व्यापार समझौता (NAFTA)	1994		03	यह विश्व का दूसरा सबसे बड़ा मुक्त व्यापार क्षेत्र (Free Trading Bloc) है।

8.	एशिया प्रशान्त आर्थिक सहयोग (APEC)	1989	सिंगापुर	21	सन् 2020 तक एशिया प्रशान्त क्षेत्र को स्वतन्त्र व्यापार क्षेत्र बनाने की घोषणा की गयी है। यह विश्व का सबसे बड़ा स्वतंत्र व्यापार क्षेत्र होगा।
9.	दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संघ (SAARC)	1985	काठमांडू (नेपाल)	8	अफगानिस्तान सार्क का आठवाँ सदस्य 4 अप्रैल, 2007 को बना।
10.	दक्षिण एशियाई वरीयता व्यापार समझौता (SAPTA)	1995	काठमांडू (नेपाल)	7	SAFTA-दक्षिण एशिया मुक्त व्यापार क्षेत्र 1 जुलाई, 2006 से प्रभावी 2012 तक सदस्य देशों के बीच तटकर कटौती शून्य स्तर तक लाना।
11.	आर्थिक सहयोग और विकास संगठन (OECD)	1948 में स्थापित यूरोपीय आर्थिक सहयोग संगठन का 1961 में परिवर्तित रूप	पेरिस (फ्रांस)	34	चीली 31वाँ सदस्य देश। इसके बाद इजराइल, एस्टोनिया तथा स्लोवेनिया इसके सदस्य बनें।
12.	दक्षिण साझा बाजार	1991	मोण्टेविडियो	07	'मर्कोसुर' स्पेनिश नाम हैं जिसका अभिप्राय–दक्षिण शंकु का साझा बाजार यह द. अमरीकी क्षेत्र का स्वतंत्र व्यापार क्षेत्र है।
13.	पेट्रोलियम निर्यातक देशों का संगठन सदस्य ईरान, कुवैत तथा सऊदी अरबिया	1960	वियना (ऑस्ट्रिया)	11	05 संस्थापक सदस्य देश व 06 अन्य सदस्य देश। खनिज तेल की अन्तर्राष्ट्रीय कीमतों में स्थायित्व लाना। 05 वर्ष में संगठन का शिखर सम्मेलन आयोजित होता है। इन्डोनेशिया ने 2008 तथा ईराक ने 2009 में सदस्यता छोड़ी।
14.	हिन्द महासागर तटीय क्षेत्रीय सहयोग संगठन (हिमतक्षेत्र) (IORARC)	1997	–	19	इस संगठन में एशिया अफ्रीका तथा ऑस्ट्रेलिया के वे देश शामिल हैं जो महासागर के तट पर बसे हुए हैं। इस संगठन का प्रारम्भिक नाम M-7 था।
15.	मेंकोंग–गंगा सहयोग (MGC)	2000	विएनतिएन (लाओस)	06	
16.	शंघाई सहयोग संगठन (SCO) या 'शंघाई–6'	1996		06	अंतिम संस्थापक सदस्य उजबेकिस्तान है। 07 जून, 2002 को औपचारिक अन्तर्राष्ट्रीय संगठन का दर्जा मिला। इसे 'स्वतन्त्र व्यापार क्षेत्र' (Free Trade Zone) में परिणित होने की दिशा में प्रयास जारी है।
17.	बिम्सटेक (BIMSTEC)	1997	–	07	प्रारम्भ में 04 सदस्य थे जून 1997 में म्योमार को शामिल किया गया। 06 फरवरी, 2004 को नेपाल तथा भूटान को शामिल किया गया। इसका परिवर्तित नाम बे ऑफ बंगाल इनिशिएटिव फॉर मल्टी सेक्टर टेक्निकल ऐण्ड इकोनोमिक कोआपरेशन है।

THE INSTITUTE

समीर प्लाजा, मनमोहन पार्क, कटरा, बांसमण्डी के सामने, इलाहाबाद {जहाँ सेलेक्शन एक जिद है.}
फोन नं. : 0532.3266722, 9956971111, 9235581475

18. G–8	1975	–	08	20–22 जून, 1997 को अमेरिका के पर्वतीय शहर 'डेनवर' (Denver) में सम्पन्न G–7 के शिखर सम्मेलन में प्रथम बार 'रूस' को इस संगठन के पूर्ण भागीदारी के रूप में शामिल किया गया। यह एक गैर सरकारी संगठन है।
19. G–77	1964	न्यूयार्क	133	इस समूह के अधिकांश देश तृतीय विश्व से सम्बद्ध हैं। भारतभी इसका सदस्य हैं
20. G–15	1989	जिनेवा	19	विकासशील देशों का समूह इससे भारत भी सदस्य है। अंतिम सदस्य ईरान है।
21. G–20	1997	–	20	1997 में एक औपचारिक संगठन का गठन। इस समूह के प्रथम अध्यक्ष पाल मार्टिंग (कनाडा) थे। भारत भी इसका सदस्य है।
22. G–10	1962	पेरिस	11	ग्यारहवां सदस्य 1984 में स्विट्जरलैण्ड बना। यह IMF के उधार के सामान्य व्यवस्थापन कोष (GAB) के लिए अनुदान देने हेतु अनौपचारिक देशों का समूह। भारत इसका सदस्य नहीं है।
23. इब्सा (IBSA)	2003	–	03	भारत, ब्राजील, द. अफ्रीका एक त्रिपक्षीय संगठन। औपचारिक रूप से ब्राजील की राजधानी ब्रासीलिया में 06 जून, 2003 को गठित किया गया।
24. BRICS (R–5)	2009	–	–	ब्राजील, रूस, इण्डिया तथा चीन तथा दक्षिण अफ्रीका का संगठन जिसकी पहली बैठक रूस के यकटरीनवर्ग 16 जून 2009 को हुयी। इसे R–5 के नाम से भी जाना जाता है क्योंकि इन सबकी करेन्सी 'R' से शुरू होती है–ब्राजील–रीयल, रूस–रुबल, इण्डिया (रुपया या रुप्पी), चीन (रेनमिन्थी), साउथ अफ्रीका (रैंड)।
25. ISO (इन्टरनेशनल आर्गेनाइजेशन फार स्टैन्डर्डपिजेशन)	1947	जेनेवा	147	प्रौद्योगिकी टेक्सटाइल पैकेजिंग भवन आदि के सम्बन्ध में मानक स्थापित करना।
26. GCC (गल्फ कोआपरेशन कैंसिल)	25 मई, 1981	6 रियाद	4	अरब देशों के बीच आर्थिक सहयोग स्थापित करना।
27. BASIC	2010			ब्राजील, दक्षिण अफ्रीका भारत तथा चीन।
28. कोलम्बोप्लान	1 जुलाई, 1951			एशिया पेस्फिक देशों के आर्थिक एवं आर्थिक विकास के लिए।

आर्थिक शब्दावली

- **रेपो दर** : अल्पकालिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु (ओवर–नाइट हेतु भी) जिस ब्याज दर पर कॉमर्शियल बैंक रिजर्व बैंक से नकदी ऋण प्राप्त करते हैं, **'रेपो दर'** कहलाती हैं। वर्तमान (16 सितम्बर, 2010 से) में रेपो दर 6.00 प्रतिशत है।
- **रिवर्स रेपो दर** : अल्पकालिक अवधि के लिए रिजर्व बैंक द्वारा कॉमर्शियल बैंकों से जिस ब्याज दर पर नगदी प्रापत की जाती है **'रिवर्स रेपो दर'** कहलाती है। सामान्य बाजार में मुद्रा की आपूर्ति बढ़ जाने पर उसमें कमी लाने के उद्देश्य से रिजर्व बैंक द्वारा बढ़ी ब्याज दरों पर कॉमर्शियल बैंकों को अल्प अवधि के लिए नकदी रिजर्व बैंक में जमा करने हेतु प्रोत्साहित किया जाता है। वर्तमान (16 सितम्बर, 2010 से) में रिवर्स रेपो दर 5.00 प्रतिशत है।
- **नकद आरक्षित अनुपात (CRR) :** किसी वाणिज्यिक बैंक में कुल जमा राशि का वह (प्रतिशत) भाग जिसे रिजर्व बैंक के पास अनिवार्य रूप से जमा करना पड़ता है, **'नगद आरक्षित अनुपात'** कहा जाता है। इसकी दर जितनी ऊँची होती है, बैंकों की साख सृजन क्षमता उतनी ही कम होती है। वर्तमान (16 सितम्बर, 2010 से) में सी.आर.आर. 6.0 प्रतिशत है।
- **वैधानिक तरलता अनुपात (SLR) :** किसी भी वाणिज्यिक बैंक में कुल जमा राशि का वह (प्रतिशत) भाग जो नगद स्वर्ण व विदेशी मुद्रा के रूप में उसे अपने पास अनिवार्य रूप से रखना पड़ता है। बैंकों को वित्तीय संकट का सामना करने हेतु रिजर्व बैंक द्वारा ऐसी व्यवस्था निर्धारित की गई है। वर्तमान (16 सितम्बर, 2010 से) में यह दर 25 प्रतिशत है।
- **पूँजी पर्याप्तता अनुपात (CRAR) :** वह न्यूनतम पूँजी जिसे एक बैंकिंग और गैर–बैंकिंग वित्तीय संस्था को अपने पास रखना चाहिए, खासकर तब जब वह किसी व्यापारिक सम्पत्ति का सृजन करती हो, पूँजी पर्याप्तता कहलाती है, जबकि पूँजी पर्याप्तता अनुपात जोखिम भारित सम्पत्तियों के साथ पूँजी का अनुपात प्रदर्शित करता है। वर्तमान में यह दर 9 प्रतिशत है।
- **ECS प्रणाली** : इलेक्ट्रॉनिक क्लीयरिंग सिस्टम योजना के माध्यम से बैंक द्वारा अपने ग्राहकों को उसके द्वारा आदेशित किसी भी संस्था/व्यक्ति के खाते में नियमित रूप से अन्तरित की जाने वाली धनराशि को बिना पेपर चैक काटे हुए स्वतः अन्तरण की सुविधा प्रदान की जाती है।
- **वाई–फाई (WiFi) तकनीक** : आज के दौर में इंटरनेट का चलन और उपयोग एक अनिवार्य अंग बन गया है। इंटरनेट के प्रयोग करने वालों के लिए इंटरनेट की वाई–फाई तकनीक वरदान साबित हो रही है। वाई–फाई वायरलेस ुाइडलिटी का संक्षिप्त नाम है। इंटरनेट की सुविधाएं सामान्यतः टेलीफोन, केबिल और ब्राडबैंड के जरिए लोगों को उपलब्ध कराई जाती हैं। आजकल बहुत–सी प्राइवेट कम्पनियाँ एक छोट–से मोडम के जरिए भी इंटरनेट की सुविधा लोगों को उपलब्ध करारही हैं। इंटरनेट के उपयोग के लिए डेस्कटॉप या लैपटॉप कम्प्यूटर उपयोग में लाए जाते हैं। इंटरनेट की सुविधा लेने के लिए इन कम्प्यूटरों को उपर्युक्त माध्यमों में से किसी एक से जुड़ा होना चाहिए, लेकिन इंटरनेट की वाई–फाई तकनीक में डेस्कटॉप या लैपटॉप कम्प्यूटर को टेलीफोन, केबिल और ब्राडबैंड आदि की आवश्यकता नहीं पड़ती। वाई–फाई तकनीक से जुड़े क्षेत्र में कम्प्यूटर स्वतः इंटरनेट से जुड़ जाते हैं जिससे कम्प्यूटर को अलग से किसी कनेक्टिविटी की जरूरत नहीं होती दूरदराज के क्षेत्रों के लिए जहाँ भौतिक कनेक्टिविटी सम्भव न हो उन क्षेत्रों के लिए यह तकनीक किसी वरदान से कम नहीं।
- **नैनो तकनीक** : आनेवाले समय में नैनो तकनीक आधुनिक प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अलादीन का चिराग साबित होगी। इस तकनीक के जरिए कृषि, पशुपालन एवं खाद्य प्रसंस्करण में चमत्कारिक परिवर्तन आएगा। इस तरह से ग्रामीण विकास में नैनों तकनीक अहम् भूमिका निभाएगी। इस तकनीक के जरिए पराजीनी फसलें या ट्रांसजेनिक क्रॉप्स तैयार की जा सकेंगी। अभी तक एक प्रजाति की दो अच्छी किस्मों से बेहतरीन जीन निकाल कर उम्दा किस्म तैयार की जाती है, लेकिन नैनो तकनीक ने इन सभी को चमत्कारिक रूप से कर दिखाया है। इस तकनीक के जरिए वनस्पति जगत् में जन्तु जगत् की घुसपैठ को सम्भव कर दिखाया है। इसके द्वारा मनचाहे स्वाद, रंग, सुगंध एवं पौष्टिकता से भरपूर फसलों की प्रजातियों को तैयार किया जा सकेगा। यही नहीं, पौधों में पोषक तत्व, खाद–पानी की कमी एवं रोग–बीमारियों को खुद बया करेंगे। फसलों को खरपतवारों के आक्रमण से बचाना हो या फिर मिट्टी की उर्वरा शक्ति की जाँच–पड़ताल करनी हो, सब कुछ इस तकनीक से सम्भव हो चला है। नैनों तकनीक से पशुओं में मन चाही विशेष नसल एवं उम्दा गुणों के पशुओं को तैयारा करना सम्भव हुआ है। प्रकृति जो करिश्मा हजारों लाखों साल में करती थी, वह जेनेटिक इंजीनियरी के जरिए पलक झपकते ही सम्भव हो चला है। पराजीनी फसलों के उत्पादन में चीन नम्बर एक पर है। अभी पराजीनी फसलों में सोयाबीन, मक्का, कपास ओर केनोल का प्रमुख स्थान है।
- **टेली–मेडिसिन** : यह संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी, चिकित्सा विज्ञान, इंजीनियरिंग एवं आयुर्विज्ञान का समन्वय है। टेली–मेडिसिन प्रणाली के अन्तर्गत विशेष रूप से तैयार किए गए हार्डवेयर ओर सॉफ्टवेयर, रोगी तथ डॉक्टर दोनों छोरों पर प्रदान किए जाते हैं। इनके जरिए रोग निवारण के उपकरण, एक्स–रे, ई. सी.जी., जाँच रिपोर्ट आदि रोगी तक पहुँचाए जाते हैं। यह जानकारी इनसैट उपग्रह के माध्यम से प्राप्त की जाती हैं। आमूमन रोगी की बीमारी से सम्बन्धित समस्त जानकारी विशेषज्ञ डॉक्टर को भेजी जाती हैं। इसके बाद डॉक्टर जाँच–पड़ताल के बाद रोगी से सीधे वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के द्वाराबातचीत करके रोग का निदान और उपचार करते हैं। इस कार्य के लिए सरकारी अस्पताल, कुछ गैर–सरकारी संगठन या ट्रस्टी अस्पताल चुने जाते हैं। ताकि इस प्रणाली को सुचारु रूप से चलाने में पर्यापत प्रशिक्षण प्राप्त हो सके और आगे चलकर टेली–मेडिसिन को राष्ट्रीय स्तर पर चलाया जा सके। अभी हाल ही में कर्नाटक राज्य के सभी जिला चिकित्सालयों में टेली–मेडिसिन सुविधा स्थापित करने का कार्य आरम्भ कर दिया है।

समीर प्लाजा, मनमोहन पार्क, कटरा, बांसमण्डी के सामने, इलाहाबाद {जहाँ सेलेक्शन एक जिद है.}
फोन नं. : 0532.3266722, 9956971111, 9235581475

- **नेट बैंकिंग** : इंटरनेट एवं कम्प्यूटर की सहायात से घर बैठे बैंकिंग के कार्यों का संचालन किया जाता है। इस प्रक्रिया को नेट बैंकिंग कहते हैं। नेट बैंकिंग के माध्यम से ग्राहक अपने कम्प्यूटर का उपयोग कर अपने बैंक नेटवर्क और वेबसाइट को एक्सेस कर सकता है। नेट बैंकिंग का सबसे बड़ा लाभ यह है कि कोई भी घर बैठे या ऑफिस से बैंक सर्विस का लाभ उठा सकता है।

  तकनीकी दुरुपयोग के कारण नेट का जालसाज एकाउंट को हैक कर बैंक के ग्राहक को हानि पहुँचा सकते हैं। ऐसी स्थिति में यह जरूरी है कि नेट बैंकिंग के उपयोग में सतर्कता बरती जाए। नेट बैंकिंग की 50 प्रतिशत वेबसाइट असुरक्षित होती है। अतः ग्राहक साइट खोलने से पहले यू. आर.एल. और डोमेन को चेक करें और देखें कि यह उसी बैंक के यू.आर.एल. और डोमेन की तरह हों। इससे आप आश्वस्त हो जाएगें कि आप सुरक्षित वेबसाइट का उपयोग कर रहे हैं।

  यदि आप नेट बैंकिंग के लिए इंटरनेट कैफे का उपयोग कर रहे हों, तो अपने पासवर्ड को बदल लें। इससे आप सुरक्षित हो जाएंगे। पासवर्ड को किसी पेपर पर न लिखें। इसे आसानी से हैक किया जा सकता है। अपनी सिस्टम पर स्क्रीन सेवर पासवर्ड डाल दें। जिससे आपके सिस्टम का उपयोग कोई अन्य नहीं कर सके।

- **प्रतिकारी शुल्क** : निर्यातक देश द्वारा निर्यात की जाने वाली वस्तुओं पर सब्सिडी प्रदान करके उनहें नीची कीमत पर निर्यात करने या राशिपत्तन करने की सिंति में आयातक देश द्वारा ऐसी वस्तुओं पर ऊँची दर से आयात शुल्क लगाने या विशेष अतिरिक्त आयात शुल्क लगाए जाने को प्रतिकारी शुल्क कहा जाता है।

- **टपकन सिद्धान्त (Trickle Down Theory) :** किसी देश में राष्ट्रीय आय की उच्च विकास दर का लाभ समाज के सबसे निचले पायदान पर बैठे लोगों तक पहुँचने का सिद्धान्त टपकन सिद्धान्त कहलाता है। इसमें प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि के साथ–साथ समाज में आय एवं धन के वितरण की असमानताओं में भी कमी करने का प्रयास किया जाता है।

- **सी. सी. आई. एल. (CCIL) :** सी. सी. आई. एल. (क्लीयरिंग कॉर्पोरेशन ऑफ इण्डिया लि.) भारतीय विदेशी विनिमय बाजार का एक निकाय है, जो विदेशी लेन–देन के समाशोधन का कार्य करता है।

- **जोखिम पूँजी (Venture Capital) :** बाजार में निवेशकर्ताओं एवं कम्पनियों द्वारा व्यापारिक अविा अन्य प्रकार की निवेशक गतिविधियों में प्रयुक्त की जाने वाली पूँजी 'जोखिम पूँजी' कहलाती है।

- **चालू खाते पर बकाया (Balance on Current A/c) :** किसी देश के भुगतान सन्तुलन के चालू खाते (आयात–निर्यात का पण्य व्यापार, जहाजरानी, बैंकिंग, पर्यटन, बीमा, अनिवासियों द्वारा विदेशी निधियों के अन्तरण) के लेन–देन का चालू खाते के बकाया पर नामे एवं जमा में दर्शाया जाता है।

- **अति इष्ट राष्ट्र (Most Favoured Nation) :** किसी देश द्वारा जब किसी अन्य देश के आयातों–निर्यातों, प्रशुल्कों आदि से सम्बन्धित कुछ विशिष्ट सुविधाएं या रियायतें दी जाती हैं तो एसी सुविधाएं प्राप्त करने वाला राष्ट्र 'अति इष्ट राष्ट्र' कहलाता है।

- **स्विच ऑपरेशन (Switch Operation) :** खुले बाजार की क्रिया (Open Market Operation) का प्रयोग केवल साख नियन्त्रण या मौद्रिक नीति में न होकर, बल्कि सरकारी प्रतिभूतियों के क्रय–विक्रय द्वारा राजकोषीय नीति के रूप में किया जाता है। रिजर्व बैंक द्वारा प्रतिभूतियों को क्रय करना (सामान्यतया अल्प अवधि की) तथा दूसरी प्रतिभूतियों का उसके स्थान पर विक्रय (सामान्यतया दीर्घ अवधि की) करने की क्रिया, जिससे प्रतिभूतियों की परिपक्वता अवधि (Maturity Period) लम्बी हो सके, को ही हम 'स्विच ऑपरेशन' कहते हैं।

- **संदर्भित दर या प्रमुख उधारी दर (Prime Landing Rate–PLR) :** संदर्भित दर, पूँजी बाजार का निर्धारण करती है। यह दर न्यमनतम दर होती है, जिस पर पूँजी बाजार में उधार लिया या दिया जाता है। बाजार में प्रचलित ब्याज दर, जिस पर सामान्यतया समझौता होता है, संदर्भित दर से ऊँची होती हैं इसके द्वारा ब्याज दर में होने वाला परिवर्तन निर्देशित होता है। विभिन्न देशों में भिन्न–भिन्न नामों से संदर्भित दरों को जाना जाता है। अमरीका में Feds Funds Rate, जर्मनी में फ्रेंकफर्ट इन्टर बैंक ऑफर्ड रेट (FIBOR), जापान में टोकियो इन्टर बैंक ऑफर्ड रेट (TIBOR), लन्दन में लन्दन इण्टर बैंक ऑफर्ड रेट (LIBOR), इत्यादि।

  प्रमुख उधारी दर (Prime Lending Rate–PLR) : वह ब्याज दर होती है, जिस पर बैंक अपने सर्वप्रिय (विश्वसनीय) ग्राहक को ऋण देता है। (विश्वनीयता से तात्पर्य है जिसमें जोखिम शून्य हो।) PLR एक प्रकार से आधार ब्याज दर की भूमिका अदा करता है। इसी PLR आधार पर अन्य उद्यमियों को ऋण प्रदान किया जाता है। यह दर एक प्रकार से आधारिक ब्याज दर के रूप में कार्य करती है।

- **वेबरीज वक्र (Webriz Curve) :** किसी अर्थव्यवस्थाम ं बेराजगारी के स्तर तथा रोजगार उपलब्धता के स्तर के बीच आरेखीय सम्बन्ध प्रदर्शित करने वाले वक्र को 'वेबरीज वक्र' कहते हैं। वस्तुतः दोनों में विलोम सम्बन्ध पाया जाता है।

- **ई–गवर्नेन्स (E-Governance) :** शासन के विभिन्न घटकों–विभागों एवं मन्त्रालयों के सभी स्तरों को कम्प्यूटर आधारित नेटवर्क से जोड़कर नीति निर्धारण, संसाधन आबंटन, कार्यक्रम कार्यान्वयन तथा मूल्यांकन की प्रणाली ई–गवर्नेन्स कहलाती है।

  ई–प्रशासन अभी व्यावहारिक रूप से भले ही दूर की कौड़ी लगे, लेकिन जिस रफ्तार से देश में सूचना प्रौद्योगिकी का विकास हो रहा है। भविष्य में देशवासियों विशेष रूप से ग्रामीणों तथा दूरदराज के व्यक्तियों को सबसे अधिक फायदा ई–प्रशासन से होगा। इंटरनेट का दायरा दूरदराज के क्षेत्रों तक फैलेगा। तब ई–प्रशासन से सरकार और ग्रामीणों के बीच सीधा सम्पर्क कायम होगा। प्रायोगिक तौर पर ई–प्रशासन को भू–अभिलेख, सड़क परिवहन, वाणिज्य कर, रोजगार केन्द्र, कोषागार, भू–पंजीयन, पुलिस प्रशासन एवं शिक्षा आदि महत्वपूर्ण क्षेत्रों से प्रारम्भ किया जा रहा है।

- **ई–चौपाल** : ई–चौपाल केन्द्र निजी कम्पनियों, विकास संस्थाओं एवं राज्य सरकारों का ऐसा नेटवर्क है, जो इंटरनेट के माध्यम से गाँवों में ही किसानों को कृषि की जानकारी, बाजार की माँग, विपणन एवं कृषि सम्बन्ध नई जानकारी उपलब्ध कराता है। ई–चौपाल केन्द्रों का संचालन पाँच–छह गाँवों को मिलाकर एक स्थानीय व्यक्ति करता है जिसको कम्प्यूटर की जानकारी होती है। यह व्यक्ति पाँच–छह गाँवों को मिलाकर ई–चौपाल केन्द्र का संचालन करता है। इन ई–चौपाल केन्द्रों पर किसानों को कृषि की नई प्रौद्योगिकी अपनाने की जानकारी, फसलों के उत्पादन बढ़ाने की जानकारी, नई उन्नतशील किस्म के बीज, उर्वरकों, दवाओं की जानकारी, फसलों के रोग–बीमारियों के निदान के उपाय की जानकारी, बाजार मूल्य, बाजार माँग आदि की जानकारी मुहैया कराता है।
- **के.पी.ओ. (Knowledge Processing Outsourcing–KPO) :** नॉलिज प्रोसेसिंग आउटसोर्सिंग वह प्रक्रिया है जिसमें ज्ञान आधारित सेवाएं जैसे कि वकालत आदि दूसरे देशों से कराई जाती हैं। आने वाले दिनों में विकसित देश अपनी अनेक ज्ञान आधारित सेवाएं भारत जैसे विकासशील देशों से कराना प्रारम्भ कर देंगे, क्योंकि ऐसा करना उनके लिए सस्ता होगा।
- **मुद्रा गुणक (Money Multiplier) :** प्रारक्षित मुद्रा (M_0) से बृहत मुद्रा (M_3) का अनुपात $\left(\frac{M_3}{M_0}\right)$ मुद्रा गुणक कहलाता है। भारत में मार्च 2006 में यह 4.76 था।
- **आई.पी.ओ. (Initial Public Offcer) :** इनीशियल पब्लिक ऑफरिंग से किसी कम्पनी द्वारा जारी किया गया वह प्रारम्भिक निर्गम है जो जनता द्वारा अंशदान करने के लिए किया जाता है।
- **समावेशित विकास (Inclusive Growth) :** ऐसा विकास समावेशित विकास कहलाता है जिसमें आर्थिक विकास की उच्च दर से जनित राष्ट्रीय आय के वितरण में समाज के सबसे कमजोर वर्ग के लोगों को उचित हिस्सा मिले अर्थात् राष्ट्रीय आय का रिसाव प्रभाव नीचे की ओर अधिक हो।
- **लियोन्तीफ पैराडॉक्स (Leontief Paradox) :** विकसित देशों पूँजी प्रधान वस्तुओं का आयात करना तथा श्रम प्रधान वस्तुओं का निर्यात करना एवं श्रम प्रधान देशों द्वारा श्रम प्रधान वस्तुओं को आयात करना व पूँजी प्रधान वस्तुओं का निर्यात करना लियोन्तीफ पैराडॉक्स कहलाता है।
- **पी.ए.एन. (Permanent Account Number–PAN) :** परमानेन्ट एकाउण्ट नम्बर या स्थायी लेखा संख्या आयकर दाताओं को आबंटित एक ऐसी संख्या है जिससे उसके धारक द्वारा किसी वर्ष में प्राप्त की गई आय एवं अन्य लेन–देन, जिनमें पी.ए.एन. का उल्लेख करना अनिवार्य है, का लेखा–जोखा रखा जाता है ताकि कर अपवचन को रोका जा सके।
- **सूक्ष्म साख की अवधारणा (Comcept of Micro Finance) :** ग्रामीण निर्धनों, विशेष रूप से महिलाओं, को बिना किसी सम्पार्श्विक गारन्टी के आय सृजनकारी गतिविधियों के संचालनार्थ साख सुविधा उपलब्ध कराना सूक्ष्म साख कहलाता है। निर्धनता निवारण एवं विकास का लाभों से वंचित रहे लोगों, विशेष रूप से महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण में सूक्ष्म–साख एक उपयोगी यन्त्र के रूप में सामने आई है। इसकी कार्य प्रणाली प्रारम्परित बैंक साख से भिन्न है। इसके अन्तर्गत स्वयं सहायता समूह के रूप में संगठित निर्धन व्यक्तियों को साख सुविधा मुहैया कराई जाती है। इसलिए यह प्रणाली उन लोगों को आर्थिक क्षेत्रक की मुख्य धारा से जोड़ती है जो साधनहीन है तथा सैकड़ों वर्षों से निर्धनता–कुपोषण अशिक्षा–बेरोजगारी के मकड़जाल में फँसे है। इसके अन्तर्गत लाभार्थियों को छोटी–छोटी बचतें करने के लिए भी प्रेरित किया जाता है, ताकि वे अन्ततः स्वावलम्बी बन सकें।
- **ब्यावर्ती योजना (Rolling Plan) :** प्रोफेसर मिर्डल प्रथम अर्थशास्त्री हैं, जिन्होंने अपनी पुस्तक 'Indian Economic Planning in its Broader Setting' में विकासशील देशों के लिए ब्यावर्ती योजना की सिफारिश की। ब्यावर्ती योजना में प्रत्येक वर्ष तीन योजनाएं बनाई जाती हैं और उन पर अमल किया जाता है। प्रथम, एक योजना चालू वर्ष के लिए होती है, जिसमें वार्षिक बजट तथा विदेशी मुद्रा बजट शामिल होते हैं। द्वितीय, एक योजना कुछ वर्षों के लिए अर्थात् तीन, चार या पाँच वर्षों के लिए होती है। इसे अर्थव्यवसायी आवश्यकताओं के अनुसार हर वर्ष बदल दिया जाता है। इसमें कीमत सम्बन्धों तथा कीमत नीतियों के साथ–साथ उन लक्ष्यों एवं तकनीकों का उल्लेख होता है जिनका अनुसरण योजना की अवधि के दौरान किया जाता है। तृतीय, प्रतिवर्ष 10 वर्ष, 15 वर्ष, 20 वर्ष या उससे भी अधिक की समयावधि के लिए एक **दृष्ट योजना** प्रस्तुत की जाती है जिसमें व्यापक उद्देश्यों का उल्लेख रहता है और आगामी विकास की रूपरेखा बनाई जाती है। वार्षिक एकवर्षीय योजना को उसी वर्ष की नई तीन, चार या पाँचवर्षीय योजना में फिट किया जाता और इन दोनों को दृष्ट योजना के प्रकाश में तैयार किया जाता है।
- **प्लास्टिक मनी (Plastic Money) :** पलास्टिक मनी से तात्पर्य विभिन्न बैंकों, वित्तीय संस्थानों तथा अन्य कम्पनियों द्वारा जारी किए गए क्रेडिट कार्डों से हैं। भारत के लगभग सभी महानगरों में क्रेडिट कार्डों का चलन बढ़ रहा है। इनसे हवाई जहाज की टिकट, कपड़े, सामान आदि खरीदे जा सकते हैं। अब तो बाजार में पेट्रो कार्ड तक आ गए हैं जिनसे ग्राहक पेट्रोल पम्पों पर पेट्रोल/डीजल का भुगतान क्रेडिट कार्ड के जरिए कर सकते हैं।
- **ब्लू टूथ** : ब्लू टूथ सूचना प्रौद्योगिकी से सम्बन्धित तीसरी पीढ़ी का उपकरण है, जो संचार क्षेत्र के लिए एक क्रान्तिकारी तकनीक साबित हुआ है। कम्प्यूटर जगत् में ब्लू टूथ एक मानक टेक्नोलॉजी है जिसका मकसद हमारे कम्प्यूटरों को तारों के जाल से निजात दिलाना है। इस तकनीकी की मदद से सेलफोन और लैपटाप या ऐसे कोई भी दो अन्य उपकरण (जिनमें ब्लू टूथ तकनीकी का प्रयोग किया गया हो) बिना तार के एक–दूसरे से जुड़ सकते हैं। इस तकनीकी की मदद से एक छोटी रेंज में रेडियो फ्रीक्वेंसी द्वारा आवाज सुनने तथा डाटा स्थानान्तरण का कार्य किया जाता है। इसका रेंज 10 सेमी. से 100 मी. तक किया जा सकता है। तकनीकी के प्रयोगकर्ता बिना कोई तार लगाए ही कम्प्यूटिंग तथा दूरसंचार उपकरणों तक अपनी पहुँच बना लेता है। इसमें विभिन्न उपकरणों को आपस में तारों से जोड़ने के झंझट में हमें छुटकारा मिल सकता है। 10वीं शताब्दी के महान् डैनिश सम्राट् हैराल्ड ब्लू टूथ के नाम पर विकसित की गई है। वैज्ञानिकों का कहना है कि इसके आ जाने से सूचनाओं का प्रेषण न केवल आसान हो गया है,. बल्कि सूचना राजमार्ग पर बढ़ते ट्रैफिक से भी निजात मिल गई है।

समीर प्लाजा, मनमोहन पार्क, कटरा, बांसमण्डी के सामने, इलाहाबाद
फोन नं. : 0532.3266722, 9956971111, 9235581475
{जहाँ सेलेक्शन एक जिद है.}

- **गैर–निष्पादनीय परिसम्पत्तियाँ (Non-performing Assests) :** गैर–निष्पादनीय परिसम्पत्तियाँ बैंकों एवं वित्तीय संस्थानों द्वारा वितरित वे ऋण हैं जिनके मूलधन एवं उस पर देय ब्याज की वापसी समय से नहीं हो पाती या बिलकुल नहीं हो पाती।

  सामान्यतया बैंकों द्वारा वितरित ऐसे सभी ऋण और उस पर देय ब्याज गैर–निष्पादनीय परिसम्पत्ति के रूप में पहचाने जाते हैं, जिनमें किसी वित्तीय वर्ष में मूलधन का भुगतान 180 दिन तथा ब्याज का भुगतान 365 दिन से अधिक दिनों तक रोक लिया जाता है।

- **स्वीट शेयर (Sweat Shares) :** स्वीट ईक्विटी शेयरों से तात्पर्य ऐसे शेयरों से है, जो कम्पनी के कर्मचारियों या किसी अन्य को रियायती मूलय पर आबंटित किए गए हों या फिर कोई प्रौद्योगिकी अथवा बौद्धिक सम्पदा अधिकार कम्पनी को उपलब्ध कराने या कोई अन्य मूल्य संवर्द्धन (Value Addition) करने की एवज में निःशुल्क या रियायती मूल्य पर कम्पनी द्वारा उपलब्ध कराए गए हों।

  शेयर बाजारों पर निगरानी रखने वाली संस्था 'सेबी' (SEBI) ने विशेष श्रेणी के 'स्वीट ईक्विटी' (Sweat Equity) शेयरों के लिए तीन वर्ष का 'लॉक इन पीरिएड' निर्धारित किया है। इसका तात्पर्य यह है कि आबंटन की तिथि से तीन वर्ष तक इन्हें किसी अन्य को बेचा नहीं जा सकेगा। सामान्य ईक्विटी शेयरों की भाँति यह शेयर, शेयर बाजारों में सूचीबद्ध होंगे।

- **हालमार्क (Hallmark) :** स्वर्णाभूषणों की गुणवत्ता को सुनिश्चत करने के लिए भारतीय मानक ब्यूरो (BIS) ने एक नई 'हालमार्क' (Hallmark) योजना 12 अप्रैल, 2000 से प्रारम्भ की है। बी.आई.एस. अधिनियम, 1986 के तहत् जारी किया जाने वाला 'हालमार्क' उसी सोने से बने आभूषणों के लिए प्रदान किया जाएगा जो आई.एस. 1417 के मानकों के अनुरूप होगा।

- **विदेशी प्रत्यक्ष निवेश (Foreign Direct Investment) :** भौतिक सम्पदा जैसे कारखाने, भूमि, पूँजीगत वस्तुएं तथा आधारित संरचना वाले क्षेत्रों में जब विदेशी निवेशक अपना धन लगाते हैं, तो इसे प्रत्यक्ष विदेशी पूँजी निवेश कहा जाता है। अधिकांशतया इस प्रकार के निवेश बहुराष्ट्रीय कम्पनियों द्वारा किए जाते हैं।

- **संविभाग निवेश (Portfolio Investment) :** वित्तीय विपत्रों में अन्तर्राष्ट्रीय निवेश को संविभाग निवेश कहते हैं। जब एक देश के निवेशक दूसरे देश की कम्पनियों के अंशों, ऋणपत्रों, बॉण्डों तथा अन्य प्रतिभूतियों में धन लगाते हैं, तो ऐसे निवेश को संविभाग निवेश कहा जाता है।

- **बहुराष्ट्रीय निगम (Multinational Corporation) :** एक ऐसी कम्पनी जिसके कार्य क्षेत्र का विस्तार एक से अधिक देशों में होता है और जिसका उत्पादन एवं सेवा सुविधाएं उस देश से बाहर भी सम्पन्न होती हैं जिसमें यह जन्म लेती है, को अन्तर्राष्ट्रीय कम्पनी या बहुराष्ट्रीय निगम कहा जाता है। ऐसी कम्पनियों की महत्वपूर्ण विशिष्टता यह है कि इनके प्रमुख निर्णय पूरे विश्व के सन्दर्भ में एक साथ लिए जाते हैं, जिसके कारण इनके निर्णय बहुधा उस देश की नीतियों से बेमेल हो जाते हैं, जिनमें यह कम्पनी कार्य कर रही होती है।

- **वृद्धिमान पूँजी–निर्गत अनुपात (ICOR) :** अर्थव्यवस्था में उत्पउादन की एक अतिरिक्त इकाई प्राप्त करने के लिए पूँजी की जितनी अतिरिक्त इकाइयों की आवश्यकता होती है, उसे वृद्धिमान पूँजी–निर्गत अनुपात अथवा वृद्धिमान पूँजी उत्पादन अनुपात (ICOR) कहा जाता है। ICOR का अधिक होना यह बताता है कि उत्पादन की एक अतिरिकत इकाई की प्राप्ति के लिए ज्यादा पूँजी की आवश्यकता है।

- **एम्बार्गो (Embargo) :** एम्बार्गो से तात्पर्य व्यापार प्रतिषेध से है, जिसके अन्तर्गत कोई राष्ट्र या कुछ राष्ट्र मिलकर किसी विशेष राष्ट्र के साथ अपना सम्पूर्ण व्यापार अथवा वस्तु विशेष का व्यापार बन्द कर देते हैं। एम्बार्गो को घाट बन्दी के रूप में भी प्रयोग किया जाता है जिसके अन्तर्गत कोई एक राष्ट अथवा एक से अधिक राष्ट मिलकर किसी राष्ट्र के जहाजों के बढ़ने पर रोक लगा देते हैं। ऐसी स्थिति में उन जहाजों को किसी बन्दरगाह पर रोक दिया जाता है या किसी विशेष बन्दरगाह पर पहुँचने नहीं दिया जाता है।

- **हवाला (Hawala) :** हवाला, व्यापार अधिकृत विदेशी विनिमय चैनलों को बाईपास करने वाली एक प्रणाली है। इस व्यापार में लगे लोग भुगतान घरेलू मुद्रा (Domestic currency) में प्राप्त करते हैं तथा इसके बदले विदेशों में विदेशी मुद्रा (डॉलर) की आपूर्ति कर देते हैं। यह व्यापार एक प्रमुख संचालक के नियन्त्रण में कार्यरत् ऐजेन्टों के माध्ये से परिचालित होता रहता है। हवाला व्यापार की विनिमय दरें देश के विभिन्न केन्द्रों में प्रायः अलग–अलग होती हैं। कुछ आयातक एवं निर्यातक भी हवाला व्यापार के माध्यम से लेन–देन में रुचि रखते हैं।

- **अनुषंगी हितलाभ (Fringe Benefits) :** निर्धारित मौद्रिक वेतन के अतिरिक्त नियोक्ताओं द्वारा अपने कर्मचारियों को जो अतिरिक्त सुविधाएं उपलब्ध कराई जाती हैं, उन्हें 'अनुषंगी हितलाभ' कहते हैं।

- **जीरो नेट–एड (Zero Net Aid) :** जब किसी देश विशेष की आर्थिक व्यवस्था स्वनिर्भर हो जाती है तथा उसे किसी विदेशी आर्थिक सहायता की आवश्यकता नहीं होती, तो वह 'जीरो नेट एड' कहलाती है।

- **मानव विकास निर्देशांक (Human Development Indes–HDI) :** एक देश में बुनियादी मानवीय योग्यता की औसत प्राप्ति को मानव विकास निर्देशांक द्वारा मापा गया है। इसका आकलन सम्बन्धित देश में जीवन प्रत्याशा (Life Expectancy), शिक्षा के स्तर तथा वास्तविक आय के आधार पर किया जाता है।

- **प्राथमिक बाजार (Primary Market) :** पूँजी बाजार दीर्घकालीन वित्त का बाजार होता है। पूँजी बाजार का वह भाग जहाँ इक्विटी शेयर तथा ऋणों के नए निर्गमन द्वारा वित्त के दीर्घकालीन स्रोत उपलब्ध होते हैं, उसे प्राथमिक बाजार कहते हैं।

- **गिल्ट एज बाजार (Gilt Edge Market) :** इसके अन्तर्गत क्रय–विक्रय की जाने वाली प्रतिभूतियों का क्रय–विक्रय (RBI) के माध्यम से किया जाता है। इसे 'सरकारी प्रतिभूति बाजार' भी कहते हैं, क्योंकि बाजार में क्रय–विक्रय की जाने वाली प्रतिभूतियाँ सरकारी तथा अर्द्ध–सरकारी दोनों होती हैं।

- **प्रशासित मूल्य (Administered Prices) :** जब किसी वस्तु के मूल्य का निर्धारण बाजार की माँग व पूर्ति की स्वतंत्र शक्तियों द्वारा न होकर किसी केन्द्रीय शक्ति द्वारा होता है, तो इस प्रकार का मूल्य प्रशासित मूल्य कहलाता है। किसी एकाधिकारी फर्म द्वारा एकपक्षीय तरीके से निर्धारित मूल्य या सरकार द्वारा किसी वस्तु का निर्धारित मूल्य आदि प्रशासित मूल्य के उदाहरण हैं।
- **एमोर्टाइजेशन (Amortization) :** किसी ऋण के मय ब्याज के पूर्ण भुगतान को एमोर्टाइजेशन कहते हैं।
- **काला बाजार (Black Market) :** जमाखोरी द्वारा बाजार में कृत्रिम कमी पैदा करके वस्तुओं की कीमतें बढ़ाकर अधिक लाभ कमाने को काला बाजार कहते हैं।
- **काला धन (Black Money) :** जिस धन का हिसाब–किताब कर अधिकारियों से छिपाकर रखा जाता है, उसे काला धन कहते हैं।
- **बजट (Budget) :** किसी संस्था या सरकार के एक वर्ष की अनुमानित आय–व्यय का लेखा–जोखा बजट कहलाता है। सरकार का बजट अब केवल आय–व्यय का विवरण मात्र हसी नहीं होता, अपितु यह सरकार के क्रियाकलापों एवं नीतियों का विवरण भी है। यह आधुनिक काल में सामाजिक–आर्थिक परिवर्तन का साधन भी बन गया है।
- **बफर स्टॉक (Buffer Stock) :** आपात स्थिति में किसी वसतु की कमी को पूरा करने के लिए वस्तु का स्टॉक तैयार करना बफर स्टॉक कहलाता है।
- **तेजड़िया और मंदड़िया (Bulls and Bears) :** यह स्टॉक एक्सचेंज के शब्द हैं, जो व्यक्ति स्टॉक की कीमतें बढ़ाना चाहता है, तेजड़िया कहलाता है, जो व्यक्ति स्टॉक की कीमतें गिरने की आशा करके किसी वस्तु को भविष्य में देने का वायदा करके बेचता है, वह मंदड़िया कहलाता है।
- **नेट एसेट वैल्यू (NAV) :** म्यूचुअल फंड में निवेश करने वालों के लिए 'एन.ए.वी.' शब्दउ एक पहेली की तरह है। इसका पूरा नाम 'नेट एसेट वैल्यू' है। अगर फंड की कुल निवेश वैल्यू में कुल यूनिटों का भाग दे दिया जाए तो 'एसेट वैल्यू' निकलती है, मसलन किसी फंड में 1 लाख रुपए जमा हुए। इसमें से फंड हाउस ने 90 हजार निवेश किए। इस निवेश की वैल्यू रोज निकाली जाती है। अब मान लें इसकी वैल्यू 1,80,000 रु. है। इसके अलावा 10 हजार रुपए फंड हाउस के पास नकट बचे हैं। यानि फंड की कुल वैल्यू हुई 1,90,000 रु. अब देखा जाता है कि इस योजना की कितनी यूनिटें जारी हुई हैं। अगर योजना में 10 लोगों ने 10–10 हजार रुपए लगाए तो कुल 10 हजार यूनिटें जारी हुईं। मानकर चलते हैं कि यूनिटों की संया नहीं बदलती है, तो अब फंड की 'एनएवी' 190000 / 10000 = 19 रुपए होगी।
- **ब्लूचिप कम्पनियाँ** : वे कम्पनियाँ जो अपने क्षेत्र में काफी समय से काम कर रही हैं तथा अपने क्षेत्र की शीर्ष तीन कम्पनियों में शामिल हों, ब्लूचिप कम्पनियाँ कहलाती हैं। ऐसा माना जाता है कि इन कम्पनियों में निवेश करना अधिक सुरक्षित रहता है। माना जाता है कि अगर इन कम्पनियों में लॉंग टर्म निवेश किया जाए, तो पैसा डूबने की सम्भावना कम रहती है।
- **डी–मैट अकाउण्ट** : यह एक प्रकार का बैंक खाता है जिसमें रुपयों की जगह शेयर व बॉण्ड रखे जाते हैं। इस खाते में रुपए का लेन–देन नहीं होता है। अगर कोई व्यक्ति शेयर बाजार में निवेश करना चाहता है, तो उसे डी–मैट खाता खुलवाना जरूरी हैं 'सेबी' के नियमों के मुताबिक अगर आपको शेयर बाजार में खरीद–फरोख्त करनी हो, तो वह 'डी–मैट' खाते के जरिए ही हो सकती है। यही नहीं अगर किसी कम्पनी के 'आईपीओ' में निवेश करना हो, तो भी डी–मैट खाता जरूरी है। डी–मैट खाता खुलवाने पर बैंक या ब्रोकर पैसा लेता है। यह खाता शेयर के न होने पर बन्द नहीं होता है। हाँ इसके लिए वार्षिक फीस चुकानी पड़ती है।
- **शॉर्ट टर्म तथा लोंग टर्म कैपिटल गेन** : निवेश पर लोंग तथा शॉर्ट टर्म के हिसाब से कर लगता है। एक साल के बाद अगर यूनिट बेची जाती है तो उसे 'लोंग टर्म कैपिटल गेन' माना जाता है। ऐसे में कितना ही लाभ हो, उस पर आयकर नहीं लगता है।
  अगर निवेश एक साल के अन्दर निकाला जाता है तो उस पर 'शॉर्ट टर्म कैपिटल गेन' माना जाता है। इस पर 15 फीसदी की दर से कर लगता है। मसलन 20 हजार का निवेश 6 महीने में बढ़कर 25 हजार हो गया और निवेशक उसे निकाल देता है तो उसे कुल 5 हजार का लाभ हुआ। इस 5 हजार पर उसे 15% यानि 750 रु. आयकर देना पड़ेगा।
- **ब्रोकर** : ब्रोकर निवेशकों, ट्रेडरों तथा किसानों को ऑनलाइन ट्रेडिंग की सुविधा उपलब्ध कराते हैं और कारोबार की मात्रा के अनुसार शुल्क वसूलते हैं। ब्रोकर बनने के लिए व्यक्ति का नेटवर्थ काफी अधिक होना चाहिए।
  कमोडिटी एक्सचेंज के सदस्य (ब्रोकर) अपने कारोबार के विस्तार के लिए सबब्रोकर नियुक्त करते हैं। कोई भी सक्षम व्यक्ति अथवा बड़ा किसान सीधे ब्रोकर से सम्पर्क कर सबब्रोकर बन सकता है। वह व्यक्ति या किसान अपने गाँव, कस्बे या शहर में टर्मिनल स्थापित कर कमोडिटी में वायदा करोबार की सुविधा प्राप्त कर सकता है। इंटरनेट कनेक्शन लेकर भी वायदा कारोबार में ट्रेडिंग की जा सकती है।
- **कोंस्पीकुअस कन्जम्पशन (Conspicuous Consumption) :** जब किसी अर्द्धविकसित देश के नागरिक विलासिता की वस्तुओं का अधिकता से उपभाग करने लगते हैं, जो देश की समृद्धि तथा विकास के लिए हानिकारक होता है, ऐसे उपभाग को 'कोंस्पीकुआस कन्जम्पशन' कहते हैं। इससे उस देश के साधनों का ह्रास होता है।
- **कस्टम्स ड्यूटी (Customs Duty) :** इसे सीमा शुल्क कहते हैं। कस्टम्स ड्यूटी वह कर है, जो आयात व निर्यात की वस्तुओं पर लगाया जाता है।
- **एक्साइज ड्यूटी (Excise Duty) :** उस कर को एक्साइज ड्यूटी कहते हैं, जो देश के अंदर निर्मित वस्तुओं पर उत्पादन बिन्दु पर ही लगाया जाता है। इसे **'उत्पादन शुल्क'** कहते हैं।
- **डिवीडेन्ड (Dividend) :** कम्पनियों से शेयरों पर प्राप्त लाभांश 'डिवीडेन्ड' कहलाता है।
- **अवमूल्यन (Devaluation) :** यदि किसी मुद्रा का विनिमय मूल्य अन्य मुद्राओं की तुलना में जानबूझकर कम कर दिया जाता है, तो इसे उस मुद्रा का अवमूल्यन कहते हैं। यह अवमूल्यन परिस्थितियों के अनुसार सरकार स्वयं करती है।

समीर प्लाजा, मनमोहन पार्क, कटरा, बांसमण्डी के सामने, इलाहाबाद
फोन नं. : 0532.3266722, 9956971111, 9235581475
{जहाँ सेलेक्शन एक जिद है.}

- **विमुद्रीकरण (Demonetization) :** जब काला धन बढ़ जाता है और अर्थव्यवस्था के लिए खतरा बन जाता है, तो इसे दूर करने के लिए विमुद्रीकरण की विधि अपनाइ जाती है। इसके अन्तर्गत सरकार पुरानी मुद्रा को समाप्त कर देती है और नई मुद्रा चालू कर देती है जिनके पास काला धन होता है, वह उसके बदले में नई मुद्रा लेने का साहस नहीं जुटा पाते हैं ओर काला धन स्वयं ही नष्ट हो जाता है।
- **मुद्रा संकुचन (Deflation) :** जब बाजार में मुद्रा की कमी के कारण कीमतें गिर जाती हैं, उत्पादन व व्यापार गिर जाता है और बेरोजगार बढ़ती है, वह अवस्था 'मुद्रा संकुचन' कहलाती है।
- **हीनार्थ प्रबन्धन (Deficit Financing) :** जब सरकार का बजट घाटे का होता है अर्थात् आय कम होती है और व्यय अधिक होता है और व्यय के इस आधिक्य को केन्द्रीय बैंक से ऋण लेकर अथवा अतिरिक्त पत्र मुद्रा निर्गमित कर पूरा किया जाता है, तो यह व्यवस्था 'घाटे की वित्त व्यवस्था' अथवा 'हीनार्थ प्रबन्धन' कहलाती है। सीमित मात्रा में ही इसे उचित माना जाता है। हीनार्थ प्रबन्धन को स्थायी नीति बना लेने के परिणाम अच्छे नहीं होते।
- **ऐस्टेट ड्यूटी (Estate Duty) :** किसी व्यक्ति की मृत्यु के पश्चात् उसकी सम्पत्ति के हस्तान्तरण के समय जो कर उस सम्पत्ति पर लगाया जाता है। उसे 'ऐस्टेट ड्यूटी' कहते हैं।
- **फ्री पोर्ट (Free Port) :** जिस–बंदरगाह पर पुनर्निर्यात होने वाले समान पर कोई कर नहीं लगाया जाता है, उसे 'फ्री पोर्ट' कहते हैं।
- **फिड्यूसियरी इश्यू (Fiduciary Issue) :** बिना रिजर्व रखे कागजी मुद्रा का चलन में ले आना 'फिड्यूसियरी इश्यू' कहलाता है।
- **उपहार कर (Gift Tax) :** किसी उपहार के देने पर जो कर लगाया जाता है वह 'उपहार कर' कहलाता है, यह एक प्रत्यक्ष कर है।
- **स्वर्णमान (Gold Standard) :** जब किसी देश की प्रधान मुद्रा स्वर्ण में परिवर्तनशील होती है अिवा मुद्रा का मूल्य सोने में मापा जाता है, तो इस मौद्रिक व्यवस्था को 'स्वर्णमान' कहते हैं। अब किसी देश में स्वर्णमान नहीं है।
- **हार्ड करेन्सी (Hard Currency) :** अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में, जिस मुद्रा की पूर्ति की तुलना में माँग लगातार अधिक होती है वह हार्ड करेनसी कहलाती है प्रायः विकसित देशों की मुद्रा हार्ड करेन्सी कही जाती है।
- **हायर परचेज (Hire Purchase) :** जब कोई वस्तु मासिक या वार्षिक इन्स्टालमेंट के आधार पर खरीदी जाती है,तो इस विधि को 'हायर परचेज' कहते हैं। इसमें वसतु का स्वामित्व उसके मूल्य का पूरा भुगतान होने के बाद ही मिलता है।
- **हॉट मनी (Hot Money) :** उस विदेशी मुद्रा को हॉट मनी कहते हैं, जिसमें शीघ्र पलायन कर जाने की प्रवृत्ति होती है। जिस स्थान पर अधिक लाभ मिलने की सम्भावना होती है, वहीं यह स्थानान्तरित हो जाती है।
- **मुद्रास्फीति (Inflation) :** मुद्रा प्रसार या मुद्रा स्फीति वह अवस्था है जिसमें मुद्रा का मूल्य गिर जाता है और कीमतें बढ़ जाती हैं। आर्थिक दृष्टि से सीमित एवं नियंत्रित मुद्रास्फीति अल्पविकसित अर्थव्यवस्था हेतु लाभदायक होती है, क्योंकि इससे उत्पादन में वृद्धि को प्रोत्साहन मिलता है, किन्तु एक सीमा से अधिक मुद्रास्फीति हानिकारक है।
- **रिसेशन (Recession) :** रिसेशन से तात्पर्य मन्दी की अवस्था से है जब वस्तुओं की पूर्ति की तुलना में माँग कम हो तो रिसेशन की स्थिति उत्पन्न होती है। ऐसी सिीति में धनाभाव के कारण लोगों की क्रय शक्ति कम होती है और उत्पादित वस्तुएं अनबिकी रह जाती हैं। इससे उद्योगों को बंद करने की प्रक्रिया प्रारम्भ होती हैं बेरोजगारी बढत्र जाती है। 1930 के दशक में विश्वव्यापी रिसेशन की स्थिति उत्पन्न हुई थी। विश्व के सभी देशों पर उसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ा था।
- **संयुक्त क्षेत्र (Joint Sector) :** इस सेक्टर में लगाए गए उद्योगों में सरकार व निजी क्षेत्र के उद्योगपतियों का संयुक्त स्वामित्व होता है।
- **विधिग्राह्य मुद्रा (Legal Tender Money) :** जिस मुद्रा में भुगतान करने पर लेनदार कानूनी तौर पर स्वीकार करने से इनकार नहीं कर सकता है, उसे 'विधिग्राह्य' मुद्रा कहते हैं। भारत की विधिग्राह्य मुद्रा रुपया है।
- **प्राइमरी गोल्ड (Primary Gold) :** 24 केरेट के शुद्ध सोने को प्राइमरी गोल्ड कहते हैं।
- **रिफ्लेशन (Reflation) :** रिसेशन अथवा मन्दी की अवस्था में अर्थव्यवस्था में कुछ ऐसे कदम उठाए जाते हैं कि लोगों की क्रय शक्ति में वृद्धि हो और वस्तुओं की माँग बढ़े, इसके परिणामस्वरूप मूल्य स्तर में जो वृद्धि होती है, उसे रिफ्लेशन कहते हैं।
- **सॉफ्ट करेन्सी (Soft Carrency) :** जब अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में किसी मुद्रा की माँग की तुलना में पूर्ति अधिक होती है, तो ऐसी मुद्रा 'सॉफ्ट करेन्सी' कहलाती है।
- **सॉफ्ट लोन (Soft Loan) :** जिस ऋण को कम ब्याज और लम्बी भुगतान अवधि जैसी आसान शर्तों पर प्राप्त किया जाता है, उसे 'सॉफ्ट लोन' कहते हैं।
- **सेमी बोम्बला (Semi Bombla) :** किसी देश के अर्थशास्त्रियों द्वारा तैयार किया गया प्रपत्र, जिसके द्वारा काला धन, मुद्रा प्रसार, कीमत वृद्धि आदि की समस्याओं को सुलझाने के लिए सुझाव देते हैं, 'सेमी बोम्बला' कहलाता है।
- **विक्रेता बाजार (Sellers Market) :** जब माँग अधिक होती है और पूर्ति कम, तब व्यापारी कमी का लाभ उठाकर वस्तुओं को मनमानी कीमतों पर बेचते हैं। ऐसे बाजार को 'विक्रेता बाजार' कहते हैं।
- **टैरिफ (Tariff) :** किसी देश द्वारा आयातों पर लगाए गए कर को ही प्रायः 'टैरिफ' कहा जाता है।
- **सम्पत्ति कर (Wealth Tax) :** किसी व्यक्ति द्वारा संचित सम्पत्ति के आधार पर लगने वाले कर को सम्पत्ति कर कहते हैं। यह एक प्रत्यक्ष कर है।
- **अधिविकर्ष (Overdraft) :** बैंकों से जमाकर्ता द्वारा अपनी जमा रकम के अतिरिक्त धन निकालना 'अधिविकर्ष' कहलाता है।
- **विनिमय दर (Exchange Rate) :** जिस दर पर एक देश की मुद्रा दूसरे देश की मुद्रा में बदल जाती है, उसे 'विनिमय दर' कहते हैं।
- **ग्रेशम का नियम** : ग्रेशम के अनुसार यदि किसी समय अर्थव्यवस्था में अच्छी व बुरी मुद्रा एक साथ प्रचलन में हों, तो **बुरी मुद्रा अच्छी मुद्रा को प्रचलन से बाहर कर देती है।** इसे ही ग्रेशम के नियम के रूप में जाना जाता है।

- **तालाबन्दी (Lock Out) :** जब सेवा नियोजकों द्वारा किसी फैक्ट्री में तालाबंदी कर दी जाए, ताकि कर्मचारियों से उनके द्वारा निर्धारित शर्तों को मनवाया जा सके, यही 'लॉक आउट' कहलाता है।
- **ले ऑफ (Lay Off) :** किसी औद्योगिक संस्थान में उत्पादन कम हो जाने या उस वस्तु की माँग कम हो जाने पर कर्मचारियों को नौकरी से पृथक् करना 'ले ऑफ' कहलाता है।
- **एड–वेलोरम (Ad-Valorem) :** वस्तुओं पर लगाए गए जो कर (tax) उनकी मात्रा के आधार पर न लगाकर मूलयानुसार लगाए जाते हैं, 'एड–वेलोरम' कहलाते हैं।
- **एफ्लुएंट सोसाइटी (Affluent Society) :** इस शब्द का प्रयोग समाज के उस वर्ग के लिए किया जाता है, जो अति सम्पन्न है तथा अपनी तमाम मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने के उपरानत भी इन लोगों के पास इतनी आय बची रहती है कि ये विभिन्न प्रकार के विलासितापूर्ण उपभोग करने लगते हैं। प्रो. जी के. गालब्रेथ ने इस शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम पश्चिमी यूरोप व अमरीका के सन्दर्भ में किया था।
- **एन्युटी (Annuity) :** किसी पूर्व निर्धारित योजना के अन्तर्गत प्रतिवर्ष एक या अधिक किश्तों में प्राप्त होने वाला भुगतान 'एन्युटी' कहलाता है जैसे– सरकारी ऋणपत्रों पर ब्याज का भुगतान 'एन्युटी' के रूप में हो सकता है।
- **आर्बिट्रेज (Arbitrage) :** इस शब्द का प्रयोग सामान्यतः विदेशी विनिमय के सन्दर्भ में किया जाता है। स्वतन्त्र विदेशी मुद्रा बाजारों में यदि किसी स्थान पर कोई मुद्रा कम मूल्य पर खरीदी जाए तथा तुरन्त ही अन्यत्र किसी स्थान पर ऊँचे मूल्य पर बेच दी जाए तो इस क्रिया को 'आर्बिट्रेज' कहा जाता है।
- **अधिकृत पूँजी (Authorised Capital) :** पूँजी की वह अधिकतम मात्रा जिस सीमा तक कोई कम्पनी अपने शेयर जारी कर सकती है। यह आवश्यक नहीं कि कम्पनी द्वारा जारी किए गए शेयरों का मूल्य अधिकृत पूँजी के बराबर ही हो यह अधिकृत पूँजी के बराबर या उससे कम हो सकता है, किन्तु अधिक नहीं।
- **बैड डेप्ट (Bad Debt) :** वह ऋण जिसकी वसूली संदिग्ध हो अथवा सम्भव न हो।
- **जन्म–दर (Birth Rate) :** किसी क्षेत्र में किसी वर्ष प्रति हजार जनसंख्या पर जन्म लेने वाले शिशुओं की संख्या जन्म–दर कहलाती है।
- **ब्लू चिप (Blue Chip) :** यह शब्द प्रायः उन कम्पनियों के शेयरों के लिए प्रयोग किया जाता है, जो अत्यन्त सुदृढ़ हैं तथा जिनका प्रबन्ध इत्यादि अति कुशल है। ऐसे शेयरों को खरीदने में हानि की सम्भावना बहुत कम होती है तथा जब चाहे, उचित मूल्य पर इन्हें बाजार में बेचा जा सकता है।
- **मिश्रित माँग (Composite Demand) :** जब कोई वस्तु एक से अधिक उपयोगों में प्रयोग की जाती है, तो एकसी वसतु की कुल माँग उसकी विविध उपयोगों हेतु माँग का योग होती है। यह मिश्रित माँग कहलाती है।
- **लागत प्रेरित मुद्रास्फीति (Cost Push Inflation) :** जब वस्तुओं की उत्पादन लागत में वृद्धि होने के परिणाम–स्वरूप मूलयों में वृद्धि होती है एवं मुद्रास्फीति की स्थिति उत्पन्न होती है, तो ऐसी मुद्रास्फीति लागत प्रेरित कही जाती है। श्रमिक संघों के दबाव में मजदूरी के स्तर में अनावश्यक वृद्धि से ऐसी स्थिति उत्पन्न हो जाती है।
- **स्टेगफ्लेशन (Stagflation) :** स्टेगफ्लेशन से तात्पर्य 'स्फीतियुक्त गतिहीनता' से है। स्टेगफ्लेशन एक ऐसी विरोधाभासी स्थिति है जिसमें अर्थवयवस्था में मुद्रास्फीति के साथ–साथ गतिहीनता भी विद्यमान रहती है। इस स्थिति में अर्थव्यवस्था के कुछ क्षेत्रों में एक ओर ऊँचे मूल्य तथा अधिपूर्ण रोजगार की स्थिति दृष्टिगोचर होती है, तो दूसरी ओर के क्षेत्रों में गतिहीनता की स्थिति अर्थात् औद्योगिक तथा कृषि उत्पादन में कमी, अत्यधिक मात्रा में बेरोजगारी इत्यादि दृष्टिगोचर होती है।
- **बौद्धिक सम्पत्ति (Intellectual Property) :** बौद्धिक सम्पत्ति (Intellectual Property) मानव की वह सम्पत्ति कहलाती है, जो उसकी स्वयं की बौद्धिक क्षमता एवं परिश्रम द्वारा तैयार की जाती है। कलात्मक रचनाएं, वैज्ञानिक आविष्कार, साहित्यिक और संगीतात्मक रचनाएं, नवीन सिद्धान्त, सूत्र, उपकरण आदि सभी सृजन करने वाले व्यक्ति की बौद्धिक सम्पत्ति है। इस बौद्धिक सम्पत्ति को अन्य व्यक्ति चुराकर स्वयं प्रयोग न करे इसके लिए राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर 'पेटेंट' एवं समान रूप से अन्य कानून बनाए गए हैं। विश्व व्यापार संगठन (WTO) तथा विश्व बौद्धिक अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बौद्धिक सम्पत्ति की सुरक्षा में सहायक होते हैं।
- **माइक्रो क्रेडिट (Micro Credit) :** माइक्रो क्रेडिट या माइक्रो फाइनेंस या सूक्ष्म वित्त छोटी–सी कर्ज राशि होती है, जोकि काफी गरीब लोगों को दी जाती है, ताकि वे अपनी जीविका चलाने के लिए छोटा–मोटा काम शुरू कर सकें सामान्य रूप से इनमें वे लोग शामिल होते हैं, जिनके पास बैंकों से ऋण पाने के बदले गिरवी रखने के लिए कुछ भी नहीं होता। वर्ष 2006 का नोबेल शान्ति पुरस्कार बांग्लादेश में माइक्रो क्रेडिट को बढ़ावा देने वाले मुहम्मद युनूस और उनके ग्रामीण बैंक को प्रदान किया गया है।
- **चक्रीय बेरोजगारी (Cyclical Unemployment) :** व्यापार चक्र की मन्दी के समय उत्पन्न बेरोजगारी 'चक्रीय बेरोजगारी' कहलाती है।
- **मृत्यु कर (Death Duty) :** यह एक प्रत्यक्ष कर है, जो मरने वाले व्यक्ति की सम्पत्ति के हस्तांतरण से पूर्व उत्तराधिकारी को चुकाना होता है।
- **मूल्य माँग (Price Demand) :** किसी निश्चित मूल्य पर किसी समय में किसी वस्तु की माँगी जाने वाली मात्रा उस मूल्य पर वस्तु की माँग कहलाती है। इसे ही प्रायः माँग कहा जाता है।
- **प्रच्छन्न बेरोजगारी अथवा अदृश्य बेरोजगारी (Disguised Unemployment) :** यह इस प्रकार की बेरोजगारी है जिसमें व्यक्ति स्पष्ट रूप से बेरोजगार प्रतीत नहीं होते। वे काम पर तो लगे हुए होत हैं, किन्तु उस काम में उनकी सीमान्त उत्पादकता शून्य होती है। ऐसे लोगों को यदि काम से हटा दिया जाए, तो कुल उत्पादन पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ता। भारत में कृषि क्षेत्र में पर्याप्त प्रच्छन्न बेरोजगारी पाई जाती है।
- **मुद्रा अपस्फीति अथवा विस्फीति (Disinflation) :** मुद्रास्फीति पर नियंत्रण लाने हेतु जो प्रयास किए जाते हैं (जैसे साख–नियंत्रण आदि), उनके परिणामस्वरूप मुद्रास्फीति की दर घटने लगती है, कीमतों में गिरावट आती है तथा रोजगार पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता हैं यह स्थिति मुद्रा अपस्फीति अथवा विस्फीति की स्थिति कहलाती है। इस स्थिति में यद्यपि मूल्य–स्तर गिरता है, तथापि यह सामान्य मूल्य स्तर से ऊपर ही रहता है।

समीर प्लाजा, मनमोहन पार्क, कटरा, बांसमण्डी के सामने, इलाहाबाद {जहाँ सेलेक्शन एक जिद है.}
फोन नं. : 0532.3266722, 9956971111, 9235581475

- **श्रम विभाजन (Division of Labour) :** किसी कार्य की सम्पूर्ण प्रक्रिया को एक ही व्यक्ति द्वारा न कराकर विभिन्न चरणों को भिन्न–भिन्न लोगों से पूरा कराने की प्रक्रिया ही श्रम विभाजन कहलाती है। श्रम विभाजन में विशिष्टीकरण को प्रोत्साहन मिलता है।
- **राशिपतन (Dumping) :** किसी वस्तु के अति उत्पादन की स्थिति में बाजार में वसतु के मूल्य को एक न्यूनतम स्तर से नीचे गिरने से रोकने के लिए वसतु के अतिरिक्त भण्डार को विदेशी बाजार में बहुत कम मूल्य पर बेचने और यहाँ तक कि नष्ट तक कर देने की प्रक्रिया राशिपतन कहलाती है। उत्पादकों के हितों की सुरक्षा के लिए कभी–कभी ऐसा करना पड़ता है, ताकि अतिरिक्त उत्पादन को बाजार से दूर करके वस्तु के मूल्य को गिरने से रोका जा सके।
- **आर्थिक नियोजन (Economic Planning) :** आर्थिक संसाधनों का पूर्व मूल्यांकन करके, पूर्व निर्धारित लक्ष्यों को निश्चत समय में प्राप्त करने हेतु संसाधनों का योजनाबद्ध उपयोग करना आर्थिक नियोजन कहलाता है। आर्थिक नियोजन के अन्तर्गत प्राथमिकताओं का निर्धारण कर लिया जाता है तथा साधनों का आबंटन उसी के अनुसार किया जाता है।
- **गुणक (Multiplier) :** निवेश में गई वृद्धि उपभोग प्रवृत्ति के माध्यम से आय में बहुगुणा वृद्धि करती है। निवेश की तथा आय की वृद्धि के बीच के इस सम्बन्ध को केन्ज गुणक के रूप में परिभाषित करता है। गुणक, उपभोग प्रवृत्ति दी हुई होने पर, कुल रोजगार और आय तथा निवेश की दर के बीच सही सम्बन्ध स्थापित करता है।

  सूत्र रूप में $k = \frac{1}{1 - MPC}$

  जहाँ k गुणक है तथा MPC सीमान्त उपभोग प्रवृत्ति को दर्शाता है।
- **एंजिल का नियम (Engel's Law) :** इस नियम के अनुसार कम आय वाले उपभोक्ता अपनी आय का अधिक भाग भोजन आदि पर व्यय करते हैं। आय में जैसे–ज्से वृद्धि होती है, कुल आय का कम भाग भोजन पर व्यय होता है।
- **विनिमय नियंत्रण (Exchange Control) :** यह उस व्यवस्था का नाम है जिसके अन्तर्गत कोई देश विदेशी मुद्राओं के स्वतन्त्र बाजार पर नियन्त्रण करके अपनी मुद्रा की विनिमय दर को उस दर से भिन्न रखने का प्रयास करता है, जो स्वतन्त्र बाजार में निर्धारित होती है।
- **गिफिन वस्तुएं (Giffin Goods) :** गिफिन वस्तुएं कुछ घटिया किस्म की ऐसी वस्तुएं होती हैं जिन पर उपभोक्ता अपनी आय का बड़ा भाग व्यय करता है। इन वस्तुओं पर माँग का नियम लागू नहीं होता, बल्कि मूल्य में वृद्धि से इनकी माँग बढ़ जाती है तथा मूल्य में कमी से माँग भी कम हो जाती है। इस विरोधाभास को गिफिन का विरोधाभास (Giffin's Paradox) कहा जाता है।
- **कराघात (Impact of Tax) :** सरकार द्वारा लगाए गए कर का मौद्रिक भार, जिस व्यक्ति पर सबसे पहले पड़ता है अर्थात् सरकार जिससे कर वसूल करती है, उस पर कराघात होता है। यदि वह व्यक्ति कर के मौद्रिक भार को किसी अन्य व्यक्ति पर टालने में सफल हो जाता है, तो कराघात तो प्रथम व्यक्ति पर ही रहता है, किन्तु करापात (Incidence) उस व्यक्ति पर रहता है, जो अन्तिम रूप से कर के मौद्रिक भार को वहन करता है।
- **करापात (Incidence of Tax) :** जैसाकि ऊपर बताया गया है कि यह आवश्यक नहीं कि सरकार द्वारा कोई कर जिस व्यक्ति पर लगाया गया है, वही कर के भार को अन्तिम रूप से वहन करे। यदि प्रथम करदाता कर की धनराशि को किसी अन्य व्यक्ति पर माना जाता है, जो कर के भार को अन्तिम रूप से वहन करता है, जैसे–उत्पादन शुल्क सरकार द्वारा उत्पादन से वसूल किया जाता है, किन्तु उत्पादक कर की राशि को वस्तु के मूल्य में शामिल कर देता है जिससे करापात उपभोक्ता पर आता है।
- **अल्पाधिकार (Oligopoly) :** यदि किसी वस्तु के बाजार में विक्रेताओं की संख्या बहुत कम (किन्तु दो से अधिक) होती है जिनके मध्य आपस में कोई समझौता सम्भव हो सकता हो, तो ऐसा बाजार अल्पाधिकार कहलाता है। इस प्रकार के बाजार में वसतु एकसी भी हो सकती है तथा वस्तु में विभेद भी हो सकता है।
- **शाखा बैंकिंग (Branch Banking) :** शाखा बैंकिंग प्रणाली के अन्तर्गत किसी बैंक के एक प्रधान कार्यालय के अतिरिक्त उसकी अनेक शाखाएं देशभर में फैली होती हैं और कभी–कभी कुछ शाखाएं देश के बाहर भी होती हैं।
- **इकाई बैंकिंग (Unit Banking) :** इसके अन्तर्गत एक बैंक का कार्य साधारणतया एक ही कार्यालय तक सीमित रहता है, यद्यपि एक सीमित क्षेत्र में ये बैंक अपनी कुछ शाखाएं भी स्थापित कर लेते हैं। इकाई बैंकिंग प्रणाली अमरीका में अधिक लोकप्रिय रही है।
- **अग्रणी–बैंक अथवा लीड बैंक योजना (Lead Bank Scheme) :** यह योजना जिलों की अर्थव्यवस्था सुधारने के लिए 1969 में प्रारम्भ की गई थी। इसके अन्तर्गत प्रत्येक जिले के लिए एक बैंक को लीड बैंक घोषित कर दिया जाता है। जिस बैंक को लीड बैंक घोषित किया जाता है, वह जिला स्तर पर ऋणों की योजना बनाने, विशिष्ट कार्यक्रमों में अन्य बैंकों का सहयोग लेने तथा निश्चित कार्यक्रमों में अन्य बैंकों का सहयोग लेने तथा निश्चित कार्यक्रमों के लिए ऋण जुटाने में सभी वित्तीय संस्थाओं में समन्वय कायम करने का प्रयास करता है।
- **चेक (Cheque) :** चेक एक प्रकार से विनिमय हुण्डी (Bill of Exchange) होती है, जो एक निर्दिष्ट (विशिष्ट) बैंक के ऊपर आहरित होती है तथा माँग पर ही, जिसका भुगतान किया जाता है। चेक में तीन पक्ष होते हैं : (i) भुगतान का आदेश देने वाला, आहर्ता (Drawer), (ii) जिसको आदेश दिया जाता है (Drawee) अर्थात् बैंक तथा (iii) जो भुगतान प्राप्त करता है अर्थात चेक का धारक (Payee)।
- **विनिमय पत्र अथवा विनिमय हुण्डी (Bill of Exchange) :** यह एक एकसा लिखित विपत्र है, जिसमें उसका लेखक अपने हस्ताक्षर कर किसी व्यक्ति को यह शर्तरहित आज्ञा देता है कि वह एक निश्चित धनराशि किसी व्यक्ति विशेष या उसके आदेशानुसार किसी अन्य व्यक्ति को या उस विपत्र के वाहक को भुगतान कर दें। विनिमय हुण्डी केवल मुद्रा के रूप में लिखी जाती है अर्थात् इसका भुगतान केवल मुद्रा के रूप में ही होता है, किसी वस्तु जैसे कपड़ा, अनाज, सोना, चाँदी आदि के रूप में नहीं।
- **सामान्य हुण्डी एवं चेक (Hundi and Cheque) :** चेक और हुण्डी में मुख्य अन्तर यह होता है कि चेक सदैव माँग पर ही देय होता है, जबकि कुछ हुण्डियाँ (दर्शनी) माँग पर देय होती हैं और कुछ निश्चित समय या अवधि के बाद।

- **साधारण या धारक चेक (Bearer Cheque) :** जब तक संदेह करने के लिए कोई विशेष कारण न हो, धारक चेक का भुगतान चेक प्रस्तुत करने वाले किसी भी व्यक्ति को किया जा सकता है, भले ही वह चेक उसके नाम में हो अथवा नहीं। ऐसे चेक के भुगतान के लिए चेक जारी करने वाले (Drawer) के ऐसे ही निर्देश होते हैं कि भुगतान चेक के धारक को ही दे दिया जाए।
- **आदिष्ट चेक (Order Cheque) :** जब किसी धारक चेक में से धारक (Bearer) शब्द को काट दिया जाए अथवा उस चेक पर Order लिख दिया जाए, तो वह चेक आदिष्ट चेक बन जाता है। इस चेक का भुगतान करने के लिए बैंक भुगतान लेने वाले व्यक्ति की पहचान करती है। इस औपचारिकता के बाद ही उस चेक का भुगतान किया जाता है।
- **रेखांकित चेक (Crossed Cheque) :** जब चेक के ऊपर प्रायः बाईं ओर दो समानान्तर रेखाएं बना दी जाती हैं, तो वह चेक रेखांकित चेक बन जाता है। इस रेखांकित चेक का भुगतान बैंक काउंटर पर नकद प्राप्त नहीं किया जा सकता। इसका भुगतान किसी खाते में उसे जमा करा कर ही प्राप्त किया जा सकता है।
- **पावक खाता चेक (Account Payee Cheque) :** जब किसी चेक के प्रायः बाईं ओर ऊपर कोने में दो समानान्तर रेखाओं के मध्य 'Account Payee Only' लिख दिया जाता है, तो उस चेक को पावक खाता चेक कहते हैं। इस चेक का भुगतान केवल उसी व्यक्ति या प्रतिष्ठान अथवा संस्थान के खाते में जमा करके किया जाता है, जिसके नाम वह चेक लिखा होता है अर्थात् इस प्रकार के चेक का अन्य किसी व्यक्ति के पक्ष में हस्तांतरण नहीं किया जा सकता।

  जब चेक के मुखपृष्ठ पर दो समानान्तर रेखाओं के मध्य कसी बैंक का नाम लिख दिया जाता है, तो यह चेक **विशिष्ट रेखांकित चेक** बन जाता है तथा ऐसी स्थिति में उस चेक का भुगतान केवल उसी बैंक के माध्यम से सम्बन्धित व्यक्ति के खाते में जमा करके ही प्राप्त किया जा सकता है।
- **यात्री चेक (Traveller's Cheque) :** यात्री चेक किसी बैंक द्वारा जारी किया गया ऐसा चेक होता है, जिसे जारी करते समय चेक के मुखपृष्ठ पर आवेदक (चेक प्राप्त करने वाला) के हस्ताक्षर कराए जाते हैं। इस चेक का भुगतान देशभर में सम्बन्धित बैंक की किसी भी शाखा से प्राप्त किया जा सकता है। चेक का भुगतान करने वाली शाखा भुगतान के समय पुनः चेक के मुखपृष्ठ पर धारक के हस्ताक्षर कराती है। दोनों हस्ताक्षर मिलने पर ही यात्री चेक का भुगतान होता है। बैंक द्वारा अधिकृत प्रमुख वाणिज्यिक संस्थान भी यात्री चेक नकद मुद्रा की भाँति स्वीकार कर लेते हैं। इस प्रकार के चेक यात्रियों के लिए बहुत उपयोगी होते हैं, क्योंकि चेक खो जाने पर आवश्यक शर्तें पूरी करके डुप्लीकेट चेक प्राप्त किए जा सकते हैं।
- **पूर्व दिनांकित चेक (Ante-dated Cheque) :** यदि आहरणकर्ता चेक लिखने की तारीख से पहले की कोई तारीख चेक पर लिखता है, तो ऐसे चेक को पूर्व दिनांकित (Ante-dated) चेक कहा जाता है।
- **उत्तर दिनांकित चेक (Post-dated Cheque) :** यदि किसी चेक का आहरणकर्ता चेक लिखते समय उस पर कोई आगामी तारीख लिख देता है, तो ऐसे चेक को उत्तर दिनांकित (Post-dated) चेक कहा जाता है। ऐसा चेक विधि–अमान्य तो नहीं होता, अपितु उस तारीख से प्रभावी होता है, जो उसमें लिखी गई है।
- **ड्राफ्ट (Draft) :** यह एक ऐसा साख प्रपत्र है, जिसमें किसी बैंक द्वारा अपनी किसी अन्य शाखा को पावक (Payee) के आदेशानुसार ड्राफ्ट में उल्लिखित धनराशि माँग पर भुगतान करने का आदेश होता है। ड्राफ्ट किसी बैंक द्वारा पहले से भुगतान प्राप्त करके जारी किया जाता है तथा जिस व्यक्ति अथवा संस्था के नाम ड्राफ्ट बनाया जाता है, उसकी पहचान करने के बाद इसका भुगतान कर दिया जाता है। ड्राफ्ट भी चेक की भाँति रेखांकित अथवा अरेखांकित हो सकता है।
- **समाशोधन गृह अथवा क्लीयरिंग हाउस (Clearing House) :** समाशोधन गृह अथवा क्लीयरिंग हाउस प्रायः प्रत्येक ऐसे शहर में होता है, जहाँ 3–4 अथवा उसके अधिक बैंकें होती हैं। क्लीयरिंग हाउस वह स्थान है जहाँ विभिन्न बैंकों के प्रतिनिधि प्रतिदिन एकत्र होते हैं। इस स्थान पर उन प्रतिनिधियों के मध्य चेकों का आदान–प्रदान तथा जमा–खर्च होता है। इस प्रकार यहाँ हजारों चेकों का लेन–देन बहुत ही सरलता से तथा थोड़े समय में ही सम्पन्न हो जाता है। इस प्रक्रिया को समाशोधन (Clearing) कहते हैं। भारत में जिन शहरों में रिजर्व बैंक की शाखा है, वहाँ रिजर्व बैंक की शाखा नहीं है, वहाँ स्टेट बैंक की मुख्य शाखा में समाशोधन गृह होता है।
- **चेक कलेक्शन (Cheque Collection) :** जब चेक शहर के बाहर किसी अन्य स्थान पर भुगतान के लिए भेजा जाता है, तो इसे ही कलेक्शन कहते हैं। ऐसे चेक का भुगतान प्राप्त करने के लिए बैंक ग्राहक से डाक–व्यय एवं कमीशन लेती है।
- **बॉण्ड (Bond) अथवा डिबेन्चर (Debenture) :** बॉण्ड एवं डिबेन्चर का अर्थ ऋणपत्रों से होता है, जिन्हें केन्द्रीय सरकार, राज्य सरकार अथवा किसी संस्थान द्वारा ऋण लेकर जारी किया जाता है। संयुक्त पूँजी कम्पनियाँ ऋण प्राप्त करने के लिए अपने डिबेन्चर जारी करती हैं। इन बॉण्डों को हस्तान्तरित भी किया जा सकता है, जो संस्था इन्हें जारी करती हैं। वे इन पर धारक को एक निश्चित दर से ब्याज भी देती हैं।
- **धारक बॉण्ड (Bearer Bond) :** धारक बॉण्ड वे ऋणपत्र हैं, जिनका भुगतान परिपक्वता पर कोई भी प्राप्त कर सकता है। इन पर न तो खरीददार का नाम लिखा होता है और न ही हस्तान्तरित करते समय इनकी पीठ पर हस्ताक्षर ही करने होते हैं। प्रायः इनका उपयोग काले धन को सफेद धन में बदलने के लिए किया जाता है।
- **सस्ती मुद्रा (Cheap Money) :** वह मुद्रा जिसे नीची ब्याज दर (Low interest rate) पर प्राप्त किया जा सकता है, सस्ती मुद्रा कहलाती है।

समीर प्लाजा, मनमोहन पार्क, कटरा, बांसमण्डी के सामने, इलाहाबाद
फोन नं. : 0532.3266722, 9956971111, 9235581475
{जहाँ सेलेक्शन एक जिद है.}

- **बैंक दर (Bank Rate) :** बैंक दर से अभिप्राय उस दर से है, जिस पर केन्द्रीय बैंक सदस्य बैंकों के प्रथम श्रेणी के बिलों की पुनर्कटौती करता है अथवा स्वीकार्य प्रतिभूतियों पर ऋण देता है। कुछ देशों में इसे कटौती–दर भी कहा जाता है। बैंक दर में परिवर्तन करके केन्द्रीय बैंक देश में साख की मात्रा को प्रभावित कर सकता है।
- **खुले बाजार की क्रियाएँ (Open Market Operations) :** यह भी केन्द्रीय बैंक द्वारा साख नियंत्रण का एक महत्वपूर्ण उपाय है। खुले बाजार की क्रियाओं के अन्तर्गत केन्द्रीय बैंक द्वारा मुद्रा बाजार में किसी भी प्रकार के बिलों अथवा प्रतिभूतियों का क्रय–विक्रय होता है, परन्तु संकीर्ण अर्थ में इससे अभिप्राय केन्द्रीय बैंक द्वारा केवल सरकारी प्रतिभूतियों का क्रय–विक्रय होता है।
- **म्यूचुअल फण्ड (Mutual Fund) :** म्यूचुअल फण्ड के अन्तर्गत जन–साधारण के निवेश योग्य धन को ऐच्छिक आधार पर एकत्रित करके विनियोग के बेहतर अवसरों में प्रयोग किया जाता है। इसकी स्थापना प्रायः निवेश सम्बन्धी निर्णय लेने वाली दक्ष वित्तीय संस्थाओं द्वारा की जाती है। भारत में यूनिट ट्रस्ट ऑफ इण्डिया, स्टेट बैंक, कनारा बैंक, बैंक ऑफ इण्डिया, इण्डियन बैंक तथा जीवन बीमा निगम आदि ने इस प्रकार के म्यूचुअल फण्ड स्थापित किए हैं।
- **प्रतिभूति (Security) :** प्रतिभूति एक व्यापक शब्द है। एक अर्थ में प्रतिभूति शब्द का प्रयोग प्रपत्रों के रूप में वित्तीय परिसम्पत्तियों तथा शेयर, डिबेन्चर व अन्य ऋणपत्रों आदि के लिए किया जाता है। बैंकिंग में द्धणों की जमानत के सन्दर्भ में भी 'प्रतिभूति' काफी प्रयुक्त होता है, जहाँ प्रतिभूति से अभिप्राय उस बीमित हित से होता है, जो ऋण के भुगतान न होने की स्थिति में उत्पन्न होता है अर्थात् प्रतिभूति ऋण का बीमा होती है। बैंकों द्वारा ऋणी की व्यक्तिगत अथवा दृश्य प्रतिभूति पर ऋण प्रदान किया जाता है।
- **प्राथमिक प्रतिभूति (Primary Security) :** प्राथमिक प्रतिभूति से अभिप्राय उस प्रतिभूति से होता है, जो ऋण को मुख्यतः सुरक्षित करती है तथा यह प्रतिभूति ऋणी द्वारा प्रदत्त की जाती है।
- **सरकारी प्रतिभूतियाँ (Government Securities) :** सरकारी प्रतिीूतियों में सरकारी प्रतिज्ञा–पत्र (Government promissory notes), राष्ट्रीय बचत प्रमाण–पत्र तथा राष्ट्रीय बचत योजना, वाहक बन्धक पत्र (Bearer bounds) आदि सम्मिलित किए जाते हैं। बैंक इन प्रतिभूतियों की जमानत पर सरलता से ऋण प्रदान कर सकते हैं, क्योंकि इन प्रतिभूतियों का मूल्य स्थिर रहता है तथा ये सुरक्षित समझी जाती है।
- **सावधि जमा (Time Deposits) :** सावधि जमाओं के अन्तर्गत उन समस्त जमा राशियों को सम्मिलित कियाजाता है, जो एक निर्धारित अवधि के लिए बैंक के पास जमा की जाती हैं। यह जमा राशि विनिर्दिष्ट अवधि समाप्त होने पर देय (Repayable) होती है। बैंक ऐसी जमा राशियों पर अपेक्षाकृत ऊँची दर से ब्याज देते हैं। इस प्रकार के जमा बैंकों द्वारा प्रायः सावधि जमा खाते (Fixed Deposit Account) तथा अवर्ती जमा खाते (Recuring Deposit Account) में स्वीकार किए जाते हैं।
- **माँग जमा (Demand Deposits) :** माँग जमाओं के अन्तर्गत उन समस्त जमा राशियों को सम्मिलित किया जाता है, जो जमाकर्ता द्वारा अपनी इच्छानुसार चाहे जब वापस माँगी जा सकती हैं। बैंकों में चालू खाते (Current Account) तथा बचत खाते (Saving Account) में जमा राशियाँ माँग जमा के अन्तर्गत आती हैं।
- **बचत बैंक खाता (Savings Bank Account) :** बचत बैंक खाता उन व्यक्तियों के लिए है, जो अपनी भावी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अपनी वर्तमान आय का कुछ भाग बचाकर रखना चाहते हैं। इस खाते में जमा राशि पर कुछ ब्याज भी दिया जाता है। प्रत्येक कलेण्डर महीने के दसवें दिन के अन्त से लेकर उस महीने की अन्तिम तारीख तक की अवधि में जो भी न्यूनतम जमा बाकी रहती है, उकसे आधार पर ब्याज दिया जाता है।
- **चालू खाता (Current Account) :** यह एक प्रकार का माँग जमा (Demand Deposit) खाता है जिसमें से किसी भी कार्य दिवस को अनेक बार कितनी भी राशि का लेन–देन किया जा सकता है। इन खातों में जमा राशियों पर कोई ब्याज नहीं दिया जाता, बल्कि बैंक लेन–देनों (Transactions) की संख्या के आधार पर कुछ सेवा शुल्क (Service charge) खाताधारी से वसूल करते हैं।
- **स्मार्ट कार्ड (Smart Card) :** डाक विभाग द्वारा चुनिंदा शहरों में प्रारम्भ की गई प्रीमियम बचत बैंक सेवा के अन्तर्गत प्रत्येक खातेदार को एक 'स्मार्ट कार्ड' जारी किया जाएगा, जिससे वर्तमान कागज की पासबुक व्यवस्था समाप्त हो जाएगी। 'स्मार्ट कार्ड' के माध्यम से खातेदार किसी एक निश्चित डाकघर के स्थान पर विभिन्न डाकघरों में अपने खाते में धन जमा करा सकेंगे तथा निकाल सकेंगे।
- **अनिवासी (वाह्य) रुपया खाता [Non-Resident (External) Rupee Accounts] :** इस प्रकार के खाते प्रमुख व्यापारिक बैंकों में अनिवासी भारतीयों के नाम में खोले जा सकते हैं। यह खाते भारतीय रुपयों में खोले जाते हैं। खातों का मूलधन तथा उस पर अर्जित ब्याज को बिना किसी कठिनाई के जमाकर्ता को उसके देश वापस कर दिया जाता है, परन्तु रुपयों को विदेशी मुद्रा में उस दर से परिवर्तित किया जाता है, जोकि धन भेजने की तारीख को लागू होती है। इन खातों पर दिया गया ब्याज कर मुक्त होता है। ऐसे खाते अनिवासी भारतीयों (NRIs) तथा भारतीय मूल के विदेशियों द्वारा खोले जा सकते हैं। अन्य विदेशी लोगों को ऐसे खाते खोलने की अनुमति नहीं है।
- **विनिमय साध्य विपत्र (Negotiable Instrument) :** विनिमय–साध्य विपत्र एक लिखित प्रपत्र होता है, जो विधि अथवा व्यापारिक प्रथा के अन्तर्गत अन्तरित किया जा सकता है। जो व्यक्ति ऐसा प्रपत्र सद्भाव से तथा मूल्य के बदले (in good faith and for value) प्रापत करता है, उस व्यक्ति को ऐसे प्रपत्र पर समुचित स्वामित्व रखने का विशेषाधिकार प्राप्त होता है चाहे उसके अन्तरणकर्ता का उस विपत्र पर कोई स्वामित्व नहीं था अथवा दोषपूर्ण स्वामित्व था। वचन–पत्र (Promissory note), विनिमय–पत्र (Bill of exchange) तथा चेक (Cheque) की गणना विनिमय साध्य विपत्रों के अन्तर्गत की जाती है। इन विपत्रों का नियमन 'विनिमय साध्य विपत्र अधिनियम' (Negotiable Instruments Act) के द्वारा होता है।

- **'ऑन–फार्म वाटर मैनेजमेंट' (On-Farm Water Management) स्कीम** : केन्द्रीय वित्त सहायता द्वारा एक नई स्कीम 'On-Farm Water Management' मार्च 2002 में पूर्वी–भारत में फसल उत्पादन बढ़ाने के उद्देश्य से शुरू की गई। इस स्कीम का मुख्य उद्देश्य **'ग्राउण्ड एण्ड सरफेस वाटर'** के अत्यधिक दुरुपयोग को रोककर एवं उसके कुशल उपयोग से खाद्यान्नों के उत्पादन एवं उत्पादकता में वृद्धि करना रखा गया था, जिसमें, बाद में आर्थिक मदद 20% लाभार्थी द्वारा, 30% भारत सरकार (GOI) द्वारा एवं 50% 'NABARD' द्वारा 'Bank Loan' के रूप में रखी गई, लेकिन वर्ष 2006–07 से यह स्कीम बन्द कर दी गई है।
- **मुक्त बन्दरगाह** : मुक्त बन्दरगाह एक ऐसा पत्तन नगर है या उसका कोई भाग है जो वस्तुओं को लादने और उतारने (निर्यात एवं आयात) के लिए सीमा शुल्क या इसी प्रकार के अन्य नियंत्रणों से मुक्त होता है। मुक्त बन्दरगाह पर आयातित या निर्यातित अधिकांश वसतुएं सीमा शुल्क से मुक्त होती हैं, परन्तु कुछ विशिष्ट वस्तुओं पर सीमा शुल्क देना भी पड़ता है। इसे मुक्त क्षेत्र भी कहते हैं। हांगकांग, सिंगापुर, कोपेनहेगन (आंशिक रूप से) मुक्त पत्तन है।
- **कर, उपकर तथा अधिभार (Tax, Cess and Sur-charge) :** कर, उपकर तथा अधिभार कर की श्रेणी में आते हैं, किन्तु उपकर तथा अधिभार कर से भिन्न हैं किसी उद्देश्य विशेष की पूर्ति के लिए कर नहीं लगाया जाता, जबकि उपकर तथा अधिभार दोनों ही किसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए राजस्व की उगाही के लिए लगाए जाते हैं। उपकर कर के साथ कर आधार पर ही किसी विशेष प्रयोजन के लिए लगाया गया कर है, जबकि अधिभार कर के ऊपर कर है, जिसकी गणना कर दायित्व पर की जाती है। सामान्यतया अधिभार प्रत्यक्ष कर पर लगाया जाता है, जबकि उपकर प्रत्यक्ष तथा परोक्ष कर दोनों पर लगाया जाता है। इस प्रकार सिद्धान्ततः उपकर कर आधार पर लगाया जाता है, जबकि कर भार कर दायित्व पर लगाया जाता है।

  पुनः अधिभार तथा उपकर की प्राप्ति को राज्यों के वितरण योग्य पूल (Divisible Pool) में नहीं डाला जाता। इसके राजस्व को उन उद्देश्यों पर लगाया जाता है, जिनके लिए इन्हें लगाया जाता है।
- **नकद आरक्षण अनुपात (Cash Reserve Ratio–CRR) :** रिजर्व बैंक अधिनियम की धारा 42(1) के अन्तर्गत अनुसूचित बैंकों को यह अनिवार्य है कि वे अपनी जमाराशि के कम–से–कम 3% के बराबर रकम रिजर्व बैंक के पास नकद रूप में जमा रखें रिजर्व बैंक को यह अधिकार है कि वह इस अनुपात को 3% से बढ़ाकर 15% तक कर सकता है। इस अनुपात में वृद्धि करने का परिणाम यह होता है कि बैंकों के पास नकद कोष में कमी हो जाती है जिसके कारण ऋणों और अग्रिमों की मात्रा भी कम हो जाती है। 24 अप्रैल, 2010 से भारत में यह दर 6.0 प्रतिशत है।
- **मर्चेन्ट बैंकिंग (Merchant Banking) :** वाणिज्यिक बैंकिंग के अन्तर्गत औद्योगिक तथा व्यापारिक संस्थानों को विशिष्ट प्रकार की सेवाएं उपलब्ध कराई जाती हैं। इसमें परियोजना सम्बन्धी परामर्श (Project Counselling), व्यवहार्यता रिपोर्ट (Feasibility report) तैयार करना, प्रस्तावों पर सरकार की सहमति प्राप्त करना, नए निर्गमों (New issues) के प्रबन्धक के रूप में कार्य करना, कार्यशील पूँजी (Working capital) की व्यवस्था करना आदि बातें उल्लेखनीय हैं।
- **देशी बैंक व्यवस्था (Indigenous Banking) :** भारत में देशी बैंक व्यवस्था के अन्तर्गत सर्राफ, सेठ, साहूकार, महाजन, शेट्टी आदि को सम्मिलित किया जाता है, जो रुपया उधार देते हैं तथा हुण्डियों अथवा आन्तरिक विनिमय–पत्रों द्वारा वित्त प्रबन्ध करते हैं। देशी बैंकर अपने मित्रों तथा सम्बन्धियों से जमा भी स्वीकार करते हैं। ये रिजर्व बैंक के प्रत्यक्ष नियंत्रण में नहीं होते।
- **वैश्विक गाँव (Global Village) :** सूचना तकनीक के क्षेत्र में हुई अभूत–पूर्व क्रांति, चाहे वह उपग्रह के माध्यम से हुई हो या माइक्रोवेव से या कि कम्प्यूटर प्रणाली से, हमारे लिए एक नवीन दुनिया प्रस्तुत करती हैं। सूचना के मामले में दुनिया का आकार दिन–प्रतिदिन छोटा होता जा रहा है अर्थात् हम एक–दूसरे के अत्यधिक निकट आते जा रहे हैं। मार्शल मकलुहान इसी स्थिति को ही 'ग्लोबल विलेज' या 'विश्वस्तरीय गाँव' कहते हैं।
- **यूरो–स्टार (Euro-Star) :** इंगलैण्ड और फ्रांस को रेलमार्ग से जोड़ने के लिए समुद्र के नीचे बनाई गई सुरंग से होकर चलने वाली रेलयात्री गाड़ी को 'यूरो स्टार' का नाम दिया गया है।
- **लाफर वक्र (Laffer Curve) :** आर्ट लाफर द्वारा प्रतिपादित तथा अमरीकी जर्नलिस्ट जूड वैन्निस्की द्वारा बहुप्रचारित लाफर वक्र उस स्थिति की व्याख्या करता है जब यह मानकर चला जाता है कि यदि करारोपण की दरों को कम कर दिया जाए तो सरकार को प्राप्त होने वाले राजस्व में वृद्धि होगी, लेकन यह वृद्धि एक सीमा तक ही होगी। करों की दरों में इस सीमा से अधिक कमी कर दिए जाने पर करागत राजस्व में कमी आएगी। पूर्व में इसी अवधारणा को अमरीकी राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगन तथा ब्रिटिश प्रधानमंत्री मारग्रेट थैचर अपना चुके हैं, लेकिन उन्हें सफलता प्राप्त नहीं हुई थी।
- **हरी पंचायत** : ग्रामीण रोजगार उपार्जन योजनाओं के अन्तर्गत उपलब्ध निधियों की सहायता से वनीकरण कार्य शुरू करने हेतु ग्राम पंचायतों को प्रेरित करने के प्रयोजन से पर्यावरण और वन मंत्रालय द्वारा एक पुरस्कार प्रारम्भ किया गया है। इस कार्यक्रम के तहत् प्रत्येक जिले में ग्राम सभा के वनीकरण के बारे में किए गए प्रयासों का 4 वर्षों के पश्चात् मूल्यांकन किया जाएगा और जो ग्राम सभा इस सम्बन्ध में सबसे अच्छा प्रदर्शन करेगी उन्हें जिले की सबसे 'हरी पंचायत' होने के लिए एक लाख रुपए का नगद पुरस्कार प्रदान किया जाएगा।

समीर प्लाजा, मनमोहन पार्क, कटरा, बांसमण्डी के सामने, इलाहाबाद
फोन नं. : 0532.3266722, 9956971111, 9235581475
{जहाँ सेलेक्शन एक जिद है.}

- **स्वयं सहायता समूह (Self Help Group–SHG) :** भारत में स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजना (SGSY) का एक महत्वपूर्ण घटक (Group Approach) है। इसका सम्बन्ध गरीबों को संगठित करके 'स्वयं सहायता समूह' (SHG) का निर्माण करना है। एक स्वयं सहायता समूह में गरीबी रेखा से नीचे के परिवारों से सम्बन्धित 10 से 20 व्यक्ति हो सकते हैं तथा एक व्यक्ति एक से अधिक समूह का सदस्य नहीं होना चाहिए। पहाड़ी क्षेत्रों तथा रेगिस्तानी क्षेत्रों में तथा विकलांग व्यक्तियों के मामलों में यह संख्या 5 से 20 तक हो सकती है। 'स्वयं सहायता समूह' में महिलाओं के लिए वरीयता प्रदान की गई है। यह योजना एक ऋण एवं सब्सिडी योजना है, जिसमें ऋण एक प्रमुख तत्व है। भिन्न–भिन्न परिस्थितियों में सब्सिडी की सीमा परियोजनाओं लागत की अलग7अलग निश्चित की गयी है। स्वयं सहायता समूहों के लिए सब्सिडी परियोजना लागत का 50%, किन्तु अधिकतम 1.25 लाख रुपए निर्धारित की गई है। सिंचाई परियोजनाओं के लिए सब्सिडी की कोई वित्तीय सीमा नहीं रखी गई है। सब्सिडी कार्येत्तर है।
- **आउटकम बजट (Outcome Budget) :** आउटकम बजट के अन्तर्गत एक वित्तीय वर्ष के लिए किसी मंत्रालय अथवा विभाग को आबंटित किए गए बजट में अनुश्रवण तथा मूल्यांकन किए जा सकने वाले भौतिक लक्ष्यों का निर्धारण इस उद्देश्य से किया जाता है कि बजट के क्रियान्वयन की गुणवत्ता को परखा जाना सम्भव हो सके।

  भारत में केन्द्रीय सरकार ने इस नई पद्धति को वर्ष 2005–06 के बजट में प्रस्तावित किया था। इनमें पहली बार वित्त मंत्री द्वारा 25 अगस्त, 2005 को संसद में प्रस्तुत किया था। वर्ष 2005–06 के बजट में इसे केवल आयोजनागत बजट के लिए ही प्रस्तुत किया गया था, लेकिन भविष्य में इसे आयोजना भिन्न बजट में लागू करने का सरकार का इरादा है। इस प्रकार आउटकम बजट सामान्य बजट की तुलना में एक कठिन प्रक्रिया है, जिसमें वित्तीय प्रावधानों को परिणामों के सन्दर्भ में देखा जाना होता है।
- **सूचना का अधिकार अधिनियम :** किसी व्यक्ति को, जोकि सूचना पाने का इच्छुक है, सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 है। इसकी प्रस्तावना में लोकतांत्रिक आदर्शों को सर्वोपरि मानते हुए माना गया है कि संवेदनशील सूचना की गोपनीयता बनाने की जानकारी को छोड़कर शेष जानकारी से नागरिकों को अवगत कराना होगा। ये सरकारी, अर्द्ध–सरकारी स्वायत्त संस्थाएं, नगर पंचायत, नगरपालिकाएं, ग्राम पंचायत इत्यादि सभी को लागू होगा।
- **स्वच्छन्द उद्योग (Footloose Industries) :** स्वच्छन्द उद्योग ऐसे उद्योग को कहा जाता है जिसे कहीं भी स्थापित किया जा सकता है अर्थातृ जिसके लिए परिवहन लागतों का कोई महत्व नहीं होता। ऐसे उद्योग कच्चे माल के स्रोत के निकट स्थापित नहीं किए जाते जैसा कि लौह एवं इस्पात उद्योग के साथ होता है। स्वच्छन्द उद्योग प्रायः विश्वविद्यालयों, अनुसंधान केन्द्रों के निकट स्थापित किए जाते हैं। ये गैर–प्रदूषणकारी उद्योग हैं।
- **ग्राम ज्ञान केन्द्र :** केन्द्र सरकार ने वर्ष 2005–06 के बजट में 100 करोड़ की लागत से ग्राम ज्ञान केन्द्र स्थापित करने की घोषणा की थी। सरकार का यह कदम गाँवों और शहरों के बीच सूचना प्राप्त करने के लिए ब्रिज का कार्य करेगा। इन सूचना केन्दों पर ग्रामीणों तथा किसानों को कृषि सम्बन्धित नई जानकारी, बाजार भाव, कृषि उपज के विपणन की जानकारी, बाजार की माँग, शिक्षा, सूचना एवं संचार आदि मूलभूत जरूरतों को पूरा करेगा। हालांकि गाँवों को सूचना प्रौद्योगिकी का लाभ पहुँचाने का कार्य पहले ही कुछ निजी कम्पनियों, औद्योगिक प्रतिष्ठानों एवं राज्य सरकारों द्वारा शुरू किया जा चुका है।
- **किसान काल सेन्टर :** आज के दौर में किसान काल सेन्टर बदलते ग्रामीण भारत की नई तस्वीर पेश करते हैं। इन केन्दों से ग्रामीणों और किसानों को कृषि, पशुपालन, मत्स्यपालन, मधुमक्खी पालन, रेशमकीट पालन एवं अन्य कृषि से सम्बन्धित व्यवसायों की आधुनिकतम जानकारी प्रदान करने के साथ ही उनका इन क्षेत्रों में आने वाली कठिनाइयों एवं समस्याओं के उचित समाधान भी सुझाए जाते है। ये किसान काल सेन्टर उत्तर प्रदेश, राजस्थान, तमिलनाडु और महाराष्ट्र सहित देश के आठ प्रान्तों में ग्रामीणों को बखूबी सलाह, सहायता और मार्गदर्शन कर रहे हैं। इन केन्द्रों पर उपलब्ध टोल फ्री नम्बर 1551 पर देश के किसी भी कोने से फोन पर आवश्यक जानकारी मुफ्त में प्राप्त की जा सकती है।
- **सार्वजनिक उपक्रम समिति :** सार्वजनिक उपक्रम समिति (Committee on Public Under-takings) संसद की एक मिति है जिसमें राज्य सभा से 7 तथा लोक सभा से 15 सदस्य अर्थात् कुल 22 सदस्य सम्मिलित होते हैं। इसका कार्य सार्वजनिक उपक्रमों के प्रतिवेदनों और हिसाब–किबात पर विचार करना तथा महानियंत्रक एवं लेखा परीक्षक के प्रतिवेदनों की जाँच करना है।
- **एसटीटी (सिक्योरिटी ट्रांजेक्शन टैक्स) :** शेयर बाजार में प्रतिभूतियों (Securities) के खरीदने या बेचने पर सिक्योरिटी ट्रांजेक्शन टैक्स लगता है। इसे हटाए जाने की आशा थी, लेकिन 2009–10 के बजट में इसमें कोई बदलाव नहीं किया गया है।

****

प्रमुख नियुक्तियाँ

- **शान्ता सिन्हा** : अध्यक्ष, राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग (NCPCR)
- **वान की–मून (दक्षिण कोरिया)** : महासचिव (UNO).
- **हर्मन वान रॉम्पुई (बेल्जियम के प्रधानमंत्री)** : अध्यक्ष, यूरोपीय संघ (EU).
- **अहमद सलीम** : महासचिव, दक्षेस (SAARC)
- **एस. वाई कुरैशी** : मुख्य चुनाव आयुक्त (30 जुलाई, 2010 से)
- **डॉ. डी. सुब्बाराव** : गवर्नर (RBI)
- **पास्कल लामी (फ्रांस)** : महानिदेशक, WTO
- **अतुल कुमार राय** : सीईओ एवं एमडी, भारतीय औद्योगिक वित्त निगम (IFCI)
- **भूपेन्द्र कुमार राठी** : अध्यक्ष, एकाधिकार एवं प्रतिबन्धात्मक व्यापार व्यवहार आयोग (MRTPC)
- **डॉ. अमृता पटेल** : अध्यक्षा, नेशनल डेयरी डेवलपमेन्ट बोर्ड (NDDB)
- **क्रिस्टीन लगार्ड** : प्रबन्ध निदेशक, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष (IMF), जून 2011
- **मारग्रेट चान** : महानिदेशक, WHO
- **प्रकाश बख्शी** : चेयरमैन, सहप्रबन्ध निदेशक, NABARD (जून 2011 से अक्टूबर 2013 तक)
- **राजीव कुमार** : महासचिव, फिक्की (FCCI) (मई, 2011)
- **आर. वी. वर्मा** : अध्यक्ष, सहप्रबन्ध निदेशक, राष्ट्रीय आवास बैंक (NHB) (सितम्बर, 2010)
- **सोमपाल** : अध्यक्ष, राष्ट्रीय किसान आयोग
- **रतन टाटा** : अध्यक्ष, निवेश आयोग
- **यू. के. सिन्हा** : अध्यक्ष, सेबी (SEBI) (17 फरवरी, 2011 से)
- **आर. एम. माला** : अध्यक्ष सहप्रबन्ध निदेशक, IDBI
- **डॉ. सी. रंगराजन** : अध्यक्ष, प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद् (EAC) (12 अगस्त, 2009 से)
- **हारुहिको कुरोडा** (Haruhiko Kuroda) : अध्यक्ष, एशियाई विकास बैंक।
- **मारियो–ड्राघी** (इटली के Mario Draghi) : अध्यक्ष, यूरोपियन सेन्ट्रल बैंक (ECB) (1 नवम्बर, 2011 से 31 अक्टूबर, 2019 तक)
- **जुआन सोमाविया** : महानिदेशक, अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन
- **प्रो. वेद प्रकाश** : अध्यक्ष, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC).
- **ममता शर्मा** : अध्यक्ष, राष्ट्रीय महिला आयोग (2 अगस्त, 2011 से)
- **आर. वी. कनोरिया** : अध्यक्ष, भारतीय वाणिज्य एवं उद्योग परिसंघ (FICCI) अप्रैल, 2012
- **जिम योंग किम** : अध्यक्ष, विश्व बैंक
- **आर. के. उपाध्याय** : चेयरमैन सहप्रबन्ध निदेशक बीएसएनएल
- **राजेन्द्र एस. पवार** : अध्यक्ष, नेशनल एसोसिएशन ऑफ सॉफ्टवेयर एण्ड सर्विसेज कम्पनीज (NASSCOM) (2011–12 के लिए)
- **प्रतीप चौधरी** : अध्यक्ष, SBI (अप्रैल, 2011)
- **जे. एस. सरमा** : अध्यक्ष, भारतीय दूरसंचार नियामक प्राधिकरण (TRAI)
- **सिराज हुसैन** : अध्यक्ष, सहप्रबन्ध निदेशक, भारतीय खाद्य निगम (FCI)
- **नंदन निलेकणि** : अध्यक्ष, विशिष्ट पहचान संख्या प्राधिकरण (Unique Identification Authority of India)
- **मधु कन्नन** : प्रबन्ध निदेशक, बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज (BSE)
- **सैम पित्रोदा** : अध्यक्ष, राष्ट्रीय ज्ञान आयोग (National Knowledge Commission)
- **आर के सिन्हा** : निदेशक, भाभा एटोमिक रिसर्च सेंटर (BARC)
- **एस, अय्यर** : महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद् (ICAR)

TEENSTYLE

ECONOMICS

- भारत में आर्थिक वृद्धि के लिए बनाई गई पंचवर्षीय योजनाओं को अंतिम रूप से कौन अनुमोदित करता है ? **–राष्ट्रीय विकास परिषद**
- भारत में एक रुपये के करेन्सी नोटों पर किसके हस्ताक्षर रहते हैं ? **–सचिव, वित्त मंत्रालय**
- भारत में सबसे लम्बा राष्ट्रीय राजमार्ग (रा. रा. संख्या–7) किन दो स्थानों को जोड़ता है ? **–वाराणसी और कन्याकुमारी**
- योजना आयोग का पहला अध्यक्ष कौन था ? **–पंडित जवाहरलाल नेहरू**
- किसी देश की श्रमिक शक्ति क्या होती है ? **–रोजगार के लिए उपलब्ध जनसंख्या का भाग**
- भारत में सबसे बड़ी बचत किस क्षेत्रक में होती है ? **–घरेलू क्षेत्रक**
- हवाला बाजार किससे सम्बन्धित है ? **–गैर–कानूनी विदेशी मुद्रा विनिमय**
- 'अर्थशास्त्र का पिता' किसे कहा जाता है ? **–एडम स्मिथ**
- भारत में क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों ने किस वर्ष काम करना शुरू किया था ? **–1975 ई. में**
- किस भारतीय बैंक की विदेशों में सबसे अधिक संख्या में शाखाएँ हैं ? **–भारतीय स्टेट बैंक**
- भारत सरकार को राजस्व की सबसे अधिक राशि किसके जरिए प्राप्त होती है ? **–उत्पाद शुल्क**
- मुद्रा संचलन की गति किसकी सूचन है ? **–राष्ट्रीय आय से मुद्रा की मांग का अनुपात**
- भारत के प्रथम 'ट्रेड पॉइन्ट' का उद्घाटन किस शहर में किया गया ? **–नई दिल्ली**
- पचास पैसे का सिक्का कैसा मुद्रा है ? **–सीमित वैध मुद्रा**
- लॉर्ड कीन्स के अनुसार, ब्याज की दर किसकी पूर्ति और माँग द्वारा निर्धारित होती है ? **–धन/मुद्रा**
- एक एकाधिकारी अपने लाभ को अधिकतम कब करता है ? **–जब सीमान्त लागत = सीमान्त राजस्व**
- 'कोयला' क्या माना जाता है ? **–उपभोक्ता माल**
- अतिरिक्त निवेश व्यय तब तक होगा जब तक पूँजी की सीमान्त उत्पादिता– **–ब्याज की दर से अधिक हो**
- पूर्ण बाजार का यह अर्थ होता है कि– **–कई विक्रेता हैं और कई खरीददार हैं**
- 'दुर्लभ मुद्रा' क्या होती है ? **–जिसका बाहरी (विदेशी) मूल्य बढ़ रहा हो**
- वित्त आयोग की नियुक्ति कौन करता है ? **–भारत के राष्ट्रपति**
- किस मुद्रा का रुपए की दृष्टि से सबसे अधिक मूल्य है ? **–पौंड**
- उत्पाद शुल्क किस पर लगाया जाता है ? **–उत्पादन**
- मुक्त व्यापार (Free trade) का अभिप्राय है– **–अंतर्राष्ट्रीय व्यापार, जिसमें माल तथा सेवाओं का अनियंत्रित आदान–प्रदान होता है**
- बैंक दर (Bank Rate) की वृद्धि से **–क्रेडिट महंगा हो जायेगा**
- सममूल्य से संबंधित होता है– **–वह दर जिस पर शेयर जारी किया जाता है**
- गौण बाजार (Secondary market) का संबंध किससे है ? **–प्रतिभूतियों की पुनः बिक्री तथा खरीद**
- बैंक दर से क्या अभिप्राय है ? **–वह दर जिस पर सेन्ट्रल बैंक वाणिज्यिक बैंकों को उधार देते हैं**
- अर्थशास्त्र में निवेश से क्या अभिप्राय है ? **–स्टॉक और डिबेंचर**
- एकमार्क किसके लिए दिया जाता है ? **–कृषि पदार्थ**
- योजना आयोग के अध्यक्ष कौन होते हैं ? **–प्रधानमंत्री**
- देश के अगम्य क्षेत्रों में स्थानीय आवश्यकताओं की अधिकतर आपूर्ति कौन करता है ? **–ग्रामीण कुटीर उद्योग**
- निवल राष्ट्रीय उत्पाद मालूम करने के लिए हम सकल राष्ट्रीय उत्पाद में से क्या घटाते हैं ? **–ह्रास**
- किसी वस्तु के लिए मांग वक्र ऊपर जाएगा, जब– **–उपभोक्ता की आय बढ़ेगी**
- एक फर्म सुतुलन–स्तर बिन्दु पर तब होती है, जब उसकी– **–सीमांत लागत = सीमांत राजस्व (आय) हो**
- मुद्रा का मुख्य कार्य किस रूप में कार्य करना है ? **–विनिमय का माध्यम**
- मुद्रा का मुख्य कार्य किस रूप में कार्य करना है ? **–विनिमय का माध्यम**
- मुद्रा के अवमूल्यन से किसका उल्लेख होता है ? **–मुद्रा के बाहरी मूल्य में कमी**
- किसी वस्तु की मांग किस पर निर्भर करती है ? **–खरीदने की शक्ति**
- भारतीय रिजर्व बैंक के करेन्सी नोट के पीछे कुछ परिसम्पत्तियाँ होती हैं, ये परिसंपत्तियाँ किसकी निर्धारित मात्रा/राशि से कम नहीं होनी चाहिए ? **–सोना और विदेशी प्रतिभूतियाँ**
- भारत सरकार के सार्वजनिक ऋण प्रचालनों को कौन संचालित करता है ? **–भारतीय रिजर्व बैंक**
- चीन की करेन्सी (मुद्रा) क्या कहलाती है ? **–यूऑन**
- 'ओपन स्काई पॉलिसी' से क्या आशय है ? **–निजी और सार्वजनिक विमान सेवा, दोनों का कार्यान्वयन**
- 'फेरा' का क्या अर्थ है ? **–विदेशी मुद्रा विनियमन अधिनियम**
- 'एन इंक्वायरी इनर्ट द नेचर एंड कॉजिज ऑफ वैल्थ ऑफ नेशन्स' के लेखक कौन हैं ? **–एडम स्मिथ**
- ऋण नियंत्रण कार्यवाही किसके द्वारा संचालित की जाती है ? **–वाणिज्य बैंक**
- रिजर्व बैंक की स्थापना कब हुई थी ? **–1 जनवरी, 1935 को**
- 'चुंगी कर' से क्या अभिप्राय है ? **–नगर निगम क्षेत्र में माल के प्रवेश पर लगाया गया कर**
- 'मुक्त आकाश नीति' से क्या अभिप्राय है ? **–वायु परिवहन में निजी एजेंसियों को शामिल करना**

- आई. सी. आई. सी. आई. (ICICI) कैसी संस्था है ? **–वित्तीय संस्था**
- मुद्रा–स्फीति एवं मूल्य वृद्धि के काल में मुद्रा की पूर्ति– **–बढ़ जाती है**
- किसके निर्यात द्वारा सर्वाधिक विदेशी मुद्रा अर्जित की जाती है ? **–रत्न एवं आभूषण**
- एशियन विकास बैंक का मुख्यालय कहाँ है ? **–मनीला में**
- 'एम. एम. एक्स.' (MMX) टैक्नोलॉजी किसके द्वारा प्रारंभ हुई ? **–इनटेल**
- किस व्यक्ति ने 'सम्पत्ति के श्रम–सिद्धान्त' के पक्ष में समर्थन किया था ? **–जे. एस. मिल**
- दोहरी कीमत निर्धारण का क्या अर्थ है ? **–प्रशासन द्वारा निर्धारित कीमत और खुले बाजार की कीमत**
- आयात (Imports) का अधिकतम भाग कहाँ से आता है ? **– ओ. पी. ई. सी. (OPEC)**
- अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय निधि (Moneatry Fund) का मुख्यालय कहाँ स्थित है ? **–वाशिंगटन डी. सी.**
- जब किसी वस्तु X की स्थानापन्न की कीमत उतरती है, तब X की माँग– **–उतरती है**
- एक 45° का पूर्ति चक्र क्या प्रदर्शित करता है ? **–इकाई लोचदार पूर्ति**
- भारत में कृषि क्षेत्र में नियुक्त श्रमिक संख्या कुल श्रमिक संख्या का कितना प्रतिशत है ? **–लगभग 64%**
- एक कृषक के द्वारा ट्रैक्टर का क्रय क्या है ? **–नियत निवेश**
- उत्पादन की दृष्टि से भारत की प्रमुख खाद्य फसल क्या है ? **–चावल**
- वस्तु–विनिमय वह पद्धति है, जिसमें– **–एक वस्तु का दूसरी वस्तु के साथ विनिमय होता है**
- जब पूर्ण उपयोगिता एक बिन्दु में अधिकतम है तब उपांत उपयोगिता कैसी होगी ? **–शून्य**
- जब कुल राजस्व के समान ही कुल लागत होती है, तब उस स्थिति को क्या कहते हैं ? **–संतुलन–स्तर बिन्दु**
- पण्य की कीमत और उसकी माँग का क्या संबंध है ? **–प्रतिलोम संबंध**
- कीमत के बढ़ने के कारण राष्ट्रीय आय के बढ़ने को क्या कहते हैं ? **–राष्ट्रीय आय मुद्रा की बढ़त**
- सरकार को जो पानी का शुल्क किसान अदा करता है, वह किसे सूचित करता है ? **–मध्यवर्ती उपभोग**
- लेखा के शब्दों में 'अंतिम माल' का क्या तात्पर्य है ? **–आरंभिक माल + निवल निवेश – पूँजीगत हानि**
- 'कोटा' क्या है ? **–आयात की मात्रा की सीमा**
- भारतीय रिजर्व बैंक के मुक्त बाजार प्रचालन का क्या तात्पर्य है ? **–प्रतिभूति का व्यापार**
- कृषि का व्यापारीकरण किसे सूचित करता है ? **–विक्रय के लिए सस्य का उत्पादन**
- माँग वक्र कीमत और माँग की मात्रा में कैसा सम्बन्ध प्रदर्शित करता है ? **–व्युत्क्रमानुपाती और प्रतिलोम**
- भारत की राष्ट्रीय आय का सबसे बड़ा अंश कहाँ से आता है ? **–प्राथमिक क्षेत्र से**
- ज्यों–ज्यों उत्पादन में वृद्धि होती है, औसत नियम लागत पर क्या प्रभाव पड़ता है ? **–कम होती है**
- संघ सरकार के कर राजस्व में सबसे बड़ा स्रोत कौन–सा है ? **–सीमा शुल्क**
- यदि पेप्सी की कीमत कोक तथा 7–अप की कीमत की तुलना में घट जाए तो कोक तथा 7–अप की माँग पर क्या प्रभाव पड़ेगा ? **–घट जाएगा**
- नियत लागत को और किस नाम से जाना जाता है ? **–मूल लागत**
- भारत किस देश को सबसे अधिक निर्यात करता है ? **–संयुक्त राज्य अमेरिका**
- दीर्घावधी वाली साम्यावस्था में कोई प्रतियोगी फर्म क्या अर्जित करती है ? **–अधि–सामान्य लाभ**
- उत्पादन प्रकार्य के साथ किसका संबंध है ? **–आगत व निर्गत का**
- क्लासिकी प्रणाली के अनुसार, बचत किसका प्रकार्य है ? **–कीमत स्तर का**
- वह स्थिति, जिसमें माल को तभी उपलब्ध कराया (बेचा) जाता है जबकि कीमतों में वृद्धि हो चुकी हो, तो उसे क्या कहते हैं ? **–काला बाजारी**
- ''आर्थिक अपक्षय'' सिद्धान्त के प्रवर्तक कौन थे ? **–दादाभाई नौरोजी**
- क्या प्रारंभ करने के बाद अन्न की वितरण प्रणाली दो स्तरों पर होने लगी है ? **–लक्ष्यानुसार सार्वजनिक वितरण प्रणाली**
- भारत में चालू उपभोग के स्तर में वृद्धि के कारण एक कौन–सा भावी परिणाम होने वाला है ? **–भविष्य में अधिक पूंजी–संचय**
- किस पदार्थ का मूल्य घट जाने पर भी उसके माँग में वृद्धि नहीं होगी ? **–नमक**
- मिश्रित अर्थ–व्यवस्था किस आर्थिक प्रणाली का सन्दर्भ सूचक है ? **–जिसमें सरकारी क्षेत्र तथा निजी क्षेत्र दोनों साथ–साथ काम करते हैं**
- प्रतिवर्ष 'उपभोक्ता दिवस' कब मनाया जाता है ? **–15 मार्च**
- 'काराधान के अभिनियमों' (Canons of Taxation) का प्रवर्तक कौन था ? **–एडम स्मिथ**
- राज्य सहकारी बैंकों को वित्ता प्रदान करने का कार्य कौन करता है ? **–भारतीय रिजर्व बैंक**
- भारतीय अर्थव्यवस्था के किस क्षेत्रक में सर्वोच्च उत्पादकता है ? **–कृषि**
- राष्ट्रीय आय लेखा द्वारा किसके सम्पूर्ण आय और व्यय का अध्ययन होता है ? **–अर्थव्यवस्था**
- राज्य सरकार के राजस्व का स्रोत क्या है ? **–कृषि आयकर**
- सरकारी बजटों में जीरो बेस बजट पहले कहाँ प्रस्तुत किया गया ? **–यू. एस. ए. में**
- किस पंचवर्षीय योजना का मुख्य उद्देश्य आर्थिक आत्म–निर्भरता था ? **–चतुर्थ योजना**
- राष्ट्रीय आय के आकलन की तैयारी किसका दायित्व है ? **–केन्द्रीय सांख्यिकीय संगठन**
- योजना आयोग का अध्यक्ष कौन होता है ? **–प्रधानमंत्री**
- दीर्घकाल में भी भूमि पर किराया क्यों लिया जाता है ? **–इसकी पूर्ति दीर्घकाल में बेलोच होती है**

समीर प्लाजा, मनमोहन पार्क, कटरा, बांसमण्डी के सामने, इलाहाबाद
फोन नं. : 0532.3266722, 9956971111, 9235581475
{जहाँ सेलेक्शन एक जिद है.}

- किसी अति विकसित देश के सकल घरेलू उत्पाद में कृषि का सापेक्ष योगदान होता है ? **–अपेक्षाकृत निम्न**
- एक निश्चित सीमा के बाद वित्तीय घाटा निश्चित रूप से किसकी ओर अग्रसर होगा ? **–स्फीति**
- अर्थशास्त्र का जनक किसे कहा जाता है? **–एडम स्मिथ**
- अर्थशास्त्र में ''बाजार'' से क्या अभिप्राय है ? **–प्रतियोगिता की उपस्थिति**
- भारत में किस प्रकार की वाणिज्यीय बैंकिंग व्यवस्था है ? **–मिश्रित बैंकिंग**
- भारत में पूँजी बाजार में श्रेष्ठ बाजार का सन्दर्भ क्या है ? **–विद्यमान प्रतिभूतियों का व्यापार करने वाला बाजार**
- किसके द्वारा भारत सरकार को सर्वाधिक राजस्व प्राप्त होता है ? **–उत्पादन शुल्क**
- भारत में द्धण नियंत्रण का प्रचालन किसके द्वारा किया जाता है ? **–भारतीय रिजर्व बैंक**
- श्रम–विभाजन की सीमा क्या है ? **–कार्य–स्थान**
- नाबार्ड (NABARD) किसका नाम है ? **–कृषि सहायक विशिष्ट बैंक का**
- किस राज्य में भारत के कुल रेशमी कपड़े का 50% उत्पादन होता है ? **–कर्नाटक**
- भारत में बैंकों का पहली बार राष्ट्रीयकरण कब हुआ था ? **–1969 ई. में**
- गाँधीवादी अर्थव्यवस्था किस सिद्धान्त पर आधारित थी ? **–न्यासधारिता**
- विश्व बैंक का मुख्यालय कहाँ है ? **–वाशिंगटन डी. सी. में**
- एशिया एवं प्रशान्त के लिए आर्थिक एवं सामाजिक आयोग (ESCAP) का मुख्यालय कहाँ स्थित है ? **–बैंकाक में**
- किसी समुदाय के स्वास्थ्य का सबसे अधिक संवेदनशील संकेतक क्या है ? **–शिशु–मृत्यु दर**
- वर्ष 1998 में अर्थशास्त्र के लिए नोबेल पुरस्कार विजेता डॉ. अमर्त्य सेन किस आर्थिक विकास के मार्गों के पक्ष में थे ? **–कल्याण अर्थशास्त्र**
- पारिभाषिक शब्द 'उपयोगिता' से क्या अभिप्राय है ? **–किसी पण्य द्वारा प्रदत्त संतुष्टि**
- नम्य विनिमय दर प्रणाली के अंतर्गत विनिमय दर किसके द्वारा निर्धारित होती है ? **–विदेशी विनिमय बाजार में माँग और पूर्ति की शक्तियाँ**
- किसी उत्पाद के लिए बाजार के आकार का संदर्भ किससे होता है ? **–उत्पादक जिस भौगोलिक क्षेत्र के लिए व्यवस्था करते हैं**
- आर्थिक समस्या मुख्यतः क्यों उत्पन्न होती है ? **–संसाधनों की दुर्लभता से**
- वह ब्याज दर जिस पर वाणिज्यिक बैंक रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया से धन उधार लेते हैं, उसे क्या कहते हैं ? **–बैंक दर**
- यदि किसी पण्य की माँग में परिवर्तन की दर उस पण्य की कीमत की तुलना में अधिक तीव्र हो, तो वह माँग कैसी होगी ? **–लोचदार**
- भारत में सबसे बडत्रा नियोक्ता कौन है ? **–भारतीय रेल**
- अन्त्योदय कार्यक्रम का प्रमुख उद्देश्य क्या है ? **–ग्रामवासी निर्धनों का उत्थान**
- भारत की वित्तीय राजधानी कहाँ है ? **–मुम्बई**
- भारतीय रिजर्व बैंक किस प्रणाली के अनुसार नोट जारी करता है ? **–न्यूनतम आरक्षण प्रणाली**
- भारत ने पंचवर्षीय योजनाएँ कहाँ से ग्रहण की ? **–भूतपूर्व सोवियत सामाजवादी गणतंत्र संघ से**
- भारत में केन्द्र राज्य वित्तीय संबंधों में गाडगिल फार्मूला कहाँ प्रयोग में आता है ? **–राज्यों के बीच केन्द्रीय योजना सहायता राशि बाँटने के लिए**
- मिश्रित अर्थव्यवस्था की धारणा से क्या अभिप्राय है ? **–निजी तथा सार्वजनिक क्षेत्रों का एक साथ अस्तित्व**
- सरकारी बंधपत्रों की बिक्री आय, कौन–से आय–व्ययक (बजट) शीर्षक के अंतर्गत आती है ? **–पूँजीगत प्राप्तियाँ**
- भारत के राज्यों का प्रमुख राजस्व–स्रोत क्या है ? **–भू–राजस्व**
- समस्त माँग किसका योगफल है ? **–उपभोग एवं उत्पादन का**
- माँग अधिक लोचदार कब कही जाती है ? **–जब कीमत की मामूली परिवर्तन से माँग में विशाल परिवर्तन हो जाता है**
- जनसंख्या के घनत्व का सूचक क्या है ? **–जनसंख्या–भूमि अनुपात**
- किसी आर्थिक प्रणाली में उत्कृष्ट अवस्था से क्या अभिप्राय है ? **–स्थिर विकास का प्रारम्भ**
- कीमत स्तर में वृद्धि के प्रभाव से वास्तविक मजदूरी पर क्या प्रभाव पड़ता है ? **–घट जाती है**
- किस पंचवर्षीय योजना में भारत के विकास का प्राथमिक दायित्व सरकारी क्षेत्र को स्थानान्तरित कर दिया गया था? **–प्रथम योजना**
- भारत के किस उद्योग में अधिकतम कर्मचारियों को रोजगार मिला हुआ है ? **–कपड़ा उद्योग**
- स्फीति का एक अनिवार्य लक्षण क्या है ? **–कीमत में वृद्धि**
- समाकलित ग्रामीण विकास कार्यक्रम है – **–एक साक्षरता कार्यक्रम**
- प्रथम पंचवर्षीय योजना में सर्वोच्च प्राथमिकता किसे दी गई थी ? **–कृषि को**
- जीवन–स्तर निर्धारण के लिए क्या महत्वपूर्ण है ? **–वास्तविक मजदूरी**
- समाजवादी चिंतक किस क्षेत्र में समानता के अधिकार को बढ़ाने की वकालत करते हैं ? **–आर्थिक क्षेत्र**
- यथामूल्य कर किसके अनुसार लगाया जाता है ? **–उत्पादकों द्वारा प्रदत्त मूल्य के अनुसार**
- विधि के अनुसार लोगों तथा सरकार द्वारा स्वीकार की गई मुद्रा को क्या कहते हैं ? **–वैध मुद्रा**
- उत्पादन लागत पर राष्ट्रीय आय किसके बराबर होती है ? **–निवल राष्ट्रीय उत्पाद – अप्रत्यक्ष कर + सहायता**
- उच्च सांविधिक नकदी अनुपात– **–उधार को प्रतिबन्धित (सीमित) करता है**
- उस स्थिति को क्या कहते हैं, जिसमें बहुत सी फर्में एक जैसे माल का उत्पादन करती हैं ? **–पूर्ण प्रतियोगिता**
- बेहिसाब धन का उपयोग किसी उत्पादन कार्य में करने के लिए सरकार ने कौन–सी योजना शुरू की है ? **–विशेष बेयरर बॉण्ड्स**
- कोचीन रिफाइनरी' किस क्षेत्रक के अन्तर्गत आती है ? **–संयुक्त क्षेत्रक**

- यू. टी. आई. कैसी संस्था है ?
–औद्योगिक वित्तीय संस्था
- सरकार की कर तथा व्यय सम्बन्धी नीति को क्या कहा जाता है ? **–राजकोषीय नीति**
- उस धनराशि को क्या कहा जाता है, जो किसी देश में ब्याज की अनुकूल दरें प्राप्त करने के उद्देश्य से उसमें प्रवाहित हो जाती हैं ? **–उत्प्रवाही धन (हॉट मनी)**
- भारत का वह कौन–सा बन्दरगाह है जिसे 'मुक्त व्यापार क्षेत्र' कहा जाता है ? **–कांडला**
- ''प्रत्येक को उसकी क्षमता के अनुसार, के स्थान पर प्रत्येक को उसकी आवश्यकताओं के अनुसार''– यह सिद्धान्त किसका है ? **–साम्यवाद का**
- 'टी आर आई पी एस' (TRIPS) का पूर्ण रूप क्या है ?
–ट्रेड रिलेटेड इन्टलैक्चुअल प्रॉपर्टी राइट्स
- सकल लाभ का क्या अर्थ है ?
–कुल व्यय पर कुल प्राप्तियाँ
- कौन–सा उद्योग सभी औद्योगिक गतिविधियों की आधार भूमि तथा 'मातृ उद्योग' माना जाता है ?
–लोहा तथा इस्पात उद्योग
- राष्ट्रीय आय लेखाकरण में निवल राष्ट्रीय उत्पादन का क्या अभिप्राय है ? **–सकल राष्ट्रीय उत्पाद–मूल्यह्रास**
- विश्व व्यापार संगठन का मुख्य उद्देश्य क्या है ?
–व्यापार प्रतिबन्धों को शनैः शनैः घटाते हुए अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के परिणाम में वृद्धि करना
- किसके अनतर्गत पूरे बाजार में एक समान कीमत प्रचलित होती है ? **–पूर्ण प्रतिस्पर्धा**
- ऐल्कोहॉली द्रवों, स्वापक औषधियों तथा अफीम पर लगाए गए शुल्क किस विभाग के अधीन आते हैं ?
–राज्य उत्पादन शुल्क
- भुगतान शेष समस्याओं को दूर करने के लिए अल्पावधिक ऋण किसके द्वारा दिए जाते हैं ? **–आई. एम. एफ.**
- कौन–सी सार्वजनिक यूरोपीय मुद्रा जारी हुई है ? **–यूरो**
- व्यावसायिक लेन–देनों से प्राप्त सफल बिक्री राजस्व पर लगाए जाने वाले कर को क्या कहा जाता है ? **–बिक्रीकर**
- तरलता अधिमान का क्या अर्थ है ?
–नकदी के रूप में परिसम्पत्तियाँ रखना
- सतत् भुगतान–शेष घाटे के कारण गिरते हुए विनिमय दर वाली मुद्रा को क्या कहा जाता है ? **–सुलभ मुद्रा**
- अन्तर्राष्ट्रीय वित्त निगम सम्बन्धित है–
–आई. बी. आर. डी. से
- एक वर्ष में उत्पादित निर्गत का कुल निवल मूल्य क्या होता है ? **–बाजार कीमतों पर निवल राष्ट्रीय उत्पाद**
- भारत में विदेश व्यापार में मदों की सारणीबद्ध सूची से क्या तात्पर्य है ?
–केवल राजकीय स्वामित्व वाले उपक्रमों द्वारा आयात की जाने वाले मदें
- एकाधिकारी प्रतियोगिता का सर्वाधिक महत्वपूर्ण लक्षण क्या है ? **–उत्पाद विभेदन**
- भिलाई, दुर्गापुर और राउरकेला में लोहे और इस्पात के उद्योग किस पंचवर्षीय योजना अवधि के दौरान स्थापित किए गए थे ? **–दूसरी पंचवर्षीय योजना**
- उस सटोरिया को क्यसा कहते हैं जो इस दृष्टि से सौदों की खरीद करता है कि वह उन्हें कीमत बढ़ने पर निकट भविष्य में बेच देगा ? **–तेजड़िया (बुल)**
- उपयोगितावाद का मुख्य पक्ष समर्थक कौन है ?
–जेरेमी बैंथम
- 'नकदी रिजर्व अनुपात' जितना कम होगा, बैंकों द्वारा उधार देने की गुंजाइश उतनी ही– **–बड़ी होगी**
- भारत में राज्यों के लिए राजस्व का सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्रोत क्या है ? **–बिक्री कर**
- भारत की प्रथम पंचवर्षीय योजना में किसकी प्राथमिकता दी गई थी ? **–कृषि को**
- अर्थोपाय ऋण से क्या तात्पर्य है ?
–भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) से सरकार का अस्थायी कर्ज
- साम्यवाद मुख्यतः किसका महत्व देता है ?
–आर्थिक समता को
- ''व्यापार विकास प्राधिकरण'' संस्था सम्बन्धित है–
–निर्यात संवर्धन से
- अर्थव्यवस्था में उत्पादित अन्तिम माल एवं सेवाओं के धन का मापक है– **–सकल राष्ट्रीय उत्पाद**
- सिद्धान्ततः दो देशों के बीच व्यापार किस लिए किया जाता है ? **–लागतों में तुलनात्मक अन्तरों के कारण**
- श्रम–विभाजन मुख्यतः किसका परिणाम है ?
–विशेषज्ञता का
- विभिन्न औद्योगिक फर्में मुख्यतः किसके अधीन सजातीय माल का उत्पादन करती हैं ? **–पूर्ण प्रतियोगिता**
- बहुराष्ट्रीय निगम को और क्या कहा जाता है ?
–राष्ट्रपार निगम
- उपभोक्ता किसी वस्तु की जितनी कीमत देने को तेयार है, उस कीमत तथा उसके द्वारा वस्तुतः दी गई कीमत के बीच के अन्तर को क्या कहा जाता है ?
–उपभोक्ता अधिशेष
- कम्पनी (निगम) कर किस पर लगाया जाता है ?
–कम्पनियों की निवल आय पर
- अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (International Monetary Fund) का मुख्यालय कहाँ है ? **–वाशिंगटन डी. सी.**
- वाणिज्यिक बैंक क्रेडिट सृजित करते हैं–
–अपनी जमा के आधार पर
- किसी नियत अवधि के लिए कुल राष्ट्रीय उत्पादन का मुद्रा मूल्य क्या कहलाता है ? **–सकल राष्ट्रीय उत्पाद**
- बैंक द्रव्य से तात्पर्य है– **–करेंसी नोट**
- विकास के क्षेत्र में अग्रणी उद्योगों यथा–इलेक्ट्रॉनिक्स तथा जैव प्रौद्योगिकी को क्या कहा जाता है ?
–सनराइज उद्योग
- किसी विकासशील देशम ें वे स्वनियोजित लोग जो लघु श्रम–प्रधान कार्य में लगे हुए हैं। वे किस क्षेत्रक (सेक्टर) से सम्बन्धित हैं ?
–अनौपचारिक क्षेत्रक
- आई. बी. आर. डी. (International Bank for Reconstruction and Development) को और क्या कहा जाता है ? **–विश्व बैंक**
- 'ऑपरेशन फ्लड' का तात्पर्य किस उत्पादन से है ?
–दूध के उत्पादन में वृद्धि करने से
- उस सटोरिए को क्या कहा जाता है, जो इस उद्देश्य से स्टॉक को बेच देता है कि कीमत गिरने पर वह उसको पुनः खरीद लेगा ? **–मंदड़िया (बिअर)**
- समांतर अर्थव्यवस्था का उदय किसके कारण होता है ?
–कर–अनुपालन के कारण

समीर प्लाजा, मनमोहन पार्क, कटरा, बांसमण्डी के सामने, इलाहाबाद
फोन नं. : 0532.3266722, 9956971111, 9235581475
{जहाँ सेलेक्शन एक जिद है.}

- जोखिम–अंकन का क्या तात्पर्य है ?
–जोखिम का बीमा कराने का कार्य
- लक्षद्वीप के लोग मूलतः कौन भाषा बोलते हैं ?
–मलयालम
- ककिस नदी के सम्बन्ध में मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और गुजरात का विवाद चल रहा है ? **–नर्मदा**
- एशिया और अमरीका के तटों को छूने वाला महासागर कौन है ? **–प्रशांत महासागर**
- भारत में वह फसल–मौसम कौन–सा है जो मई–जून में शुरू होता है और जिसमें धान और ज्वार, बाजरा आदि मुख्य फसलें उगाई जाती हैं ? **–खरीफ**
- 'एग्मार्क' क्या है ?
–यह श्रेणीकृत कृषिपण्यों के लिए जारी की गई एक 'विपणन सील' होता है
- 'भिलाई इस्पात संयंत्र' की स्थापना किस योजना के दौरान की गई थी ? **–द्वितीय पंचवर्षीय योजना**
- औसत आय सीमांत आय के बराबर किसमें होती है ?
–पूर्ण प्रतियोगिता में
- उस अवस्था में उत्पादन की मात्रा का निर्धारण कर लेना समझदारी का काम है, जब उद्योग चल रहा हो–
–ऋणात्मक (निगेटिव) प्रतिफल की अवस्था में
- अर्थव्यवस्था को सभी अनावश्यक नियंत्रणों एवं विनियमों से मुक्त करने का क्या तात्पर्य है ? **–उदारीकरण**
- मुद्रा–स्फीति को कैसे रोका जा सकता है ?
–मुद्रापूर्ति घटाकर
- गिरती विनिमय दर को और क्या कहा जाता है ?
–नम्य विनिमय दर
- न्यूयार्क शेयर बाजार में सूचीबद्ध की जाने वाली भारत की सबसे पहली सरकारी कम्पनी कौन है ?
–विदेश संचार निगम लिमिटेड
- आय और उपभोग के बीच संबंध को क्या कहते हैं ?
–उपभोग फलन
- संघ सरकार के राजस्व (आय) का सबसे बड़ा स्रोत क्या है ? **–केन्द्रीय उत्पाद–शुल्क**
- 'कर वाह्यता' का शाब्दिक अर्थ क्या है ?
–कर–भार कौन सहन करता है ?
- कुल नियत लागत वक्र कैसा होता है ? **–समस्तरीय**
- प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि को लोगों के आर्थिक कल्याण में वृद्धि का संकेत उस स्थिति में नहीं माना जाता है , जब–
–ऐसी वृद्धि जो कृषि उत्पादन में वृद्धि के परिणामस्वरूप हुई हो
- यदि X माल की कीमत कम हो जाती है और Y की माँग भी कम हो जाती है, तो **– X और Y प्रतिस्थानी हैं**
- नकदी रिजर्व अनुपात (CRR) का निर्धारण आमतौर पर किसके द्वारा किया जाता है ? **–सेंट्रल बैंकों द्वारा**
- निगम कर संघ द्वारा लगाया जाता है और उसका विनियोजन किसके द्वारा किया जाता है ?
–राज्यों तथा संघ दोनों द्वारा
- राज्य सरकार को सबसे अधिक राजस्व दिलवाने वाला कर कौन–सा है ? **–बिक्री कर**
- कीमत विभेद कब लाभदायक होता है ?
–जब दो बाजारों में माँग की लोच भिन्न–भिन्न हो
- 'माँग नियम' के अनुसार–
–जब कीमत गिरती है तब माँग बढ़ जाती है
- जब आयात और निर्यात द्वारा किसी देश में आर्थिक गतिविधियों को प्रभावित करने दिया जाता है, तो उस अर्थव्यवस्था को क्या कहते हैं ? **–खुली अर्थव्यवस्था**
- भौतिक आगत तथा भौतिक निर्गत के बीच सम्बन्ध को क्या कहते हैं ? **–उत्पादन फलन**
- सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योग का स्वामित्व एवं प्रबन्ध किसके द्वारा किया जाता है ? **–सरकार**
- संतुलन कीमत का क्या अभिप्राय है ?
–माँगी गई मात्रा आपूर्तित मात्रा के बराबर है
- सम्पत्ति कर कैसा कर है ? **–प्रत्यक्ष कर**
- अर्थव्यवस्था के विकास के लिए केन्द्रीकृत नियोजन सर्वप्रथम किस देश में अपनाया गया था ?
–सोवियत संघ में
- मुद्रा का मुख्य कार्य क्या है ? **–मूल्य का मापन**
- 'कीमत सूचकांक' का मुख्य प्रयोजन किसमें हुए परिवर्तनों के मापने से है ? **–मुद्रा की क्रय शक्ति**
- केंद्र और राज्य के बीच कुछ कर संसाधनों के वित्तीय वितरण का निपटारा किसके द्वारा किया जाता है ?
–वित्त आयोग
- कौन–सा राज्य बैंकिंग क्रिया–कलापों को विनियमित करने में भारतीय रिजर्व बैंक के अधिकार क्षेत्र से बाहर है ?
–जम्मू और कश्मीर
- आर्थिक विकास के वित्तीयन के लिए सार्वजनिक क्षेत्रक को पर्याप्त संसाधन उपलब्ध कराना किसका सर्वाधिक महत्वपूर्ण सिद्धांत है ? **–कर नीति का**
- उत्पादन किस पर निर्भर करता है ?
–उत्पादन कारकों की मात्रा और गुणवत्ता तथा प्रौद्योगिकी की अवस्था के सम्मिश्रण पर
- उक्त वस्तु की माँग जिसके लिए उपभोक्ता अभ्यस्त होता है, सामान्यतः कैसी होती है ? **–अलोचदार**
- यदि कोई देश उपभोक्ता–वस्तुओं को छोड़कर और कोई उत्पादन नहीं करता है, तो–
–वह शीघ्र ही गरीब बन जाएगा यदि उसका विदेश व्यापार नहीं होगा
- केन्द्र सरकार के व्यय का सबसे बड़ा मद क्या है ?
–ब्याज का भुगतान
- पेन्शन, बेरोजगारी राहत आदि के रूप में जनसाधारण द्वारा प्राप्त किए गए हित–लाभ को क्या कहते हैं ?
–अंतरण अदायगी
- भारत में बिजली की चिरकालिक कमी रही है, क्योंकि–
–बिजली की माँग बढ़ती रही है, जबकि उसका उत्पादन और वितरण नहीं बढ़ा है
- परिसम्पत्तियों को नकदी में रखने की इच्छा क्या कहलाता है ? **–तरलता अधिमान**
- माँग का नियम किसके बीच कार्यात्मक संबंध को व्यक्त करता है ? **–कीमत तथा माँगी गई मात्रा**
- उत्पादक माल को और क्या कहा जाता है ?
–पूँजीगत माल
- प्रतिस्पर्धी माल के आयात पर प्रतिबंध लगाते हुए घरेलू उद्योगों को प्रोत्साहित करने की नीति को क्या कहा जाता है ? **–टैरिफ नीति**
- मान लीजिए कि माल A और B पूरक हैं, तो A की कीमत में वृद्धि होने का क्या प्रभाव पड़ेगा ?
– B की माँग बढ़ जाएगी

- आय कर कैसा कर है ?

–प्रत्यक्ष कर

- वास्तविक सकल घरेलू उत्पादक को मापा जाता है–

–स्थिर दामों पर

- उधार ली गई निधि के प्रयोग के लिए दिए गए ब्याज को क्या कहते हैं ? **–ब्याज की मुद्रा दर (मनी रेट)**
- कुल फसल प्रतिशत के रूप में भारत में खाद्यान्न का उत्पादन है, लगभग– **– 70%**
- भारत में कुल विद्युत् शक्ति में जल–विद्युत् शक्ति का योगदान कितना है ? **–लगभग एक–तिहाई**
- उत्पादन फसल वर्णन करता है–

–आर्थिक सम्बन्ध का

- लघु उद्योगों के लिए उच्चतम वित्त निकाय कौन–सा है ?

–SIDBI (सिडबी)

- वह दर जिस पर केन्द्रीय बैंक वाणिज्य बैंकों के बिलों तथा प्रतिभूतियों का पुनर्भाजन (पुनर्बट्टा) करता है, क्या कहलाता है ? **–बैंक दर**
- निजी आधारित संरचना (इन्फ्रास्ट्रक्चर) के निर्माण में रुचि क्यों नहीं लेते ?

–इसका प्रतिफल प्राप्त होने में बहुत समय लगता है

- विश्व व्यापार संगठन की स्थापना कब हुई थी ?

–1955 ई. में

- भारत में गेहूँ का सबसे अधिक उत्पादन करने वाला राज्य कौन है ? **–उत्तर प्रदेश**
- दुग्ध उत्पादन में संसार में भारत का कौन–सा स्थान है ?

–पहला

- भारत में केन्द्रीय बैंक का कर्त्तव्य कौन–सा बैंक निभाता है? **–भारतीय रिजर्व बैंक**
- भारत में राष्ट्रीय आय का आकलन पहली बार किसने किया था ? **–दादाभाई नौरोजी ने**
- माँग पैदा करने के लिए जरूरत है– **–आय की**
- किसने कहा था ''अर्थशास्त्र धन का विज्ञान है'' ?

–एडम स्मिथ

- महालनोबिस मॉडल का सम्बन्ध किस पंचवर्षीय योजना के साथ जोड़ा गया है ?

–दूसरी पंचवर्षीय योजना

- भारतीय जनसंख्या के इतिहास में किस काल–अवधि को आगे की ओर एक बड़ी छलाँग कहा जाता है ?

– 1921–1931 ई.

- भारत सरकार का सबसे अधिक राजस्व अर्जित करने वाला एकमात्र स्रोत है–

–सीमा कर

- डॉ. अल्फ्रेड नोबेल द्वारा निर्धारित अक्षय निधि में से किस क्षेत्र में नोबेल पुरस्कार नहीं दिया जाता है ?

–अर्थशास्त्र

- सरसों के बीज का सबसे अधिक उत्पादन करने वाला राज्य कौन है ? **–राजस्थान**
- विश्व बैंक का मुख्यालय कहाँ है ?

–वाशिंगटन डी. सी. में

- पहली राष्ट्रीय आय समिति का गठन कब किया गया था?

–वर्ष 1949 में

- जब किसी वस्तु की माँग वक्र एक्स–अक्ष के समानांतर हो, तब उस वस्तु की माँग–लोच होती है– **–शून्य**
- माँ का एक सामान्य नियम है– ''माँगी गई मात्रा बढ़ती है''–

–कीमत घटने के साथ

- भारतीय योजना आयोग का गठन कब हुआ था ?

–वर्ष 1950 में

- वस्तु के मूल्य में अधिक परिवर्तन होने पर उसकी माँग में परिवर्तन नहीं होता। इसे कौन–सी माँग कहा जाएगा ?

–पूर्णतः बेलोचदार

- चीजों की माँग में कमी या पूर्ति में वृद्धि होने पर क्या होता है ?

–चीजों की कीमतें कम हो जाती हैं

- भारत में कागजी नोट मुद्रा को जारी करने का पूर्ण अधिकार किसके पास है ?

–भारतीय रिजर्व बैंक

- 'आपरेशन फ्लड' किस कार्य से सम्बन्धित है ?

–दुग्ध उत्पादन

- प्रति वर्ष 'उपभोक्ता दिवस' कब मनाया जाता है ?

–15 मार्च

- भारतीय रिजर्व बैंक के मुक्त बाजार प्रचालन का क्या तात्पर्य है ?

–प्रतिभूतियों का व्यापार

- जवाहर रोजगार योजना किसके द्वारा क्रियान्वित की जाती है ? **–केन्द्रीय सरकार द्वारा**
- भारतीय रिजर्व बैंक करेंसी नोट जारी करता है –

–नियत न्यूनतम आरक्षण प्रणाली के अंतर्गत

- भारत में FERA का स्थान ले लिया है–

–FEMA ने

- किसी अर्थव्यवस्था में मुद्रा के मूल्य और कीमत स्तर के बीच कैसा सम्बन्ध होता है ?

–प्रतिलोम (इनवर्स)

- मूल्य ह्रास किसके बराबर होता है ?

–सकल राष्ट्रीय उत्पाद निवल राष्ट्रीय उत्पाद

- किसी अर्थव्यवस्था में क्षेत्रों को सार्वजनिक और निजी में किस आधार पर वर्गीकृत किया जाता है ?

–उद्यमों का स्वामित्व

- स्टैगफ्लेशन स्थिति है–

–गतिरोध और मुद्रास्फीति की

- ड्रेन का सिद्धान्त (The theory of Drain) किसने प्रतिपादित किया था ?

–दादाभाई नौरोजी

- 'उपभोक्ता प्रभुत्व' का क्या अर्थ है ?

–उपभोक्ता अपनी आय को अपनी इच्छानुसार व्यय करने के लिए स्वतंत्र है

- आर्थिक विकास का सर्वोत्तम सूचकांक उपलब्ध कराया जाता है–

–वर्षा–प्रति वर्ष, प्रति व्यक्ति वास्तविक आय में वृद्धि द्वारा

- किस प्रकार के उत्पादों के लिए CACP न्यूनतम समर्थन कीमत की सिफारिश करता है ?

–कृषि उत्पाद

- प्रभावी माँग निर्भर करती है–

–पूर्ति कीमत पर

KEYSTONE

समीर प्लाजा, मनमोहन पार्क, कटरा, बांसमण्डी के सामने, इलाहाबाद
फोन नं. : 0532.3266722, 9956971111, 9235581475

सावधान

One Day की रिक्तियों को ध्यान में रखते हुए आज कई संस्थान खुल गए हैं जहाँ अनुभवहीन शिक्षक छात्रों के भविष्य से खिलवाड़ करते हैं।

ऐसे संस्थान सिर्फ One Day के रिक्तियों की घोषणा का इन्तजार करते हैं। यहाँ न कोई Research Work होता है न ही Material Development।

ये सिर्फ गाँव के भोले–भाले छात्रों को बरगला कर कमाई कर रहे हैं। जागरूक बने एवं हमेशा अनुभवी, प्रतिष्ठित संस्थान को चुनें, जहाँ गुणवत्ता, ईमानदारी एवं सफलता की पूजा की जाती है और जहाँ ज्ञान नहीं सेलेक्शन दिया जाता है।

THE INSTITUTE

जहाँ सेलेक्शन एक जिद है.

2010-11 में **UPP, CPO, B.Ed., SSC, BANK, RAILWAY** में
सर्वाधिक Selection देने के बाद अब...

सिपाही
UP & CPO

SSC
Pre & Mains
(New Syllabus)

BANK
Clerk
(New Pattern)

OUR FACULTY

Team Maths : **S.P. Singh, K.M. Mishra, B.K. Dubey, & Vipin Sir**

Team Reasoning : **R.R. Gupta & K.N. Sir**

Team G.S.
- Hindi : **Dr. K.B. Pandey**
- Sci. & Tech. : **Ajay Singh**
- History : **V.P. Singh**
- Geography : **M.M. Khan**
- Polity : **Ashok Pandey**
- Economics : **Subhash Paul**

Team Tech. : **Pawan Shukla**

Team English
- Grammar : **R.S. Singh**
- Word Power : **C. Shekhar**

B.Ed. / T.E.T.
प्रवेश परीक्षा हेतु

सभी कोर्सों के लिए अलग-अलग एवं विशेष बैच प्रारम्भ

रेलवे टेक्निकल

प्रिंटेड नोट्स एवं प्रैक्टिस पेपर के साथ सम्पूर्ण तैयारी

Individual Maths, Reasoning & English Also Available ; CSAT – Maths + Reasoning

THE INSTITUTE
जहाँ सेलेक्शन एक जिद है.

समीर प्लाजा, मनमोहन पार्क, कट्रा, बांसमण्डी के सामने, इला0 Mob. :0532-3266722, 9956971111, 9235581475
website : www.theinstituteedu.com email : info@theinstituteedu.com

पूरी फीस, पूरी पढ़ाई, पूरा सेलेक्शन ; अधूरी फीस, अधूरी पढ़ाई, अधूरा सेलेक्शन